D28653

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला - २२

आर्यदेवविरचितम्

चर्यामेलापकप्रदीपम्

༄༅། །འཕགས་པ་ལྷས་མཛད་པའི་
སྤྱོད་པ་བསྡུས་པའི་སྒྲོན་མ་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།



दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी

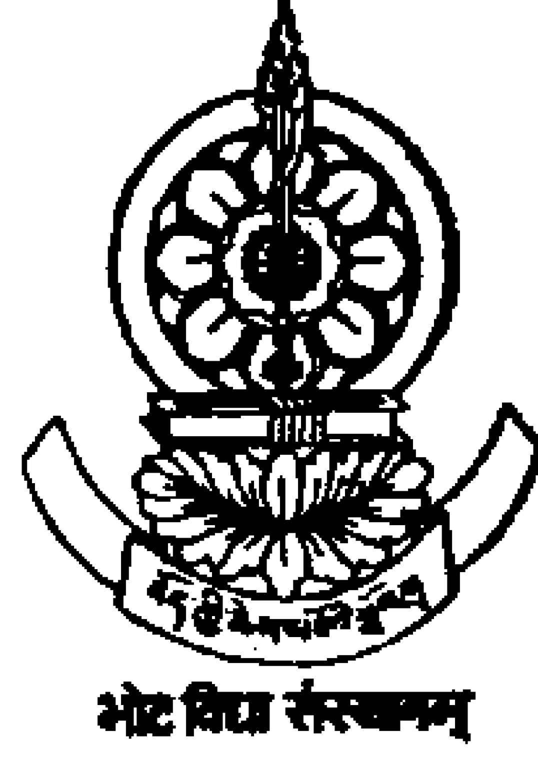
बुद्धाब्द- २५४३ खीस्ताब्द- २०००

Rare Buddhist Texts Series - 22

CARYĀMELĀPAKAPRADĪPAM

of

ĀCĀRYA ĀRYADEVA



Edited by

Janardan Shastri Pandey
Acting Project Director

RARE BUDDHIST TEXTS RESEARCH PROJECT
CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2543 C.E. 2000

Rare Buddhist Texts Series - 22

Co-Editors

Thakur Sain Negi
Thinlay Ram Shashni
Tsering Dolkar
Vijay Raj Vajracharya
Banarsi Lal
Chhog Dorjee
Ranjan Kumar Sharma

Chief Editor: *Prof. Samdhong Rinpoche*

First Edition: 550 copies, 2000

Price: Hardback: Rs. 160.00
Paperback: Rs. 110.00

Publisher:
Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi - 221007, India.

Printed at Shivam Printers, Maldahiya, Varanasi

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला - २२

आर्यदेवविरचितम्

चर्यामेलापकप्रदीपम्

༄༅། །འཕགས་པ་ལྷས་མཛད་པའི་
སྤྱོད་པ་བསྡུས་པའི་སྒྲོན་མ་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།



सम्पादकः

जनार्दनशास्त्री पाण्डेयः
कार्यकारी योजनानिदेशकः

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द- २५४३ खीस्ताब्द- २०००

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला - २२

सहायक-मण्डल

प्रधान सम्पादक : प्रो० समदोङ् रिनपोछे

प्रथम संस्करण : ५५० प्रतियाँ, २०००

मूल्य :
सजिल्द : रु० १६०·००
अजिल्द : रु० ११०·००

प्रकाशक :
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान,
सारनाथ, वाराणसी -२२१००७

मुद्रक : शिवम् प्रिन्टर्स, मलदहिया, वाराणसी

प्रस्तावना

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला के बाईसवें पुष्प के रूप में महामनीषी आचार्य आर्यदेव के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ पञ्चक्रम की अर्थव्याख्या चर्यामेलापकप्रदीप को प्रकाशित कर जिज्ञासु जनों के समक्ष उपस्थापित करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। बौद्ध वाङ्मय के प्रतिष्ठापकों में आचार्य नागार्जुन और आर्यदेव सर्वश्रेष्ठ प्रामाणिक उपदेष्टाओं में गिने जाते हैं। आर्यदेव ने जहाँ चतुःशतक, हस्तवालप्रकरणकारिका एवं उसकी वृत्ति, मध्यमकभ्रमघात, ज्ञानसार-समुच्चय आदि महत्त्वपूर्ण दार्शनिक ग्रन्थों का प्रणयन किया है, वहीं तन्त्रशास्त्र के चित्तविशुद्धिप्रकरण, चर्यामेलापकप्रदीप (संशयपरिच्छेद), स्वाधिष्ठानक्रमप्रभेद आदि लगभग १५ उत्कृष्ट ग्रन्थों की रचना की है।

चर्यामेलापकप्रदीप इनका एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। गुह्यसमाज-तन्त्र की आर्यपरम्परा(आर्यनागार्जुन-मत) में पञ्चक्रम और चर्या-मेलापकप्रदीप ये दो ग्रन्थ निष्पन्नक्रम के प्रतिपादक माने जाते हैं। चर्यामेलापकप्रदीप पञ्चक्रम के भावार्थ को स्पष्ट करने वाला स्वतन्त्र ग्रन्थ है, जिसमें वज्रशिष्य और वज्रगुरु के प्रश्नोत्तर रूप में गुह्यसमाज से संबद्ध गूढ-रहस्यों को सरल और सरस भाषा में व्यक्त किया गया है। इसकी एकमात्र मातृका हमें परिच्छेद ६ से ११ तक 'संशयपरिच्छेद' नाम से राष्ट्रीय अभिलेखालय काठमांडू, नेपाल से (ल० सं० ३-३६३, पत्रसंख्या ३६) तथा परिच्छेद १ से ५ तक एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता से (नं० 4837, पत्रसंख्या ३७) 'वज्रयानसाधनाङ्गानि' नाम से उपलब्ध हुई है। हम इस दुर्लभ ग्रन्थ की उपलब्धि से प्रकाशन में सहयोग के लिये उपर्युक्त दोनों संस्थाओं का आभार प्रकट करते हैं।

इस एकमात्र और जीर्णप्राय मातृका के आधार पर इसका सम्पादन दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग के कार्यकारी निदेशक श्री जनार्दन पाण्डेय ने भोटानुवाद की सहायता से किया है। अन्तिम दो पत्र नहीं थे उन्हें भी भोटानुवाद का संस्कृत रूपान्तर करके पूर्ण किया गया है और अन्त में भोटसंस्करण को भी सम्पादित करके प्रकाशित किया गया है।

हमें आशा है कि तन्त्र के जिज्ञासुओं के लिये यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग के सदस्यों का हम साधुवाद करते हैं और आशा करते हैं कि आगे भी इसी प्रकार उत्कृष्ट ग्रन्थों से अनुभाग द्वारा बौद्धतन्त्र वाङ्मय की श्रीवृद्धि होती रहेगी।

बसन्तपञ्चमी
१०.२.२०००

सम्दोङ् रिन्पोछे
निदेशक

Preface

It is a matter of great happiness for us to be able to present to the scholarly world, as the 22nd offering of the Rare Buddhist Texts Series, Acharya Aryadeva's *Caryamelapakapradipa*. Among the founding fathers of the Buddhist literary canon, the acaryas Nagarjuna and Aryadeva are counted as the foremost exponents. Aryadeva not only composed important philosophical treatises like *Catushataka, Hastavalaprakaranakarika* and its annotative commentary, *Madhyamakbhramghat*, and *Gyanasarasamuccaya*, but also about fifteen excellent texts on Tantra, such as *Cittavishuddhiprakarana*, *Caryamelapakapradipa* (*Sanshayapariccheda*), and *Svadhisthankramaprabheda*.

Caryamelapakapradipa is another of his important texts. In the *arya*-lineage (Nagarjuna school) of *Guhyasamajatantra*, the two texts *Pancakrama* and *Caryamelapakapradipa* are considered to lead to the completion stage of Tantra. *Caryamelapakapradipa* is an independent text in itself that elucidates the ideas contained in *Pancakrama*; in a question-answer format, the *vajra-disciple* questioning the *vajra-guru*, the esoteric secrets of the *Guhyasamaja tantra* are expressed in simple language. The sole manuscript of the text that we found was under the title "Sanshayapariccheda" for chapters 6 to 11 in the National Archives, Kathmandu, Nepal (No. 3-363, folio 36), and for chapters 1 to 5, under the title "*Vajrayana-sadhanangani*" (No.4837, folio 37) in the Asiatic Society, Calcutta. We are thankful to both these institutions for making the manuscript available to us for publication.

On the basis of the sole and fragmentary manuscript available, the text was edited with the help of the Tibetan version by Shri Janardhan Pandey, the Acting Director of the Rare Buddhist Texts Research Unit. The last two folios, which were missing, were restored into Sanskrit from the Tibetan version, and finally the Tibetan version was also edited and appended.

We hope that this important text will prove to be of great use to those inquisitive about Tantra. The efforts of the members of the Rare Buddhist Texts Research Project are worthy of commendation, and we hope that in the future too they will continue to enrich the corpus of Buddhist literature by such valuable editions as this.

Basant Panchami **S. Rinpoche**
10-2-2000 (Director)

སྔོན་གླེང་།

ཆེས་དཀོན་པའི་གསུང་རབ་པོད་ཕྲེང་ཉེར་གཉིས་པའི་ནང་མཁས་ཤིང་གྲུབ་པའི་སྐྱེས་མཆོག་སློབ་དཔོན་འཕགས་པ་ལྷས་མཛད་པའི་ཤིན་ཏུ་གལ་གནད་ཆེ་བའི་གཞུང་རིམ་ལྔའི་དོན་འགྲེལ་སྤྱོད་པ་བསྡུས་པའི་སྒྲོན་མ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ཉིད་དོན་གཉེར་ཅན་རྣམས་ཀྱི་སྤྱན་ལམ་དུ་དཔར་སྐྲུན་ཐུབ་པར་དགའ་ཚོར་ཆེན་པོ་བྱུང་། སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་དང་འཕགས་པ་ལྷ་ཡབ་སྲས་གཉིས་ནི་ནང་དོན་རིག་པའི་མདོ་སྔགས་ཀྱི་ཟབ་དོན་གསལ་བར་མཛད་པ་པོ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་ཁྱད་དུ་འཕགས་པའི་ཚད་མར་བཟུང་ཞིང་། སློབ་དཔོན་འཕགས་པ་ལྷས་བསྟན་བཅོས་ཆེན་པོ་བཞི་བརྒྱ་པ་དང་། རབ་ཏུ་བྱེད་པ་ལག་པའི་ཚད་ཀྱི་ཚིག་ལེའུར་བྱེད་པ་དང་དེའི་འགྲེལ་པ། དབུ་མ་འཁྲུལ་པ་འཛོམས་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། ཡེ་ཤེས་སྙིང་པོ་ཀུན་ལས་བཏུས་པ་སོགས་ལྟ་བ་གཙོ་བོར་གྱུར་པའི་གཞུང་དང་། དེ་བཞིན་དུ་སྔགས་ཀྱི་བསྟན་བཅོས་སེམས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་རྣམ་པར་སྦྱོང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་རབ་ཏུ་བྱེད་པ་དང་། སྤྱོད་པ་བསྡུས་པའི་སྒྲོན་མའམ་ཐེ་ཚོམ་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་དང་། བདག་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་རིམ་པ་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ལ་སོགས་པའི་གཞུང་ཆེས་ཤུལ་དུ་ཕྱིན་པ་བཅོ་ལྔ་ཙམ་མཛད་ཡོད།

སྤྱོད་པ་བསྡུས་པའི་སྒྲོན་མ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི་སློབ་དཔོན་འཕགས་པ་ལྷས་མཛད་པའི་གཞུང་ཚད་དུ་བྱུང་བ་ཞིག་ཡིན་ལ། འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཡབ་

སྲས་ཀྱིས་མཛད་པའི་རིམ་ལྔ་དང་སྤྱོད་པ་བསྡུས་པའི་སྒྲོན་མ་ཞེས་བྱ་བའི་གཞུང་འདི་གཉིས་དཔལ་གསང་བ་འདུས་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྫོགས་རིམ་སྟོན་བྱེད་ཀྱི་གཞུང་དུ་བཞེད། སྤྱོད་པ་བསྡུས་པའི་སྒྲོན་མ་ནི་རིམ་ལྔའི་དགོངས་དོན་མཐའ་དག་གསལ་བར་བྱེད་པའི་གཞུང་རང་ཚན་པ་ཞིག་ཡིན། དེའི་ནང་དོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་དང་སློབ་མ་གཉིས་ཕན་ཚུན་དྲི་ལན་གྱི་ཚུལ་དུ་དཔལ་གསང་བ་འདུས་པ་དང་འབྲེལ་བའི་མཆོག་ཏུ་གསང་བའི་ཟབ་དོན་རྣམས་ཚིག་སྦྱོར་བཟང་ལ་རྩོམ་རྩལ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་ལམ་ནས་བཀྲམས་པར་མཛད་ཡོད།

གཞུང་འདིའི་རྩ་བའི་མ་དཔེ་གཅིག་རང་རྙེད་པ་དེའི་སྙོད་ཆ་ལེའུ་དང་པོ་ནས་ལྔ་པའི་བར་(ཨང་གྲངས་༤༨༣༥, ཤོག་གྲངས་༣༥) ཀལཀཏྟར་ཡོད་པའི་ཨེ་ཤི་ཡུ་ཏི་ཀ་སོ་སུ་ཡི་ཊི་ཞེས་པའི་དཔེ་མཛོད་ནས་"རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་སྒྲུབ་ཐབས་ཀྱི་ཡན་ལག" ཞེས་པའི་མཚན་ཐོག་རྙེད་སོན་བྱུང་ཞིང་། དེའི་སྨད་ཆ་"ཐེ་ཚོམ་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ"ཞེས་བྱ་བའི་མཚན་ཐོག་ལེའུ་དྲུག་པ་ནས་བཅུ་གཅིག་བར་(ཨང་གྲངས་༣-༣༦༣, ཤོག་གྲངས་༣༦) བལ་ཡུལ་རྒྱལ་ཡོངས་དཔེ་མཛོད་ཁང་ནས་རྙེད་སོན་བྱུང་། ཆེས་དཀོན་པའི་གསུང་རབ་འདི་ཉིད་ཀྱི་མ་དཔེ་མཁོ་འདོན་ཆེད་ཕན་གྲོགས་གནང་མཁན་གོང་སྨོས་དཔེ་མཛོད་ཁང་གཉིས་ལ་ང་ཚོས་སྙིང་ཐག་པ་ནས་བཀྲིན་རྗེ་དྲན་ཞུ་རྒྱུ་ཡིན།

ཆེས་དཀོན་པའི་གསུང་རབ་ཉམས་ཞིབ་ལས་གཞིའི་ངེས་སྟོན་པ་དཔལ་

ལྷན་པཎྜིཏ་ཛནཱདན་པཱུཎྜཡ་མཆོག་ནས་ཕལ་ཆེར་རྙིང་ཟད་དུ་གྱུར་པའི་རྩ་བའི་མ་དཔེ་གཅིག་པུ་རྙེད་སོན་བྱུང་བ་འདི་ཉིད་ལ་གཞི་བཅོལ་གྱིས། བོད་འགྱུར་གྱི་པར་མ་འདྲ་མིན་ཁག་གསུམ་ལ་འབྲེལ་གཏུགས་ཀྱིས་ཞུ་དག་ངེས་དྲངས་གནང་བ་མ་ཟད་ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྩ་བའི་མ་དཔེའི་མཐའ་ཤོག་གཉིས་མ་ཚང་བ་དེ་དག་ཀྱང་བོད་འགྱུར་ལ་གཞི་བཅོལ་ཏེ་ལེགས་སྦྱར་ཐོག་བསྐྱར་གསོ་གནང་ཐོག་བོད་དཔེ་ཡང་དག་ཞུས་ཐོག་མཉམ་དུ་དཔར་སྐྲུན་ཞུས་ཡོད།

དོན་གཉེར་ཅན་རྣམས་ལ་གལ་འགང་ཆེ་བའི་གཞུང་འདིས་ཏ་ཅང་ཕན་ཐོགས་ཡོང་བའི་རེ་བ་དང་། ཆེས་དཀོན་པའི་གསུང་རབ་ཉམས་ཞིབ་སྡེ་ཚན་གྱི་ཞུགས་ལས་གནང་མཁན་ཚང་མར་ལེགས་སོ་ཞུ་བ་དང་ཆབས་ཅིག སྡེ་ཚན་འདི་ནས་མ་འོངས་པར་ཡང་འདི་ལྟ་བུའི་ཕུལ་བྱུང་གི་གཞུང་རྣམས་འཚོལ་ཞིབ་དང་འབྲེལ་ནང་པའི་རྒྱུད་གཞུང་གི་དཔལ་རྒྱས་པར་བྱེད་པའི་སྨོན་འདུན་བཅས། དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་གི་ངེས་སྟོན་པ་དགེ་སློང་ཟམ་གདོང་བློ་བཟང་བསྟན་འཛིན་གྱིས་སྤྱི་ལོ་ ༢༠༠༠ ཟླ་ ༢ ཚེས་ ༡༠ ལ་བྲིས་པ་དགེའོ། །

गिरीन्द्रमूर्ध्नः प्रपतेत् तु कश्चिद्
नेच्छेच्च्युतिं स च्यवते तथापि ।
गुरुप्रसादाद् विहितोपदेशाद्
नेच्छेद् विमुक्तिं स तथापि मुक्तः ।।

उपोद्घात

आचार्य आर्यदेव

प्रस्तुत ग्रन्थ चर्यामेलापकप्रदीप के प्रणेता महामनीषी आचार्य आर्यदेव बौद्ध वाङ्मय के अप्रतिम और प्रामाणिक रचनाकारों में अग्रगण्य माने जाते हैं, जिन्होंने शून्यवाद अथवा माध्यमिक सम्प्रदाय के आदिप्रवर्तक आर्य नागार्जुन के मत को सुस्पष्ट रूप से व्याख्यायित किया है। इन्हें आर्य नागार्जुन का प्रमुख शिष्य कहा जाता है। यद्यपि ये सभी शास्त्रों के विद्वान् थे विशेषकर माध्यमिक दर्शन और तन्त्र विषयक रचनाओं से इनके अलौकिक पाण्डित्य की अनुभूति होती है। इनकी दार्शनिक रचनाओं में चतुःशतक (जिसके ६ प्रकरण, १५० श्लोक संस्कृत में उपलब्ध नहीं हैं), हस्तबालप्रकरण या मुष्टिप्रकरण, ज्ञानसारसमुच्चय तथा युक्तिहेतुसिद्धि ये प्रमुख हैं। तान्त्रिक रचनाओं में तन्ग्युर संग्रह में इनके २० ग्रन्थों का उल्लेख है[१] जिनमें चित्तविशुद्धिप्रकरण, स्वाधिष्ठानक्रमप्रभेद, चर्यामेलावणप्रदीप तथा प्रतिपत्तिसारशतक (अपूर्ण) संस्कृत में उपलब्ध हैं शेष का भोटानुवाद ही प्राप्त है। एक परम्परा के अनुसार इन्होंने अपनी एक आँख निकाल दी थी अतः इन्हें काणपा या काणेरिपा भी कहा जाता था जो ८४ सिद्धों में गिने जाते हैं। इस स्थिति में काणेरिपा नाम से जो ग्रन्थ तन्ग्युरसंग्रह में उद्धृत हैं वे भी इन्हीं की रचनाएँ मानी जायेंगी।

इनके स्थितिकाल के विषय में निश्चितरूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। प्राचीन भारतीय एवं तिब्बती विद्वानों ने जीवन को ही महत्त्व दिया है जीवनी को नहीं। उन्होंने अपने जीवन में अनेकों उत्कृष्ट ग्रन्थों की रचना कर लोक में ज्ञान का प्रसार किया किन्तु अपने विषय में कहीं कुछ भी संकेत नहीं दिया, फलतः हम ऐतिहासिक दृष्टि से किसी के स्थितिकाल का निश्चित निर्णय नहीं कर पाते।

---

१. देखें - धीः अंक - १३, पृष्ठ ४५-६० पर डा० बनारसी लाल का 'आर्यदेव एवं उनकी तान्त्रिक रचनायें' निबन्ध।

इसीलिये पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित, ईसवी शती को ही सभ्यता का आदि-काल मानने वाले, स्वयम्भू इतिहासकारों ने किंवदन्तियों और लोकोक्तियों के आधार पर उनके विषय में मनगढन्त कल्पनाएँ देकर भ्रान्तियाँ उत्पन्न कर दी हैं। वे नागार्जुन नाम के तीन व्यक्तियों की कल्पना करते हैं - दार्शनिक, तान्त्रिक और रससिद्ध तथा दो आर्यदेव मानते हैं दार्शनिक और तान्त्रिक। इस आधार पर इनकी स्थिति भी भिन्न-भिन्न समयों में बताते हैं किन्तु सिद्धों की सिद्धियों पर विश्वास करने वाली परम्परा इसे स्वीकार नहीं करती। जब हम यह मानते हैं कि साधना द्वारा व्यक्ति निर्माणकाय की क्षमता प्राप्त कर लेता है तो वह कहीं भी, कभी भी और किसी भी रूप में लोककल्याण के लिये प्रकट होकर ग्रन्थनिर्माण कर सकता है। योग या रससाधना द्वारा अजर-अमर कहे जानेवाले मार्कण्डेय, अश्वत्थामा, गोरक्षनाथ आदि कल्पों तक किसी गुफा में बैठे समाधि लगाकर नहीं रहते, वे समय-समय पर प्रकट होकर लोक कल्याण के उपाय बताते हैं। शबर स्वामी के विषय में प्रसिद्ध है कि वे आज भी श्रीपर्वत पर सच्चे श्रद्धालुओं के लिये प्रकट होते हैं। सिद्धों के लिये दर्शन हो, तन्त्र हो या और कोई शास्त्र हो उनकी गति सर्वत्र अबाध होती है अतः किसी परवर्ती ग्रन्थ या ग्रन्थकार का नाम उनकी रचना में देखकर उनके काल का निर्धारण करना उचित नहीं। अस्तु, लामा तारनाथ ने अपने इतिहास (पृ० ४८) में लिखा है श्री आर्यदेव ई० २०० से २२४ तक नालन्दा में रहे। यह उचित प्रतीत होता है क्योंकि आर्य नागार्जुन का भी प्रायः यही काल माना जाता है, वे नागार्जुन के प्रमुख शिष्य थे और प्रसिद्धि है कि कुमारजीव ने ई० ४०५ में नागार्जुन और आर्यदेव के जीवन-वृत्तों का चीनी भाषा में अनुवाद किया था, अतः वे कुमारजीव के पूर्ववर्ती अवश्य रहे होंगे।

आर्यदेव की तान्त्रिक रचनाओं में संस्कृत में चर्यामेलापकप्रदीप, चित्त-विशुद्धिप्रकरण, स्वाधिष्ठानक्रमप्रभेद तथा प्रतिपत्तिसारशतक (अपूर्ण) ही अभी तक उपलब्ध हुए हैं शेष का भोटानुवाद ही प्राप्त है।

चर्यामेलापकप्रदीप

ग्रन्थ में कहीं चर्या और प्रदीप शब्द का उल्लेख नहीं है। प्रत्येक परिच्छेद की पुष्पिका में परिच्छेद का विषय देकर आगे 'मेलावण(या मेलापन)' लगा है। जैसे- 'प्रबोधनमेलावणपरिच्छेदः प्रथमः' आदि। इसी आधार पर नेपाल से प्राप्त मातृका में बाहर से इसका नाम संशयपरिच्छेदः लिखा था। एशियाटिक सोसाइटी से प्राप्त मातृका में कल्पित नाम 'वज्रयानसाधनाङ्गानि' था। तन्युर संग्रह के सूचीपत्र में चर्यामेलापनप्रदीप और भोटानुवाद की पुष्पिकाओं में चर्यामेलावण संशयपरिच्छेदः लिखा है। चर्यागीतिकोषव्याख्या (पृ० ४६, ७७, ९४, १३६) तथा सेकोद्देशटीका (पृ० ७०-७१) में 'सूतके' नाम से जो वचन उद्धृत हैं वे सभी चर्यामेलापकप्रदीप में मिल जाते हैं यद्यपि चर्यागीतिकोष-व्याख्या (पृ० ९४, १३६) में 'सूतके' नाम से उद्धृत वचन चर्यामेलापकप्रदीप में क्रमशः सर्वरहस्यतन्त्र और खसमतन्त्र नाम से उद्धृत हैं तथा स्वाधिष्ठानक्रमप्रभेद के ३०वें श्लोक 'सूतके यत् समुद्दिष्टं पञ्चबुद्धकुलं महत्' के भोटानुवाद में भी 'सूतके' का अनुवाद 'चर्यामेलापक में' ऐसा किया है, इस आधार पर प्रतीत होता है कि चर्यामेलापकप्रदीप और सूतक दोनों अभिन्न ग्रन्थ हैं। हमारे विचार से वहाँ सूत्रके ऐसा पाठ होना चाहिये क्योंकि आर्यदेव ने प्रस्तुत ग्रन्थ के पृष्ट ८० में स्वयं कहा है- 'रागादयः क्लेशाः----स्वभावपरिज्ञानात् तु बोधिहेतुका भवन्तीति भगवता स्वयमेव सूत्रके निर्दिष्टम्' यहाँ सूत्रके का अर्थ है सूत्रग्रन्थों में। तन्युरसंग्रह के सूचीपत्र से ज्ञात हुआ कि श्रीशाक्यमित्र ने चर्यासमुच्चयप्रदीप नाम से इस ग्रन्थ की टीका भी की है, तोहुकु सूची में जिसकी संख्या १८३४ है।

ग्रन्थ की वर्ण्यवस्तु

इस ग्रन्थ में ११ परिच्छेद हैं, जिनमें प्रश्नोत्तर रूप से तन्त्र के गूढविषयों को सरल और सरस भाषा में उदाहरणों सहित समझाया गया है। प्रत्येक परिच्छेद में वज्रशिष्य प्रश्न करता है और वज्रगुरु उसका उत्तर देते हैं। जिसका संक्षेप इस प्रकार है-

प्रथम प्रबोधन परिच्छेद है, इसमें ग्रन्थावतरण का उपक्रम करते हुए कहा है कि वज्रयान में विविधमन्त्रचर्यापरायण शास्त्रज्ञों ने लोकहित की कामना से सूत्र, तन्त्र और कल्पों में व्यक्त भगवद् वचनों को स्पष्ट करने के लिए अनेक प्रकार गद्य, पद्य तथा लोकगाथाओं में सद्भावतन्त्रों से उद्धृत कर अनेक प्रबन्धों की रचना की है किन्तु उनके गूढ शब्दों का रहस्य सत्य, त्रेता, द्वापर युगों के व्यक्ति तो समझ लेते थे। इस कलियुग के प्राणी उतने विवेकशील और चर्यापरायण न होने से उनके शब्दजाल में ही उलझे रह जाते हैं, वास्तविक अर्थ को नहीं समझपाने से नानाविध शुभाशुभ कर्म करके भवचक्र में ही भ्रमण करते रहते हैं, अतः मोक्ष की कामना वाले व्यक्ति शब्दजाल में उलझे न रहकर अर्थ का आश्रय लें। क्योंकि शब्द तो उस नाव की तरह है जिसे नदी पार कर लेने पर छोड़ दिया जाता है। इसीलिये भगवान् ने कहा है- 'अर्थप्रतिशरणेन भाव्यं शब्दस्तु यथा तथा।' इसी उद्देश्य से आर्य नागार्जुन के मतानुसार निष्पन्नक्रम-समाधि प्राप्तकर संस्कृत और असंस्कृत शिष्यों हेतु पञ्चक्रम को स्पष्ट करते हुए सूत्र, तन्त्र और कल्पों का मिलाप करने वाले इस ग्रन्थ का निर्माण कर रहा हूँ, क्योंकि जो तत्त्व को नहीं जानते वे करोडों कल्पों तक भी सिद्धि नहीं प्राप्त कर पाते।

(१) वज्रशिष्य का प्रश्न - तत्त्वज्ञान के विना बुद्धत्व की प्राप्ति नहीं होती, ऐसा आपने कहा है किन्तु महायानी तार्किक तत्त्व की अनेक प्रकार की व्याख्या करते हैं, जिससे भ्रम होता है, अतः कृपाकर यह स्पष्ट करें कि तत्त्व क्या है?

वज्रगुरु - जगत् के सभी धर्मों का आश्रय परमार्थसत्य है। चूँकि वह अनात्मक, परम गंभीर और दुरवगाह है। उसका बोध हेतुप्रत्ययोत्पन्न संवृतिसत्य से होता है। यह संवृतिसत्य भी स्वप्नेन्द्रजालवत् मायासमाधि और स्वलक्षण है अतः इससे उसका अनुभव प्राप्त होता है। इन्हीं दो सत्यों का युगनद्धवाहि-क्रम ही भूतनयात्मकसमाधि या सत्त्व के अनुभव की प्राप्ति है और यही तत्त्व है।

(२) पुनः प्रश्न - इस विधान में पृथग्जन (सामान्य व्यक्ति), जो अस्ति-नास्ति आदि विकल्पों से अभिनिविष्ट हैं, शिक्षा लेना चाहते हैं तो उन्हें क्रमशः

शिक्षा लेनी होती है? या गुरु के उपदेश से उन्हें तत्काल एकसाथ ही तत्त्व का प्रतिभास हो जाता है?

उत्तर - स्वचित्तदृश्यधारा की क्रमशः विशुद्धि होने से यह तत्त्वज्ञान क्रमसे ही प्राप्त होता है, एकसाथ नहीं। इस पर लंकावतारसूत्र और शूरङ्गमसमाधिसूत्र के अनेक उद्धरण दिये हैं। इसके बाद शिक्षा का क्रम बताया है कि साधक पहले बुद्धयान का आशय लेकर एकस्मृतिसमाधि की शिक्षा लेता है, फिर नव-यान में शिक्षित होकर कल्पितयोग की शिक्षा लेता है। आदिकर्मिक समाधि में प्रतिष्ठित होकर शतकुलभेदों का ज्ञान पाता है और कायविवेक द्वारा कायवज्र-समाधि में प्रतिष्ठित होता है। इसके बाद आलिकालि द्वारा वाग्विवेक में आकर वज्रजापक्रम से वाग्वज्रसमाधि में प्रतिष्ठित होता है। फिर प्रकृत्याभासक्रम से चित्तविवेक में आकर वायुवाहनभूत प्रकृत्याभास की शिक्षा प्राप्त करता है और चित्तवज्रसमाधि में प्रतिष्ठित होता है। चित्त को यथावत् जानकर द्वादशमाया-दृष्टान्तों द्वारा संवृतिसत्य में आता है और जब मायोपमसमाधिसमापन्न हो जाता है तब सर्वबुद्धाभिषेक प्राप्त करता है। मायोपमसमाधि में रहकर अष्टादशमहा-शून्यतानुक्रम से परमार्थ सत्य में आता है। जब पिण्डग्रहानुभेदसमाधि द्वारा भूतकोटि में प्रवेश करता है तब सब क्लेशों से विशुद्ध हो जाता है और जब ज्ञानक्रम से उठकर प्रकृतिप्रभास्वर सत्यद्वय से अपने को जान लेता है तो निष्पन्नक्रम समाधि में शिक्षित होता है। इसमें शिक्षित योगी को फिर कुछ सीखना शेष नहीं रहता और लौकिक-लोकोत्तर सिद्धियाँ स्वयं उसकी ओर आकृष्ट होती हैं। यही इस शिक्षा का सोपानक्रम है।

द्वितीय परिच्छेद में कायविवेक (देवतातत्त्व) का विवरण है।

(३) प्रश्न - निष्पन्नक्रमसमाधिसमापन्न होने के लिये कायविवेक की शिक्षा सर्वप्रथम आवश्यक है, ऐसा आपने कहा है, वह कैसे ग्रहण की जाती है?

उत्तर - जैसे गेहूँ, जौ आदि अन्नों की राशि (समूह - ढेर) को गेहूँ, जौ आदि कहा जाता है ऐसे ही मांस, मज्जा, अस्थि, रुधिर आदि विभिन्न धातुओं की एकत्र राशि (समूह) काय (शरीर) कहलाता है। इस काय में ५ स्कन्ध, ४ धातु,

६ आयतन, ५ विषय, और ५ ज्ञानों की स्थापना की गई है। इनमें से प्रत्येक में उसके अधिष्ठातृ देवता के रूप में पञ्चबुद्धों की भावना करके इस काय को ही देवता रूप समझना कायविवेक है। इस धातुसमवाय में प्रज्ञा दृष्टि मन अविद्या तृष्णा क्लेश आदि का होना संचय कहलाता है। इसमें विज्ञान भी होता है पर उसकी न तो राशि है न संचय, क्योंकि उसका कोई आलय ही नहीं है। अनादि प्राकृताहंकार में व्यवस्थित स्कन्ध, धातु, आयतनादि में सर्वतथागत परमाणुघटित स्वभाव का निर्देश इस प्रकार है- १०० प्रकार के कुल हैं, वे ही संक्षेप में ५ प्रकार के होकर काय वाक् चित्त भेद से ३ प्रकार में सिमट जाते हैं। कुलों के १०० भेद ऐसे होते हैं- रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, और विज्ञान ये ५ स्कन्ध हैं जिन्हें क्रम से वैरोचन, रत्नसम्भव, अमिताभ, अमोघसिद्धि और अक्षोभ्य स्वरूप माना जाता है। फिर इन स्कन्धों में प्रत्येक के ५-५ अवयव किये जाते हैं जिनमें पांचों बुद्धों की भावना की जाती है।

इसीप्रकार पृथ्वी, जल, तेज, वायु ये चार धातु क्रम से लोचना, मामकी, पाण्डरा और तारा स्वरूप हैं। चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा काय और मन ये ६ आयतन (इन्द्रियाँ) क्रम से क्षितिगर्भ, वज्रपाणि, आकाशगर्भ, लोकेश्वर, सर्वनीवरणविष्कम्भी और आभासत्रय विज्ञान (मन) समन्तभद्र स्वरूप हैं। प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, उद्वाह, विवाह, संवाह, प्रवाह और निर्वाह ये दस वायु विषय हैं इनमें पूर्व के ५ स्कन्धव्यापार करते हैं उन्हें स्कन्ध में बता दिया है, शेष उद्वाहादि क्रम से रूप, शब्द, गन्ध, रस और स्पर्श क्रिया करते हैं। आदर्श, समता, प्रत्यवेक्षणा, कृत्यानुष्ठान और धर्मधातु ये ५ ज्ञान क्रम से वैरोचन, रत्नसंभव, अमिताभ, अमोघसिद्धि और अक्षोभ्य स्वरूप हैं। इन सभी धात्वादि में प्रत्येक के पांच-पांच अवयव करके प्रत्येक में एक-एक बुद्ध की भावना की जाती है। इसप्रकार सभी पदार्थों में देवताओं की भावना करने पर संसारकर्म (जीवन-मरण प्रक्रिया) कैसे संभव है?

(४) प्रश्न - ये १०० कुल ५ कुलों में कैसे संक्षिप्त होते हैं?

उत्तर - चारों धातु मिलकर शरीर का निर्माण करते हैं अत: भौतिक

कहलाते हैं और सभी तथागतकुल के भौतिक मिलकर पृथ्वी धातु में, रत्नसंभव-कुल के अब्धातु में, पद्मकुल के तेजोधातु में, कर्मकुल के वायुधातु में और वज्रकुल के विज्ञान धातु में मिलकर पांच प्रकार के हो जाते हैं।

(५) प्रश्न - फिर तीन प्रकार में कैसे सिमटते हैं?

उत्तर - रत्नसंभवकुल कायवज्र के साथ, अमोघसिद्धि वाग्वज्र के साथ, और अक्षोभ्य षष्ठतथागतकुल के साथ अद्वय हो जाता है।

(६) प्रश्न - यह त्रिकुल त्रिवज्राभेद्यात्मक होने से क्या होता है?

उत्तर - इस प्रकार कायवज्रधर होने पर ही वाग्वज्र में प्रवृति होती है और तब चित्तवज्र उसका प्रेरक होकर तत्त्वज्ञान की ओर प्रेरित करता है।

१०० कुलों में प्रत्येक के कौन- कौन पांच आकार होते हैं और किस बुद्ध की उनमें भावना की जाती है, यह ग्रन्थ में विस्तार से बताया गया है।

तृतीय परिच्छेद में वाग्विवेक (मन्त्रतत्त्व) का विवरण है।

(७) प्रश्न - वाग्विवेक की शिक्षा कैसे प्राप्त की जाती है और उसे व्यवहार में कैसे लाया जा सकता है?

उत्तर - वाग्विवेक ज्ञान अत्यन्त सूक्ष्म है। यही मन्त्रतत्त्व है। वायुतत्त्व (प्राणायाम) का ज्ञान हुए विना इसे नहीं समझा जा सकता क्योंकि आलि-कालि द्वारा त्र्यक्षर का निष्पादन करके स्थिति-व्युत्थान में नियुक्त चतुर्मण्डलक्रम से प्राणायामात्मक वज्रजाप किया जाता है। इसी को सन्ध्याव्याकरण महाव्याख्या-तन्त्र के उद्धरण से यहाँ विस्तार से स्पष्ट किया गया है।

(८) प्रश्न - वायु को पञ्चात्मा दशसंज्ञकः कहा है कृपया इसे स्पष्ट करें?

उत्तर - प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, नाग, कूर्म, कृकर, देवदत्त और धनञ्जय ये दस वायु हैं। इन्हीं को यथारुतार्थ में कोटाक्ष, कोटव, कोट, कोटाभ, कोटीरक, कोलाक्ष, कोलव, कोल, कोलाभ और कलि कहा है। तन्त्रान्तर में ये प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, उद्वाह, विवाह, संवाह, प्रवाह और निर्वाह नाम से जाने जाते हैं।

(९) प्रश्न - ये दस वायु शरीर में कहाँ रहते हैं और क्या करते हैं?

उत्तर - इन में प्रथम पाँच कायविभाग में स्थित रहकर कायव्यापार करते हैं और शेष पाँच चक्षुरादि आयतनों में रहकर इन्द्रिय व्यापार करते हैं। इनकी क्रियाएँ विस्तार से बताई हैं। ये ही दस वायु पहले श्वास-प्रश्वास रूप, फिर वाय्वादि चतुर्मण्डलात्मक, फिर पञ्चभूतात्मक, फिर आदर्शादि पञ्चज्ञानात्मक, फिर सितादि पञ्चरश्म्यात्मक, फिर त्र्यक्षराधार रूप होकर मन्त्रात्मक वाग्व्यवहार करवाते हैं और अन्त में अनाहत में व्याप्त होकर निःस्वभाव हो जाते हैं।

(१०) प्रश्न- भगवन्! ये दस वायु शरीर में रात-दिन कैसे स्फरण और संहरण करते हैं?

उत्तर - इस प्रश्न का उत्तर वज्रमाला योगतन्त्र के उद्धरण से विस्तार पूर्वक दिया गया है।

(११) प्रश्न- वायु तत्त्व का ज्ञान हो गया अब कृपा करके मन्त्रतत्त्व का लक्षण जानना चाहता हूँ।

उत्तर - ये मन्त्र आलि-कालि (१६ स्वर, ३३ व्यञ्जन) से बनते हैं और अनाहत से उत्पन्न त्र्यक्षर इनका सार है अतः वही सब मन्त्रों का अधिपति है। वही देवतामूर्ति का निष्पादन करता है, सत्त्वधातुओं को उत्पन्न करता है, वज्रजाप द्वारा पूर्व कर्मावरणों की विशुद्धि करता है, शान्तिकादि कर्म करता है, वही आहार का शोधन, पाचन आदि करके नीरोग रखता है और पुनः अनाहत में प्रविष्ट हो जाता है। इसके बाद सन्ध्याव्याकरण महायोगतन्त्र के उद्धरणों से त्र्यक्षर की उत्पत्ति विस्तार से वर्णित है।

(१२) प्रश्न - ह्रस्व अकार समस्त वाक्प्रवृत्ति का कारण कैसे है?

उत्तर - गुरु बताते हैं कि कैसे १६ स्वर और ३३ व्यञ्जनों द्वारा शास्त्र का निर्माण होता है और कैसे उससे सब सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। इसी प्रसङ्ग में ह्रस्व अकार की महिमा वर्णित है। फिर स्वविकल्परूप निमित्त से लक्षणवाक्, पूर्वानुभूत विषयों के अनुस्मरण और प्रतिनिर्वृत्त विषय के अभाव से स्वप्नवाक्, सत्त्वों के पूर्वकृत कर्मों के अनुस्मरण से दौष्ठुल्यविकल्पाभिनिवेशवाक् और

अनादिकाल के प्रपञ्चाभिनिवेश दौष्ठुल्यबीजवासना से अनादिकालविकल्पवाक् यह चार प्रकार की वाक्प्रवृत्ति होती है। इसे पर्याप्त विस्तार से सोदाहरण समझाया गया है और कहा है कि इस अकार से उत्पन्न होने के कारण ही ये मन्त्र अक्षर (अविनाशी) कहलाते हैं। मणि, मन्त्र और औषधों का प्रभाव अचिन्त्य होता है। इसके बाद निष्पन्नानिष्पन्न सत्त्वधातुओं की यथाभूत वाग्विशुद्धि दर्शाई है।

चतुर्थ परिच्छेद में चित्तविवेक (मुद्रातत्त्व) का विवरण है।

(१३) प्रश्न- चित्तविवेक की शिक्षा कैसे ग्रहण की जाती है?

उत्तर - "चित्त का स्वभाव अमूल, अप्रतिष्ठित, अनालय, अलिङ्ग, अवर्ण और अतीन्द्रिय है इसलिए यह तर्क का विषय नहीं हो सकता" ऐसा भगवान् ने देशनापाठ में कहा है अतः इसे समझने के लिए जिज्ञासु को सर्वप्रथम वज्रयान का आश्रय लेकर योग्य कल्याणमित्र की आराधना करनी चाहिए । इसके बाद व्याख्यातन्त्रानुसार विज्ञानत्रय प्रकृत्याभास का अधिगमन करना चाहिए। इससे विज्ञानत्रय हेतुभूत स्वर्गापवर्गादि सकल पदार्थों का प्रक्षेप करके वह स्वयं त्रिधातुक इन्द्रिय प्रविचय विज्ञानत्रय रूप हो जाता है।

इस विषय को भद्रपालि परिपृच्छासूत्र के महौषधि प्रकरण के उद्धरण से विस्तारपूर्वक समझाया गया है। जैसे बीज पहिले अङ्कुर फिर वृक्ष फिर फल होता है और बीज का जो रस मधुरादि होता है वही फल का भी होता है। इसी प्रकार यह विज्ञानधातु भी जहाँ- जहाँ जाता है वहाँ-वहाँ उसकी वेदना भी जाती है। यह पुण्य-अपुण्य, कुशल-अकुशल आदि सब समझता है। इसी को चित्त या मन कहते हैं। इसका शरीर के किसी अवयव में स्थान नहीं होता किन्तु इसके विना भी शरीर निष्चेष्ट होता है। इसीलिए इसे अदृष्ट-सत्य कहते हैं। जबतक चित्त का वास्तविक ज्ञान (विवेक) नहीं होता तब तक संवृत्तिसत्य नहीं जाना जा सकता। महायान में उक्त परिकल्पित, परतन्त्र और परिनिष्पन्न तथा राग, द्वेष, मोह आदि तीन-तीन चित्तभेदों को तो सब जानते हैं किन्तु वज्रयान में इसके

पर्याय हैं- आलोक आलोकाभास आलोकोपलब्धि, शून्य अतिशून्य महाशून्य, चित्त चैतसिक अविद्या, राग विराग मध्यराग। इनमें प्रत्येक का स्वरूप लक्षण विस्तार से विवेचित किया गया है। इसी प्रसङ्ग में प्रज्ञाज्ञान प्रकृति के ३३, उपायज्ञान प्रकृति के ४० तथा आलोकोपलब्ध ज्ञान प्रकृति के ७, कुल ८० क्षणों के नाम भी गिनाये गये हैं। ये ८० प्रकृतियाँ स्त्री-पुरुष यौनिभेद से सम्पूर्ण प्राणियों में रहती हैं।

(१४) प्रश्न- यह तो सभी जानते हैं परन्तु इसमें आगम का प्रामाण्य क्या है?

उत्तर - भगवान् ने मन्त्र शब्द की व्युत्पत्ति करते समय ही कहा है-

प्रतीत्योत्पद्यते यद्यदिन्द्रियैर्विषयैर्मनः ।
तन्मनस्त्वशीति ख्यातस्त्रकारस्त्राणनार्थतः ।।

(१५) प्रश्न - प्रज्ञाज्ञान शून्यमात्र है, उपायज्ञान भी अतिशून्य मात्र है और आलोकोपलब्धज्ञान महाशून्य मात्र है, तब यह विज्ञानत्रय निराकार स्वरूप होगा? फिर यह रात-दिन शरीर में स्फुरण-संहरण कैसे करता है? और इसे जाग्रत स्वप्नादि १६० प्रकृतियों का अनुभव कैसे होता है? कौन मुक्त है और किससे?

उत्तर - यद्यपि विज्ञानत्रय का कोई रूपादि नहीं होता किन्तु साभास वायु के साथ वह जाग्रत रहता है। जैसे वायु का कोई रूप नहीं होता फिर भी वृक्षों के हिलने, आंधी आने या शीतोष्णादि स्पर्श से वायु के अस्तित्व का अनुमान होता है वैसे ही विज्ञानत्रय का कोई रूपादि नहीं होता फिर भी रूपावभासादि तत्तत् कारणों से उसकी प्रतीति होती है। विज्ञानसंक्रान्तिसूत्र और अनुत्तरसन्धि के उद्धरणों से इसे विस्तार से समझाया गया है, अन्त में निष्कर्ष है कि चित्त की समग्र स्थितियों को तथागत ही समझते हैं अतः वे मुक्त हैं और जो कर्मवादी इस विवेक से रहित हैं वे बार-बार जन्ममरण के चक्कर में भटकते रहते हैं।

पञ्चम परिच्छेद कर्मान्तविभाग परिच्छेद है जिसमें विज्ञान की विचित्रता पर पुनः जिज्ञासा व्यक्त की है।

(१६) प्रश्न - जब विज्ञानत्रय प्रकृत्याभास अरूपी है, वायुधातु अरूपी है और कर्म भी अरूपी है तो सर्वथा परिणाम शून्य हुआ? तब इस अनादि भवचक्र में मनोमय शरीर बंधा नहीं होना चाहिये। ऐसे ही १६० प्रकृतियों द्वारा उत्पन्न कुशल-अकुशल जब यहीं प्रथम क्षण में उत्पन्न होकर दूसरे में नष्ट हो जाते हैं तो पुनः परलोक में उनका फल भोग कैसे होता है? क्या वे कहीं अन्यत्र से आते हैं या अपने ही चित्त की वासना से उत्पन्न होते हैं?

उत्तर - पहिले शुभाशुभ कर्मों का लक्षण समझो। दस कुशल कर्मपथ हैं इनके विपरीत दस अकुशल कर्मपथ हैं। ये सभी काय वाक् चित्त से उत्पन्न होते हैं। वज्रोष्णीषतन्त्र के उद्धरण द्वारा यहाँ स्पष्ट किया गया है कि कायदुश्चरित ३ प्रकार के, वाग्दुश्चरित ४ प्रकार के और चित्तदुश्चरित ३ प्रकार के होते हैं जिनसे नरकपात होता है। इन सबके स्वरूपों का विस्तार से वर्णन करके कहा है कि अज्ञानी कायवाक्चित्तदुश्चरित के इस प्रकृत्याभास वायुवाहन स्वभाव को न समझ कर अहंकार से मैं और मेरा के चक्कर में शुभाशुभकर्म करते हैं फलतः सुगति-दुर्गति भोगते हैं। प्रकृत्याभासक्रम से चित्तविवेक को समझने वाला ज्ञानी उसे न अपना मानता है और न उसे किसी प्रकार का विकल्प होता है, इसलिए उसकी कायवाक्चित्त से उत्पन्न शुभाशुभ प्रकृतियाँ क्षण में उत्पन्न होती हैं और विषयों का उपभोग कर दूसरे क्षण में प्रभास्वर में लीन हो जाती हैं। इसे अनुत्तरसन्धि तथा किन्नरराजपरिपृच्छासूत्र के उद्धरणों से स्पष्ट करके अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमिता में सुभूति के - "भगवन्! यदि सभी धर्म विविक्त हैं, शून्य हैं तो फिर प्राणियों को संक्लेश या व्यवदान क्यों होता है? ऐसा नहीं होना चाहिये।" इस लम्बे प्रश्नोत्तर प्रकरण से इसे पुष्ट किया गया है कि मैंने वही सर्वत्र उपदेश दिया है कि चित्त के संक्लेश से प्राणी कष्ट पाते हैं और चित्त की विशुद्धि से मुक्त हो जाते हैं। इसी को युक्ति और आगम द्वारा कृपालु सर्वतथागत दुःखसमुद्र में डूबते सत्त्वों को क्लेशों का स्वभाव और उनकी विशुद्धि का उपाय बताकर और संवृतिसत्य को भी परमार्थसत्य से विशुद्ध कर भूतनयात्मकसमाधि अर्थात् तत्त्वज्ञान में प्रतिष्ठित करते हैं।

छठा परिच्छेद संवृतिसत्यमेलापक परिच्छेद है।

(१७) प्रश्न - कायविवेक में देवता की भावना करना बताया है किन्तु इससे देवता का आकार (काय) तो नहीं बनता, विना आकार की भावना कैसे की जाय । काय तो परमाणुसमूह के संघटन को कहते हैं। वाग्विवेक से केवल वाग्जाप मात्र का परिज्ञान होता है और चित्तविवेक भी नहीं क्योंकि चित्त तो केवल आभासमात्र है। तब ज्ञानमात्र से सर्वाकारवरोपेत लक्षणान्वित देवता-स्वरूप की निष्पत्ति कैसे होती है?

उत्तर - देवतातत्त्व तो अचिन्त्य है, उसे गुरुपर्वक्रम से ही जाना जा सकता है। स्वचित्त का यथाभूत परिज्ञान ही स्कन्ध-धात्वायतनादि के अभाव में ज्ञानत्रयप्रकृत्याभास मात्र से सर्वाकारवरोपेत देवतारूप का ग्रहण होता है। यही बुद्धों का मनोमयकाय कहलाता है।

(१८) प्रश्न - भगवान् ने सर्वत्र देशनापाठ में कहा है कि "कायाधार के विना चित्त की प्रवृत्ति नहीं होती और चित्त के विना काय की उपलब्धि नहीं" तब फिर केवल चित्तमात्र से हस्तपादादि युक्त सर्वाकारवरोपेत देवतादेह की निष्पत्ति कैसे होगी, इसे अनुभवी लोग भी आगम ज्ञान के विना नहीं जान पाते साधारण व्यक्ति को इसका ज्ञान कैसे होगा ?

उत्तर - जो सूत्र-तन्त्रादि में प्रवृत्त होकर उत्पत्तिक्रम की भावना करते हैं और मायोपम, स्वप्नोपम आदि उपमाओं से समझाते हैं वे स्वाधिष्ठानोपदेश ज्ञानमात्र से मनोमय देवतानिष्पत्ति को नहीं जानते। तथ्य (संवृतिसत्य) तो चित्त वर्ण संस्थान रहित आभासमात्र होता है, किन्तु साभास आलोकत्रय और वायुधातु साधारण लघु होते हैं, अतः विज्ञान वायु से संबद्ध हो जाता है और उससे सर्वज्ञगुणोपेत मायोपम देवतास्वरूप की उत्पत्ति हो जाती है। इस विषय को विज्ञानसंक्रान्तिसूत्र और वैरोचनाभिसंबोधिसूत्र के उद्धरणों से विस्तार पूर्वक समझाया गया है।

(१९) प्रश्न - मनुष्य चिरकाल तक क्यों और कैसे सोता है और स्वप्न में इस देह को छोडकर स्वर्ग या देशान्तर में जाकर पञ्चकामगुणों का उपभोग कर

पुनः इसी देह में लौट आता है तथा स्वप्न के शुभाशुभ फलविपाक को भोगता है। क्या स्वप्न और जाग्रदवस्था के प्रकार भिन्न-२ होते हैं?

उत्तर - इसका उत्तर पांच श्लोकों में दिया है जिनका सारांश है कि स्कन्ध धात्वायतनादि में दोनों ज्ञान समानरूप से रहते हैं किन्तु शून्य की महत्ता अधिक होने से सोया हुआ व्यक्ति वायु के वेग से स्वप्न देखता है। स्वप्न और जाग्रदवस्था में कोई भेद नहीं है क्योंकि जाग्रत होने पर भी व्यक्ति स्वप्न के शुभाशुभ फल की इच्छा करता है। जबतक कृत कर्मों के फल का परिपाक नहीं हो जाता तबतक वह वायु इसी प्रकार संक्रमण करता रहता है और अन्त में मृत्यु हो जाती है। जिनेन्द्र दशों दिशाओं में व्याप्त हैं किन्तु उनके शरीर में अस्थि मज्जा मांसादि कुछ नहीं है फिर भी वे प्राणियों के हितार्थ निर्माणकाय धारण करते हैं। इसीप्रकार चित्त भी क्रम से सोता-जागता रहता है। इसलिये सब धर्म स्वप्नोपम और सत्य-असत्य-उभयाभाव रूप हैं।

इसके बाद सर्वकर्मावरण-विशुद्धिसूत्र के उद्धरण से इसे विस्तार पूर्वक समझाकर ज्ञानवज्रसमुच्चयमहायोग-तन्त्र के उद्धरण से मायोपम दृष्टान्त देकर कहा है कि त्रैकालिक सांसारिक दुःख से विमुक्ति के लिये प्रयत्नपूर्वक वज्रगुरुओं की आराधना करनी चाहिए और स्वाधिष्ठानक्रम का उपदेश लेकर विशुद्धि का उपाय ढूंढना चाहिए।

सप्तम परिच्छेद परमार्थसत्य मेलापक परिच्छेद है।

(२०) प्रश्न - संवृतिसत्य समझ लिया अब परमार्थसत्य के विषय में जिज्ञासा है।

उत्तर - संवृतिसत्य तो स्वाधिष्ठानक्रम से निष्पन्न वज्रसत्त्वरूप द्वादशमाया दृष्टान्त से प्रतिपादित किया किन्तु परमार्थसत्य तो अमूर्त निरुपम और प्रत्यात्मवेद्य है अतः गुरुमुख से ही उसे जाना जा सकता है। देशनापाठ में कहा है- जैसे घडे के अन्दर जले दीपक से घडे के बाहर प्रकाश नहीं होता, जब घडा फोड दिया जाता है तो बाहर भी प्रकाश हो जाता है। इसी प्रकार काय एक घडा है और तत्त्व दीपक है, गुरुवाक्यों द्वारा कायघट के नष्ट होने पर बुद्धज्ञान स्पष्ट

हो जाता है। इसके लिए गुरु को तुष्ट कर उनकी आज्ञा से तन्त्रोक्त विधान पूर्वक गणमण्डल का निर्माण करे। सुशिक्षित मुद्रा गुरु को अर्पण करे। गुह्योत्तर पूजा के बाद नम्रतापूर्वक स्तुति करके आचार्य को ही तथागत मानकर उनसे अभिसंबोधि की अध्येषणा करे और आचार्य उसे जिनमुद्रा तथा समय का उपदेश एवं अभिषेक दे, जिससे वह भी आचार्य कोटि में आ जाय। तब उसे सम्प्रदायानुसार गुरुपर्वक्रमागत अभिसम्बोधि करावे।

यह अभिसंबोधि दो प्रकार की होती है - बाह्य और आध्यात्मिक। इसमें पहले बाह्य और बाद में आध्यात्मिक का क्रम बताकर शब्दों में किसी प्रकार का भ्रम न हो इसलिए परमार्थसत्य के नाम पर्याय गिनाये गये हैं और गुह्यसमाज तथा योगतन्त्र से अभिसंबोधि के लक्षण उद्धृत किये हैं। इस प्रकार वज्रशिष्य दो प्रकार की अभिसंबोधि, दो प्रकार के ध्यान, परमार्थसत्य के नामपर्याय जानकर "अहो बुद्ध अहो धर्म-------- " का पाठ करके प्रज्ञा-ज्ञानाभिषेक ग्रहण करे।

अष्टम अप्रतिष्ठितनिर्वाणधातुमेलापकसंशयपरिच्छेद है।

(२१) प्रश्न - परमार्थसत्य का ज्ञान होने पर वह निःस्वभाव होकर कैसे व्यवहार करता है? वह कौन है जो अवैवर्तिक होता है? मोक्ष क्यों होता है और किससे मुक्त होता है?

उत्तर - वज्रयान में उत्पत्तिक्रम के अभ्यास से आठवीं भूमि को प्राप्त कर जब तक निष्पन्नक्रम को नहीं प्राप्त कर लेता तब तक कल्याणमित्र की आराधना करता है। काय-वाक्-चित्तविवेक प्राप्त करने पर भी दशमी भूमि में जाकर मायोपमसमाधि को पाता है। उसके बाद आभासविशुद्धि होती है। निराभास होने पर ही युगनद्धवाहि-क्रम से बुद्धकाय का साक्षात्कार होता है और वज्रोपमसमाधि से सर्वगुणसम्पन्न होकर विचरण करता है। इसी को लंकावतारसूत्र के उद्धरण से समझाया है। मायोपमसमाधि संपन्न होने पर भी जब तक परमार्थसत्य में प्रवेश नहीं करता तब तक अवैवर्तिक नहीं होता, इसलिये जब तक आभासत्रय विशुद्धि नहीं होती तब तक विज्ञान संकल्प रहता है, जब तक विज्ञान संकल्प

रहता है तब तक क्लेशवासना प्रबन्ध रहता है, इसी से पुनर्भव होता है। सर्वचित्तारहित(शून्य) होना ही विशुद्धि कहलाता है। कम्बलपाद के शब्दों में शब्दमय(वाक्) स्थूलरूप है और चित्त सूक्ष्मरूप है, इनकी विशुद्धि ही योगियों का परमपद है।

इसप्रकार अभिसंबोधिक्रम से जिसने प्रभास्वरपद प्राप्त किया है उसी को आलोकोपलब्धि, आलोकाभास और प्रज्ञाज्ञानोदय होता है। संसार के बन्धन से मुक्त होना ही मोक्ष है। इसीको गुह्यसमाज, गुह्यसिद्धि और नागार्जुनपाद के उद्धरणों से स्पष्ट किया गया है। इसके बाद युगनद्धात्मक परिनिष्पन्नकाय के नामपर्याय गिनाये गये हैं और शूरङ्गमसमाधिसूत्र के उद्धरण देकर इसकी विशेषता बताई है।

नवम परिच्छेद बोधिसत्त्वचरितधर्मोदयाभिसंबोधिप्रपञ्चतामेलापकसंशयपरिच्छेद है।

(२२) प्रश्न- श्रुतचिन्तामय सकलक्रमतत्त्वाधिगमपरिच्छेदक गुरु द्वारा अनुज्ञाप्राप्त योगी को हेतुत्व व्यवस्था में कैसे रहना चाहिए, कैसे व्यवहार करना चाहिए, कैसे भावना करनी चाहिए और कैसे चर्या का आचरण करना चाहिए?

उत्तर - जब दो सत्यों (संवृति और परमार्थ) का अद्वय हो जाता है तो हेतु-फल का, प्राप्य-प्रापक का, भाव्य-भावक का भी अद्वय हो जाता है, तब साधक, साधन और साध्य का अनुभव ही नहीं होता। कौन किसकी भावना करेगा और क्यों? फिर भी अवस्थाभेद से हेतु-फल (कारण-कार्य) लोक में देखे जाते हैं, अन्यथा अहेतुक दोष होगा। इसलिए भावक-भावना-भाव्य और साधक-साधना-साध्य रूप से व्रतचर्यादि करने पडते हैं। तब संवृतिसत्य साधक होता है, परमार्थ सत्य साधन होता है और अद्वयज्ञान साध्य होता है तथा हेतु-फल के अद्वय की भावना रहती है। अनिमित्तसमाधिसमापन्न योगी को "अनादिक्लेश-वासनामलों का त्याग कर अनाभोग फल की चर्या करता हूँ या नहीं करता हूँ" ऐसा न सोचते हुए लोकधर्म को छोडकर योगचर्या करनी चाहिए।

भगवान् ने हीनाधिमुक्ति वालों के लिए चतुरार्यसत्यों का अधिगम करके विरागचर्या करने का, महायानियों के लिए अष्टविज्ञानकायादि धर्मवैराग्य का अधिगम करके भूमिपारमितादि चर्या का और गम्भीराधिमुक्तिकों के लिए सत्यद्वय का अधिगम करके रागधर्मचर्या का प्रतिपादन किया है। चूंकि विशिष्ट कारण से विशिष्ट कार्य की उत्पत्ति होती है इसी प्रकार पञ्चकामोपभोग भाव को प्राप्त कर यदि अद्वयसिद्धि रूप फल की कामना करे तो सफल नहीं होगा, क्योंकि पञ्चेन्द्रियनिग्रह न होने से दुष्करव्रतचर्यादि में उसके चित्त की एकाग्रता भङ्ग हो जायगी और सर्वकामोपभोगपूर्वक चर्या करे तो सिद्धि प्राप्त कर लेगा, ऐसा गुह्यसमाज में स्पष्ट किया है। अतः योगी को रागचर्या करनी चाहिए।

(२३) प्रश्न- राग, द्वेष और मोह ये तीन विष बताये हैं। इन रूपादि विषयों से क्लेश उत्पन्न होगा और चर्या में विघ्न होने से सिद्धि कैसे होगी?

उत्तर - रागादि जन्य क्लेश श्रावकादि उपलम्भदृष्टि वालों के लिए विघ्नकारक हो सकते हैं। क्योंकि उन्हें क्लेशस्वभाव का ज्ञान नहीं होता। जिन्हें क्लेशस्वभाव का परिज्ञान हो जाता है उनके लिए वे ही क्लेश बुद्धबोधि के हेतु हो जाते हैं। जैसाकि संवरतन्त्र में कहा है-

"अतः सुखं सुखेनैव सर्वबुद्धत्वमाप्यते।"

यह रागजबोधिचर्या तीन प्रकार की होती है- प्रपञ्चता, निष्प्रपञ्चता और अत्यन्त निष्प्रपञ्चता। तथागत या वज्रधर की उक्तियों में जो सर्वतथागतारश्लि का विस्तार किया गया है वही प्रपञ्चता है, निरन्तरता या व्यापी कार्यवशात् कहीं कहीं जो अरश्लि होती है वह निष्प्रपञ्चता है और सर्वसङ्ग को छोडकर केवल ध्यान, आहार-विहार और ज्ञानमुद्रा की समापत्ति का अभ्यास करना अत्यन्त निष्प्रपञ्चता है। लकडी जले या पत्ती या रुई आदि कुछ भी जले अन्त में उसकी राख ही होती है, इसी प्रकार त्रिविध रागचर्या से अन्त में महावज्रधर ही प्राप्त होता है।

गुह्यसमाजतन्त्र में केवल निष्प्रपञ्चता और अत्यन्त निष्प्रपञ्चता का ही निर्देश दिया है अतः यहाँ सर्वबुद्धसमागमयोगडाकिनीजालसंवरतन्त्र के आधार पर

प्रपञ्चता का विस्तार से वर्णन किया है और चर्याविधि का क्रम बताया है, जिसमें त्रिपुर देवगृह का निर्माण, मुद्रासाधन के लिए प्रवेश, रूपविषयानुभव के लिए स्त्रीमायाकारप्रदर्शन, भक्ष्यभोज्यादि से कायवज्र को तृप्त करके स्पर्शविषय का आस्वादन, विभिन्न समाधियों द्वारा शून्यतादृष्टिनिग्रह, कुत्सित एवं मिथ्यादृष्टि-निग्रह करता हुआ साधक बुद्धनाट्य करता है। इसीक्रम में गीत-प्रतिगीत आदि में कायछोमा और वाक्छोमा का व्यवहार करता है। इसके बाद वाक्छोमा और कायछोमा का विस्तार से परिवर्तनक्रम बताया गया है। इसप्रकार लौकिक और मनोमयकाय को छोडकर प्रसन्नचित्त से योगिनियों के साथ रमण करता हुआ अन्तर्धान होकर अष्टगुणैश्वर्यसम्पन्न बुद्धक्षेत्रों में विचरण करता है। इसके बाद जो इस चर्या में असमर्थ हैं उनके लिये श्रीसंवरतन्त्र के निर्देशों को उद्धृत किया गया है।

दशम परिच्छेद निष्प्रपञ्चचर्यामेलावणसंशयपरिच्छेद है-

(२४) प्रश्न - सप्रपञ्चचर्याविधान ज्ञात हुआ अब निष्प्रपञ्चताचर्या का निर्देश करने की कृपा करें।

उत्तर - अब गुह्यसमाजतन्त्राम्नाय के अनुसार निष्प्रपञ्चचर्याक्रम बताते हैं। प्रथम महामुद्रासाधन का क्रम दिया है जिससे साधक पिण्डग्रहानुभेदक्रम से मुद्रासहित परमार्थसत्य में प्रवेश करता है। उसके बाद लोचनादिदेवी और चतुर्ब्रह्मविहारविशुद्धि द्वारा स्वाधिष्ठानक्रम से शीघ्र परमानन्द प्राप्ति के लिये नव नाट्यरसों से क्रीडा करता है और बार-बार पञ्चतथागतस्वभाव वाले पञ्चकाम-गुणों का स्वाद लेता है। रूपादि विषयों का अनुभव करता हुआ मुद्रा के साथ सर्वभावस्वभाव प्रतिपादन के लिए एकान्त प्रदेश में अभ्यवहार करता है। वहाँ उसके लिए मुद्राबन्ध, मण्डल, कुण्ड, चैत्य, पुस्तकवाचन, शरीर को कष्ट देने वाले व्रतादि, प्रतिमाओं को प्रणाम करना, श्रावक प्रत्येकबुद्ध आदि की शरण जाना, तिथि नक्षत्रादि कालक्षेपण आदि की कोई आवश्यकता नहीं रहती। वह केवल अध्यात्मरूप से ही सब संपादित करता है। यदि वह असमर्थ है तब भी उसे पञ्चगुह्यमहातत्त्वात्मक रूप से चर्या का अभ्यास करना चाहिए। आगे

विस्तार से इसका क्रम बताया है। इस प्रकार वह ज्ञानभूमि को प्राप्तकर परम महासुख का अनुभव करता है। ऐसे षट्कामावचर प्रतिक्षण परमानन्दसुख का आस्वादन करते हैं और सदा निष्पन्नावस्था में रहते हैं। अन्त में सर्वदेव-समागमतन्त्रानुसार महासुख का लक्षण बताया है।

एकादश परिच्छेद अत्यन्तनिष्प्रपञ्चचर्यामेलावण संशयपरिच्छेद है।

दशम परिच्छेद में ही वज्रगुरु ने निष्प्रपञ्च और अत्यन्तनिष्प्रपञ्चचर्याओं के वर्णन का दिग्दर्शन कर दिया था अतः यहाँ प्रश्न नहीं है। गुरु कहते हैं- अब अत्यन्तनिष्प्रपञ्चताचर्या का विधान बताते हैं। इसे ध्यानसमुच्चय भी कहा गया है। निष्प्रपञ्चसाधना के बाद इसमें प्रवेश होता है, जिसके लिए आवश्यक है कि वह पहले अनादि सांसारिक दुःखानुभवों का स्मरण करता हुआ निर्वाणसुख की आकांक्षा से सङ्ग का परित्याग करे, यहाँ तक कि राजैश्वर्य को भी दुःख ही समझे। दूसरे तिलमात्र भी किसी वस्तु का परिग्रहण न करे। तीसरे परमार्थसत्य की प्राप्ति के लिए कायजीवन से भी निरपेक्ष रहे। बाह्यमुद्रा का भी त्याग कर हृदयगत ज्ञानमुद्रासमापत्ति से शीघ्र ही महावज्रधरपद को प्राप्त करूँगा ऐसा निश्चय कर ले। साधना का क्रम यह है-

जब तक स्कन्धसमूह है तब तक विज्ञानत्रय स्वभाव प्रकृत्याभास का स्व-परभेद संसार में रहता है, प्रकृत्याभास की दूसरी प्रकृति वायु के राग विराग मध्यरागादि से दशों दिशाओं में घूमती है। रौद्रसौम्यादि १६० प्रकृतियाँ रात-दिन मन में रहकर अविद्या से निरुद्ध हो जाती हैं। पुनः जब जाग्रत होती हैं तब वायुवशात् शरीर में व्याकुलता होती है और जबतक चक्षुरादि विषय नहीं मिल जाते अनादि काल के अभ्यास से उन्हीं में भटक जाती हैं। इसलिए जन्मपरम्परा से नैरात्म्यधर्म का अभ्यास करके कुशल व्यक्ति को प्रकृत्याभास को मिलाकर परमार्थसत्य का आलम्बन करना चाहिए। इसका क्रम यह है-

स्कन्धादि सूक्ष्मधातु में प्रवेश कर जाते हैं, सूक्ष्मधातु चित्त में, चित्त चैतसिक में, और चैतसिक अविद्या में प्रवेश करके सो जाता है। उस समय विस्मृति हो जाती है और फिर विस्मृति भी नहीं रहती केवल ज्ञानस्वभाव प्रभास्वर रह जाता

है, फिर वायु भी छूट जाता है और प्रकृति चलती रहती है, नहीं तो जब तक स्वप्रान्तरादि विज्ञान नहीं चलेगा तब तक वह सोई ही रह जायेगी। जब वह प्रभास्वर को देखती है वही प्रत्यात्मवेद्य कायवाक्चित्तरहित परमार्थसत्य या अध्यात्माभिसंबोधि कहलाती है। इसी से कायमण्डलस्थ तथागतव्यूह का भेदन कर तथता में प्रवेश करावे तो शीघ्र सिद्धि मिलती है और प्रपञ्चता-निष्प्रपञ्चता की अपेक्षा अतिशीघ्र स्वरूपपरिवर्तन होता है, इसी को महासन्ध्याव्याकरणमहा-योग के उद्धरणों से स्पष्ट किया है।

इसके बाद योगी भुसुकुचर्या का आचरण करे, उसका क्रम- भु- भुक्त्वा, केवल भोजन मात्र का अनुसरण करता है, सङ्ग त्याग कर कुछ भी चिन्ता नहीं करता। सु- सुप्त्वा, अविद्योपलक्षित अंकुशाकार विज्ञान को आवृत करके विद्योपलक्षित निर्मलस्वभाव प्रभास्वर का साक्षात्कार करता है। कु- कुटिं गच्छेत्, अर्थात् केवल विण्मूत्रादि उत्सर्जन करे कायवेदना विषयेन्द्रिय स्वभाव को न सोचे। इस अत्यन्तनिष्प्रपञ्च चर्या में उन्मत्तव्रत का भी आचरण करना चाहिए। इस क्रम को ११ श्लोकों में समझाया गया है। इस त्रिविध चर्या को पक्ष, मास या ६ मास में अभ्यास करने वाले को महामुद्रासिद्धि के सूक्ष्मरूप लघुस्पर्शादि लक्षण दिखाई पडते हैं।

(२५) प्रश्न- यदि साधक सत्यद्वय का साक्षात्कार करने पर भी पूर्व-वासनावशात् कृषिवाणिज्यादि में व्यग्र होने से या सामग्री के अभाव से तन्त्रोक्त चर्या न कर सके और मर जाय तो क्या उसका पुनर्भव होगा या वह वज्रधरत्व को प्राप्त करेगा?

उत्तर - नापनेयमतः किञ्चित् प्रक्षेप्तव्यं न किञ्चन ।
द्रष्टव्यं भूततो भूतं भूतदर्शी विमुच्यते ।।

निष्पन्नक्रम के इस वचन के अनुसार उसे भूतदर्शी होना चाहिए। भूतदर्शन से शाश्वत-उच्छेद संक्रान्ति आदि दृष्टियाँ निरुद्ध हो जाती हैं। फिर भी उसे व्यवहार की दृष्टि से निश्चर्या करनी चाहिए। ये स्कन्धादि उडकर तो परलोक में उसके पास नहीं जायेंगे, नित्यत्व दोष होगा। परलोक मृत्यु के बाद ही मिलेगा

अन्यथा अहेतुक दोष होगा। इसलिए जैसे दीपक से दूसरा दीपक जलता है, मुद्रा से दूसरी मुद्रा या ध्वनि से प्रतिध्वनि होती है ऐसे ही इसे समझना चाहिए। सुवर्णप्रभाससूत्र की- "न तो बुद्ध का परिनिर्वाण होता है और न उनके धर्म की क्षति होती है, प्राणियों के परिपाक के लिए वे परिनिर्वाण का निदर्शन करते हैं।" इस उक्ति के अनुसार शाक्यमुनि की सम्पूर्ण लीलाएँ परिनिर्वाण का ही निदर्शन करती हैं, अतः यदि तत्त्वज्ञ व्यक्ति उक्त चर्याएँ करता हुआ सम्पूर्ण दृष्टियों का त्यागकर मृत्यु को प्राप्त हो जाय तो वह भी परमार्थसत्य ही है। इसीलिए कहा है उत्पत्ति संवृतिसत्य है और मृत्यु परमार्थसत्य, गुरु की कृपा से इन दोनों के अद्वय भाव का जिसे ज्ञान हो गया वह मुक्त हो जाता है। जैसे पहाड की चोटी से कोई अचानक गिर जाय तो वह गिरना न चाहते हुए भी गिरता ही है ऐसे ही गुरुकृपा से उनके उपदेश का अनुसरण करता हुआ यदि मुक्ति न भी चाहे तब भी मुक्त हो ही जाता है।

आत्मनिवेदन

प्रस्तुत ग्रन्थ की एकमात्र मातृका हमें उपलब्ध हुई, वह भी ५ परिच्छेद नेपाल से और ६ परिच्छेद एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता से। प्राचीन ताडपत्र पर लिखी हुई एक ही मातृका दो जगह चली गई थी। जिसके स्थान-स्थान पर ताडपत्र टूट जाने से पाठ खण्डित हो गया था। नेपाल से जो प्रतिलिपि की गई थी उसमें भी खण्डित अंश वैसा ही छोड दिया था, ऐसी स्थिति में किसी ग्रन्थ का संपादन करना कितना दुष्कर कार्य है इसे भुक्तभोगी ही समझ सकता है। केवल भोटानुवाद ही पूर्ति का आश्रय था। अनुवाद से मूल का उद्धार करने में ग्रन्थकार के शब्द यथावत् आ जायँ यह सर्वथा संभव नहीं है।

इसमें कई नये शब्दों का प्रयोग देखने को मिला जैसे कठिन के लिये कक्खट, शौचालय के लिये कुटि, खाद के लिये कुटसंकर आदि। ऐसे प्रयोग ग्रन्थकार ही कर सकता है अतः मेरी अल्पज्ञता के कारण इसमें कहीं त्रुटियों का होना असंभव नहीं। अतः कृपालु विज्ञजनों से निवेदन है जहाँ कोई त्रुटि मिले

उसकी सूचना देकर अनुगृहीत करें ताकि अगले संस्करण में उसे सुधारा जा सके।

इसके भोट पाठ से मिलान करने में संस्थान में मूलशास्त्र के वरिष्ठ प्राध्यापक डा० वङ्छुग दोर्जे नेगी जी का पूर्ण सहयोग रहा है इसके लिये उनका आभार प्रकट करता हूँ। इसके सम्पादन, अक्षर-योजन (कम्पोजिंग), संशोधन आदि में मेरे सहयोगी डा० बनारसी लाल, ठिनलेराम शाशनी एवं डा० कु० छेरिङ्ग डोलकर ने अथक परिश्रम किया है मैं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हुआ साधुवाद करता हूँ।

इसमें वज्रशिष्य द्वारा पूछे गये प्रश्न ऐसे हैं जो प्रायः सभी के मन में उठ सकते हैं अतः संस्कृत न समझने वाले भी इससे ज्ञानार्जन कर सकें इसलिये वर्ण्यवस्तु के रूप में हिन्दी में इस का संक्षेप इस उपोद्घात में दे दिया है। अन्त में भगवान् तथागत व ग्रन्थकार आचार्य आर्यदेव को प्रणाम कर ग्रन्थ को विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत करता हूँ।

विद्वज्जनविधेयो
जनार्दनपाण्डेयः

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी- २२१००७

***

विषयानुक्रमणी

प्रस्तावना

हिन्दी v-vi

अंग्रेजी vii-viii

भोट ix-xi

उपोद्घात xiii-xxxiii

विषयानुक्रमणी xxxiv-xxxix

प्रबोधनमेलावणसंशयपरिच्छेदः प्रथमः १-७

ग्रन्थावतारप्रतिज्ञायां मोक्षकामैरर्थशरणैर्भूत्वा तत्त्वान्वेषणं कर्तव्यमित्युपदेशः १

संवृतिसत्यपरमार्थसत्ययोर्युगनद्धवाहिक्रम एव तत्त्वमिति तत्त्वलक्षणप्रतिपादनम् २

विकल्पाभिनिविष्टास्तत्त्वं क्रमवृत्त्या शिक्षन्ते न युगपदिति सोदाहरणप्रतिपादनम् ४

शिक्षणस्य शूरङ्गमसूत्रोक्तक्रमनिदर्शनम् ४

शूरङ्गमसमाधिं शिक्षितुकामाय शिक्षणक्रमनिर्देशः ५

स्वचित्तधाराविशुद्धये सोपानक्रमप्रतिपादनम् ६

कायविवेकमेलावणसंशयपरिच्छेदो द्वितीयः ८-२०

स्वकायविवेकशिक्षणक्रमे कायस्य राशित्वप्रतिपादनम् ८

स्कन्धधात्वायतनानां सर्वतथागतपरमाणुघटितस्वभावनिर्देशः ८

शतकुलभेदप्रदर्शने स्कन्धस्वरूपनिरूपणं तत्र पञ्चाकारैर्भिद्यमानतथागतानामधिष्ठानत्वप्रतिपादनं च ९

चतुर्धातूनधिकृत्य पञ्चतथागताधिष्ठानत्वप्रतिपादनम् ११

प्राणादिवायूनामेकैकस्य व्यापारनिर्देशः १२

क्षितिगर्भादिमहाबोधिसत्त्वानां समाधिमधिकृत्य तथागतानामधिष्ठाननिर्देशः १३

विषयदेवतासमाधिमधिकृत्य दशवायुनामानि, तेषु प्राणादीनां स्कन्धव्यापारोद्वाहादीनामिन्द्रियव्यापारनिरूपणं तत्र तथागताधिष्ठानत्वं च १५

पञ्चज्ञानान्यधिकृत्य तथागताधिष्ठाननिरूपणम् १६

शतविधकुलानां संक्षेपेण पञ्चविधत्वप्रतिपादनम् १७

पञ्चाकाराणां त्रिविधत्वप्रतिपादनम् १८

कुलत्रयस्य त्रिवज्राभेद्यकायवज्रत्वप्रतिपादनम् १९

वाग्विवेकमेलावणसंशयपरिच्छेदस्तृतीयः **२१-३७**

वाग्विवेकस्य मन्त्रतत्त्वत्वं तत्कृते वायुतत्त्वस्योद्देशपदावतारणम् २१

उद्देशपदानां निर्देशः २२

'पञ्चात्मा दशसंज्ञकः' इत्यस्य व्याख्याप्रसङ्गेन वायुनामानि २३

वायूनां कार्यस्थाननिर्देशस्तथागताधिष्ठितिः रूपान्तरभावश्च २४

दशवायूनामेकानेकस्वभावेन काये स्फरण-संहरणप्रकारः २५

व्याख्यातन्त्रानुसारेण वायुतत्त्वविवेचनम् २६

व्याख्यातन्त्रानुसारेण मन्त्रतत्त्वविवेचनम् २७

त्र्यक्षरोत्पत्तिविवरणम् २८

ह्रस्वस्याकारस्य समस्तवाक्प्रवृतौ कारणत्वनिरूपणम् ३०

चतुर्विधा वाक्प्रवृत्तिः, मणिमन्त्रौषधिप्रभावस्याचिन्त्यत्वप्रतिपादनम् ३१

अक्षरविवेचनम् अकारप्रभावश्च ३२

निष्पन्नानिष्पन्नसत्त्वधातूनां यथाभूतवाग्विशुद्धिवर्णनम् ३४

चित्तविवेकमेलावणसंशयपरिच्छेदश्चतुर्थः **३८-४८**

चित्तस्वभावान्वेषणोपदेशः, विज्ञानत्रयप्रतिपादनं च ३८

विज्ञानत्रयस्य पर्यायनिर्देशः ४१

वज्रयाने विशेषेण पर्यायनिर्देशः क्रमनिर्देशश्च ४२

एकैकज्ञानोदये प्रज्ञाज्ञानस्य प्रकृतौ त्रयस्त्रिंशत्क्षणनामानि ४३

उपायज्ञानस्य प्रकृतौ चत्वारिंशत्, आलोकोपलब्धज्ञानस्य च
प्रकृतौ सप्त क्षणनामानि ४४

प्रकृतीनाम् अष्टनवतिक्लेशत्वद्वाषष्टिदृष्टित्वप्रतिपादनम् ४४

विज्ञानत्रयस्य निराकारत्वात् रागविरागादिषष्ट्युत्तरशतप्रकृतित्वम् ४४

विज्ञानत्रयस्य साभासवायुवेगेन लौकिकलोकोत्तरकृत्यसम्पादकत्व-
प्रतिपादनम् ४५

व्याख्यातन्त्रमाश्रित्य कर्मवादिसत्त्वानामनादिसंसारभ्रमणे दुःखानु-
भवनप्रतिपादनम् ४७

कर्मान्तविभागमेलावणसंशयपरिच्छेदः पञ्चमः ४९-५४

युक्त्यागमाभ्यां कर्मविशुद्धेर्विस्तरेण प्रतिबोधनम् ४९

संवृतिसत्यमेलावणसंशयपरिच्छेदः षष्ठः ५५-६०

देवतारूपग्रहणे बुद्धानां मनोमयकायत्वप्रतिपादनम् ५५

योगतन्त्रानुसारेण वज्रसत्त्वनिष्पत्तिहेतुप्रत्ययस्य विस्तरेण प्रतिपादनम् ५६

स्वप्नजाग्रद्दशयोर्नानाकारत्वविषयकप्रश्नस्य समाधानम् ५८

स्वप्नद्वारेण प्रतिबिम्बोपमदेवतारूपस्य प्रत्यात्मवेद्यत्वस्य सूत्रानुसारेण प्रतिपादनम् ५८

परमार्थसत्यमेलावणसंशयपरिच्छेदः सप्तमः ६१-६७

निरौपम्यस्य परमार्थसत्यस्य गुरुमुखादेव ज्ञानं भवतीति प्रतिपादनम् ६१

गुरोस्तोषणविधानं स्तोत्रोपहारश्च ६२

अभिसंबोधिक्रमस्य द्वैविध्यं बाह्यक्रमनिर्देशश्च ६३

ध्यानालम्बनक्रमनिर्देशः परमार्थसत्यस्य नामपर्यायाश्च ६४

प्रज्ञापारमितानामपर्यायाः, योगतन्त्रोक्तं संबोधिलक्षणं च ६५

प्रज्ञाज्ञानाभिषेकक्रमः, तस्य चिरसंक्रमाशीश्च ६६

अप्रतिष्ठितनिर्वाणधातुमेलावणसंशयपरिच्छेदोऽष्टमः ६८-७५

प्रभास्वराद् व्युत्थानक्रमनिरूपणम् ६८

कथं स्वसुखमनुभवति, अवैवर्तिको भवतीति प्रश्नसमाधानम् ६९

वज्रधरस्वरूपनिरूपणम् ७०

युगनद्धात्मकपरिनिष्पन्नवज्रकायस्य नामपर्यायाः ७३

वज्रोपमसमाधेर्वैशिष्ट्यम् ७४

बोधिसत्त्वचरितधर्मोदयाभिसंबोधिप्रपञ्चतामेलावण-संशयपरिच्छेदो नवमः **७६-९०**

भावनाविशुद्धिनिरूपणम् ७६

चर्याविशुद्धिनिरूपणम् ७७

निष्पन्नक्रमाधिगमरहितानां दुष्करचर्यापरायणानां सत्यद्वयज्ञानेऽपि बोधिप्राप्तिर्न भवतीति प्रतिपादनम् ७८

रागादयः क्लेशस्वभावाऽपरिज्ञानादपायहेतुकाः परिज्ञानाच्च बोधिहेतुका भवन्तीति निरूपणम् ८०

रागजबोधिचर्यायास्त्रिविधत्वम् ८१

प्रपञ्चताचर्यानिरूपणम् ८२

महामुद्रासाधनप्रवेशक्रमः ८४

वाक्छोमानिर्देशः कायछोमानिर्देशश्च ८७

कृशविभवानां कृते संवरानुसारेण चर्यानिर्देशः ८९

निष्प्रपञ्चचर्यामेलावणसंशयपरिच्छेदो दशमः **९१-९६**

निष्प्रपञ्चचर्याप्रतिपादने महामुद्रासाधनक्रमनिदर्शनम् ९१

साधनमण्डलं सम्पादयितुमशक्ताय साधनक्रमनिरूपणम् ९२

रूपवज्रादीनामसंवेद्यत्वे एकैकस्पर्शवज्रया सह सम्पुटयोगेन साधननिर्देशः ९४

अत्यन्तनिष्प्रपञ्चचर्यासंग्रहमेलावणसंशयपरिच्छेद एकादशः ९७-१०४

अत्यन्तनिष्प्रपञ्चचर्याप्रवेशे साधनाक्रमनिर्देशः ९६

परमार्थसत्यालम्बनानुक्रमनिर्देशः ९८

भुसुकुचर्याचरण-उन्मत्तचर्याचरणक्रमयोर्निर्देशः ९९

सिद्धिनिमित्तज्ञानं स्वप्ननिमित्तज्ञानं च १०१

दृष्टसत्यश्चेत् त्रिविधचर्याऽनाचरणेऽपि कालक्रियानन्तरं वज्रधरत्वमेव लभते न पुनर्भवमिति सिद्धान्तप्रतिपादनम् १०२

उपसंहारः १०३

परिशिष्टानि

उद्धृतश्लोकार्धानुक्रमणी १०५-११३

उद्धृतगद्यानुक्रमणी ११४-११५

उद्धृतग्रन्थसूची ११६-११८

ग्रन्थकार-मत-मतान्तरसूची ११९-११९

विशिष्टशब्दानुक्रमणी १२०-१५०

भोट-खण्डः १५३-३६५

***

नापनेयमतः किञ्चित् प्रक्षेप्तव्यं न किञ्चन ।
द्रष्टव्यं भूततो भूतं भूतदर्शी विमुच्यते ।।

न बुद्धः परिनिर्वाति न धर्मः परिहीयते ।
सत्त्वानां परिपाकाय परिनिर्वाणं निदर्शयेत् ।।

प्रथमः परिच्छेदः

ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय।

नमत खसमनिःस्वभावशुद्धं नमताशेषमनक्षरमवाच्यम्।
नमतानागतसर्वगं सुगतं नमत समस्ताशेषसर्वशून्यम् ।।

अत्र वज्रयाने द्विविधमन्त्रमुखचर्याचर्यैर्मन्त्रपरायणैरध्यात्मपरायणैः श्रुतिपारङ्गतैः सर्वसत्त्वानुग्रहार्थिभिः सूत्रो[1]क्तार्थवचनविस्पष्टीकरणार्थमनेकशृङ्गारललितपदवाक्यलोकगाथाऽऽ[2]र्याबन्धादिनिगूढशब्दरचनाप्रबद्धैः **सद्भावतन्त्रा**दुद्धृत्य बालप्रबोधनार्थं साधनाङ्गानि[3] क्रियन्ते। [4]युक्तमेतदासीत्कृत[त्रेता]द्वापरयुगेषु लोकानामायुरारोग्यसम्पद्दानशीलचर्यादिगुणसम्पन्नानां शास्त्रास्त्र(श्र)यपरामर्शात् तत्त्वज्ञानाभिनिविष्टानां ललितपदानि गूढशब्दद्वारेण तत्त्वं प्रतिपादितं तत्ते चाधिगच्छन्ति। इदानीं तु कलियुगे लोका आयुरारोग्यसम्पद्विहीनाः शठकपटदुष्टमदमात्सर्येर्ष्याशयाः प्रज्ञाहीना मिथ्यादृष्टयः कुकर्माभिरतयो यावल्ललितपदादिनिगूढशब्दार्थनिश्चयेष्वशक्तत्वात् तत्त्वं नान्वेषयन्ति। अतो बाह्यशास्त्रपरामर्षविक्षेपात्तत्त्वमनधिगम्य कालं कृत्वा शुभाशुभकर्मपरायणा भवन्ति। तस्मान्मोक्षकामानां न प्रयोजनं ललितपदशृङ्गारादिवाग्द्वाराश्रयणम्, शब्दस्य [5]कोलोपमत्वात्। यथोक्तं **भगवता**-

---

१. सूत्रतन्त्रकल्पोक्तार्थ - भो०.
२. गद्यबन्धादि - भो०.
३. प्रदीपवत् - इत्यधिकः - भो०.
४. न युक्तम् - भो०.
५. 'उडुपं तु प्लवः कोलः' - अ० को० १.१०.११

"**अर्थप्रतिशरणेन भवितव्यं शब्दस्तु यथा तथा**" इति।

इ[द]मर्थवशं ज्ञात्वा अहं **श्रीनागार्जुनपादाम्नायादु**त्पत्तिक्रमानुपूर्वेण निष्पन्नक्रमसमाधिं प्राप्य संस्कृतासंस्कृतशिष्याणां साधारणोत्तानशब्दद्वारेण मन्त्रतत्त्वम्, मुद्रातत्त्वम्, आत्मतत्त्वम्, धर्मतत्त्वम्[1], देवतातत्त्वं च पञ्चक्रमविस्पष्टीकरणार्थं सूत्रतन्त्रकल्प[2]मेलापकं वक्ष्यामि। "[3]**तत्त्वहीना न सिद्ध्यन्ति कल्पकोटिशतैरपि**" इत्युक्तं **भगवता सूत्रक** आदि सर्वत्र देशनापाठे। यथोक्तं भगवता **चतुर्देवीपरिपृच्छामहायोगतन्त्रे**-

चतुरशीतिसाहस्त्रे धर्मस्कन्धे महामुनेः।
तत्त्वं वै ये न जानन्ति [4]सर्वे ते निष्फलाय वै ।। इति।

(द्र०- दो० को० व्या०, पृ० १०५,११५,१४९; च० गी० को० व्या०, पृ० २२)

वज्रशिष्य उवाच- तत्त्वज्ञानेन विना बुद्धत्वं न स्यादित्युक्तं भगवता, अतस्तत्त्वस्य लक्षणं नाम प्रवचनद्वारेण श्रोतुमिच्छामि। यस्मान् महायानिका तार्किकादयो नेयार्थमाश्रित्य नानाप्रकारेण तत्त्वं कल्पयन्ति, तेषां संग्रहार्थं भाषतु भगवान् किमेतत् तत्त्वं नाम?

वज्रगुरुराह- यद्भूतं तत् तत्त्वम्। [शिष्य] आह- किमेतद् भगवन् भूतं नाम? [गुरुः] आह- यदविसंवादकं तद्भूतम्। [शिष्य] आह- किमेतदविसंवादकं नाम? [गुरुः] आह- यो भूतनयात्मकः समाधिस्तदविसंवादकम्। [शिष्य] आह- क एष भूतनयात्मकः समाधिर्नाम?

---

१. धर्मतत्त्वं नास्ति - क. गृहीतस्तु भोटानुसारी।

२. नास्ति - क. गृहीतस्तु भोटानुसारी।

३. नास्ति - भो०

४. ते च सर्वे च निष्फलाः - क. गृहीतस्तु दो० को०, च० गी० को० व्याख्यातः।

[गुरुः] आह- यत्सत्यद्वयाद्वैधीकारलक्षणं तद्भूतनयात्मकः समाधिः। [शिष्य] आह- किमेतद् भगवन् सत्यद्वयं नाम? [गुरुः] आह- प्रथमं संवृतिसत्यं द्वितीयं परमार्थसत्यं च। [शिष्य] आह- कथं भगवन् सत्यद्वयस्य लक्षणम्?

वज्रगुरुराह- निर्दिष्टं **भगवता वज्रोष्णीषतन्त्रे**- "वज्रपाणिराह- कथं भगवन् सर्वधर्माणामालयं परमार्थसत्यम्? भगवानाह- सर्वधर्मा गुह्यकाधिपते स्कन्धायतनात्मका जगत्स्थावरजङ्गमास्ते हि परमार्थसत्याश्रयाः, अस्थानयोगेन। परमार्थसत्यमनात्मकमनभिभूतं सर्वशून्यं न वृद्धिर्न परिहाणिः सुविशुद्धं खसमं निर्मलस्वभावमनक्षरमवाच्यं कायवाक्चित्तरहितं न तदस्ति न च नास्ति न चरति न च न चरति न दूरे नासन्ने न शून्यं नाशून्यं न मध्यमश्च, तदिदं परमार्थसत्यम्। अतस्तस्य परमगाम्भीर्यदुरवगाहस्यानुत्पादानिरोधस्य [1]हेतुप्रत्ययोत्पन्नं संवृतिसत्यप्रत्ययम्। संवृतिसत्यं तावत् स्वप्नेन्द्रजालदर्पणप्रतिबिम्बवन्मायासमाधिः स्वलक्षणश्चतुर्ब्रह्मविहारहेतुः। ताभ्यां युगनद्धवाहिक्रमः। सोऽयं भूतनयात्मकः समाधिः सत्त्वोपलम्भोपगमः। समस्तमेतत् तत्त्वम्" इति।

वज्रशिष्य उवाच- अस्मद्विधाने पृथग्जना अनादिबाह्यविचित्रभावाभिनिवेशेन नास्तित्वैकं चानेकत्वोभयानुभयं नैवास्ति न नास्ति नित्यानित्यस्वभाववासनाहेतुः विकल्पाभिनिवेशेऽभिनिविष्टा निष्पन्नक्रमसमाधौ शिक्षमाणा यथाक्रमेण शिक्षन्ते, उताहो गुरूपदेशमात्रेण झटिति प्रतिभासते तेषाम्? वज्रगुरुराह- क्रमवृत्त्या शिक्षन्ते न युगपदिति। भगवतैव निर्दिष्टं **लंकावतारसूत्रे**-

---

१. नास्ति - क. गृहीतस्तु भोटानुसारी।

"अथ खलु महामतिर्बोधिसत्त्वो महासत्त्वः पुनरपि स्वचित्तदृश्यधाराविशुद्ध्यर्थं भगवन्तमध्येषते स्म- कथं भगवन् स्वचित्तदृश्यधारा विशुध्यति युगपत् क्रम[1]वृत्त्या वा? भगवानाह- क्रमवृत्त्या महामते स्वचित्तदृश्यधारा विशुध्यति न युगपत्। तद्यथा- महामते आम्रफलानि क्रमशः पच्यन्ते न युगपत्, एवमेव महामते स्वचित्तदृश्यधारा सत्त्वानां क्रमशो विशुध्यति न युगपत्। तद्यथा- महामते कुम्भकारः क्रमशो भाण्डानि कुरुते न युगपत्, एवमेव महामते तथागतः [2]सर्वसत्त्वानां स्वचित्तदृश्यधारां क्रमशो विशोधयति न युगपत्। तद्यथा- महामते पृथिव्यां [3]सर्वतृणगुल्मौषधिवनस्पतयः क्रमवृत्त्या विरोहन्ति न युगपत्, एवमेव महामते तथागतः [4]सर्वसत्त्वानां क्रमशः स्वचित्तदृश्यधारां विशोधयति न युगपत्। तद्यथा- महामते हास्यलास्यगीतवादित्रवीणा-[5]लेख्ययोगाः[6] क्रमशः प्रवर्तन्ते न युगपत्, एवमेव महामते तथागतः सर्वसत्त्वानां क्रमशः स्वचित्तदृश्यधारां विशोधयति न युगपत्।" (लं० सू०, पृ० २४-२५)

इममेवानुक्रमं **शूरङ्गम[7]सूत्रे** विन्यस्तेन दर्शयन्नाह- "अथ खलु दृढमतिर्बोधिसत्त्वो महासत्त्वो भगवन्तमेतदवोचत्- कथं शिक्षमाणो भगवद्बोधिसत्त्वः शिक्षते इह शूरङ्गमे समाधौ सर्वशिक्षामन्यतया। एवमुक्ते भगवान् दृढमतिं बोधिसत्त्वं महासत्त्वमेतदवोचत् स्यात्, यथाऽपि

---

१. क्रमशो - क.
२. सर्व - नास्ति- मु०, भो०
३. सर्व - नास्ति- मु०, भो०
४. सर्व - नास्ति- मु०
५. चित्र - भो०.
६. योग्याः - मु०
७. शूरङ्गमसमाधिसूत्रे - भो०

नाम दृढमते इष्वस्त्रान्तेवासी इष्वस्त्रशिक्षकश्च पूर्वं गोकिलं[१] विध्यति यदा गोकिले शिक्षितो भवति तदा फलके विध्यति,यदा फलके शिक्षितो भवति तदा लक्षे विध्यति, यदा लक्षे शिक्षितो भवति तदा दण्डे विध्यति, यदा दण्डे शिक्षितो भवति तदा शतबाले विध्यति, यदा शतबाले शिक्षितो भवति तदा दशबाले विध्यति, यदा दशबाले शिक्षितो भवति तदा बाले विध्यति, यदा बाले शिक्षितो भवति तदा शब्दवेधे विध्यति, यदा शब्दवेधे शिक्षितो भवति तदा अक्षणवेधे विध्यति, यदा अक्षणवेधे शिक्षितो भवति तदा निर्यातो भवति।

इष्वस्त्रशिक्षायां स आकांक्षमाणो रात्र्यामन्धकारतमिस्रायां यस्य यस्यैव शब्दं शृणोति मनुष्यस्य वा अमनुष्यस्य वा तस्य तस्यैवान्तिके अनाभोगेनाक्षूण(क्षुण्ण) इव शरो गच्छति। शब्दवेधे स्थितो न क्वचित् शिक्षते। तत्कस्य हेतोः? पूर्वं सुशिक्षितत्वात्, तस्य तेन पूर्वावेध्याभिमुखीभवन्ति। एवमेव दृढमते इह शूरङ्गमे समाधौ प्रतिष्ठितस्य बोधिसत्त्वस्य न भूयः क्वचिद्धर्मे शिक्षितव्यं भवति। तत्कस्य हेतोः? पूर्वं सुशिक्षितत्वादेव समाधिः सर्वबोधिसत्त्वगुणधर्मोऽस्याभिमुखीभवति।"

अनेन न्यायेन वज्रयानमाश्रित्य शूरङ्गमसमाधिं शिक्षितुकामेनानेन क्रमेण शिक्षितव्यम्। तत्रायं क्रमः- प्रथमं तावद् बुद्धयानाशये शिक्षते। यदा बुद्धयाने शिक्षितो भवति तदा नवयान एकस्मृतिसमाधौ शिक्षते। यदा नवयाने संस्थितस्तदा कल्पितयोगे शिक्षते। यदा आदिकर्मिकसमाधौ प्रतिष्ठितो भवति तदा शतकुलप्रभेदेऽवतरति। यदा शतकुलक्रमेण कायविवेकं प्रजानाति तदा कायवज्रसमाधौ प्रतिष्ठितो भवति।

---

१. 'गोकिलं मुशले हले' इति मेदिनी।

कायविवेके स्थित्वाऽऽलिकालिद्वारेण वाग्विवेकेऽवतरति, यदा वज्रजापक्रमेण प्राणायाममधिगतो भवति तदा वाग्वज्रसमाधौ प्रतिष्ठितो भवति। वाग्विवेके स्थित्वा प्रकृत्याभासक्रमेण चित्तविवेकेऽवतरति। यदा प्रकृत्याभासं वायुवाहनप्रभेदं यथाभूतं शिक्षते तदा चित्त[1]वज्रसमाधौ समापन्नो भवति। चित्तस्य यथाभूतपरिज्ञाने स्थित्वा द्वादशमायादृष्टान्तेन संवृतिसत्येऽवतरति। यदा मायोपमसमाधिसमापन्नो भवति तदा सर्व-बुद्धाभिषेकं प्रतिलभते। मायोपमसमाधौ स्थित्वा अष्टादशमहाशून्यताऽनु-क्रमेण परमार्थसत्येऽवतरति। यदा पिण्डग्रहानुभेदसमाधिना भूतकोटिं प्रविशति तदा सर्वक्लेशविशुद्धो भवति। यदा ज्ञानक्रमेण व्युत्थाय प्रकृति-प्रभास्वरं सत्यद्वयाद्वैधीकारेणात्मानमभिसंबुध्यति तदा निष्पन्नक्रमसमाधौ शिक्षितो भवति। निष्पन्नक्रमसमाधिसमापन्नो महायोगी भूयो न क्वचिद्धर्मे शिक्षते पूर्वं सुशिक्षितत्वात्, यथा इष्वस्त्राचार्यः शब्दवेधे स्थितो न क्वचित् शिक्षते। कस्मात्? पूर्वं सुशिक्षितत्वात्। तस्य पूर्वाभ्यासात् सुशिक्षा साक्षादामुखीभवति। एवमेव निष्पन्नक्रमसमाधौ प्रतिष्ठितोऽशैक्षो भवति, पूर्वं सुशिक्षितत्वात्। अस्य लौकिकलोकोत्तरसिद्धयोऽनाभोगमिवामुखी-भवन्ति।

एवं निष्पन्नक्रमसमाधौ शिक्षमाणः क्रमवृत्त्या शिक्षते न युगपत्। तस्मात् कायविवेकेन विना वाग्विवेको ज्ञातुं न शक्यते। वाग्विवेक-रहितेन चित्तविवेकाधिगमः कर्तुं न पार्यते। प्रकृत्याभासाधिगमेन विना संवृतिसत्यं साक्षात्कर्तुं न पार्यते। संवृतिसत्याधिगमेन विना परमार्थसत्यं साक्षात्कर्तुं न शक्यते। परमार्थसत्याधिगमेन विना युगनद्धवाहिक्रमं

---

१. वज्र - नास्ति - भो०.

साक्षात्कर्तुं न पार्यते। भगवानपि इममर्थवशं ज्ञात्वा क्रमवृत्त्या शिक्षते न युगपदिति। क्रमवृत्त्या निष्पन्नक्रमे शिक्षिते सति युगपत् स्वचित्तदृश्यधारा विशुध्यतीति भगवतैव निर्दिष्टं **लङ्कावतारसूत्रे**- "तद्यथा- महामते दर्पणान्तर्गताः सर्वरूपावभासाः संदृश्यन्ते निर्विकल्पाः युगपत्, एवमेव महामते स्वचित्तदृश्यधारां युगपत् तथागतः सर्वसत्त्वानां विशोधयति निर्विकल्पां निराभासगोचराम्। तद्यथा- महामते सोमादित्यमण्डलं युगपत् सर्वरूपावभासान् किरणैः प्रकाशयतीति। एवमेव महामते तथागतः स्वचित्तदृश्यदौष्ठुल्यवासनाविगतानां सत्त्वानां युगपदचिन्त्यज्ञानजिनगोचर-विषयं संदर्शयति।" (लं० सू०, पृ० २५)

अत **आह**-

आदिकर्मिक[1]सन्थानं परमार्थावतारणे।
उपाय[2]श्चैव संबुद्धैः सोपानमिव निर्मितः॥ इति।

(द्र०- अ० व० सं०, पृ० ३१; आ० मा०, श्लो० १७६)

पञ्चक्रमानुपूर्वेण विना निष्पन्नक्रमसमाधिरधिगन्तुं न पार्यते।

प्रबोधनमेलावणसंशयपरिच्छेदः प्रथमः॥ १॥

*

---

१. सत्त्वस्य - अ० व० सं०, पृ० ३१, भो०; लोकस्य - आ० मा०, श्लो० १७६.

२. स्त्वयं - अ० व० सं०, पृ० ३१, स्त्वेष - आ० मा०, श्लो० १७६.

द्वितीयः परिच्छेदः

वज्रशिष्य उवाच - कथं भगवन् प्रथमं स्वकायविवेकं शिक्षितव्यम्?

वज्रगुरुराह - साधु साधु महासत्त्व कायविवेकं विस्तरेण ते प्रतिबोधयामि। तत्, चत्वारो धातवः शरीरमभिनिर्वर्तयन्ति। निष्पन्नस्य शरीरस्य राशयस्तावत् स्थाप्यन्ते। मांसपेशीस्नायुशिराधमनीमस्तलुङ्ग-अस्थिमज्ज-अन्त्र-अन्त्रगुणबुक्कहृदयजठरफुफ्फुसयकृन्मूत्रविट्-आमाशय-पक्वाशयवस्तिवसालसिकापूयरुधिरपित्तश्लेष्मसिंघाणककेशश्मश्रुनखरोम-चर्म[1]शिरश्चरणनयनावयवादिसमवायो राशिः। पुनस्तत्र पञ्चस्कन्धाश्चत्वारो धातवः षडायतनानि पञ्चविषयाः पञ्चज्ञानानि राशिरित्युच्यते।

तद्यथा- धान्ययवतिलगोधूममुद्गराशय इत्युच्यन्ते, एवमेव शरीरस्याङ्गप्रत्यङ्गान्तर्गतसमवायो राशिरित्युच्यते। धातुसमवाये प्रज्ञादृष्टिमनोऽविद्यावासनातृष्णाक्लेशप्रबन्धः संचय इत्युच्यते। विज्ञानस्य तु संचयो राशिर्वा नोपलभ्यते, अनालयत्वात्।

यथोक्तं **भद्रपालिपरिपृच्छायाम्**- "अस्मिन् शरीरविज्ञानं न क्वचित् प्रतिष्ठितं भवति, न च विज्ञानादृते शरीरमुपलभ्यते। तेन हि भद्रपाले नादृष्टसत्यमिदं विज्ञानं पश्यति, न चेदं करतलामलकवद्-दर्शनमुपगच्छति" इति।

पुनरेषो स्कन्धधात्वायतनानामनादिप्राकृताहङ्कारव्यवस्थितानामधुना सर्वतथागतपरमाणुपरिघटितस्वभावो निर्दिश्यते।

---

१. कर - भो०

पञ्चस्कन्धाः समासेन पञ्चबुद्धाः प्रकीर्तिताः ।
वज्र-आयतनान्येव बोधिसत्त्वाग्र्यमण्डलम् ।।
पृथिवी लोचना ख्याता अब्धातुर्मामकी स्मृता ।
पाण्डराख्या भवेत्तेजस्तारा वायुः प्रकीर्तिता ।।
(गु. स. १७.५०-५१)

[1]**रूपशब्दादिभिर्मन्त्री देवतां भावयेत् सदा ।।**
(गु. स. ७.१४)

इत्युक्तं **भगवता श्रीगुह्यसमाजमहायोगतन्त्रे।**

एते स्कन्धधात्वादयः पुनरेकैकशः पञ्चपञ्चाकारैर्भिद्यमानाः शतधा भवन्ति।

कुलाः शतविधाः प्रोक्ताः संक्षेपेण तु पञ्चधा।
पुनस्त्रिविधतां यान्ति कायवाक्चित्तभेदतः ।।

इति **श्रीगुह्येन्दुतिलके** वचनात्।

प्रथमं तावत् शतकुलभेदं दर्शयामः। तत्र रूपस्कन्धसमूहो वैरोचनः। स च पञ्चाकारैर्भिद्यमानः पञ्चतथागतैरधिष्ठितः। तत्र दीर्घ-ह्रस्वादिबाह्याध्यात्मिकोभयसंस्थानरूपं वैरोचनस्याधिष्ठानम्, आत्मपरोभयप्रकाररूपं रत्नसंभवस्य, बाह्याभ्यन्तरे नीलादिपञ्चवर्णरूपममिताभस्य, बाह्याभ्यन्तरे चन्द्रसूर्यालोकाकाररूपममोघसिद्धेः, केवलं स्वसंवेद्यमात्रम-विज्ञप्तिरूपमक्षोभ्यस्याधिष्ठानमिति। उक्तः पञ्चधा रूपस्कन्धः।

रत्नसम्भवसमाधिमधिकृत्याह- वेदनास्कन्धसमूहो रत्नसम्भवः सा पुनः पञ्चतथागतैरधिष्ठिता। तत्र सन्निपातपित्तोद्भववेदना अक्षोभ्यस्य,

---

१. स्पर्श - मु०

श्लेष्मवातजा वेदना रत्नसम्भवस्य, सुखवेदना अमिताभस्य, दुःखवेदना अमोघसिद्धेः, समवेदना वैरोचनस्याधिष्ठानमित्युक्तः पञ्चधा वेदना-स्कन्धः।

अमिताभसमाधिमधिकृत्याह- संज्ञास्कन्धसमूहोऽमिताभः, इहोत्पन्नानां स्थावरजङ्गमपदार्थानां संस्कृतत्वेऽप्यपदद्विपदादिभेदेन भिन्नत्वात् पृथक्संज्ञाऽस्ति भावानाम्, तां विज्ञानेनोपगृह्य परिच्छेदः क्रियते। तन्निमित्तं संज्ञास्कन्ध इति पृथग्व्यवस्थाप्यते। सा पुनः संज्ञा पञ्च-तथागतैरधिष्ठिता। तत्र द्विपदसंज्ञा-अक्षोभ्यस्य, चतुष्पदसंज्ञा रत्नसम्भ-वस्य, अपदसंज्ञा अमिताभस्य, बहुपदसंज्ञा अमोघसिद्धेः, अचलसंज्ञा वैरोचनस्याधिष्ठानमिति। उक्तः पञ्चधा संज्ञास्कन्धः।

अमोघसिद्धिसमाधिमधिकृत्याह- संस्कारस्कन्धसमूहोऽमोघ-सिद्धिः। स पुनः पञ्चतथागतैरधिष्ठितः। तत्र कायसंस्कारो वैरोचनस्य, वाक्संस्कारो अमिताभस्य, चित्तसंस्कारोऽक्षोभ्यस्य, [1]भूर्भुवः [स्वः]-संस्कारो रत्नसम्भवस्य, मोक्षसंस्कारोऽमोघसिद्धेरधिष्ठानमिति। उक्तः पञ्चधा संस्कारस्कन्धः।

अक्षोभ्यसमाधिमधिकृत्याह- यदर्थग्रहणमर्थं परिच्छिनत्ति। अर्थावबोधस्तद् विज्ञानम्। विज्ञानारूढेन चाकारेण बाह्यार्थः प्रज्ञाप्यते। बाह्यार्थेन विज्ञानं प्रज्ञाप्यत इति। एवमन्योन्यापेक्षया ज्ञानज्ञेययोरुभय[2]-सिद्धिः। तत् पुनर्विज्ञानं पञ्चधा भिद्यमानं पञ्चतथागतैरधिष्ठितमिति। तत्र विज्ञानस्कन्धसमूहोऽक्षोभ्यः, चक्षुर्विज्ञानं वैरोचनस्य, श्रोत(त्र)विज्ञानं

---

१. त्रिधातुः - भो०

२. 'उभय' नास्ति - क. गृहीतं तु भोटानुसारी।

रत्नसम्भवस्य। घ्राणविज्ञानममिताभस्य, जिह्वाविज्ञानममोघसिद्धेः, काय-विज्ञानमक्षोभ्यस्याधिष्ठानमिति। उक्तः पञ्चधा विज्ञानस्कन्धः।

"पञ्चस्कन्धाः समासेन पञ्चबुद्धाः प्रकीर्तिताः।" (गु० स० १७.५०) इत्यस्य सूत्रस्यार्थः।

चतुर्धातुमधिकृत्याह- तत्र पृथिवीधातुः कतमः? यद्गुरुत्वं [1]कक्खटत्वं स च धारणकर्मा। तत्राब्धातुः कतमः? यत् प्रबन्धं स्नेहता संग्रहकर्मा। तत्र कतमस्तेजोधातुः? यदुष्णत्वं परिपाचनत्वं शोषणकर्मा। तत्र कतमो वायुधातुः? यदाकुञ्चनप्रसारणमुच्छ्वासप्रश्वासलघुसमुदीरणत्वं तद्वायुधातुः।

एवं महायानक्रमेण चतुर्णां धातूनां स्वस्वलक्षणं व्यवस्थाप्येदानीं प्राकृताहङ्कारापनयनार्थं वज्रयानक्रमेण पञ्चबुद्धमयः क्रियते।

तत्र पृथिवीधातुसमूहो लोचना। स पुनः पञ्चाकारैर्विभज्यमानः पञ्चतथागतैरधिष्ठितः, यदुत केशास्थिविट्प्लीहहृदयं वैरोचनस्य, रोमनखौ पूयं हृदयं रत्नसंभवस्य, दन्तत्वङ्मांसहृदयममिताभस्य, स्नायुमार्म(मास)-पार्श्वहृदयममोघसिद्धेः, मलाऽन्त्रपित्तहृदयमक्षोभ्यस्य। यथोक्तं **वज्रमाले**-

पञ्चहृदयमाश्रित्य पञ्चतनुविनिर्गतम्।
पञ्चवायुसमायुक्तं पञ्चकामोपभोगकृत्।। इति।

एवं पुनः पृथिवीधातुर्बाह्योऽपि पञ्चाकारेण भिद्यते चतुर्द्वीपाः सुमेरुश्च। तत्र सुमेरुर्महावैरोचनस्य, पूर्वविदेहोऽक्षोभ्यस्य, जम्बूद्वीपो रत्नसम्भवस्य, अपरगोदानीयोऽमिताभस्य, उत्तरकुरुरमोघसिद्धेरधिष्ठानमिति, उक्तः पञ्चधा पृथिवीधातुः।

---

१. कठिनत्वमित्यर्थः। 'कक्खटं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम्' (अ० को० ३.१.७६)

मामकीसमाधिमधिकृत्याह- तत्र अब्धातुसमूहो मामकी। स पुनः पञ्चतथागतैरधिष्ठितः। श्लेष्मादिजलं वैरोचनस्याधिष्ठानम्, मूत्रमक्षोभ्यस्याधिष्ठानम्, स्वेदो रत्नसम्भवस्याधिष्ठानम्, रक्तममिताभस्याधिष्ठानम्, लालाऽमोघसिद्धेरधिष्ठानमिति।

बाह्यमपि पञ्चाकारेण दृश्यते। तत्र समुद्रोदकमक्षोभ्यस्य, नद्युदकं रत्नसम्भवस्य, [1]स्वभ्रोदकममिताभस्य, तडागोदकममोघसिद्धेः, निर्झरोदकं वैरोचनस्याधिष्ठानमिति। उक्तः पञ्चधा अब्धातुः।

पाण्डरवासिनीसमाधिमधिकृत्याह- तेजोधातुसमूहः पाण्डरवासिनी, स पुनः पञ्चतथागतैरधिष्ठितः। शीर्षोष्णं वैरोचनस्याधिष्ठानम्, हृदयोष्णमक्षोभ्यस्य, नाभ्युष्णं रत्नसम्भवस्य, सर्वाङ्गोष्णममिताभस्य, उदरोष्णममोघसिद्धेरधिष्ठानमिति।

बाह्यमपि पञ्चाकारेण दृश्यते। तत्राहवनीयाऽग्निरक्षोभ्यस्य, पाषाणोद्भवाग्निर्वैरोचनस्य, सूर्यकान्तोद्भवाग्नी रत्नसम्भवस्य, काष्ठोद्भवाग्निरमिताभस्य, दावाग्निरमोघसिद्धेरधिष्ठानमिति। उक्तः पञ्चधा तेजोधातुः।

तारासमाधिमधिकृत्याह- तत्र वायुधातुसमूहस्तारा। स पुनः पञ्चतथागतैरधिष्ठितः। तत्र प्राणो नाम वायुर्हृदयस्थोऽक्षोभ्यस्य, अपानो गुदस्थो रत्नसम्भवस्य, उदानः कण्ठस्थोऽमिताभस्य, समानो नाभिस्थो अमोघसिद्धेः। व्यानः सर्वसन्धिषु वैरोचनस्याधिष्ठानमिति।

अथैषामेकैकस्य व्यापारमाह-

प्रक्रमणात् प्राणायामाच्चेन्द्रियद्वारैस्तन्तुभिः।
प्रक्रमते सदा कालं प्राण इत्यभिधीयते।।

---

१. सु- शोभनमभ्रोदकं- मेघवारि। 'अभ्रं मेघो वारिवाहः' (अ० को० १.३.६)

वातमूत्रपुरीषाणां शुक्रादीनां तथैव च ।
अपनयनादपानोऽयं योगिभिर्लक्ष्यते सदा ।।

अशितं खादितं लेह्यं पेयं चोष्यञ्च सर्वतः ।
समानयति यो नित्यं समान इति चोच्यते ।।

ऊर्ध्वगमात् संहरणाद् भक्ष्यभोज्यादिभक्षणात् ।
उदानकर्मविज्ञोऽयं ज्ञानेन सहयोगतः ।।

व्यापनं धारणं चैव गमनागमनादिकम् ।
सर्वसन्धिषु व्याप्तत्वाद् व्यान इत्यभिधीयते ।।

बाह्यमपि पञ्चधा दर्शयति- पूर्ववातोऽक्षोभ्यस्य, दक्षिणवातो रत्नसम्भवस्य, पश्चिमवातोऽमिताभस्य, उत्तरवातोऽमोघसिद्धेः, ऊर्ध्ववातो वैरोचनस्याधिष्ठानमिति। उक्तः पञ्चधा वायुधातुः।

एषां चतुर्महाभूतानां यत्रैकस्तत्र चत्वारः। तस्मान्नास्त्येषामन्योन्यनिरपेक्षा स्वाभाविकी स्वतःसिद्धिः। आकाशं चातीन्द्रियत्वादसंस्कृतत्वाच्च न महाभूतं किन्तु अवकाशदानात्सर्वभावान्तमाकाशः। अनावरणकृत्यं करोतीति यावत्।

पृथिवी लोचना ख्याता अब्धातुर्मामकी स्मृता ।
तेजः पाण्डरा ख्याता वायुस्तारा प्रकीर्तिता ।।

(गु० स० १७.५१)

इत्यस्य सूत्रस्यार्थः।

इदानीं क्षितिगर्भादिमहाबोधिसत्त्वानां समाधिमधिकृत्याह- तत्र चक्षुरायतनसमूहः क्षितिगर्भः। स पुनः पञ्चाकारैर्विभज्यमानः पञ्चतथागतैरधिष्ठितः। तत्र चक्षुर्गोलकाभ्यन्तरे द्राक्षाफलप्रमाणं चक्षुरिन्द्रियं तद-

क्षोभ्यस्य, तारकास्वभावो रत्नसंभवस्य, तिर्यग्रूपममिताभस्य, दृष्टिसञ्चलनममोघसिद्धेः, रूपत्रयग्रहणं वैरोचनस्याधिष्ठानमिति। उक्तं पञ्चधा चक्षुरायतनम्।

एवं श्रोता(त्रा)यतनसमूहो वज्रपाणिः। इह कर्णाभ्यन्तरे तूर्यग्रन्थ्याकृतिपरमाणुसञ्चयरूपं श्रोत्रेन्द्रियं तदक्षोभ्यस्य, कर्णस्वभावो वैरोचनस्य, कर्णच्छिद्रममिताभस्य, कर्णमूलममोघसिद्धेः शब्दत्रयग्रहणं रत्नसम्भवस्याधिष्ठानमिति। उक्तं पञ्चधा श्रोता(त्रा)यतनम्।

घ्राणायतनसमूहो• आकाशगर्भः। घ्राणान्तरेऽञ्जनशलाकाकारपरमाणुसञ्चयरूपं घ्राणेन्द्रियं तदक्षोभ्यस्य, घ्राणस्वभावो वैरोचनस्य, मध्यान्तरं रत्नसम्भवस्य, नासापुटोऽमोघसिद्धेः, गन्धत्रयग्रहणममिताभस्याधिष्ठानमिति। उक्तं पञ्चधा घ्राणायतनम्।

जिह्वायतनसमूहो लोकेश्वरः। तत्र परमाणुसञ्चयरूपमर्धचन्द्राकृतिजिह्वेन्द्रियं तदक्षोभ्यस्य, जिह्वास्वभावो वैरोचनस्य, जिह्वामूलं रत्नसंभवस्य, जिह्वाग्रममिताभस्य, रसत्रयग्रहणममोघसिद्धेरधिष्ठानमिति। उक्तं पञ्चधा जिह्वायतनम्।

कायायतनसमूहः सर्वनीवरणविष्कम्भी। तत्र समस्तकायपरमाणुसञ्चयरूपकायेन्द्रियं तद्वैरोचनस्य, अस्थिस्वभावो रत्नसम्भवस्य, मांसस्वभावोऽमिताभस्य, चर्मस्वभावोऽमोघसिद्धेः, स्पर्शत्रयग्रहणमक्षोभ्यस्याधिष्ठानमिति। उक्तं पञ्चधा कायायतनम्।

समन्त[१]भद्रसमाधिमधिकृत्याह- इह शरीराभ्यन्तरे आभासत्रयविज्ञानं तन्मन इन्द्रियम्। सर्वेन्द्रियाधिपतित्वात् स्वसंवेद्यम्। बाह्यविषया-

१. मञ्जुश्री - भो०

भावो धर्मधातुं विषयीकृत्य मायाजालाभिसंबोधिक्रमेणात्मानं निष्पाद्या-शेषगुणान्वितो बुद्धक्षेत्रं संक्रामतीति। उक्तः समन्त[1]भद्रसमाधिः। "**वज्रा-यतनान्येव बोधिसत्त्वानुत्तरमण्डल**" इत्यस्य सूत्रस्यार्थः।

विषयदेवतानां समाधिमधिकृत्याह- दश वायून् प्राह **वज्रमुखी-महायोगतन्त्रे-** 'यदुत प्राणापानोदानसमानव्यानोद्वाहविवाहसंवाहनिर्वाह-प्रवाहश्चेति। तत्र प्राणादिपञ्चवायवः पञ्चस्कन्धमाश्रित्य स्कन्धव्यापारं कुर्वन्ति। उद्वाहादिपञ्चवायव इन्द्रियमाश्रित्येन्द्रिय[2]व्यापारं कुर्वन्ति। तत्रोद्वाहो नाम वायुश्चक्षुरायतनमाश्रित्य पञ्चधा रूपक्रियां निष्पादयति। स पुनरालोकाकाशमनस्कारचक्षुरिन्द्रियसामग्रीं प्रति रूपविषयो दृश्यते तद्वैरोचनस्य, लीलाविलासशृङ्गाररूपमक्षोभ्यस्य, अनुरागणरूपं रत्नसम्भ-वस्य, मनोज्ञामनोज्ञोपेक्षासंज्ञारूपममिताभस्य, सर्वक्रियानुष्ठानरूपममोघ-सिद्धेरधिष्ठानमिति। उक्तः पञ्चधा रूपविषयः।

विवाहः श्रोता(त्रा)यतनमाश्रित्य पञ्चधा शब्दक्रियां करोति। तत्र कर्णाभ्यन्तरे शब्दः शिरःकेशशब्दश्च वैरोचनस्य, गीततन्त्रीशब्दो रत्न-सम्भवस्य, ताल्वोष्ठवाक्शब्दोऽमिताभस्य, वनस्पतिनद्युच्छाटतालमुरजादि वाद्यशब्दोऽमोघसिद्धेः, हूँकारशान्तरौद्रशब्दोऽक्षोभ्यस्याधिष्ठानमिति। उक्तः पञ्चधा शब्दविषयः।

संवाहः घ्राणमाश्रित्य पञ्चधा गन्धक्रियां करोति। तत्राशेषगन्धो वैरोचनस्य, सर्वाङ्गगन्धो रत्नसम्भवस्य, गन्ध[3]त्रयममिताभस्य, रस-

---

१. मञ्जुश्री- भो०

२. बाह्यव्यापार - भो०

३. गन्धत्रयग्रहणं - भो०

गन्धोऽमोघसिद्धेः। विषयगन्धो[1] अक्षोभ्यस्याधिष्ठानमिति। उक्तः पञ्चधा गन्धविषयः।

प्रवाहो जिह्वामाश्रित्य पञ्चधा रसविषयान् पालयति। तत्र मधुर-रसो वैरोचनस्य, कषायरसो रत्नसम्भवस्य, क्षाररसोऽमिताभस्य, कटुक-रसोऽक्षोभ्यस्य, तिक्ताम्ललवणषड्रसभेदोऽमोघसिद्धेरधिष्ठानमिति। [उक्तः पञ्चधा] रसविषयः।

निर्वाहो नाम वायुः कायायतनमाश्रित्य मल्लयुद्धादिबलोत्साह-[2]साहसस्य च पञ्चधा स्पर्शक्रियामनुपालयति। तत्र एकासनस्थः स्पर्शो वैरोचनस्य, आलिङ्गनस्पर्शो रत्नसम्भवस्य, चुम्बनस्पर्शोऽमिताभस्य, चूषणस्पर्शोऽमोघसिद्धेः, भगे लिङ्गसंयोगस्पर्शाद्रागविरागमध्यरागस्वभावो-पलब्धिरक्षोभ्यस्याधिष्ठानमिति। उक्तः पञ्चधा स्पर्शविषयः। "**रूपशब्दा-दिभिर्मन्त्री देवतां भावयेत् सदा**" इत्यस्य सूत्रस्यार्थः।

पञ्चज्ञानमधिकृत्याह- आदर्शे प्रतिबिम्बदर्शनमिव युगपत् सकल-पदार्थपरिज्ञानमादर्शज्ञानं तद्वैरोचनस्य, अपदद्विपदचतुष्पदबहुपदादि बहू-नामपि सत्त्वानां चित्तमात्रतेत्येकाकारावगमः समताज्ञानं तद्रत्नसम्भवस्य, स्कन्धधात्वादिबाह्याध्यात्मिकपदार्थान् पृथक् पृथग् विभज्य प्रविवेच्य सर्वं बुद्धमयमिति ज्ञात्वा सर्वधर्मान् बहव इति पद्मदलवत् प्रत्यवेक्ष्य निराशङ्केन विहरणं प्रत्यवेक्षणाज्ञानं तदमिताभस्य, स्वपरार्थक्रियाकाय-वाक्चित्तव्यापारनिष्पादनस्वभावं कृत्यानुष्ठानज्ञानं तदमोघसिद्धेः, काय-

---

१. अक्षय- भो०

२. स च - भो०

वाक्चित्ता[1]वरणसंशोधनं [2]कर्मक्लेशविनिर्मुक्तं शुभाशुभादिविकल्पवासना-संशोधनं सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानं तदक्षोभ्यस्याधिष्ठानमिति। **अत्राह-**

स्कन्धश्च धातुश्च तथैवेन्द्रि[3]यं च पञ्चैव पञ्चैव कृतप्रभेदाः।
तथागताधिष्ठित एकैकशः संसारकर्माणि कुतो भवन्ति।।

(द्र०- च० गी० को०, पृ० ४६)

तथा सबाह्या विषयाश्च पञ्च एकैकशः पञ्चतथागतैश्च।
स्वकस्वका नित्यमधिष्ठितास्ते ज्ञानत्रयं पञ्चसमाश्रितं च।।

इति। "**कुलाः शतविधाः प्रोक्ता**" इत्यस्य सूत्रस्यार्थः।।

वज्रशिष्य उवाच- शतकुलानुक्रमेण सर्वतथागतपरमाणुपरिघटित-मूर्तिरित्यपगतः संशयः। कथं पुनः संक्षेपेण पञ्चधा भवन्ति।

वज्रगुरुराह- चत्वारो धातवः शरीरपिण्डमभिनिर्वर्तयन्ति। धातु-समवायाद् भौतिकाः भवन्ति। तस्माद् ये रूपस्कन्धादिभौतिकास्तथागत-कुलीनास्ते पृथिवीधातौ संग्रहमुपयान्ति।

एवं रत्नसम्भवकुलीनास्तेऽब्धातौ, पद्मकुलीनास्तेजोधातौ, कर्म-कुलीना वायुधातौ, वज्रकुलीना विज्ञानधातौ संगृहीता भवन्ति। अनेन न्यायेन स्वकायमण्डले भूतभौतिकभेदेन शतधा राशयः पुनः पञ्चगुह्य-महातत्त्वात्मका भवन्ति। अत आह **श्रीगुह्यसमाजे-**

[4]खधातुमध्यगतं चिन्तेन्मण्डलं सर्ववज्रजम्।
संहारं च प्रकुर्वीत यदीच्छेच्छान्तवज्रधृग् ।। इति।

(गु० स० ८.११)

---

१. वतारण - क., गृहीतस्तु भोटानुसारी।
२. कर्मजन्म - क., गृहीतस्तु भोटानुसारी।
३. आयतनं च - भो०, वेन्द्रियाणि - मु०.
४. पादद्वयं नास्ति - मु०

अमुमेवार्थं द्योतयन्नाह **सर्वरहस्यतन्त्रे**-

पञ्चात्मकं पञ्चभिरेव भूतैर्दृष्टं नराणां नियतं शरीरम् ।
तद्भावभावैर्नियतं स्वचित्तं प्रभावयन्तः प्रभवन्ति बुद्धाः ।। इति।

खसमतन्त्रेऽप्याह-

[1]**पञ्चबुद्धात्मकु सर्वजगोऽयं पश्यसु चित्रकु नाटकु दिव्यम्।**
यत्र हि एकु महासुहनामा नृत्यति एकु अनेक रसेन ।। इति।

"**संक्षेपेण तु पञ्चधा**" इत्यस्य सूत्रस्यार्थः।

वज्रशिष्य उवाच- पञ्चाकारास्तु पुनः कथं त्रिविधतां यान्ति ।

वज्रगुरुराह- रत्नसम्भवः कायवज्रेण सहाद्वयो भवति। अमोघसिद्धिर्वाग्वज्रेण सहाद्वयो भवति। अक्षोभ्यः षष्ठतथागतेन सहाद्वयो भवति। एवं शतकुलमारभ्य यावत् पञ्चकुलात्मका बुद्धबोधिसत्त्वाः स्वकायवाक्चित्ते संग्रहं गच्छन्ति।

यथोक्तं **भगवता श्रीगुह्यसमाजमहायोगतन्त्रे**- "**अथ ते सर्वतथागताः त्रिवज्रसत्त्वाक्षरेषु स्वकायवाक्चित्तं प्रवेशयामासुः**" इति।

कायवाक्चित्तनिध्यप्तैः स्वभावो नोपलभ्यते।
मन्त्रमूर्तिप्रयोगेण [2]**न बोधिर्न च भावना ।।**

विचार्येदं समासेन कायवाक्चित्तलक्षणम् ।
भावयेद्विधिसंयोगं समाधिं मन्त्रकल्पितम् ।। इति।

(गु० स० ६.५-६)

---

१. द्र० - यो० सं०, १२.११; गुह्येन्दुतिलकादुद्धृतं व० ति० टी०, पृ० १५.

२. बोधिचित्ते - मु०

श्रीसर्वबुद्धसमागमयोगडाकिनीजालसंवरमहायोगतन्त्रेऽपीममर्थं द्योतयन् आह-

न योगः प्रतिबिम्बेषु निषिक्तादिषु जायते ।
बोधिचित्तमहायोगयोगिनस्तेन देवताः ।।

(द्र०- ज्ञा० सि०, पृ० १४४)

[1]**आत्मा वै सर्वबुद्धत्वं सत्त्वसौरित्वमेव च।**
स्वाधिदैवद्य(त)योगेन तस्मादात्मैव साधयेत् ।। इति।

(द्र०- त० सि०, पृ० ६)

"**पुनस्त्रिविधतां यान्ति कायवाक्चित्तयोगतः।**" इत्यस्य सूत्रस्यार्थः।

वज्रशिष्य उवाच- [2]सर्वकुलात्मकाः बुद्धबोधिसत्त्वाः स्वकायवाक्चित्तेन सङ्गृहीता इत्यपगतः संशयः। कुलत्रयं पुनः कथं त्रिवज्राभेद्यात्मकः कायवज्रो भवति व्यूहि(ब्रूहि) भगवन् वज्रगुरुः शास्ता।

वज्रगुरुराह- साधु साधु महासत्त्व सामाजिकानां हितार्थाय कायविवेकस्य पर्यन्तं परिपृच्छसि। तस्मात् शृण्वहं ते कायवाक्चित्तस्यान्योन्यहेतुकत्वं प्रतिपाद्य कायवज्रसमाधौ प्रतिष्ठापयामि।

[3]**मन्त्रनिध्यप्तिकायेन वाचा मनसि चोदितः ।**
साधयेत् प्रवरां सिद्धिं मनःसन्तोषणप्रियाम् ।।

(गु० स० ६.३)

इत्युक्तं **भगवता श्रीगुह्यसमाजे**। अस्यायमभिप्रायः - तत्र कायवज्रधरे सति ताल्वौष्ठपुटे जिह्वासामग्रीं प्राप्य वाग्वज्रस्य प्रवृत्तिर्भवति।

---

१. परमाद्यतन्त्रादुद्धृतं त० सि०, पृ० ११

२. सर्वकल्पात्मकाः - भो०

३. अर्थ - भो०

तत्र चित्तवज्रः प्रेरको भवति। एवं त्रि[1]वज्रसमवायान्मनोह्लादनकरीं सिद्धिं सम्पादयेदित्यर्थः।

एवं कायवाक्चित्ताविनाभावलक्षणं निरूप्य इदानीं त्रिवज्राभेद्यलक्षणं व्यवस्थाप्यते।

"**उत्पादयन्तु भवन्तश्चित्तं कायाकारेण कायं चित्ताकारेण चित्तं वाक्प्रव्याहारेण**" (गु० स०, पृ० ८) इत्युक्तं **श्रीगुह्यसमाजे**। प्रकृतिसिद्धोऽहमित्यात्मना दार्ढ्यमुत्पाद्य त्रिवज्राभेद्यात्मानं महावज्रधरमधिमुञ्चेदिति अधिष्ठानयोग इत्युच्यते।

कायविवेकमेलावणसंशयपरिच्छेदो द्वितीयः।। २।।

*

---

१. वज्र - नास्ति - भो०

तृतीयः परिच्छेदः

वज्रशिष्य उवाच- कायविवेकशिक्षयापगतः संशयः। कथं भगवन् वाग्विवेकं शिक्षितव्यं कथं प्रतिपत्तव्यं ब्रूहि भगवन् वज्रगुरुः शास्ता।

वज्रगुरुराह- साधु साधु महासत्त्व स्कन्धधात्वायतनाद्यनन्तरोक्त-कायविवेकस्तत्र देवताविन्यासश्च सर्वेषां साधारणम्, स्थूलयोगत्वात्। वाग्विवेकस्तु यो हि ज्ञानमतिसूक्ष्मं महायानिकानामविषयः। वज्रयानिकानामप्युत्पत्तिक्रमचारिणामगोचरः, सूक्ष्मयोगत्वात्। तस्माद्यत्नतः शृण्वहं ते विस्तरेण **व्याख्यातन्त्रा**नुसारेण वाग्वज्रसमाधिं प्रतिबोधयामि।

तत्र "**कुलाः शतविधाः प्रोक्ताः**" इत्यादि पूर्वोक्तसूत्रं कायवाक्-चित्तविवेकस्यापि साधारणम्। तत्र वाग्विवेको नाम मन्त्रतत्त्वम्। तच्च वायुतत्त्वानुपूर्वेण विना न ज्ञायते। वायुतत्त्वं नाम प्राणायामः। अतो वायुतत्त्वस्योद्देशपदं **श्रीगुह्यसमाजाद**वतार्यते-

पञ्चवर्णं महारत्नं सर्षपस्थूलमात्रकम् ।
नासिकाग्रे प्रयत्नेन भावयेद्योगतः सदा।। इति।

(गु० स० ३.१२)

इदं वज्रपदं नेयनीतार्थभेदेन द्विविधं देवतायोगस्यापि युज्यते। तत्रोत्पत्तिक्रमभावको नासाग्रे सर्षपफलप्रमाणं स्वदेवताचिह्नं स्वचित्त-दृढीकरणार्थं भावयेदिति सूक्ष्मयोगव्यपदेशः।

अनेनैव निष्पन्नक्रमसमाधिसमागतानां सूक्ष्मयोगमाह- आलि-कालिभिः स्त्रीपुन्नपुंसकरूपेण त्र्यक्षरं निष्पाद्य, अक्षरत्रयमपि प्रवेश्य स्थितिव्युत्थाने नियोज्य चतुर्मण्डलक्रमेण प्राणाया[मा]त्मकं वज्रजापं

कुर्यादिति। इममर्थं द्योतयन्नाह-

पञ्चज्ञानमयं श्वासं पञ्चभूतस्वभावकम् ।।
निश्चार्य पद्मनासाग्रे पिण्डरूपेण कल्पयेत् ।
पञ्चवर्णं महारत्नं प्राणायाममिति स्मृतम् ।।
(गु० स० ३.१२)

इत्युक्तं **समाजोत्तरे**।

एषामुद्देशपदानां निर्देशमाह- **संध्याव्याकरणमहाव्याख्यातन्त्रे-**

अथ भगवान् महावज्री वज्रजापार्थभाषिणम्।
प्रत्युवाच ततः सम्यक्प्रणम्यैकं जगद्गुरुः।।

लौकिकागममेवेदं बोधिचित्तं प्रकाशितम्।
लोकोत्तरं कथं नाम प्रतिपत्स्यन्त्यागामिकाः।।

सर्वदृष्टिप्रहाणाय त्वया धर्मो हि देशितः।
तत् कथं बोधिचित्तं तु सा दृष्टिः सुदृढीकृता।।

उक्तमर्थं न बुध्यन्ति संध्यायवाक्यमोहिताः।
यथारुतं ते गृह्णन्ति तथैव हि पचन्ति च ।।

अथ भगवान् विश्वो वज्रपाणिं वदेत् ततः ।
साधु साधु च गुह्येश व्याकृताऽऽगामिका त्वया।।

बोधिचित्तं भवेद्वायुरम्बरे च व्यवस्थितः ।
प्राणभूतश्च सत्त्वानां पञ्चात्मा दशसंज्ञकः।।

प्रतीत्यद्वादशाङ्गाख्यं स्वभावात् त्रितयं भवेत्।
सर्वेन्द्रियप्रधानेदं वाय्वाख्यं बोधिचित्तकम्।।

अव्यक्तं सूक्ष्ममित्येवं व्यक्तमित्युच्यते सदा ।
तदाश्रयात्तु कर्माणि कुर्याद्विषयादिकं जनः ।।

शान्तिकं पौष्टिकं चैव वश्याभिचारकं तथा ।
बोधिचित्तात्तु तत्सर्वं त्रितत्त्वनिलयाश्रया[त्] ।।

यावच्चालोकसंकेताः कल्पिता विविधास्तथा ।
भवन्ति बोधिचित्तात्तु विकल्पा वायुतः सदा ।।

सुखदुःखादिको धर्मो बीजादेव विधीयते ।
बोधिचित्तस्वभावोऽसौ स्कन्धाद्यद्वयकोपमः ।।

प्रज्ञोपायैकयोगेन बोधिचित्तं जगद् भवेत् ।
स्वयं समुच्चरेत्स्वामी ध्यानाध्ययनवर्जितः ।।

दिवारात्रिविभागेन चन्द्रसूर्यप्रयोगतः ।
[1]**निश्वासो [हि] जगद्व्यापी बोधिचित्तैकमारुतः ।।**

शुभाशुभफलं त्यक्त्वा भवत्येव नभोपमः ।। इति।

वज्रशिष्य उवाच- "**वायुः पञ्चात्मा दशसंज्ञकः**" इत्युक्तम्। अनुकम्पामुपादाय ब्रूहि भगवन्नेकैकस्य वायोः संज्ञान्तरम्।

वज्रगुरुराह- अनन्तरोक्तं **व्याख्यातन्त्रेणैव** निर्दिष्टं तद् दर्शयामः। अथ तथागताः सर्वबोधिसत्त्वाश्चैव च प्रविश्य तोषणार्थाय तथागताधिपतेः।

प्राणापानसमानाख्यानुदानव्यानसंज्ञकान् ।
नागकूर्मकृकरांश्च देवदत्तधनञ्जयान् ।।

---

१. निःस्वभावो - भो०

कृत्वैतदात्मनो बिम्बं स्त्रीतत्त्वं निर्माय ते पुनः ।। इति।

एते दशवायवः **श्रीसर्वबुद्धसमागमयोगडाकिनीजालसंवरनये** येन येन रुतेन उक्तास्तांस्तानप्याह-

कोटाक्षः कोटवः कोटाः कोटाभश्च कोटीरकः ।
कोलाक्षः कोलवः कोलः कोलाभश्च कलि[1]स्तथा ।।

एतानि दश नामानि। **वज्रमुखीमहायोगतन्त्रे**ऽपि यथारुतार्थेन दशवायून् प्राह- "प्राणापानोदानसमानव्यानोद्वाहविवाहसंवाहप्रवाहनिर्वाहा-श्चेति।"

वज्रशिष्य उवाच- प्राणादिदशवायवोऽस्मिन्काये कुत्र प्रतिवसन्ति, किं कुर्वन्ति च ब्रूहि भगवन् वज्रगुरुः शास्ता।

वज्रगुरुराह- पञ्चवायवः कायविभागे स्थित्वा कायव्यापारं कुर्वन्ति। पञ्चवायवश्चक्षुराद्यायतने स्थित्वा इन्द्रियव्यापारं कुर्वन्ति। तत्र प्राणो हृदयस्थोऽक्षोभ्यस्तथागतः। अपानो गुदस्थो रत्नसम्भवस्तथागतः। उदानः कण्ठस्थोऽमिताभस्तथागतः। समानो नाभिस्थोऽमोघसिद्धि-स्तथागतः। व्यानः सर्वसन्धिस्थो वैरोचनस्तथागतः, इति। उद्वाहो रूपम्, विवाहः शब्दः, संवाहो गन्धः, प्रवाहो रसः, निर्वाहः स्पर्शश्चेति।

एते दशवायवः पुनरुच्छ्वासप्रश्वासा भवन्ति। ते च पुनर्वाय्वादि-चतुर्मण्डलात्मका भवन्ति। ते च पुनश्चतुर्देव्यात्मका भवन्ति। ते च पुनः पञ्चभूतात्मका भवन्ति। ते च पुनरादर्शादिपञ्चज्ञानात्मका भवन्ति। ते च पुनः सितादिपञ्चरश्म्यात्मका भवन्ति। ते च पुनः पञ्चतथागतात्मका

---

१. कोलस् - भो०

भवन्ति। ते च पुनस्त्र्यक्षराधारा भूत्वा प्रवेशस्थितिव्युत्थानक्रमेण वज्रजापं कारयन्ति। ते च पुनर्वायवोऽकारस्याधारा भूत्वा अशेषवाक्प्रव्याहारं कारयन्ति। ते च पुनरनाहतं व्याप्य निःस्वभावा भवन्ति।

वज्रशिष्य उवाच- कथं भगवन्नेते दशवायव एकानेकस्वभावेन दिवारात्रौ स्वकाये स्फरणसंहरणं कुर्वन्ति। ब्रूहि भगवन् वज्रगुरुः शास्ता।

वज्रगुरुराह- साधु साधु महासत्त्व **श्रीतत्त्वसंग्रहादौ मूलतन्त्रे चोत्तरतन्त्रे** च वायुतत्त्वं न विस्पष्टेनोक्तम्, सन्ध्यायभाषितत्वात्। **व्याख्यातन्त्रे** तु यथारुतेन भाषितं तदवतार्यते-

नासिकाच्छिद्रसंभूतः पञ्चबुद्धकुलस्थितः।
पञ्चवायूर्ध्वसञ्चारो देहे चरति नित्यशः ।।

संवृतिघ्राणसञ्चाराद् द्वारात्तस्य विनिसृताः ।
वामदक्षिणद्वन्द्वाश्च स्तब्धश्चैते चतुर्विधाः ।।

दक्षिणात् प्रसरो धातुर्हुतभुङ्मण्डलञ्च वै ।
रक्तवर्णमिदं वक्त्रं पद्मनाथस्य सञ्चरेत् ।।

वामाच्च प्रसरो धातुर्वायुमण्डलनिःसृतः ।
हरितः श्यामसंकाशः कर्मनाथस्य सञ्चरेत्।।

द्वन्द्वस्य प्रसरो धातुः कनकवर्णस्य सन्निभः।
माहेन्द्रमण्डलञ्चैव रत्ननाथस्य सञ्चरेत् ।।

स्तब्धो न प्रसरो धातुः क्षणाद्वारुणमण्डलः।
शुद्धस्फटिकसंकाशं वज्रनाथस्य सञ्चरेत् ।।

सर्वधातुं समुद्धृत्य ह्याधाराधेयधारितः ।
वैरोचनमहाकायो मरणान्ते विनिश्चरेत् ।।
चतुर्मण्डलमेतद्धि जपेन्नित्यं समाहितः ।
अहोरात्रं सदा जापो मन्त्रिणां जपसंक्ष(ख्य)या ।।

इत्युक्तं **भगवता वज्रमालायोगतन्त्रे**। अस्यायममर्थः- वज्रपद्मयोर्नासिकाभ्यां रश्मिं विनिश्चरेत्। ऊर्ध्वगतः संवृतिनासाग्राद्वामदक्षिणद्वन्द्वस्तब्धक्रमेण निश्चरति।

तत्रायं क्रमः- वामघ्राणाद्विनिर्गतो वायुरमोघसिद्धिस्तथागतः। वायुस्वभावो वायव्यमण्डलं हरितश्यामरश्मिस्वरूपमिति। दक्षिणघ्राणात् संचरितो वायुरमिताभस्तथागतः। तेजःस्वभावोऽग्निमण्डलरक्तरश्मिस्वभावः। द्वन्द्वाद् घ्राणाद्विनिर्गतो वायू रत्नसम्भवो माहेन्द्रमण्डलं पीतरश्मिस्वभावम्। स्तब्धो मन्दप्रचारो वायुरक्षोभ्यस्तथागतः। वारुणमण्डलं श्वेतरश्मिस्वभावम्। चत्वारि धातुमण्डलानि व्यानो व्याप्तो वायुर्न निश्चरति रश्मिः श्रीवैरोचनस्तथागतः खसमस्वभावः। किन्तु एकैको रश्मिर्विनिश्चरेत् पञ्चपञ्चरश्मिर्निश्चरति। एकेन धातुमण्डलेन चत्वारो धातवो व्याप्ता इति। एकैकस्मिन्नपि मण्डले त्र्यक्षरमन्त्राधिपतिः प्रवेशादिक्रमेण स्वयमेव सततं जपेदिति। संक्षेपतो वायुतत्त्व उक्तः।

वज्रशिष्य उवाच - गुरुपादप्रसादाद्वायुतत्त्वागमाधिगमाभ्यां सुशिक्षितोऽहमधुना मन्त्रतत्त्वस्य लक्षणं ज्ञातुमिच्छामि। अनुकम्पामुपादाय निर्दिशतु भगवान् वज्रगुरुः शास्ता ।

वज्रगुरुराह- साधु साधु महासत्त्व मन्त्रतत्त्वं नाम **तत्त्वसंग्रहादौ मूलतन्त्रे चोत्तरतन्त्रे** च केवलं मन्त्रमात्रमुदीरितं मन्त्रोद्धारो न प्रदर्शितः। **व्याख्यातन्त्रे** तु मन्त्रोद्धारो मन्त्रसंकेतो मन्त्रार्थो मन्त्रतत्त्वं च भगवता

सद्भावेन विवृतम्। अतो **व्याख्यातन्त्र**मनधिगता बाह्यमन्त्रपरायणा न प्रजानन्ति। तस्माद्यत्नतः शृणु **व्याख्यातन्त्रा**नुसारेण मन्त्रतत्त्वं ते प्रतिबोधयामि। तत्र(त्रे)मेऽर्चादिमन्त्रा आलिकालिसमुद्भवास्तेषां तत्त्वमनाहतोद्भवं त्र्यक्षरम्। यस्मात् सर्वमन्त्राः स्त्रीपुन्नपुंसकस्वभावा यथालब्धोपदेशेन त्र्यक्षरे प्रविशन्ति। तेन त्र्यक्षरः सर्वमन्त्राधिपतिः। ते च पुनरेकैकोऽनाहतेन सह त्रिभिस्त्रिभिरक्षरैर्निष्पन्नाः। अधुनाऽक्षरत्रयस्य व्यापारान्(रा) निर्दिश्यन्ते। तत्र तावत् त्रिसंयोगाद् देवतामूर्तिं निष्पादयति।

स एव प्रवेशस्थितिव्युत्थानक्रमेण देहमहर्निशं धारयति। स एवालिकालिभिः सह द्वयेन्द्रियसमापत्ति[का]लेऽधोमुखो भूत्वा गुह्यनासिकाच्छिद्राच्छुक्ररूपेण विनिर्गत्य सत्त्वधातूनुत्पादयति। स एव प्राणायामेन सह पुनरूर्ध्वं गन्धेन्द्रियद्वारं प्रबोध्य संवृतिघ्राणद्वाराद्वामदक्षिणादिक्रमेण निर्गत्यानाभोगेन वज्रजापं कृत्वा पूर्वकर्मावरणं विशोधयति। स एवाहोरात्रक्रमेण जपसंख्यामुपलभ्य वारुण्यादिमण्डलोदये सितादिवर्णमाश्रित्य शान्तिकादिसर्वकर्माणि करोति। स एवाक्षररूपेण परिकल्पिते नाभिस्पन्दितजिह्वाग्रेण [1]कृत्येत्यादिवाग्जापलक्षणेन जपं कृत्वा बाह्यवर्णादिक्रियामाश्रित्य शान्तिकादिसर्वकर्माणि करोति। स एव त्र्यक्षरशोधनबोधनज्वलनक्रमेणाऽऽहारं विशोध्य निरामयं करोति। एवं कृते वरा[2]वस्थायां सर्वं कृत्वा पर्यन्तेऽनाहते प्रविश्य पुनरपि प्राकृतदेहमाश्रित्य तथैव सर्वं करोति।

इदानीं त्र्यक्षरोत्पत्तिमाह **भगवान् संध्याव्याकरणमहायोगतन्त्रे**-

---

१. कृत्येत्यादि - नास्ति - क. ; गृहीतस्तु भोटानुसारी।

२. कायाव - भो०

एकादिर्नवमध्ये तु दशभिर्यो न बध्यते ।
तमबद्धं विजानीयात् स वेत्ति परमं पदम् ।।

स्वरव्यञ्जनवर्णांश्च नवसंख्यानुवर्तिनः ।
अबद्धान्योन्यसंयोगा यो वेत्ति स जगद्गुरुः ।।

यो बुद्धा(द्ध्वा)वाञ्छयेत् सिद्धिं विमुक्तिफलसम्पदम् ।
स तदेव समाप्नोति अरूपो रूपवर्जितम् ।।

भूतान्तेन समायुक्तं कलादिषोडशे स्थितम् ।
पञ्चपञ्चकसंयुक्तं चतुस्त्रयनियोजितम् ।।

सानुस्वारं सदीर्घं च गुणसंयोगलोपवत् ।
ह्रस्वं समस्तवाक्यं स्यान्न चानेकं न चैककम् ।।

यकारार्थेन यत्किञ्चित् कर्तव्यं सिद्धिमिच्छता ।
रेफादित्रितयेनैव जगत्कार्यं प्रवर्तते ।।

ये वर्णाः पृष्ठतः प्रोक्ता अभिमुखाश्च ये पुनः ।
स्त्रीपुन्नपुंसकास्ते च धात्वादिपरिकल्पिताः ।।

अध ऊर्ध्वसमायुक्ता ज्ञात्वा बुद्ध्या नियोजिताः ।
षड्भिरुक्तं चतुस्त्रै(स्त्र्यै)कान्निःस्वभावैकभावजाम् ।।

[1]त्रा(त्र्या)द्याद्यर्थे समायोज(ज्य) त्र्यध्वज्ञानं तु जायते ।
स्वप्नेन्द्रजालव[2]द्विध्वा कुर्याज्जगत् त्रिधातुके ।।

---

१. चाद्यर्थे - भो०

२. विद्वान् - भो०

प्रत्याहारमिदं मन्त्रं निःस्वभावस्वभावजम् ।
ततः परिणतं रूपं यद् दैवतोपलम्भकम् ।।

सांकेतिकं त्रितत्त्वस्थं प्रकृतिजापलक्षणम् ।
अनाख्येयमनुच्चार्यं बोधिचित्तमिदं परम् ।।

तदेव त्रितयैकं स्यादनिर्गममनागमम् ।
अनिरोधः प्रशान्तश्च शाश्वतोच्छेदवर्जितम् ।।

त्र्यध्वविदाऽकृतसंकल्पमाकाशाभेदलक्षणम् ।
पारमार्थिकमेवेदं प्रत्यात्मवेद्यलक्षणम् ।।

सर्वास्वपि क्रियाश्चै(स्वे)व [1]निषद्यादिषु योगवित् ।
अनाख्येयमनुच्चार्यं त्र्यध्वातीतं जपेत् सदा ।।

पाण्डरादि जपः(पाः) प्रोक्ताः पञ्चविंशच्छतद्वयम् ।
चतुर्भिर्गुणितं सम्यक् चतुर्योगं शतं नव ।।

नवशतं तु यद् दृष्टं चतुर्विंशतिपरिक्रमैः ।
प्रत्युत्पादाद् भवेत्तत्तु द्व्ययुतं शतषोडशम् ।।

तदित्थं गुह्यसन्ध्यायां सूक्ष्मयोगं प्रकाशितम् ।
ध्यानाध्ययनवीतं तु तथापि जप उच्यते ।।

इत्यध्यात्ममैत्रतत्त्वमित्युच्यते ।

---

१. शयनादिषु - भो०

वज्रशिष्य उवाच - आध्यात्मिकवागक्षरप्रवृत्तिकारणेऽपगतः संशयः। अपि च "**ह्रस्वं समस्तं वाक्यं स्याद्**" इत्युक्तं भगवता तत् कथं ह्रस्व-अकारः समस्तवाक्प्रवृत्तेः कारणं भवति।

वज्रगुरुराह- साधु साधु महासत्त्व! इह प्रवचनिका व्याकरणं पुरस्कृत(त्य) केवलशब्दार्थमात्रमनुस्मरन्ति, न तु पुनरक्षरमभिलापश्च कुत्र कस्मात् कथं प्रवर्तत इति यथाभूताक्षरतत्त्वं न प्रजानन्ति, बुद्धगोचरत्वात्। शृणु देशनानुसारेण ते प्रतिबोधयामि। शब्दस्तावदालिकालिमयः। आलीत्यकारादिषोडशस्वराः। कालीति ककारादिवर्णास्त्रयस्त्रिंशत्। कथं षोडशस्वरसंयुक्तम् एकोनपञ्चाशल्लिपिकं सर्वमस्तव्यस्तसमस्तस्वरव्यञ्जनबिन्दुविसर्गसंहिताधातुविभक्तिसमासपदविग्रहस्त्रिलिङ्गतिङन्तकृत्तद्धितप्रत्ययादिभिर्भाष्यपर्यन्तं व्याकरणमिति नामसङ्केतकेन परिभाष[मा]णेन ज्ञायते। अतस्तस्य पदवाक्यच्छन्दोवृत्तिश्लोकगाथादण्डकादिभिश्चतुरशीतिसहस्रधर्मस्कन्धसूत्रान्ततन्त्रकल्पत्रिपिटककाव्यनाटकादयो [१]लौकिकलोकोत्तरशास्त्राणि सम्भाव्यन्ते। शास्त्रमाश्रित्य सर्वसिद्धयः सम्पद्यन्ते।

यथोक्तं **भगवता लङ्कावतारसूत्रे**- "तद्यथा महामते कश्चिदेव पुरुषः प्रदीपं गृह्य धनमन्वेषयति। एवमेव महामते वाग्विकल्परुतप्रदीपेन बोधिसत्त्वा महासत्त्वा वाग्विकल्परहितां स्वप्रत्ययात्मार्थ[२]गतिमनुप्रविशन्तीति।" (लं० सू०, पृ० ६३)

किन्तु तेषां पदवाक्यादिगतवर्णविशेषाणां विज्ञानभूतोऽयमकारः।

---

१. लौकिक - नास्ति - भो०

२. आर्य - मु०, नास्ति- क. ; गृहीतस्तु भोटानुसारी।

यस्मादकारस्वरवियुक्तानि सन्ति ककारादयो वर्णा फलं तत्त्वान्न भवन्ति वाच्याः। यथोक्तं **भगवता नामसङ्गीतिकायाम्**-

अकारः सर्ववर्णाग्र्यो महार्थः परमाक्षरः।
महाप्राणो ह्यनुत्पादो वागुदाहारवर्जितः।
सर्वाभिलापहेत्वग्र्यः सर्ववाक्सुप्रभास्वरः।। इति।
(ना० सं० ४.१-२)

तेनोक्तं भगवता सकलध्यानमुखबीजपदम्। [1]"**अकारो मुखं सर्वधर्माणामाद्यनुत्पन्नत्वाद्**" इति। सहजाक्षरं तु पुनरुच्यते।

वज्रमण्डालङ्कारतन्त्रेऽप्यकारं द्योतयन्नाह-

ज्वलन्तं दीपसदृशं हृदि मध्यमनाहतम्।
अक्षरं परमं सूक्ष्मम् [2]अकारं परमं प्रभुम्।। इति।
(ना० सं० टी०, पृ० २०)

एवं सर्वतथागता अकारान्वयमकारहेतुभूतमकारनिर्जातमुच्चरितप्रध्वंसिस्वभावं वाग्विकल्पलक्षणं यथाभूतं ज्ञात्वा शब्दापशब्दनिरपेक्षं सर्वाशयानुभेदेन विनेयजनेभ्यो धर्मं देशयन्तीति।

अत एवोक्तं **भगवता लङ्कावतारसूत्रे**- "अर्थप्रतिशरणेन महामते बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन भवितव्यं न व्यञ्जनप्रतिशरणेन। व्यञ्जनानुसारी महामते कुलपुत्रो वा कुलदुहिता वा स्वमात्मानं च नाशयति परमार्थं[3] परं नावबोधयति। तद्यथा- महामते अङ्गुल्या कश्चित् कस्यचित् किञ्चिद्

---

१. द्र० - हे० त० १.२.१; च० गी० को०, पृ० १३५.
२. महार्थं - मु०
३. परार्थांश्च - मु०

दर्शयेत्। स चाप्यङ्गुल्याग्रमेव प्रतिसरेद् वीक्षितुम्। एवमेव महामते बालजातीया इव बालपृथग्जनवर्गा यथारुताङ्गुल्यग्राभिनिवेशाभिनिविष्टानामेवंकारं करिष्यन्ति। न यथारुता अङ्गुल्यग्रार्थं हित्वा परमार्थमन्वेषयन्ति। तस्मादर्थकामेन ते सेवनीयाः। अतो विपरीता यथारुतार्थाभिनिविष्टास्ते वर्जनीया [1]अर्थान्वेषिणेति।" (पृ० ७९-८०)

वाक्प्रवृत्तिरपि चतुर्विधेत्युक्तं **भगवताऽत्रैव सूत्रे**- "चतुर्विधं महामते वाग्विकल्पलक्षणं भवति। यदुत लक्षणवाक्, स्वप्नवाक्, दौष्ठुल्य[2]विकल्पाभिनिवेशवाक्, अनादिकालविकल्पवाक्।

तत्र महामते लक्षणवाक् स्वविकल्परूपनिमित्ताभिनिवेशात् प्रवर्तते। स्वप्नवाक् पुनर्महामते पूर्वानुभूतविषयानुस्मरणात् प्रतिनिबद्धविषयाभावाच्च प्रवर्तते। दौष्ठुल्यविकल्पाभिनिवेशवाक् पुनर्महामते सत्त्वपूर्वकृतकर्मानुस्मरणात् प्रवर्तते। अनादिकालविकल्पवाक् पुनर्महामते अनादिकालप्रपञ्चाभिनिवेशदौष्ठुल्यस्वबीजवासनातः प्रवर्तते। एतद्धि महामते चतुर्विधवाग्विकल्पलक्षणमिति।" (लं० सू०, पृ० ३६)

अनेन न्यायेन शब्दो अकारोद्भवत्वादक्षरः। क्षरं विनाशोऽक्षरमविनाशः। [3]खसमस्वभावं यच्छब्दद्वारेण प्रतिपाद्यते [4]निष्पन्नक्रमं तदप्यकृतकमनादिनिधनस्वभावमिति। यथोक्त**मेकनयनिर्देशसूत्रे**-

धर्मा इमे शब्दरुतेन व्याकृता
धर्मश्च शब्दश्च हि नात्र लभ्यते ।

---

१. तत्त्वान्वे - मु०
२. नास्ति - क. गृहीतस्तु मुद्रितानुसारी।
३. असिद्ध - भो०
४. नास्ति - भो०

न चैकतां चाप्यवतीर्य धर्मता-
मनुत्तरां क्षान्तिवरां स्पृशिष्यते ।। इति।
(द्र०- सु० सं० १, पृ० ३९९)

यथोक्तं **वैरोचनाभिसम्बोधिचर्यातन्त्रे**- "अपि तु गुह्यकाधिपते मन्त्राणां लक्षणं सर्वबुद्धैर्न कृतं न कारितं नानुमोदितम्। तत् कस्य हेतोः? एषां धर्माणां धर्मता यदुत उत्पादाद्वा तथागतानामनुत्पादाद्वा तथागतानां स्थितैवैषां धर्माणां धर्मता यदुत मन्त्राणां मन्त्रधर्मता। तद् गुह्याकाधिपते! अस्ति कामधात्वीश्वरस्य मदयन्तिका नाम विद्या तया सर्वकामावचरान् देवपुत्रान् मदेन मूर्च्छयति। विविधविचित्ररमणीयांश्च प्रदेशान् दर्शयति। विविधविचित्रपरिभोगांश्चाभिनिर्माय परनिर्मितवश-वर्तिभ्यो देवेभ्यः प्रयच्छत्यात्मना च परिभुङ्क्ते।

तद्यथा- अस्ति महेश्वरस्य देवपुत्रस्य मनोजवा नाम [1]विद्या तया त्रिसाहस्रमहासाहस्रे लोकधातौ [2]सर्वकार्यं करोति। सर्वोपभोगपरिभोगां-श्चाभिनिर्माय शुद्धावासकायिकेभ्यो देवेभ्यः प्रयच्छत्यात्मना च परिभुङ्क्ते। तद्यथा- माहेन्द्रजालिको मन्त्रैर्वि[3]विधविचित्रार्थान् मनुष्यादिकान् दर्शयति। [4]तद्यथा असुरान् मन्त्रैर्मायां दर्शयति। मन्त्रैर्विषमपनयति ज्वरादिकं च। तद्यथा- [5]मन्त्रकल्पिकादेवतामन्त्रैः श्रेयः सत्त्वेभ्यः प्रयच्छति। मन्त्रैरग्ने-रुष्णता नश्यति शीतता च सम्भवति। [6]एभिर्निदर्शनपदैर्मन्त्रप्रभा-

---

१. गुह्यमन्त्रविद्या - भो०
२. सत्त्वकार्यं - भो०
३. उद्यानतडागनिर्झरादिविविध - भो०
४. तद्यथा असुरान् - नास्ति - क.; गृहीतस्तु भोटानुसारी।
५. मातृ - भो०
६. कुलपुत्र एभिः - भो०

वोऽभिश्रद्धातव्य इति। स च मन्त्रप्रभावो हि न मन्त्रतो निष्क्रामति, [१]न सत्त्वेषु प्रविशति, [२]न द्रव्यादुत्पद्यते, न कर्तुर्दृश्यते। अथ च कुलपुत्र मन्त्राधिष्ठानधर्मतासम्भवन्नातिक्रामति कालत्रयातीतत्वात्। सर्वथाचिन्त्य-प्रतीत्यसमुत्पादात् [३]सिद्ध्यति। कुलपुत्र! अतः सर्वे धर्मा अचिन्त्यस्व-भावेनेत्यधिगम्य सदा तत् सततमन्त्रनयोऽनुगन्तव्यः" इति।

एवमाध्यात्मिकबाह्यमणिमन्त्रौषधीनामचिन्त्यप्रभावमागमाधिगमाभ्यां प्रतिपाद्येदानीं निष्पन्नानिष्पन्नसत्त्वधातूनां यथाभूतवाग्विशुद्धिं दर्शयन्नाह **किन्नरराजपरिपृच्छासूत्रे**- "कुतः पुनः किन्नराधिपते सर्वसत्त्वानां रुत-घोषा निश्चरन्ति।

आह- आकाशात् कुलपुत्र सर्वसत्त्वानां रुतघोषा निश्चरन्ति। न पुनः किन्नराधिपते आध्यात्मिककोष्ठात् सर्वसत्त्वानां रुतघोषा निश्चरन्ति।

आह- तत् किं मन्यसे कुलपुत्र कायाभ्यन्तरकोष्ठात् सर्वसत्त्वानां रुतघोषा निश्चरन्ति, आहोस्वित् चित्तात्?

आह- किन्नराधिपते न कायान्न चित्तात्। तत् कस्माद्धेतोः? कायो हि जडो निश्चेष्ट[४]स्तृणकुड्य[५]लोष्ठमरीचिकाकाष्ठप्रतिभासोपमः। चित्तञ्चा[६]प्यनिदर्शनं मायोपममप्रतिघमविज्ञप्तिकम्।

आह- कायवाक्चित्तविनिर्मुक्तानि पुनः कुलपुत्र कुतोऽन्यतो रुतानि निश्चरन्ति?

---

१. 'न----प्रविशति' - नास्ति - भो०
२. न प्राणां कृत उपलभ्यते - क. मातृकापाठः , गृहीतस्तु भोटानुसारी।
३. 'सिध्यति------सदा' - पाठोऽत्र त्रुटितोऽस्ति मातृकायां, गृहीतस्तु भोटानुसारी।
४. अचलाकृत - भो०
५. लोष्ठमरीचिका - नास्ति- क., गृहीतस्तु भोटानुसारी।
६. अरूपी अनिर्देश्यं - भो०

आह- [1]आकाशं ते मनस्कारात् सम्भवति किन्नराधिपते सर्व-सत्त्वानां तत्र विज्ञप्तिः।

आह- तत् किं मन्यसे कुलपुत्र यद्याकाशं न भवेत् कुतो रुतानि निश्चरेयुः।

आह- न आकाशविनिर्मुक्तः किन्नराधिपते कश्चिद् रुतनिश्चारः।

आह- तदनेन ते कुलपुत्र पर्यायेणैवं वेदितव्यम्। ये केचिद्रुत-व्यापारा निश्चरन्ति सर्वे ते आकाशान्निश्चरन्तीति। आकाशस्वभावानि हि रुतानि समनन्तरनि[2]र्यातानि च निरुद्ध्यन्ते। निरुद्धानि चाकाशस्व-भावतायामेव सन्तिष्ठन्ते। आकाशस्वभावाः सर्वधर्मास्ते उदाहृता अनु-दाहृता वा तामेवाकाशकोटिसमतां न विजहति। रुतमात्रा हि कुलपुत्र सर्वधर्मा अविज्ञप्तिविज्ञपनीयं ते तु [3]शब्देन शब्दसङ्केतेन कथ्यन्ते स च संकेतव्यवहारो यो हि रुतसङ्केतव्यवहार स न क्वचिद् धर्मेऽभिनिविशत इति[4]। [यं प्रति नाभिनिवेशो स न प्रकटीक्रियते। यो न प्रकटति स न चक्रवत् परिवर्तते। यो न परिवर्तते स अभेद्यो भवति सोऽनुपत्पन्नो भवति। योऽनुत्पन्नः सोऽनासक्तो भवति। योऽनासक्तः स स्वच्छः, यः स्वच्छः स शुद्धः, यः शुद्धः सोऽमलः, योऽमलः स प्रभास्वरः, यः प्रभास्वरः स चित्तप्रकृतिः, या चित्तप्रकृतिस्तस्याः स प्रवर्तेत, यः प्रवर्तेत स सर्वलक्षणानभिभविष्यति, यो सर्वलक्षणानभिभवति सोऽदोषे प्रवृत्तो

---

१. आकाशात् संभवति - भो०

२. विज्ञा - मु०

३. 'शब्देन------संकेत' - क. मातृकायां अस्पष्टोऽयमंशः, गृहीतस्तु भोटानुसारी।

४. द्र०- सु० सं०, पृ० ४००-४०१; इतः परं 'अभिनिविशत इति' यावत् नास्ति - क. गृहीतस्तु भोटानुसारी।

भवति, बोधिसत्त्वो योऽदोषे प्रवर्तते स आदितोऽनुत्पन्नधर्म क्षान्तिं प्राप्स्यति, य एवंभूतो भवति सोऽनुत्पन्नधर्म क्षान्तिं प्राप्त इत्युच्यते। यः क्षान्तिं प्राप्नोति स सर्वतः क्षान्तो भवति स शून्यतामपि सोढुं शक्नोति पुद्गलमपि। किमेवमित्याह- यतो हि पुद्गलादन्यत् शून्यता नास्ति, पुद्गल-मेव शून्यता। स लक्षणान्यपि सहतेऽलक्षणान्यपि। किमेवमित्याह- यतो हि लक्षणस्वभावं निर्लक्षणम्। स कामनां सहतेऽकामनामपि। किमर्थ-मित्याह- यः प्रणिधानस्वभावः स निर्लक्षणकामेनेति स सर्वप्राणिनां प्रकृतिपरिनिर्वाणमपि सहते, स प्राणिनां संक्रमणमुत्पत्तिं च सहते। किमर्थमित्याह- संक्रमणमुत्पत्तिश्च मायारूपं कुलपुत्र एवमनुत्पन्नधर्मा बोधिसत्त्वोऽविरोधाभासी, एवमेव ज्ञात्वा सर्वधर्मान्नाऽभिनिविशत इति]''

एवं वाग्वज्रसमाधिस्थो महायोगी [निष्पन्नानिष्पन्नसत्त्वैः सह स्तुतिभिर्नासक्तो भवति, सम्यक्तया तुष्टो] नोत्त्रस्यति न संत्रसति न विचिकित्सति। तथैव लौकिकलोकोत्तरशास्त्रदण्डकत्राटकादिशब्दरचना-विशेषं श्रुत्वा न रज्यति न दुष्यति न मुह्यति सर्वशब्दानां च गतिं-गतत्वात्। यथोक्तं **भगवता सर्वधर्माप्रवृत्तिनिर्देशसूत्रे**-

''शब्दरुतप्रवेशप्रतिष्ठो देवपुत्र बोधिसत्त्वो महासत्त्वः। स चेद् गङ्गानदीबालुकासमानकल्पानाकृष्येत् परिभाषेत् वितथैरसद्भूतैः पादैर्न तस्य तत् प्रतिघचित्तमुत्पद्येत, स चेद् गङ्गानदीबालुकासमानकल्पान् सत्क्रियेत गुरूक्रियेत मान्येत पूज्येत सर्वसुखोपधानैश्चीवरपिण्डपातशय-नासनग्लानप्रत्ययभैषज्यपरिष्कारैर्न तस्य [1]तत्रानुतापचित्तमुत्पद्येत।''

(द्र०- सु० सं० पृ० ४०१)

---

१. अनुराग - भो०

एवं वाग्वज्रसमाधिस्थितोऽष्टमी(ष्टमै)श्वर्यो मन्त्री सर्वलाभालाभयशोऽयशोनिन्दाप्रशंसासुखदुःखं(खैः) न बाध्यते न संह्रियते। अतः सर्वांश्च लोकधर्मानभिभूयोत्पत्तेः क्रममतिक्रम्य चित्तविवेकमन्वेषयितुकामः कल्याणमित्रं पर्युपास्ते।

वाग्विवेकमेलावणसंशयपरिच्छेदस्तृतीयः।। ३।।

*

चतुर्थः परिच्छेदः

वज्रशिष्य उवाच - गुरुपादप्रसादाद्[1] वायुतत्त्वानुपूर्वेण मन्त्रतत्त्वे वाग्विवेके चापगतः संशयः। इदानीं चित्तविवेकं शिक्षितुकामः कथं शिक्षते गंभीराधिमुक्तिकानां हिताय निर्दिशतु भगवान् वज्रगुरुः शास्ता।

वज्रगुरुराह - साधु साधु महासत्त्व सर्वतथागतसंप्रदायबहिर्मुखानामविषयमतिगम्भीरं परमदुरवगाहं बुद्धगोचरं परिपृच्छसि। यस्माच्चित्तस्य स्वभावममूलमप्रतिष्ठितमनालयमलिङ्गमवर्णमसंस्थानमतीन्द्रियं तार्किकाणामविषयमित्युक्तं भगवता सर्वत्र देशनापाठे। अतो वज्रयानमाश्रित्य बुद्धत्वकामेन कल्याणमित्रमाराध्य स्वचित्तस्वभावोऽन्वेष्टव्यः।

यथोक्तं **भगवता श्रीतत्त्वसंग्रहतन्त्रे**- "**प्रतिपद्यस्व कुलपुत्र स्वचित्तप्रत्यवेक्षणसमाधानेन**।" (त० सं०, प्र० प०, पृ० ४)

श्रीवैरोचनाभिसम्बोधितन्त्रेऽप्याह- "**स्वचित्तस्य यथाभूतं परिज्ञानं बोधिः**" इति। **पिटकत्रयनये**ऽप्याह-

[2]**दूरङ्गममेकचरमशरीरं गुहाशयम्** ।
ये चित्तं सन्निवेशयन्ति मुच्यन्ते मारबन्धनाद् ।। इति।

अतः कारणान्मायोपमसमाधिं साक्षात्कर्तुकामेन सर्वविक्षेपावरणमपहाय सर्वतथागतसंप्रदायप्राप्तान् वज्रगुरूनाराध्य **श्रीज्ञानवज्रसमुच्चयादिव्याख्यातन्त्रा**नुसारेण विज्ञानत्रयं प्रकृत्याभासमधिगन्तव्यमिति।

---

१. मुख - भो०

२. द्र०- धम्मपद, चित्तवग्ग, श्लोक- ५.
दूरङ्गममेकचरमशरीरमिन्द्रियगुहाशयम् ।
दुष्करं चित्तं दमयति तमेवाहं ब्राह्मणं ब्रवीमि।।
मुच्यन्ते मारबन्धनाद्--------------------- ।। - भो०

यथोक्तं **लङ्कावतारसूत्रे** - "पुनरपरं महामते बोधिसत्त्वेन स्वचित्त[1]स्य ग्राह्यग्राहकविकल्पगोचरं विज्ञातुकामेन संगणिकासंसर्गमिद्धनीवरणविगतेन भवितव्यम्"। (लं० सू०, पृ० २२)

तत्र विज्ञानत्रयहेतुभूताः सकलपदार्थाः यदुत स्वर्गापवर्गस्थावरजङ्गमं ग्राह्यग्राहकं द्वादशाङ्गप्रतीत्यसमुत्पादचक्रम्। शुभाशुभविकल्पमालोकान्धकारं स्त्रीपुन्नपुंसकाद्याकारमुत्पत्तिस्थितिप्रलयसंक्षेपात् त्रिधातुकमिन्द्रियप्रविचयगोचरविज्ञानत्रयं स्यात्।

यथोक्तं **भगवता भद्रपालिपरिपृच्छासूत्रे**- "भगवानाह - यद् भद्रपाले यन्त्रकर्माधिक्यात् प्रवर्तते तत् कर्मानु[2]रूपि विज्ञानाभिनिर्वृतम्। एवमेव शरीरयन्त्रं विज्ञानाधिक्यात् प्रवर्तते। विचित्रा[3]श्चर्यप्रवृत्तश्चायं विज्ञानधातुः, कारकश्चायं विज्ञानधातुः, शरीरोत्पादनकर्तृत्वात्। अक्षयश्चायं विज्ञानधातुः, धर्मधातुनिषेवणत्वात्। बुद्धिसम्पन्नोयं विज्ञानधातुः, पूर्वशरीराश्रयानुस्मरणत्वात्। आदित्यकिरणसदृशश्चायं विज्ञानधातुर्द्रष्टव्यः। तद्यथा- आदित्यकिरणा दुर्गन्धेष्वमेध्यकुणपेषु सुगन्धेषु च पङ्कजादिषु निपतन्ति, न च तेषां सुगन्धसंश्लेषमुपयाति न च दौर्गन्धः संक्रामति। एवमेवायं विज्ञानधातुः गूथावस्करभक्षेष्वपि शूकरयोन्यादिषूपपत्तिं परिगृह्णाति। न च विज्ञानधातुस्तैर्दोषैर्लिप्यत इति।

अथ महौषधिर्भगवतः पादयोर्निपत्य भगवन्तमेतदवोचत्। किं रूपं भगवन् विज्ञानं शरीरात् प्रच्युतं भवति। भगवानाह- साधु साधु

---

१. दृश्यग्रा - मु०
२. अरूपी - भो०
३. ०त्रकायप्र - भो०

महौषधे एवमेतत्। यथेदानीं चोदितस्तेऽहं प्रतिपादयामि। परमगम्भीरोऽयं प्रश्नस्तथागतविषयनिर्देशो यन्न चैतद् विज्ञानं तथागतादृते निर्देष्टा कश्चिदुपलभ्यते।

अथ भद्रपालिर्भगवन्तमेतदवोचत् - गम्भीरप्रश्नपरिपृच्छाकुशलो भगवन् महौषधिराजकुमारः सूक्ष्मनिपुणबुद्धिश्च। भगवानाह - तथा ह्येष भद्रपाले महौषधी राजकुमारो भगवति विपश्येऽवरोपितकुशलमूलः। अयं भद्रपालेऽयं महौषधी राजकुमारः पञ्चजातिशतानि परतीर्थिकोऽभवत्। स चायमेव विपृष्टवान् किमयं विज्ञानधातुः कोऽयं विज्ञानधातुः कथमयं विज्ञानधातुरिति। न चानेन भद्रपाले विज्ञानस्य गतिरागतिर्वा आसादिता। अहमस्य संशयं विनोदयामि। अपि च विज्ञानमिति कोऽर्थः। बीजं शरीराङ्कुरमभिनिर्वर्तयति, विज्ञानं वेदनायाः स्मृतिं प्रतिलभते, तस्माद्बीजं विज्ञानविज्ञानमित्युच्यते।

तद्यथा- बदरखर्जूरआम्रातकदाडिमविल्वकपित्थादीनां फलानामनेकरसा निष्पद्यन्ते। कटुकतिक्तमधुराम्ललवणकषायादीनां एकैकभवो रसवीर्यविपाको भवति। कस्यचित् कटुको रसो भवति, कस्यचिन्मधुरः। तेषां फलानामन्तरहितानां यस्मिन् बीजानि तस्य तस्यैव गुणाः संक्रामन्ति। एवमेवायं विज्ञानधातुर्यस्मिन् यस्मिंश्च संक्रामति तस्मिन् तस्मिन्नेव वेदनासंक्रान्तिर्भवति। पुण्यमपुण्यं च स्मृतिश्च संक्रामति, अपि चायं विज्ञानधातुः शरीरं परित्यज्य प्रजानाति, इदम्मे शरीरं परित्यक्तमिति, तस्मादयं विज्ञानधातुरित्युच्यते। कुशलं कर्म प्रजानाति, अकुशलं कर्म प्रजानाति, इमानि कर्माणि समनुबद्धान्यहं तेषां समनुबद्ध इत्येवं प्रजानाति, अतो विज्ञानमित्युच्यते। पुनरप्यस्य शरीरस्य सर्वक्रियां विज्ञापयत्यतो विज्ञानमित्युच्यते। अस्मिन् शरीरे विज्ञानं न क्वचित्

प्रतिष्ठितं भवति। न च विज्ञानादृते शरीरमुपलभ्यते। तेन हि भद्रपाले शृणु नादृष्टसत्यमिदं विज्ञानं पश्यति'' इति।

एवं विज्ञानमवर्णमलिङ्गमसंस्थानात्मकं स्वसंवित्ति[ज्ञान]मात्रकं **महायानसूत्रे** सूचितम्। तथापि महावज्रयाने **श्रीसमाजादौ महायोग-तन्त्रे**ऽवतीर्य गङ्गानदीबालुकोपमैः कल्पैरपि स्वचित्तस्य यथाभूतपरिज्ञानं कर्तुं न शक्यते। [१]अतः संवृतिसत्यं द्रष्टुं न पार्यते।

तस्मात् **श्रीज्ञानवज्रसमुच्चयमहायोगतन्त्रा**नुसारेण गुरुपादप्रसादाद् विज्ञानत्रयस्य यथाभूतपरिज्ञानं कर्तव्यम्। तत्तन्त्रात् किञ्चिद् वज्रपदम-वतार्यते।

"अथ महा[सत्त्वाः] बोधिसत्त्वाः प्रणम्य भगवतः पादयोर्निपत्य पुनरपि पप्रच्छुः। अहो शास्ता दुरवबोधं विज्ञानत्रयं नाम परमदुःरवगाहं भाषतु भगवान् भाषतु सुगतो विज्ञान[त्रयभेद]म्।

भगवानाह- यत् प्रभास्वरोद्भवं विज्ञानं तदेव चित्तं मन इति। तन्मूलाः सर्वधर्माः संक्लेशव्यवदानात्मकाः। ततः कल्पनाद्वयं भवत्यात्मा परश्चेति। तद् विज्ञानं वायुवाहनम्। वायोस्तेजस्तेजसः सलिलं सलिला-दुर्वी तेभ्यः पञ्चस्कन्धाः षडायतनानि पञ्चविषयाः सर्व एते वायुविज्ञान-सम्मिश्राः। ततो विज्ञानत्रयं प्रकृत्याभासप्रचारं परिस्फुटमनुभवति। आभासहेतोः प्रकृतयः सम्भवन्तीति।"

एषामुद्देशपदानां विस्तरेण निर्देशमेलापकमाह- प्रथमतरं विज्ञान-त्रयस्य पर्यायं तावन्निर्दिश्यते। प्रज्ञोपाय इत्युक्तं भगवता व्यक्तसंज्ञमिदं हि

---

१. 'अतः ------पार्यते' - नास्ति- क., गृहीतस्तु भोटानुसारी।

सन्ध्यावचनेन नपुंसकपदसङ्केतमव्यक्तमुपलब्धज्ञानं च। ततश्चित्तं मनोऽथ विज्ञानमिति परतन्त्रं परिकल्पितं परिनिष्पन्नमिति, रागो द्वेषो मोह इति त्रिस्वभावमित्यादि पर्यायं महायानिकादीनामपि साधारणम्।

वज्रयाने तु पर्यायमाह- आलोक आलोकाभास आलोकोपलब्धिरिति, शून्यमतिशून्यं महाशून्यमिति, चित्तं चैतसिकमविद्येति, रागो विरागो मध्यराग इति। एवं चित्तस्य पर्यायं निर्दिश्य इदानीं स्वलक्षणं प्रत्यात्मवेद्यस्वभावं वाग्द्वाराश्रयेण निर्दिश्यते। चित्तं वर्णसंस्थानादिरहितमाकाशलक्षणमित्युक्तं भगवता। भगवतैव पुनर्व्याकृतमाभासलक्षणेनानुभवलक्षणेन च प्रतिपत्तव्यमिति।

अतस्तदुपदेशोऽवतार्यते- "यदुतादौ वा(या)वदा[१]भासः पश्चात् प्रकृतिः तत्रालोक आलोकाभास आलोकोपलब्धिरित्याभासत्रयम्। आलोकलक्षणं तावत् निराकारस्वरूपं कायवाङ् नास्ति। यथा शरत्काले निर्मलचन्द्ररश्म्यवभासो व्याप्तः स्वच्छस्वभावाकारः सकलपदार्थानामालम्बनतया आलोकः। इदं पारमार्थिकं बोधिचित्तं प्रज्ञास्वभावं[२] प्रथमं शून्यम्।

अं वाग्द्वाराश्रयबीजं दृढीकरणहेतोरल्पाधिमुक्तिकाः सत्त्वास्तथागतसन्ध्यायवचनं नावगच्छन्ति। ते चन्द्रमण्डलरूपमाश्रित्यालम्बन्ते। पद्मं वा स्त्रीरूपं वा वामसंज्ञा रात्रिसंज्ञा मृदुभावश्चित्तस्य संवृतिरूपं व्यक्तम्। कतरोपममालोकाभासलक्षणं तच्च ग्राह्यग्राहकरहितं निराकारस्वरूपं कायवाङ् नास्ति। यथा शरत्काले सूर्यरश्म्यवभासो व्याप्तोऽतिस्व-

---

१. सर्वाभासः - भो०

२. 'आभासम्'- भो०

च्छोऽतिनिर्मलस्वभावः। सकलपदार्थानामालम्बनं समन्तभद्रं बोधिचित्तं द्वितीयः क्रमोऽतिशून्यलक्षणम्।

अः वाग्द्वाराश्रयं बीजं दृढीकरणहेतोरल्पाधिमुक्तिकाः सत्त्वास्तथागतसन्ध्यायवचनं नावगच्छन्ति, ते सूर्यमण्डलरूपमाश्रित्यावलम्बन्ते। वज्रपञ्चसूचिकं वा रत्नं [1]वा पुरुषरूपं वा दक्षिणसंज्ञा खराकृतेश्चैतसिकस्य संवृतिरूपमिति।"

आलोकोपलब्धं कतमत् तथैवाकाशलक्षणनिराकारस्वरूपं कायवाग्नास्ति। यथा सन्ध्यान्तकालस्वभावाव्याप्तं सूक्ष्मं निरालम्बकं तत्त्वं प्राणायामो न संक्रामति। निश्चेतनम[2]स्फालकं न वाग्बीजाश्रयद्वारं परिनिष्पन्नाभिधानकम्। इदमालोकोपलब्धकमविद्या[3]क्षयमहाशून्यं त्रिविधं विज्ञानमित्युच्यते। एवं सर्वबुद्धोपदेशं शून्यत्रयलक्षणं प्रतिपाद्येदानीमेकैकज्ञानोदये प्रकृतिस्फरणं व्यवस्थाप्यते।

तत्र प्रज्ञाज्ञानस्य प्रकृतिस्तावद्विरागः, मध्यम[वि]रागः, अतिविरागः, यन्मनोगतागतं शोकः, मध्यमशोकः, अतिशोकः, सौम्यम्, विकल्पम्, भीतम्, मध्यमभीतम्, अतिभीतम्, तृष्णा, मध्यमतृष्णा, अतितृष्णा, उपादानम्, निःशुभम्, क्षुत्, तृष्णा, वेदना, समवेदना, अतिवेदना, विद, वित्, धारणापदम्, प्रत्यवेक्षणम्, लज्जा, कारुण्यम्, स्नेहः, मध्यमस्नेहः, अतिस्नेहः, [4]साश्चर्यम्, सञ्चयः, मात्सर्यमिति त्रयस्त्रिंशत्क्षणाः।

---

१. दिनं वा - इत्यधिकम् - भो०
२. अचलं - भो०
३. लक्षणं - भो०
४. ससंशयं - भो०

उपायज्ञानस्य प्रकृतिः। यदुत रागं रक्तं तुष्टं मध्यमतुष्टम् अतितुष्टं हर्षणं प्रामोद्यं विस्मयः हसितं ह्लादः आलिङ्गनं चुम्बनं चूषणं धैर्यं वीर्यं मानः करणं हरणं बलम् उत्साहं साहसं मध्यमसाहसम् उत्तमसाहसं रौद्रं विलासं वैरं शुभं वाक्स्फुटं सत्यम् असत्यं निश्चयं निरुपादानं दातृत्वं चोदनं शौर्यम् अलज्जा धूर्तत्वं दुष्टं हठं कौटिल्यमिति चत्वारिंशत् क्षणाः।

आलोकोपलब्धज्ञानस्य प्रकृतिः। यदुत मध्यमरागः विस्मृतिः भ्रान्तिः तूष्णीं खेद आलस्यं धन्धत्वमस्य सप्तक्षणाः। एताः प्रकृतयो अशीतिविधक्षणाः। साक्षाच्च भिद्यमानाः षष्ठ्युत्तरशतमहर्निशमण्डजादीनामपि प्रचरन्ति स्त्रीपुरुषयोनिभेदभिन्नं स्यात्।

वज्रशिष्य उवाच - अशीतिविधं चित्तं निशमनिशं प्रचरति स्वपरेषां प्रत्यात्मवेद्यं नात्र संदेहः। तथाप्यागमप्रत्ययं निर्दिशतु भगवान् वज्रगुरुः शास्ता।

वज्रगुरुराह- मन्त्रशब्दस्य निरुक्तिप्रकाशनेनैव सूचितं **भगवता समाजोत्तरे**-

प्रतीत्योत्पद्यते यद्यदिन्द्रियैर्विषयैर्मनः ।।
[१]**तन्मनस्त्वशीतिख्यातस्त्रकारस्त्राणनार्थतः** । इति।
(गु० स०, १८.६९-७०)

एता अशीतिबिम्बप्रकृतयोऽष्टानवतिक्लेशा भवन्ति। पुनः द्वाषस्ति-(षष्टि)दृष्टिप्रकृतयो भवन्ति।

वज्रशिष्य उवाच- [२]प्रज्ञाज्ञानं चन्द्रालोकनिभं शून्यमात्रम्, उपाय-

---

१. मुद्रिते तु 'तन्मनो मननं ख्यातं कारकत्राणनार्थतः' पाठः।

२. प्रज्ञाशून्यं - भो०

ज्ञानमपि सूर्यालोकनिभमतिशून्यमात्रम्, तथैवालोकोपलब्धज्ञानमन्धकार-सन्निभं महाशून्यलक्षणम्, तदेतद् विज्ञानत्रयमाकाशलक्षणं निराकारस्वरूपं व्याप्तं गमनागमनरहितमित्युक्तम्। कथमहर्निशं स्वकाये स्फरणसंहरणं करोति। कोऽसौ जागर्ति, का निश्चिन्ता रागविरागमध्यरागादिषष्ठ्युत्तर-शतप्रकृतयः, कस्य सकाशादनुभूयन्ते। कारणमत्र निर्दिशतु भगवान् वज्रगुरुः शास्ता।

वज्रगुरुराह- तत्र विज्ञानत्रयममूलमप्रतिष्ठितमनालयम[1]लिङ्गम-वर्णमसंस्थानमतीन्द्रियम्। किन्तु साभासवायुधातुसहितं जागर्ति। यस्माद् वायुधातुररूपी चलनस्पन्दनादिक्रियादर्शनादनुमानगम्यः। तथैव विज्ञाना-भासोऽप्यरूपी रागविरागमध्यरागादिप्रकृतिभिरनुमेयत्वादनुमानेन गम्यत इति। यथोक्तं **विज्ञानसंक्रान्तिसूत्रे**- "तद्यथा भद्रपाले वायुधातुररूपी अनिदर्शनोपादानाद्रूपी संदृश्यते तत्र दर्शनं वृक्षस्पन्दनसमुदीरणरवरभस-तटतटाजनितनिर्घोषः शीतोष्णस्पर्शजनितवेदी, न चास्य करचरणनयन-वक्त्रोपलब्धिर्भवति, न च वर्णाधिक्येनोपलक्षते श्यामो वा गौरो वेति। एवमेव भद्रपाले! अयं विज्ञानधातुर्न रूपेणोपलक्षते न रूपावभासमा-गच्छति, कारणविशेषैस्त्वयं विज्ञानधातुरवगन्तव्यः" इति।

अनेन न्यायेन सूक्ष्मधातुर्विज्ञानाभासयोररूपत्वाद् घृतं घृते न्यस्तमिव सन्मिश्रीभूयाशेष[2]लौकिकलोकोत्तरकृत्यं सम्पादयति। यथोक्त-**मनुत्तरसन्धौ**-

संवित्तिमात्रकं ज्ञानमाकाशवदलक्षणम् ।
किन्तु तस्य प्रभेदोऽस्ति सन्ध्यारात्रिदिवात्मना ।।

---

१. अलक्षणं - भो०

२. लौकिक - नास्ति- भो०

आलोकालोकभासौ च तथाऽऽलोकोपलब्धकम्।
चित्तं त्रिविधमित्युक्तमाधारस्तस्य कथ्यते।।
वायुना सूक्ष्मरूपेण ज्ञानं सन्मिश्रतां गतम्।
निःसृत्येन्द्रियमार्गेभ्यो विषयानवलम्बते।।
आभासेन यदा युक्तो वायुर्वाहनतां गतः।
तदा तत्प्रकृतिः सर्वा अस्तव्यस्ता प्रवर्तते।।
यत्र यत्र स्थितो वायुस्तां तां प्रकृतिमुद्वहेत्।। इति।
(अ० सं०, श्लो० ३०-३४)

इममर्थं द्योतयन्नाह - "झटितिज्ञानसंभूतं खद्योतकाकारं दशदिग्व्यापिनं ज्वलन्तम्" इति **सन्ध्यावचनम्**। कथं [झटिति]ज्ञानसंभूतं [क्षणलवमुहूर्तनिमिषतालमात्रा]भासोदयमित्यर्थः। खद्योतकाकारमिति खं द्योतयतीति खद्योतकं तदाकारमर्थं दशदिग्व्यापिनं प्रज्वलन्तमालोकत्रयाभासं न च खद्योतो ज्योतिरिङ्गिणः। अतः सूक्ष्मधातुप्रवेशात् क्षणलवमुहूर्तनिमिष[1]तालमात्राभासो भवति। ततः क्षणलवमुहूर्तनिमिष[2]तालमात्रप्रकृतिरनुभूयते। का निश्चिन्ताऽविद्या। अत एव निखिलाः संभवन्ति। ततो वायुधातुहेतोः प्रकृतयः परस्पराऽन्योन्यानुगता अस्तव्यस्तसमस्तविषयविभागादहर्निशं स्व[3]परेषामनुभूयन्ते। एवं प्रकृत्याभासवायुवाहन-

---

१-२ 'ताल' नास्ति - क., गृहीतपाठस्तु भोटानुसारी।
३. परसन्तति - भो०

भेदाधिगतो महायोगी अतीतानागतप्रत्युत्पन्नानि सर्वसत्त्वचित्तचरित-संस्पन्दितानि प्रजानाति।

यथोक्तं **भगवता किन्नरराजपरिपृच्छासूत्रे**- "असङ्गज्ञान-समन्वागतो हि सम्यक्संबुद्धः। तत् कस्य हेतोः? कुलपुत्र सर्वसत्त्वा-नामतीताश्चित्तधाराः क्षीणा निरुद्धविगता विपरिणताः सर्वास्तास्तथागतः प्रजानाति। यैर्हेतुभिस्ताश्चित्तधाराः समुत्पन्नाः, येषां हेतूनां विगमात् क्षीणाः साकाराः सोद्देशाः सनिर्देशाः कुशला वा अकुशला वा व्याकृता अव्याकृता वा। अप्येतर्हि प्रत्युत्पन्नेऽध्वनि सर्वसत्त्वानां चित्तधाराः प्रवर्तन्ते, ता अपि सर्वास्तथागतः प्रजानाति। यस्य चित्तस्यानन्तरं यच्चित्तमुत्पद्यते कुशलं वा अकुशलं वा व्याकृता(तं) अव्याकृता(तं) वा साकारं सोद्देशं सनिदर्शनं याश्च सर्वसत्त्वानामनागताश्चित्त[धाराः सनिर्देशाः सहेतुकास्तथागतः प्रजानाति। ये च] चैतसिका धर्मास्तानपि सत्त्वां-स्तथागतः प्रजानाति। यस्य चित्तस्यानन्तरं यच्चित्तमुत्पद्यते [कुशलं वा अकुशलं वा] व्याकृतं वा अव्याकृतं वा साकारं सोद्देशं सनिदर्शनमेव-मसङ्गज्ञानसमन्वागतो हि कुलपुत्रस्तथागतोऽर्हन्सम्यक्संबुद्ध" इति।

अनेन न्यायेन चित्तवज्रसमाधिस्थो ज्ञानी प्रणिधायकप्रणिधेय-प्रणिधानादिबाह्यविचित्रभावाभिनिवेशमपनीय स्वाधिष्ठानक्रमाभिमुखो भवति। "प्रतिपद्यस्व कुलपुत्र स्वचित्तप्रत्यवेक्षणं समाधानेन" इति **मूल-तन्त्रे** वचनात् । (त० सं०, प्र० प०, पृ० ४)

एवं **व्याख्यातन्त्र**माश्रित्य प्रकृत्याभासा[नुसारे]ण स्वचित्तस्य यथाभूतपरिज्ञानमधिगम्य कर्मवादिनः सत्त्वा अनादिसंसारे स्वविकल्पो-द्भूतक्लेशकर्मप्रबन्धात् कोषकारकीटवत् स्वयमेव महन्तं दुःखस्कन्धमभि-

संस्कृत्य जन्मपरम्परयोपचितशुभाशुभकर्मणः फलविपाकमनुभूय पुनः परमार्थमण्डलक्रमेण कलेवरं परित्यज्य वायुधातुसंगृहीतो वेदनासंप्रयुक्त-स्तृष्णयानुबद्धो धर्मधातुनिष्पत्तितः स्मृत्या परिगृहीतः कुशलाकुशला-रम्भणसंप्रयुक्तः पञ्चषड्वर्षोपमः शिशुः सकलाक्षो गन्धाहारो वज्रादिभि-रप्यभेद्यः सर्वलक्षणोपेतः कर्मर्द्धिवेगवान् सप्ताहाद्वत्यन्तराले स्थित्वा स्वविकल्पोद्भूतशुभाशुभकर्मणा सञ्चोदिते सति हेतुप्रत्ययं प्राप्य पञ्चगतिषु घटीयन्त्रन्यायेन पुनः पुनः प्रतिसन्धिं गृह्णाति सांसारिकदुःखं चानु-भवतीति।

चित्तविवेकसंशयमेलावणपरिच्छेदश्चतुर्थः।। ४ ।।

*

पञ्चमः परिच्छेदः

वज्रशिष्य उवाच- अन्यदपि भगवन् विज्ञानवैचित्र्यं परिपृच्छामि। स चेद् भगवन् विज्ञानत्रयप्रकृत्याभासोऽरूपी वायुधातुररूपी कर्म च अरूपी तथैव(वैषामन्योन्यमपरिज्ञानेन) [1]शून्यमित्युक्तं भगवता देशना-पाठे। तत् कथं शुभाशुभकर्मणामनाद्ये भवचक्रे तन्मनोमय[शरीरमबद्धं स्यात्, तथैव षष्ठ्युत्तरशत]प्रकृतिभिः कुशलमकुशलमुपचितं तदिहैव क्षणं क्षणादुत्पद्य प्रध्वंसीभवति। तत् कथं पुनः परलोके चोपलभ्यते। अथवा तत् कुशलमकुशलमन्यस्मादागच्छति, उताहो स्वचित्तवासनादुद्भवतीत्येतन्मे कौकृत्यं विशोधयतु भगवान् वज्रगुरुः शास्ता।

वज्रगुरुराह - साधु साधु महासत्त्व कर्मविशुद्धपरिज्ञानं नामातिगम्भीरं बुद्धविषयम्, नैतत् कुलपुत्र आदिकर्मिकाणां[2] च भूमिस्तस्माद्यत्नतः शृणु युक्त्यागमाभ्यां कर्मविशुद्धिं ते प्रतिबोधयामि। तत्र प्रथमं तावच्छुभाशुभकर्मणां स्वलक्षणं व्यवस्थाप्यते। तत्र दश कुशलाः कर्मपथास्तद्विपर्ययादकुशलकर्मपथाः। एते कर्मपथाः कायवाक्चित्तसमुद्भवा इत्युक्तं भगवता **वज्रोष्णीषतन्त्रे** तदवतार्यते- "भगवानाह - शृणु गुह्यकाधिपते त्रिविधं कायदुश्चरितम्, चतुर्विधं वाग्दुश्चरितम्, त्रीणि चित्तदुश्चरितानि, ततो नरकपातं भवति।

वज्रपाणिराह - भाषतु भगवान् भाषतु सुगतः। कतिविधं कायप्रभेददुश्चरितम्, वाग्प्रभेददुश्चरितम्, चित्तप्रभेददुश्चरितमिति।

---

१. शून्यत्वं - भो०

२. कर्मवादिनां - भो०

भगवानाह - तदेव गुरुसामान्यं गुह्यकाधिपते दुश्चरितम्। माता-पितृगुरुजनप्रभृतीनां ताडनं घातनं गुरुदुश्चरितम्। प्राणातिपातप्रभृतयोऽ-कुशलकर्मपथाः सामान्यदुश्चरितम्। वाग्दुश्चरितं यदुत सद्धर्मप्रतिक्षेपादेव पारुष्यवचनं तदेव दुश्चरितं वाक्यम्। मातापितृगुरुप्रभृतीनां पारुष्यवचनं गुरुदुश्चरितं वाक्यं क्वचित् पुद्गलानां श्रद्धाप्रतिपत्तिकुशलानां कथाप्रसङ्गेन नास्ति परलोक इत्युदारवचनाल्लोकोत्तरमृषावादं कुशलकर्मविघ्नं कुर्वन्ति। संभिन्नप्रलापं [पारुष्यमकुशलकर्मकथा] सामान्यवाग्दुश्चरितम्। चित्तदुश्चरितं यदुत प्रथमस्त्यानं तदेव प्रकृतिश्चित्तप्रकृतिदुश्चरितम्, [चित्तोद्भूतप्रकृति-दुश्चरितमविद्या प्रकृति]दुश्चरितम्।

वज्रपाणिराह- भाषस्व भगवन् भाषस्व सुगत चित्तचैतसिकाऽ-विद्यादुश्चरितानि। भगवानाह- शृणु गुह्यकाधिपते विघातेन चित्तं विरक्तेन चित्तं दशकुशलकर्मपथे विरक्तं तदेव दुश्चरितचित्तम्। मददर्पाहङ्कारक्रोध-सत्त्वनाशनं रागचित्तपरदाराऽऽसक्तिपरद्रव्यापहरणम्। गुरुजनं प्रति कुटिलचित्तं चित्तदुश्चरितम्, चैतसिकं दशकुशलकर्मपथषट्पारमिता-विक्षिप्तविस्मृतिर्द्वन्द्वाङ्कितवदनो मनसान्धकारतयाऽविद्या सामान्यदुश्चरित-मिति"।

एवमज्ञानां कायवाक्चित्त[1]सुचरितं वा दुश्चरितं वा स्वकीय-प्रकृत्याभासवायुवाहनस्वभावमज्ञात्वा स्वं कायं स्वं वाक् स्वं चित्तमित्य-हङ्कारममकारेण शुभाशुभकर्म कृत्वा सुगतिदुर्गतिपरायणो भवति। प्रकृत्याभासक्रमेण चित्तविवेकाधिगतो ज्ञानी कायवाक्चित्तसुचरितं वा दुश्चरितं वा न मन्यते न विकल्पयते, तस्मात् शुभाशुभप्रकृतयः शून्य-

---

१. नास्ति - भो०

त्रयसमुद्भवा वायुवाहनवशात् क्षणे क्षणे चोत्पद्य विषयाननुभूय पुनः पुनः प्रभास्वरं प्रविशन्ति। यथोक्तम**नुत्तरसन्धौ**-

पयोधरा यथा नैके नानासंस्थानवर्णकाः।
उद्भूता गगनाभोगाल्लयं गच्छन्ति तत्र वै ।।

एवंप्रकृतयः सर्वा आभासत्रयहेतुकाः।
निर्विश्य विषयान् कृत्स्नान् प्रविशन्ति प्रभास्वरम्।।

[1]एवंस्वभावा विज्ञानादज्ञान[पटलावृताः।
कृत्वा शुभाशुभं कर्म भ्र]मन्ति गतिपञ्चके ।।

आनन्तर्यादिकं कृत्वा नरकेषु विपच्यते ।
शुभं दानादिकं कृत्वा [स्वर्गादिषु महीयते ।।

अनन्तजन्मसाहस्रं] प्राप्य चैवं पुनः पुनः ।
पूर्वकर्मविपाकोऽयमिति शोचति मोहतः ।।

प्रकृत्याभा[सवि[2]धिना [3]क्लेशवन्तश्च ये जनाः ।
एतज्ज्ञात्वा विमु]च्यन्ति ज्ञानिनो भवपञ्जरात्।। इति।

(अ० सं०, श्लो० ४१-४७)

इममर्थं द्योतयन्नाह भगवान् **किन्नरराजपरिपृच्छासूत्रे**- "[यथा चित्तचर्याः असंस्कृता अरूपिणस्तथै]व वायुरसक्तः सर्वलोके चित्तप्रकृतिं ज्ञात्वा विशुद्धत्वात् न भवति। क्लेशतमसा सम्भवो हीति।"

---

१. एषां - मु०
२. योगेन - मु०, गृहीतस्तु भोटानुसारी।
३. येन क्लिश्यन्ति जन्तवः - मु०, गृहीतस्तु भोटानुसारी।

अनेन न्यायेनापि चित्तविवेकाधिगतो महायोगी शुभाशुभकर्मफलमनपेक्षमोक्षाभिमुखो भवति। यथोक्तं भगवता **वज्रच्छेदिकायाम्**- "धर्मा एव प्रहातव्याः प्रागेवाधर्मा इति।।" (वज्र० प्र० सू०, पृ० ३१)

श्रीगुह्यसमाजमहायोगतन्त्रेऽप्याह- "**दश कुशलान् कर्मपथान् कुर्वन्ति ज्ञानवर्जिताः**" (गु० स० १७.१५) इति। [1]एवं मत्वा कल्याणमित्रविरहात् स्वचित्तस्य यथाभूतपरिज्ञानमनधिगम्य अहङ्कारममकारेण रिक्तं तुच्छं शून्यं शुभाशुभाधिकं कल्पेऽपि वाऽनादिसंसारे दुःखमनुभवन्ति।

यथोक्तं भगवता **आर्याष्टसाहस्त्रिकायां प्रज्ञापारमितायां कल्याणमित्रपरिवर्ते**- "सुभूतिराह- यदि भगवन् सर्वधर्मा विविक्ताः, सर्वधर्मा शून्याः, कथं भगवन् सर्वसत्त्वानां संक्लेशं प्रजायते? कथं भगवन् सर्वसत्त्वानां व्यवदानं प्रजायते? न च भगवन् [2]सर्वसत्त्वानां विविक्तं संक्लिश्यते, न च भगवन् विविक्तं व्यवदायते। न च भगवन् शून्यं संक्लिश्यते, न च भगवन् शून्यं व्यवदायते। न च भगवन् विविक्तं वा शून्यं वा अनुत्तरां सम्यक्संबोधिमभिसंबुध्यते। अन्यत्रापि भगवन् शून्यतायाः [3][सर्वधर्मो नोपलभ्यते], योऽनुत्तरां सम्यक्संबोधिमभिसंबुद्धो वा, अभिसंभोत्स्यते वा, अभिसंबुध्यते वा। कथं वा वयं भगवन् अस्य भाषितस्यार्थमाजानीमः? देशयतु भगवन् देशयतु सुगत! एवमुक्ते भगवानायुष्मन्तं सुभूतिमेतदवोचत्- तत् किं मन्यसे [4]सुभूते दीर्घरात्रं

---

१. अत्र यावत् एशियाटिकसोसाइटीतः प्राप्ताया मातृकायाः पाठ आसीत्, अतः परं संशयपरिच्छेदनाम्ना राष्ट्रियाभिलेखालयकाठमाण्डूतः प्राप्ताया मातृकायाः पाठः प्रारभ्यते।

२. नास्ति - मु०

३. नास्ति - मु०, विविक्तं - इत्यधिकम् भो० ।

४. नास्ति - मु०

सत्त्वा अहङ्कारममकारे चरन्ति? सुभूतिराह - एवमेतद्भगवन्नेवमेतत् सुगत। दीर्घरात्रं सत्त्वा अहङ्कारममकारे चरन्ति।

भगवानाह- तत् किं मन्यसे सुभूते अपि नु अहङ्कारममकारौ शून्यौ? सुभूतिराह- शून्यौ भगवन्, शून्यौ सुगत।

भगवानाह- तत् किं मन्यसे सुभूते अहङ्कारेण ममकारेण च सत्त्वाः संसारे संसरन्ति? सुभूतिराह- एवमेतद् भगवन्नेवमेतत् सुगत। अहङ्कारेण ममकारेण च सत्त्वाः संसारे संसरन्ति।

भगवानाह- एवं खलु सुभूते सत्त्वानां संक्लेशः प्रजायते। एवं [1]व्यवदानं प्रजायते इति।'' (अ० सा० प्र०, पृ० १९८)

तथा **सर्वकर्मावरणविशुद्धिसूत्रे**ऽप्युक्तम्- ''तत् किं मन्यसे भिक्षो! अपि चानुत्पाद उत्पद्यते वा निरुध्यते वा संक्लिश्यते वा व्यवदायते वा। आह- नो हीदं भगवन्।

भगवानाह- तत् किं मन्यसे भिक्षो अपि चानुत्पन्ना धर्मा नरकं वा गच्छन्ति तिर्यग्योनिं वा यमलोकं वा गच्छन्ति। आह- उत्पाद एव तावद्भगवन् नास्ति कुतः पुनर्दुर्गतिगमनम्।

[भगवान्] आह- एवं प्रभास्वरा भिक्षो सर्वधर्मा बालपृथग्जना अभूतं कल्पयित्वा वितथं कल्पयित्वा रिक्तं तुच्छं शून्यं कल्पयित्वा [नरकं वा] तिर्यग्योनिं यमलोकं वा गच्छन्ति। तत् किं भिक्षवो न मया धर्मो देशितश्चित्तसंक्लेशात् सत्त्वाः संक्लिश्यन्ते चित्तविशुद्ध्या विशुद्ध्यन्ते इति।'' **तथागतकोषसूत्रे**ऽप्युक्तम्- ''आदिशुद्धान् सर्वधर्मानश्र[2]द्धया

---

१. इतः पूर्वं 'खलु सुभूते सर्वसत्त्वानां' - मु०

२. अश्रद्धया नास्ति - क. गृहीतस्तु भोटानुसारी।

श्रद्धातव्यानधिमुच्यते इति। न तस्य सत्त्वस्यापायगमनं वदामि। तत् कस्य हेतोः? नास्ति क्लेशानां राशीभावो विलीना हि सर्वक्लेशा हेतुप्रत्ययसामग्रीसंयोगादुत्पद्यन्ते। उत्पन्नमात्राश्च निरुध्यन्ते। यस्योत्पादभङ्गादेव क्लेशानां भङ्ग'' इति। [1]**भट्टारकपादैर**पीममर्थं द्योतयद्भिरुक्तम्-

यदि शून्यमिदं सर्वमनुत्पन्नस्वभावकम् ।
कथं कर्मात्र संसारे सुखदुःखं प्रवर्तते ।।

अहङ्कारममकारैस्तथारागादिभिर्मलैः ।
कल्पितं परतन्त्रेण दुःखात् क्लिश्यन्ति बालिशाः ।।

चित्तमात्रमिदं सर्वं मायाकारसमुत्थितम् ।
ततः शुभाशुभं कर्म ततो जन्म शुभाशुभम् ।। इति।

तदनेन न्यायेन युक्त्यागमाभ्यां सर्वतथागता महाकृपात्मकाः सर्वसत्त्वान्दुःखार्णवपतितान् अशरणानपरायणान् दृष्ट्वा संवृत्यनुसारेण क्लेशस्वभावपरिज्ञानेन क्लेशविशुद्धिं प्रबोध्य संवृतिसत्यमपि परमार्थसत्येन विशोध्य भूतनयात्मकसमाधौ प्रतिष्ठापयन्तीति।

कर्मान्तविभागमेलावणसंशयपरिच्छेदः पञ्चमः।। ५।।

*

---

१. नागार्जुनपादैः - भो०

षष्ठः परिच्छेदः

वज्रशिष्य उवाच- युष्मत्पादप्रसादादनन्तरोक्तप्रवचनानुसारेण कायवाक्चित्तस्य स्वलक्षणं प्रविचार्यमाणं यदवधीरितं समाध्यनन्तरं त**द्भट्टारकपादौ** निवेद्योत्तरोत्तरसमाधिविशेषं परिपृच्छामि। उत्पत्तिक्रमादारभ्य कायविवेकस्य पर्यन्तं त्रिवज्रे[त्यादि] [1]विनाभाव(?)लक्षणाधिमुक्तिमात्रमतः कायविवेको देवतारूपं न विद्यते, परमाणुसमूहमात्रत्वात् कायस्य। वाग्विवेकस्यापि पर्यन्तं प्रवेशादिक्रमेण वज्रजापमात्रपरिज्ञानं तत्रापि देवताकारो न विद्यते, प्रतिश्रुत्कोपमस्वभावत्वाच्छब्दस्य। चित्तविवेकस्यापि पर्यन्तं प्रकृत्याभासपरिज्ञानमात्रम्। तत्रापि सर्वाकारवरोपेतादिलक्षणान्वितदेवतास्वरूपं नोपलभ्यते, आभासमात्रत्वाच्चित्तस्य। अनेन न्यायेन संवृतिसत्यमाश्रितेन विना प्रतिष्ठां न लभते। तस्माद् ज्ञानमात्रेण देवतानिष्पत्तिं गुरुप्रसादादधिगन्तुमिच्छामि।

वज्रगुरुराह- साधु साधु महासत्त्व! अचिन्त्यं ते देवतातत्त्वं सर्वबुद्धोपदेशं गुरुपर्वक्रमागतं दशभूमीश्वराणामप्यगोचरं ते प्रतिपादयामि। स्वचित्तस्य यथाभूतपरिज्ञानं नाम स्कन्धधात्वायतनादीनामभावे ज्ञान[2]त्रयप्रकृत्याभासमात्रेण सर्वलक्षणोपेतदेवतारूपग्रहणम्। तच्च स्वप्नमायादिद्वादशदृष्टान्तैरुपलक्षितम्। अयं बुद्धानां मनोमयकायः।

वज्रशिष्य उवाच- "कायाधारेण विना चित्तस्य प्रवृत्तिर्नास्ति, चित्तेन विना कायो नोपलभ्यते" इत्युक्तं देशना[3]पाठे। कथं पुनः केवलेन

---

१. नास्ति - भो०

२. नास्ति - भो०

३. आगमपाठे - भो०

चित्तमात्रेण हस्तपादादिसर्वलक्षणोपेतदेवताविग्रहो निष्पाद्यत इति। उपलम्भदृष्टा य आगमाधिगमेन विना न प्रतिपद्यन्ते। तस्मात् तेषां निरुपलम्भदेवतातत्त्वं सुकरेण साक्षात्करणोपायं निदर्शयतु भगवान् वज्रगुरुः शास्ता।

वज्रगुरुराह- साधु साधु महासत्त्व ये सूत्रान्तादिषु प्रवृत्ता उत्पत्तिक्रमभावकाश्चापि मायोपमाः स्वप्नोपमाः प्रतिबिम्बोपमा इत्याद्युपमां वदन्त्यधिमुच्यन्ते, न तेजौपम्यं स्वाधिष्ठानोपदेशज्ञानमात्रेण मनोमयं देवतानिष्पत्तिं प्रजानन्ति। तस्मादहं **योगतन्त्रा**नुसारेण वज्रसत्त्वनिष्पत्तिहेतुप्रत्ययं ते प्रतिबोधयामि। तथ्यं चित्तवर्णसंस्थानरहितमाभासमात्रं खसमस्वभावं परमार्थसत्यमिव दुःस्पर्शं किन्तु साभासमालोकत्रयं [१]वायुश्च धातुभूतः साधारणो लघुस्तेन वायुना विज्ञानं संबध्यते। ततः प्रज्ञोपायमालोकद्वयं पञ्चरश्मिसहितं विचित्रं सर्वज्ञगुणोपेतं मायोपमदेवतारूपमुत्पद्यते। कोऽसौ वाहनो वायुधातुरिति? यश्चित्तवज्रस्तमिवारुह्य यत्र गच्छति तत्र संक्रामतीति **विज्ञानसंक्रान्तिसूत्रे**ऽपि विस्पष्टयन्नाह-

"भगवानाह- अस्यैव मया महौषधे [२]गाथाद्वयस्यार्थे गिरिशिखरतटादात्मा मुक्तोऽनेकानि च दुष्करशतसाहस्राण्यनुभूतानि। पृच्छ त्वं महोषधे यद्यदेवाकांक्षस्यहं ते व्याकरिष्यामि। एवमुक्ते महोषधिर्बोधिसत्त्वो भगवन्तमेतदवोचत्- किं रूपी भगवन्निदं विज्ञानम्।

भगवानाह - यद्रूपी महोषधे मायाकारस्याग्निः, यद्रूपिणी पुरुषच्छाया जलतलान्तर्गता व्यक्ताव्यक्तरूपिणी[३] यत्पुनर्महोषधे कथयसि कथ-

---

१. वायुराधारभूतः - भो०

२. गाथार्धस्य - भो०

३. चक्षुराकाशसदृशो यः स एव भवस्वरूपः - भो० इत्यधिकम्।

मनुत्पन्नस्य प्रथमच्युतस्याकृतिर्द्रष्टव्येति। तद्यथा- जलतलान्तर्गता च्छाया-पुरुषरूपेण च संदृश्यते। न च तस्यान्तर्गतावभासा द्रष्टव्याः। तस्य खलु पुनर्महोषधे ममशिरःकरचरणसमन्वागतस्य पुरुषस्य जलतलान्तर्गतस्य नैवं भवत्युष्णं वा शीतं वा कायक्लमथो वेति। न च तस्य तच्छरीरा-न्मांसपेश्युपसम्भवति। न च छायाधातुभिर्व्याकुलीभवति। न च तस्मा-त्पुरुषप्रतिबिम्बाज्जलतलान्तर्गताच्छब्दो निश्चरति। दुःखशब्दः सुखशब्दो वा। एवमिदं विज्ञानं प्रथमच्युतशरीरबिम्बं परित्यज्य स्वबिम्बाकृति-वद्भवति।" एतद्बालपृथग्जनानामन्तर्भावाभिधानकं संसारहेतुकं भवति। तदेव गुरुपर्वक्रमेण सर्वबुद्धोपदेशप्राप्तानां स्वाधिष्ठानक्रमाभिधानकमिदं चित्रपटदर्पणमध्योपलक्षितम्। तथैव वज्रसत्त्वकायस्वभावात्मा निर्मितः। सर्वाकारवरोपेतोऽसेचनविग्रहो द्वात्रिंशन्महापुरुषलक्षणाद्यलङ्कृतगात्रम्। संक्षेपतः सर्वबुद्धगुणालङ्कृत इति यावत्। यथोक्तं **भगवता वैरोचनाभि-सम्बोधितन्त्रे**-

इन्द्रायुधनिभं कायं लभते तत्त्वभावनात्।। इति।

(द्र०- गु० सि० ३.७९)

अस्यायमर्थः- इन्द्रेति शक्रः [1]यथा इन्द्रधनुः पञ्चरश्मिवर्णोपलक्षितं गगनतले परिस्फुटति तथैव काय उपलक्षितव्य इत्यर्थः। लभते तत्त्व-भावनादिति। लभते गुरुपादोपदेशनात् तत्त्वभावनात् परमार्थसत्यालम्ब-नार्थमित्यर्थः।

वज्रशिष्य उवाच- भगवन् यः कश्चित् मे संशयोऽस्ति किमर्थं चिरेण स्वपिति, किमर्थं कलेवरमात्रं परित्यज्य स्वप्ने सकलत्रिदशालय-

---

१. इन्द्रायुधमिति इन्द्रधनुः। कथं साक्षात् पञ्चरश्मिवर्णोपलक्षितं यथा इन्द्रायुधं गगनतले पञ्चवर्णभेदैः परिस्फुटति - भोटानुसारेण क्रमोऽयम्।

मन्यदेशान्तरं वा गत्वा पञ्चकामगुणाननुभूय पुनरस्मिन्[1] काये संक्रामति, किमर्थं शुभाशुभस्वप्नदर्शनाच्च तत्फलविपाकं प्राप्नोति। तद्यथा- स्वप्न-जाग्रदवस्थायाः किं नानाकारमस्ति उताहो नेति।

वज्रगुरुराह- साधु साधु महासत्त्व! अनादिप्राकृताहङ्कारं[2] शरीर-स्वभावग्रहग्रहीतानां [3]विचिकित्सापनयनार्थं [4]पुनः पुनः स्वाधिष्ठानक्रमो-पदेशविस्पष्टार्थं स्वप्नस्य लक्षणं परिपृच्छसि। तस्मादेकाग्रचित्तेन शृणु स्वप्नद्वारेण प्रतिबिम्बोपमदेवतारूपं सर्वेषां प्रत्यात्मवेद्यं तन्त्रं सूत्रानुसारेण ते प्रतिबोधयामि।

स्कन्धे च धात्वायतनेन्द्रियादौ ज्ञानद्वये तत्र समं स्थितेऽस्मिन् ।
शून्ये महत्त्वे सति यः प्रसुप्तः स्वप्नं प्रपश्येत् खलु वातवेगात् ।।

स्वप्ने प्रबुद्धे च न चान्यभेदः संकल्पयेत् स्वप्नफलाभिलाषी ।
रात्रिंदिवा स्वप्नमुपैति जन्तुं महीघनत्वे सुचिरेण [5]सुप्तः ।।

फले न पक्वे कृतकर्मणश्च वायुः पुनः क्रामति जन्मनीह ।
पक्वं फलं स्याद् गत एव वायुः परत्र शीघ्रं मरणं हि लोके ।।

यथा जिनेन्द्रो दशदिग्व्यवस्थितो मज्जास्थिमांसं न च तस्य काये ।
प्रवेशयेत् सत्त्वहिताय धातुनिर्माणकल्पेन करोति कृत्यम् ।।

एवं क्रमाज्जाग्रति सुप्तचित्तः फलं च वाञ्छेत् सविकल्पजालम् ।
स्वप्नोपमास्ते खलु सर्वधर्मा मृषाऽमृषाश्चाप्युभयोरभावः ।। इति ।

---

१. देशे - भो०
२. शरीरं भावग्रह० - भो०
३. चिकित्सार्थं - क.
४. पुनः पुनः - नास्ति - भो०
५. सिद्धिः - क.

इममेवार्थमुद्योतयन्नाह- **सर्वकर्मावरणविशुद्धिसूत्रे**- "तत् किं मन्यसे भिक्षो तच्चित्तं स्वप्नः स्वप्नान्तरगतः संकल्पयेद् रागमध्यायन्तं न संजानासि। आह- संजानामि। भगवानाह- तत् किं भिक्षो चित्तेन रागमध्यायन्तं संजानासि। आह- एवं भगवन्। आह- तत् किं मन्यसे भिक्षो विशेषं किं नानाकरणं पश्यसि स्वप्नचित्तस्य अन्यचित्तस्य च। आह- नाहं भगवन्। किञ्चित्तं नानाकरणं स्वप्नचित्तस्य अन्यचित्तस्य वा समनुपश्यामि। आह- तत् किं मन्यसे भिक्षो मया स्वप्नोपमो धर्मो देशितः। आह- एवं भगवन्" इति।

इममेवार्थं द्योतयन्नाह भगवान् **श्रीगुह्यसमाजमहायोगतन्त्रे**- "तद्यथापि नाम भगवन्तः सर्वतथागता बोधिचित्तं सर्वतथागतज्ञानोत्पादनवज्रपदकरम्। तच्च बोधिचित्तं न कायस्थितं न वाक्स्थितं न चित्तस्थितम्। यश्च धर्मस्त्रैधातुके न स्थितः, तस्योत्पादो नास्ति। इदं सर्वतथागतज्ञानोत्पादनवज्रपदम्। न च भगवन्तः सर्वतथागताः स्वप्नस्यैवं भवत्यहं त्रैधातुके स्वप्नपदं दर्शयेयम्। न च पुरुषस्यैवं भवत्यहं स्वप्नं पश्येयमिति। सा च त्रैधातुकक्रिया स्वप्नोपमा स्वप्नसदृशी स्वप्नसंभूता। एवमेव भगवन्तः सर्वतथागता यावन्तो दशदिग्लोकधातुषु सर्वबुद्धबोधिसत्त्वा यावन्तः सर्वसत्त्वाः सर्वे ते स्वप्ननैरात्म्यपदेनानुगन्तव्याः" (गु० स०, पृ० ८९) इति।

ज्ञानवज्रसमुच्चयमहायोगतन्त्रेऽपीममेव मायोपमसमाधिं द्योतयन्नाह- "चित्तचैतसिकमहायोगो महासुखसमाधिः। स मायादिदृष्टान्तैरुपलक्षितः। अतः सर्वतथागता गङ्गानदीबालुकोपमा बुद्धक्षेत्रा मायोपमा उदकचन्द्रोपमाः प्रतिभासोपमा मरीचिस्वप्नप्रतिश्रुत्कं गन्धर्वनगरमिन्द्रजालं शक्रायुधं विद्युद्बुद्बुददर्पणप्रतिबिम्बश्चेति द्वादशमायादृष्टान्तैर्महासुखसमाधि-

रुपलक्षितं भवति। एवं च [1]दशदिग्व्यवस्थिताः सर्वतथागता आसंसारं यावद् मायोपमसमाधिना विहरन्ति पञ्चभिः कामगुणैः क्रीडन्ति रमन्ति परिचारयन्ति स्वेच्छया सर्वगुणान्विता बुद्धक्षेत्राद् बुद्धक्षेत्रं संक्रामन्ति। एवं त्रैकालिकसांसारिकदुःखमनुस्मृत्य विमुक्तिकामेन यत्नेन वज्रगुरुमाराध्य स्वाधिष्ठानक्रमोपदेशं प्राप्य तद्विशुद्ध्युपायोऽन्वेषितव्य इति।''

संवृतिसत्यमेलावणसंशयपरिच्छेदः षष्ठः।। ६।।

*

१. दशदिग्लोकधातुव्यवस्थिताः - भो०

सप्तमः परिच्छेदः

वज्रशिष्य उवाच- संवृतिसत्योऽपगतसंशयः। इदानीमाभासविशुद्धिपदं परमार्थसत्यविभागं गुरुपादप्रसादेन ज्ञातुमिच्छामि।

वज्रगुरुराह- संवृतिसत्यमिति स्वाधिष्ठानक्रमेण निष्पन्नं वज्रसत्त्वरूपं द्वादशमायादृष्टान्तेन प्रतिपादयितुं शक्यते। परमार्थसत्यं पुनरमूर्तिकं निरौपम्यं सर्वारम्भणापगतं प्रत्यात्मवेद्यम्। तेन गुरुवक्त्रेण विना न ज्ञायते। यथोक्तं **देशनापाठे**-

यथा दीपो घटान्तःस्थो बाह्ये नैवावभासते।
भिन्ने तु तद्धटे पश्चाद् दीपज्वालाभिभासते।।

स्वकाय एव हि घटो दीप एव हि तत्त्वकम्।
गुरुवक्त्रेण संभिन्ने बुद्धज्ञानं स्फुटं भवेत्।।

गगनं गगनोद्भूतमाकाशाकाशं स पश्यति।
तथैव हि गुरोर्वक्त्रात्प्रयोगोऽयं प्रदर्शितः।। इति।

अनेन न्यायेन शब्दाकारोद्भवत्वादनादिनिधनाभासस्वभावो ग्राह्यग्राहकरहितः। संवृतिसत्यलक्षणोपच्छन्दद्वारेण प्रतिपाद्यते। परमार्थसत्यं तदप्यकृतकं खसमं निर्मलस्वभावमिति।

इममेवार्थं द्योतयन्नाह- **एकनयनिर्देशसूत्रे**-

धर्मा इमे शब्दरुतेन व्याकृता धर्मश्च शब्दश्च हि नात्र लभ्यते।
न चैकतां चाप्यवतीर्य धर्मतामनुत्तरां क्षान्तिवरां स्पृशिष्यते।। इति।

(द्र०- सु० सं०, पृ० ३९९)

एवं कार्यकारणाद्वैधीकाराधिगतः शिष्यो गुरुतुष्टाज्ञां प्राप्य यथा तन्त्रोक्तविधानेन यथाविभवतो गणमण्डलं कृत्वा अर्धरात्रे मुद्रां सुशिक्षितां सुस्नातां सुगन्धाङ्गीं सर्वालङ्कारभूषितां गुरवे प्रतिपाद्य गुह्योत्तरपूजाभिः संपूज्य गुरोरग्रतो दक्षिणं जानुमण्डलं पृथिव्यां प्रतिष्ठाप्य कृतकरपुटो भूत्वा [1]संसारोद्विग्नमानसे(सो) मनसा [सा]क्षात् तथागतमिवाचार्यमधिमुच्य अनेन स्तोत्रोपहारेणाभिसंबोधिमध्येषते -

नमस्ते वरदवज्राग्र्य भूतकोटे नमोऽस्तु ते ।
नमस्ते शून्यतागर्भ बुद्धबोधे नमोऽस्तु ते ।।
(ना० सं० ११.१)

ददस्व मे महाचार्य अभिसंबोधिदर्शनम् ।
सर्वबुद्धमहाज्ञानं सर्वशून्यमनुत्तरम् ।।

ददस्व मे महासत्त्व स्वानुभावैकलक्षणम् ।
कर्मजन्मविनिर्मुक्तमिहैव बोधिमवाप्नुयाम् ।।

त(त्व)त्पादपङ्कजं मुक्त्वा नास्त्यन्यच्छरणं प्रभो।
तस्मात्प्रसीद बुद्धाग्र्य जगद्वीर महामुने ।।

एवं [2]स्तुत्वा तु तं दिव्यमध्येषणविधिं परम् ।
शिष्ये कारुण्यमुत्पाद्य गुरुः श्रीमान् गुणोदधिः।।

प्रसन्नवदनो भूत्वा सानुकम्पः प्रहर्षितः ।
[3]श्रावयेत्समयं दिव्यं योगतन्त्रोद्भवं परम् ।।

---

१. संसारात् त्राण० - भो०
२. श्रुत्वा - भो०
३. दर्शयेत् - भो०

ततः समाहिताचार्यो बोधिचित्तं निष्पादयेत् ।
कलशे वाऽथ शंखे वा बोधिचित्तं निधाय च ।।

ततस्तं शिष्यमाहूय सर्वबुद्धैरधिष्ठितम् ।
अर्पयेत्समयं तस्य जिनमुद्रासमन्वितम् ।।

अभिषेको हि दातव्यो द्वितीयेनैव वज्रिणा ।
माङ्गल्योद्घुष्टशब्देन वादित्रविविधस्वनैः ।।

त्रैधातुकाभिषेकेण शिष्यः कृतनताञ्जलिः ।
अनुज्ञातं ततस्तस्य दद्यात्तत्रप्रचोदितः ।।

मालासलिलसंबुद्धवज्रघण्टाऽथ दर्पणम् ।
नामाचार्यमनुज्ञात अभिषेकक्रमो ह्ययम् ।।

ततः समर्पयेत् [1]तस्य बाह्याभिसंबोधिलक्षणम् ।
संप्रदाये यदावाप्तं गुरुपर्वक्रमागतम् ।। इति।

तत्र द्विविधोऽभिसंबोधिक्रमो यदुत बाह्य आध्यात्मिकश्च। बाह्यं तावन्निर्दिश्यते। प्रत्यूषसन्ध्यायामविद्याताम्रस्या(तामरसा)भासं यावद्वैरोचनो न स्पृ(स्प)ष्टोऽस्मिन् प्रभास्वरनिर्मलाकारं स्वच्छं कायवाक्चित्तरहितं सर्वशून्यलक्षणम्। वैरोचनोदये, आलोकाभासम्। अस्तमनसंध्यायाम्, अविद्या। निशाकरोदये, आलोकम्। एवं शून्यचतुष्टयस्य बाह्यनिदर्शनं प्रतिपाद्य इदानीमध्यात्माभिसंबोधिं प्रत्यात्मवेद्यलक्षणं दर्शयत्यनेन क्रमेण।

---

१. तस्याथाभिसं० - भो०

[1]तत्रायं क्रमः- प्रथमं मरीचिकाकारं पञ्चरश्मिपुञ्जं पश्येत्, द्वितीयमालोकं चन्द्ररश्मिनिभम्, तृतीयमालोकाभासं सूर्यरश्मिनिभम्, चतुर्थं तामरसाकारमालोकोपलब्धकम्। ततस्तमोपगते क्षणात् प्रभास्वरमतिस्वच्छं सततालोकस्वभावं परमार्थसत्यं स्वलक्षणं ज्ञानचक्षुषा पश्येत्। एवं सर्वशून्यं साक्षात् कृत्वा द्विविधं ध्यानमालम्बयेदनेन क्रमेण।

तत्रायं क्रमः-

तोये निर्मलके नदीसरसि वा बिन्दुश्च यो लीनकः
शुद्धं तत्क्रमशोऽनुभेदगदितं योगी स्मरेन्नित्यशः।
आदर्शे ह्यनिलक्षयः क्रमगतस्तद्वन्न संप्रेक्ष्यते
पिण्डग्राह इति क्रमो विधिमतामेवं समुत्प्रेक्ष्यते।।

इदानीं [2]वाक्याभिनिविष्टानां भ्रान्त्यपनयनार्थं परमार्थसत्यं नामपर्यायः कश्चिदवतार्यते- प्रथमं तावत् प्रभास्वरं सर्वशून्यं बुद्धज्ञानं वज्रज्ञानम् अनुत्तरज्ञानं निर्मलं निःस्वभावं निराभासं निरात्मकं निर्वाणं निःसत्त्वं निर्जीवं निष्पुद्गलं निर्लेपं अनुत्पन्नम् अनिरोधम् अनक्षरम् अवाच्यम् अनुपलम्भम् अनुत्तरम् अनभिलाप्यम् अचिन्त्यम् अनन्तम् असंख्यम् अतीन्द्रियम् अनालयम् अलक्षणम् अनभिसंस्कृतम् अनिमित्तम् अचलम् अनालम्बनम् अविज्ञेयम् अप्रतर्क्यम् अक्षयम् [अवृद्धिकम्] अवाच्यम् अनावरणम् एकनयं शिवं शान्तं खसमं स्वभावशुद्धम् अनादिम् अमध्यम् अनवसानं न गतं नागतं न दूरं नासन्नं नैकं नानेकं दुःस्पर्शं दुर्विभाव्यं [3]ध्यानभूतं धर्मकायः भूतकोटिः असङ्गकोटिः धर्मधातुः

१. तत्रायं क्रमः नास्ति - भो०
२. नामाभि० - भो०
३. ध्यानं - भो०

अमूर्तिः अरजम् अनन्तं सिद्धिः गुह्यसिद्धिः पारमिताविशुद्धिः दृष्टिविशुद्धिः हेतुविशुद्धिः फलविशुद्धिः त्रैधातुकविशुद्धिः पुण्यविशुद्धिः पापविशुद्धिः क्लेशविशुद्धिः कर्मविशुद्धिः जन्मविशुद्धिरिति।

प्रज्ञापारमिता सर्वबुद्धमाता [सर्वज्ञता] सर्वाकारज्ञता मार्गाकारज्ञता तथता अवितथता समता अक्षयपुण्य[1]ज्ञानसंभारः [2]संस्कृत्या-(ता) ज्ञानवाहिनी सर्वबोधिसत्त्वजननी सर्वश्रावकधात्री सर्वप्रत्येकबुद्धजनयित्री सर्वलोकधात्री दिव्यचक्षुविशोधनकरी दिव्यश्रोत(त्र)प्रदानकरी परचित्तज्ञानपूर्वनिवासानुस्मरणकरी अनन्तर्द्धिकरी सर्वक्लेशक्षयंकरी चेति।

तथैव **श्रीगुह्यसमाजमहायोगतन्त्रे**- 'अभाव' इत्यादि (गु० स० २.३) षड्बोधिचित्तगाथाभिः संबोधिलक्षणमुक्तम्।

अन्यत्र **योगतन्त्रे**ऽप्याह-

[3]सर्वाङ्गभावनातीतं कल्पनाकल्पवर्जितम्।
मात्राबिन्दुसमातीतम् एतन्मण्डलमुत्तमम्॥

विशती(ति) यः [4]सर्वभावानां रूपारूपेषु निर्मलम्।
बोधितश्चोदितं चित्तं मण्डलं मण्डलाकृतिम्॥

अस्तीति नास्तीति उभेऽपि अन्ता
शुद्धी अशुद्धीति इमेऽपि अन्ता।

---

१. 'ज्ञान' नास्ति - क. गृहीतपाठस्तु भोटानुसारी।

२. ज्ञानमात्रता - भो०

३. श्लोकोऽयं दो० को० व्या०. (पृ० १५८) गुटिकातन्त्रात् तथा गु० स० प्र०. (पृ० ४५) व्याख्यातन्त्रादुद्धृतमिति निर्दिष्टम्।

४. सर्वसत्त्वानां - भो०

तस्मादुभे अन्तविवर्जयित्वा
मध्येऽपि स्थानं न करोति पण्डितः ।। इति ।

(स० रा० सू०, ९.२७)

आकाशानन्तमित्यर्थं सर्वभूतमहालयम् ।
विभूतिः श्रीविभो राजा सर्वाशापरिपूरकः ।।

इति।

किमनेन बहुतरसन्धायवचनेन नामपर्यायमेलापकेन यावच्चतुरशीतिसहस्रैर्धर्मस्कन्धैः कथं शब्दार्थै[१]रनियतलिङ्गवाच्यैरेतैः परमार्थसत्याश्रयोऽभिकीर्त्यत इति।

अथ वज्रशिष्यो द्विविधं संबोधिक्रमं द्विविधं ध्यानं चाधिगम्य परमार्थसत्यस्य पर्यायं [२]मेलापकं च श्रुत्वा अभिनिवेशमपनीय प्रहर्षितवदनः कृतकरपुटो भूत्वा इदमुदानमुदीरितवान्-

अहो बुद्ध अहो [३]बुद्ध अहो धर्मस्य[४] देशना ।
शुद्धतत्त्वार्थशुद्धार्थ बोधिचित्त नमोऽस्तु ते ।।

(गु० स०, २.८)

अथ वज्राचार्यो द्वितीयाचार्यमिव निरीक्ष्य सर्वभावविगतस्कन्धधात्वायतनग्राह्यग्राहकवर्जितं धर्मनैरात्म्यसमतया स्वचित्तमा[५]त्रानुत्पन्नं शून्यतास्वभावमिति गाथामुदीरयन्न द्वैधीकारमालम्ब्य प्रज्ञाज्ञानाभिषेकं

---

१. शब्दार्थदुष्करैः - भो०
२. नास्ति - भो०
३. धर्म - मु०
४. सङ्घस्य - मु०
५. माद्यानु० - भो०

दद्यादनेनैव क्रमेण। भगवान् श्रीशाक्यसिंहस्य सर्वतथागतैरच्छटा[1] शब्दे संचोदिते सति आस्फानकसमाधिं व्युत्थाय बोधिमूले निषद्य अर्द्धरात्र-समये प्रभास्वरं साक्षात्कृत्वा मायोपमसमाधिं व्युत्थाय जयम्बो (जगति) धर्मं प्रवर्तितवान् तदारभ्य यावत् सद्धर्मो अस्थात् तावद्गुरुवक्त्राद् गुरु-वक्त्रं संक्रामति योगयुग्मविशुद्धिरहस्याभिसम्बोधिक्रमः संक्रामतीति।

परमार्थसत्यमेलावणसंशयपरिच्छेदः सप्तमः।। ७।।

*

१. अच्छटा छोटिकेत्यर्थः ।

अष्टमः परिच्छेदः

वज्रशिष्य उवाच- परमार्थसत्याधिगमेऽपगतः संशयः। कथं पुनर्भगवन् परमार्थसत्यं प्रविश्य निःस्वभावो भूत्वा व्युत्थानं करोति। कोऽसावत्र स्वसुख[1]मनुभवति। कोऽसाववैवर्तिको भवति। किमर्थो मोक्षः कुतो मुक्त[2] इति।

वज्रगुरुराह- साधु साधु महासत्त्व प्रभास्वराद् व्युत्थानक्रम-तथागतसम्प्रदायबहिर्मुखानामविषयं **श्रीगुह्यसमाजमहायोगतन्त्रा**नुसारेण ते प्रतिबोधयामि, शृण्वेकाग्रचित्तेन।

अत्र [3]वज्रयाने उत्पत्तिक्रमाभ्यासादष्टमीं भूमिं प्राप्य पुनः पुनः सुगतादुपपद्य यावन्निष्पन्नक्रमं न लभते तावत् कल्याणमित्रमाराधयते। कायवाक्चित्तविवेकाधिगतोऽपि दशमीं भूमिं प्राप्य मायोपमसमाधिं प्रतिलभते। मायोपमसमाधिमधिगम्याभासविशुद्धिं प्रतिलभते। निराभासाद् व्युत्थाय युगनद्धवाहिक्रमेण [4]बुद्धकायं साक्षात् कृत्वा वज्रोपमसमाधिना सर्वगुणालङ्कृतो विहरति। यथोक्तं **भगवता लंकावतारसूत्रे**-

"[5]महाकरुणोपायकौशल्यानाभोगगतेन महामते प्रयोगेण सर्वसत्त्व[धातु]मायाप्रतिबिम्बसमतया अनारब्धप्रत्ययतया अध्यात्मबाह्यविषय[6]विमुक्ततया चित्तबाह्यादर्शनतया अनिमित्ताधिष्ठानानुगताऽनुपूर्वेण

---

१. अभिमुख- मु०, भो०

२. को मुक्तः - इत्यधिकं भो०

३. वज्रपाणि - क., गृहीतस्तु भोटानुसारी।

४. बुद्धकार्यं - भो०

५. 'महा-------अनुगता' - नास्ति क., गृहीतस्तु भोटानुसारी; द्र०- लं० सू०, पृ० १९.

६. विविक्ततया - भो०

भूमिक्रमसमाधिविषयानुगमनतया त्रैधातुक[1]स्वचित्त[2]मायाधिमुक्तितः प्रतिविभाव्यमाना मायोपमसमाधिं प्रतिलभन्ते। स्वचित्तनिराभासा[3]वतारमात्रेण प्रज्ञापारमिताविहारानुप्राप्ता उत्पादक्रियायोगविरहिता वज्रबिम्बोपमं समाधिं तथागतकायानुगतं [4]प्रतिलभन्ते। तथा[5] निर्माणानुगतं बलाभिज्ञावशिता[6]करुणोपायमण्डितं सर्वबुद्धक्षेत्रतीर्थायतनोप[7]पत्तिं [8]तच्चित्तमनोविज्ञानरहितं परावृत्त्यानुश्रयानुपूर्वकं तथागतकायं महामते [9]बोधिसत्त्वाः प्रतिलप्स्यन्ते। तस्मात् तर्हि महामते बोधिसत्त्वैर्महासत्त्वैस्तथागतकायानुगमेन प्रतिलाभिभिः[10] स्कन्धधात्वायतनचित्तहेतुप्रत्ययक्रियायोगोत्पादनस्थितिभङ्गविकल्पप्रपञ्चरहितैर्भवितव्यं [चित्तमात्रानुसारिभिः]।" (ल० सू०, पृ० १९-२०) मायोपमसमाधिसमापन्नोऽपि यावत् परमार्थसत्याभिगमनं न लभते तावदवैवर्तिको भवति। कस्माद्? विशुद्धमाभासत्रयं यावत् [तावद् विज्ञानसङ्कल्पः, यावत्] सङ्कल्पस्तावत् क्लेशवासनाप्रबन्धः, क्लेशप्रबन्धात् पुनर्भवः, [11]सर्वचित्तारहितस्तद्विशुद्धिपदम्।

यथोक्तं **परमाद्यमहायोगतन्त्रे**- "रागविशुद्धिपदमेतद्ध्युत बोधि-

---

१. 'स्व' नास्ति - भो०
२. तया - मु०
३. मात्रावतारेण - मु०
४. नास्ति - मु०
५. तथता - मु०
६. स्नेहः - भो० इत्यधिकम्।
७. गतं - मु०
८. 'तत्' नास्ति - मु०
९. ते - इत्यधिकः पाठः मु०
१०. भिना - मु०
११. यदन्यचित्ता० - भो०

सत्त्वपदम्। द्वेषविशुद्धिपदमेतद्यदुत बोधिसत्त्वपदम्। मोहविशुद्धिपदमेतद्यदुत बोधिसत्त्वपदम्।" **कम्बलाचार्यपादे**नाप्युक्त**मध्यात्म**[1]**साधनोपायिकायाम्**-

[2]**स्थूलं शब्दमयं प्राहुः सूक्ष्मं चित्तामयन्तथा।**
चित्तया रहितं यत् तद् योगिनां परमं पदम्।। इति।

योऽनेन न्यायेनाभिसम्बोधिक्रमेणैव प्रभास्वरपदे लब्धवांस्तस्य कायवाक्चित्तनिर्मलस्वभावसर्वशून्यत्वाद् विज्ञानत्रयविशुद्धः प्रज्ञापारमितास्वभावो नास्ति चित्ता न तूष्णीं सोऽयं निर्वाणधातुरमूर्तिर्दुःस्पर्शः। कर्मजन्मविनिर्मुक्तो न च रविचन्द्राग्निमणीनां प्रभास्वभावो [भासते]। तस्मात् तामसाभासाऽऽलोकोपलब्ध्युदयो भवति। आलोकोपलब्ध्या स्वच्छादित्यरश्म्याभासोष्णस्वभाव आलोकाभासोदयो भवति। तस्मात् स्वच्छश्चन्द्ररश्म्याभासशीतलस्वभावो व्याप्तप्रज्ञाज्ञानोदयो भवति।

परमाद्येऽप्याह- "**आकाशादाकाशसंभूतं सर्वाकाशं महानभः।**" इति।

अतश्चतुःशून्यैकीभूतमालोकं पुञ्जवत् खद्योतकाकारं सर्वलोकधात्ववभासिनं सूक्ष्मधातुसहितं छायाकारमच्छेद्याभेद्यवज्रकायस्वभावमच्युतमनास्रवं सर्वक्लेशवासनाविनिर्मुक्तमिच्छावशिताप्राप्तं जलान्मीनमिव सुप्तप्रबुद्धमिव परमानन्दमूर्तिस्वरूपं निष्पद्यते, यन्नामरूपात्मको महावज्रधर इति। संसारबन्धनान्निर्मुक्तत्वात् मोक्ष इत्युच्यते। इममेवार्थं द्योतयन्नाह **श्रीगुह्यसिद्धौ**-

---

१. साधने - क०, गृहीतस्तु भोटानुसारी।

२. सु० सं०, पृ० ९३; च० गी० को० व्या०, पृ० ६० आगमवचनरूपेण उद्धृतम्।

स्वसंवेद्यं तु तत्तत्त्वं [1]वक्तुं नान्यस्य पार्यते ।
भक्तिभावनया गम्यं [2]न गम्यं चान्यथा नु तत् ।।
ज्ञात्वा तत्त्वं [3]ततः कृत्वा भक्तिभावमहर्निशम् ।
तस्मिन् परमनिर्वाणे पदे शान्ते ह्यनुत्तरे ।।
ततस्तद्भक्तिसामर्थ्याद् भावनाबलनिर्मितम् ।
तस्मिन्नुत्पद्यते रूपं किमप्यानन्दजं परम् ।।
धगित्याकारसंभूतं स्फुरत्संहारकारकम् ।
भूर्भुवःस्वरिदं सर्वं द्योतयत् सचराचरम् ।।
भावनाब[4]लसामर्थ्यात् प्रज्ञोपायात्मकं शिवम् ।
सर्वक्लेशविनिर्मुक्तं सर्वलक्षणभूषितम् ।।
शून्यताज्ञानसंभूतं निर्द्वन्द्वं परमं [5]शिवम् ।
सर्वाकारवरोपेतं ग्राह्यग्राहकवर्जितम् ।।
ज्ञानं मायोपमं शुद्धं स्वच्छं प्रकृतिनिर्मलम् ।
शब्दगन्धरसातीतं तथा स्पर्शविवर्जितम् ।।
दृश्यते परमेकेन समाधौ ज्ञानचक्षुषा ।
छायामायोपमं दिव्यं [6]दिव्यसंस्थानसंयुतम् ।।

---

१. वक्तुमस्य न - मु०
२. समयं - भो०
३. तत्त्वमतत्त्वञ्च त्यक्त्वा - भो०
४. तत्त्वसा - मु०
५. पदम् - मु०
६. सर्वसंस्कार - मु०

स्फुरज्ज्ञानोर्मिमालाभिर्विविधानेकविग्रहम् ।
इन्द्रायुधनिभं कायं लभन्ते तत्त्वभावकाः ।।

भावनायोगसामर्थ्यात् समयानां च पालनात् ।
ईदृशं प्राप्यते रूपं न वाच्यं यज्जिनैरपि ।।

यत्र कायो न वाक्चित्तं स्थानं यत्सर्वगं परम् ।
संप्रदायवशात् तत्र स्वस्य रूपं विभाव्यते ।।

अहो सुविस्मयकरमहो शान्तमतीन्द्रियम् ।
अहो परमगम्भीरं बुद्धत्वं पदमुत्तमम् ।। इति।

(गु० सि० ३.७१-८२)

इममेव व्युत्थानक्रमं **श्रीगुह्यसमाजयोगतन्त्रे** सर्वतथागता वर्णयन्ति-

अहो वज्र अहो वज्र अहो वज्रस्य देशना ।
यत्र न कायवाक्चित्तं तत्र रूपं विभाव्यते ।। इति।

(गु० स० १७.३८)

भट्टारकपादेनाप्युक्तम्-

सौशीर्यं नास्ति ते काये मांसास्थिरुधिरं न च ।
इन्द्रायुधमिवाकाशे कायं दर्शितवानसि ।।

नामयो नाशुचिः काये क्षुत्तृष्णासंभवौ न च ।
त्वया लोकानुवृत्त्यर्थं दर्शिता लौकिकी क्रिया ।। इति।

(प० क्र० ३.२-३; नि० स्त० श्लो० १८-१९)

---

१. बोधिचित्तविकुर्वणम् - मु०

सर्वकल्पसमुच्चयेऽप्याह-

गृहीत्वा हृदयं शुद्धं वज्रदेहविभावना ।
दृढं [1]सारमसौशीर्यं वज्रकायं स लब्धवान् ।। इति।

समाधिराजसूत्रे चन्द्रप्रभकुमारेणापि तथागतकायो वर्णितः-

खसमा विरजा वररूपधरा
अशरीर अलक्षण प्रज्ञ[2]सुता ।
सुगम्भीरगुणोदधि कारुणिका
दद मूर्ध्नि पाणि मम अप्रतिमा ।। इति ।

(स० रा० सू०, पृ० ३१३)

आर्याष्टसाहस्रिकायामप्याह[3]- "निर्वाणं मायोपमं स्वप्नोपममिति वदामि। निर्वाणादन्यः कश्चिद् विशिष्टतरो धर्मः स्यात् तमप्यहं मायोपमं स्वप्नोपममिति वदामि" (अ० सा० प्र०, पृ० २०) । अथ तस्यैव विशेषणम्। न च रूपं न चारूपं न सत्यं न च मृषेति। एवं न भावो नाप्यभावो नोच्छेदो नापि शाश्वतो न साकारो न निराकारो न धर्मो नाधर्मो न संक्लेशो न व्यवदानं न संसारो न निर्वाणं न नित्यो नानित्यो नात्मा [4]नानात्मा नापरात्मा नाध्यात्मा न बहिर्धा न लौकिकं न लोकोत्तरं न द्वयं नाद्वयमिति। अस्य युगनद्धात्मकस्य परिनिष्पन्नवज्रकायस्य नामपर्यायस्य कश्चिदवतार्यते। महाविद्यापुरुषमूर्त्तिः सत्यद्वयनये स्थितः प्रकृतिप्रभा-

---

१. काय - भो०
२. शून्या - मु०
३. सुभूतिः - देवपुत्र ! - इत्यधिकं - भो०
४. नास्ति - भो०

स्वरात्मकः प्रज्ञोपायात्मकः त्रिलोकात्मकः त्रिकालात्मकः त्रिनयात्मकः त्रिमण्डलात्मकः [१]सर्वकुलात्मकः तथा सत्पुरुषः अग्रपुरुषः महापुरुषः पुरुष[२]नागः पुरुषशूरः पुरुषवीरः पुरुषदम्यः पुरुषदमकः पुरुषोत्तमः पुरुषसारथिः पुरुषसिंहः आकाशपुरुषः सर्वात्मकः पुरुषः शुद्धात्मक इति।

एवं तीर्णपारगः स्थलगतः क्षेमप्राप्तः [३]उत्क्षिप्तः परिघमर्जित-कण्टको निष्प्रपञ्चः भिक्षुरर्हन् क्षीणास्रवः निष्किञ्चनः श्रमणः ब्राह्मणः क्षत्रियः बुद्धपुत्रः निःक्लेशः वशीभूतः सुविमुक्तचित्तः सुविमुक्तप्रज्ञ आजा-नेयो महानागः कृतकृत्यः कृतकरणीयः अपहृतभारः अनुप्राप्तस्वकार्थः परिक्षीणभवं(भवः) सयोजनः सम्यगाज्ञा(ज्ञः) सुविमुक्तचित्तः सर्वचेतो-वशी परमपारमिताप्राप्तः संसारपारकोटिस्थः ज्ञानमूर्त्तिः स्वयंभूरित्युच्यते।

इममेव वज्रोपमसमाधिं विशेषयन्नाह भगवान् **शूरङ्गमसूत्रे**- "बुद्धविषयानुगतास्ते सत्पुरुषाः स्वज्ञानवशवर्तिनो यैरयं शूरङ्गमसमाधिः प्रतिलब्धः। नाहं तं बोधिसत्त्वमिति वदामि, अप्रतिलब्धत्वादस्य समाधेः। नाहं तं बोधिसत्त्वमभिज्ञाप्राप्तमिति वदामि, अप्रतिलब्धत्वादस्य समाधेः [४][नाहं तं बोधिसत्त्वं विशुद्धिकरमिति वदामि अप्रतिलब्धत्वादस्य समाधेः।] नाहं तं बोधिसत्त्वं दानशीलक्षान्तिवीर्यध्यानप्रज्ञा[५]सम्पन्नमिति वदामि, अप्रतिलब्धत्वादस्य समाधेः। नाहं तं बोधिसत्त्वं बहुश्रुतं

---

१. उपायात्मकः - भो०

२. ०षाजन्यः (स्क्ये-बु-चङ्-शेस्) - भो०

३. अभयप्राप्तः - इत्यधिकं भो० ।

४. 'नाहं-----समाधेः' नास्ति - क., गृहीतस्तु भोटानुसारी।

५. प्रज्ञोपाय० - भो०

प्रतिभानसम्पन्नमिति वदामि, अप्रतिलब्धत्वादस्य समाधेः। तस्मात् तर्हि कुलपुत्र सर्वनिर्याणपथे निर्यातुकामेन बोधिसत्त्वेन [1]महासत्त्वेनेह शूरङ्गमसमाधौ शिक्षितव्यम्'' इति।

अप्रतिष्ठितनिर्वाणधातुमेलावणसंशयपरिच्छेदोऽष्टमः।। ८।।

*

१. न सर्वं मन्यना इह शूरङ्गम० - भो०

नवमः परिच्छेदः

वज्रशिष्य उवाच- श्रुतचिन्तामयेन [1]सकलक्रमतत्त्वाधिगमपरिच्छेदकेन गुरुणा कृतानुज्ञातेन सर्वज्ञसंपदमावाहयितुकामेन घटमानेन योगिना हेतुत्वव्यवस्थायां कथं प्रतिपत्तव्यं कथं भावयितव्यं कथं व्रतचर्या[यां] चरितव्यं व्याकरोतु भगवान् वज्रगुरुः शास्ता।

वज्रगुरुराह- साधु साधु महासत्त्व विशिष्टकारणप्राप्तानामुत्तप्तवीर्याणां कायजीवितनिरपेक्षाणाम् इहैव जन्मनि स्वरूपपरावृत्त्याष्टगुणैश्वर्यफलनिष्पादयितुकामानां निःसंदेहार्थं परिपृच्छसि। तेन भावग्रहमपनीय मोक्षकामेन शृणु भावनाविशुद्धिश्चर्याविशुद्धिश्चानुपूर्वेण कथयामि ते।

इह सत्यद्वयाद्वये सति हेतुफलमप्यद्वयम्, हेतुफलाद्वये प्राप्यप्रापकमप्यद्वयम्, प्राप्यप्रापकाद्वये भाव्यभावकमप्यद्वयम्, तदद्वये साधकसाधनसाध्यमपि नोपलम्भते। तदनुपलम्भात् कोऽत्र भावयति कोऽसौ चर्यायां चरतीतिविचारणायां घटमानपरिनिष्पन्नायां नास्ति भेदः,"**दृष्टे धर्मे च निर्वाणं कृतकृत्यं तदेव हि**" इति **वचनात्**। तथाऽप्यवस्थाभेदं प्राप्य हेतुफलञ्च लोके दृश्यते, अथवा अहेतुकदोषप्रसङ्गः स्यात्।

अतो घटमानावस्थायां भावको भावना भाव्यः साधकः साधनं साध्यचर्याऽपि च विद्यते [न वा] इति न संदेहः। साधकोऽत्र संवृतिसत्यम्[2], साधनं परमार्थसत्यम्, अनेन साध्यमद्वयज्ञानम्, अतो हेतुफलयोरद्वैधीकारपरिज्ञानमत्र भावना।

---

१. सफल - भो०.

२. अधिगमयति - इत्यधिकं भो०

यथोक्तं **सर्वरहस्यतन्त्रे**-

फलेन हेतुमामुद्र्य फलमामुद्र्य हेतुना ।
विभाव्यमन्यथासिद्धिं कल्पकोटिर्न जायते ।। इति।

(द्र०- गु० स० १८.७८)

चर्याविशुद्धिमपि दर्शयन्नाह- अद्वयज्ञानगते सति समाहिताऽसमाहितावस्थाऽप्यद्वयं भवति। तदद्वये कश्चर्यां चरति, यथा कर्तुरभावात् क्रियाया अप्यभावो भवतीति लोके निश्चयोऽथवा व्रतचर्यया विना अनादिक्लेशवासनाक्षयं कर्तुं न पार्यत इति **देशनापाठे** लोके च प्रसिद्धम्।

यथोक्तं **श्रीगुह्यसमाजे**-

वज्रसत्त्वो महाराजश्चोदनीयो मुहुर्मुहुः ।। इति।

(गु० स० १४.४०)

तथा चोक्तं **गुह्यसिद्धौ**-

पादप्रसारिकं मुक्त्वा त्यक्त्वा संसारपेटकम् ।
साधयेद् वज्रसत्त्वाग्रं नित्य[१]मुद्युक्तमानसः ।।
कौकृत्यस्त्यानमिद्धादीन् परित्यज्य प्रयत्नतः ।
अन्यथा नैव सिद्धिः स्यात् कल्पकोटिशतैरपि ।। इति।

(गु० सि० ६.२-३)

तस्मादनिमित्तसमाधिसमापन्नेनानादिक्लेशवासना[२]मलमप्यपहाय अनाभोगफलमावाहयितुकामेन चर्याश्चरामि न चरामीति [३]मननामपनीयाष्टलोकधर्मानभिभूय यथोक्तं योगचर्यायां चरितव्यम्। अतस्तां व्रतचर्यां गुरुपादप्रसादेन यथाशक्तितो विवृणोमि।

---

१. निर्मुक्त० - मु०
२. बलम् - भो०
३. मनसिकारं - भो०

प्रथमं तावद् भगवान् चरमभविकबोधिसत्त्वावस्थायां दी(द्वी)पाद्यवलोकनं कृत्वा तुषितभुवनादवतीर्य सन्तानादिचतुर्विधन्यायं दर्शयित्वा वीतरागरूपमभिनिर्माय हीनाधिमुक्तिकानां चतुरार्यसत्याधिगमं विरागचर्यां च प्रतिपाद्य पुनर्महायानाभिनिविष्टानामष्टविज्ञानकायादिधर्मनैरात्माधिगमं भूमिपारमितादिचर्यां च प्रतिपाद्य पुनश्चक्रवर्तिरूपमभिनिर्माय गम्भीराधिमुक्तिकानां [1]सत्यद्वयाद्वयाधिगमाय रागधर्म[2]चर्यां च प्रतिपादितवान्। तस्मात् सत्यद्वयपरिगृहीतमूर्तीनां सकलपदार्थपरिच्छेदकारिणां परममहासुखफलान्वेषिणां श्रावकसौत्रान्तिकचर्यानययुक्ता[नां नोक्तः] यथा श्रावकादयो हीनाधिमुक्तिका वितर्काचरितात्मसाधनरहिता दानशीलादिक्रियामार्गारूढास्तत्त्वज्ञानेऽश्रद्धधाना मोक्षदूरसंज्ञिनः सुखोपायमनधिगम्य द्वादशधूतगुणादिदुष्करचर्याभिश्चिरकालेन बोधिमन्वेषयन्ति, तथाऽपि न प्राप्नुवन्ति, निष्पन्नक्रमाधिगमरहितत्वात्। अत एवोक्तं **भगवता-**

भिक्षुभावे स्थिता येऽत्र ये तु तर्करता नराः ।
वृद्धभावे स्थिता ये तु तेषां तत्त्वं न देशयेत् ।। इति।

अत एवाह **वैरोचनाभिसंबोधिचर्यातन्त्रे-**

उपायरहितं ज्ञानं शिक्षा चापि हि देशिता ।
श्रावकाणां महावीर अवता(धा)रय तेषु वै ।।

मूलसूत्रेऽप्याह-

दशकुशलान् कर्मपथानि[3]च्छन्ति ज्ञानवर्जिताः । इति।
(गु० स० १७.१५)

---

१. रागेण सत्यद्वयाधिगम० - भो०
२. चर्यां - नास्ति - भो०
३. कुर्वन्ति - मु०, भो०

अत एवाह **भगवान्-**

श्रावकयानमशिक्षथ भिक्षो बोधिचरियत तत्र चरीये ।
बोधिचरीं चर बुद्धगुणेषु एष निदानभविष्य स्वयंभूः ।। इति।

अतो विशिष्टात् कारणाद्विशिष्टमेव कार्यमुत्पद्यते। एवमेव रूपादयो [1]विषयपरिभोगभावमापद्यमाना विशिष्टफलावाहका भवन्तीत्यवगन्तव्याः। अन्यथा दुष्करचर्याचित्तस्यैकाग्रता न भवति, पञ्चेन्द्रियनिग्रहत्वात्। यथोक्तं भगवता **श्रीपरमाद्यमहायोगतन्त्रे-**

[2]**दुष्करैर्नियमैस्तीव्रैर्मूर्तिः शुष्यति दुःखिता ।**
दुःखाद् विक्षिप्यते चित्तं विक्षेपात् सिद्धिरन्यथा ।। इति।

मूलसूत्रेऽप्याह-

दुष्करैर्नियमैस्तीव्रैः सेव्यमानो न सिद्ध्यति ।
सर्वकामोपभोगैस्तु सेवयंश्चाशु सिद्ध्यति ।। इति।

(गु० स० ७.३)

वज्रशिष्य उवाच-"**रागो द्वेषश्च मोहश्च एते लोके त्रयो विषाः**" इत्युक्तम्। तथैव रूपादयो विषयाः क्लेशप्रसूतिहेतुत्वादपायहेतव इति निर्दिष्टं भगवता। कथं पुनस्ते सेव्यमानानामनुत्तरपदमा[3]शु सिद्ध्यतीति, परस्परविरुद्धम्।

वज्रगुरुराह- साधु साधु वज्रशिष्य यस्तु [4]रागधर्मचरितानां

---

१. पञ्चकाम - इत्यधिकं भो०

२. द्र० - क्रि० स०, पृ० ५; त० सि०, पृ० ११; तत्त्वसिद्धावेव (पृ० ६) संवरतन्त्रादुद्धृतम्।

३. आशु - नास्ति - भो०

४. रागचरितानां - भो०

निःशंकार्थं परिपृच्छसि। तेन [1]महार्थं ते कथयिष्यामि शृणु महासत्त्व [2]रागादयः क्लेशाः श्रावकाद्युपलम्भदृष्टीना[3]मपायहेतुका भवन्ति, क्लेशस्वभावाऽपरिज्ञानात्। स्वभावपरिज्ञानात्तु बोधिहेतुका भवन्तीति भगवतैव **सूत्रके** निर्दिष्टम्। यथोक्तं **श्रीपरमाद्यमहायोगतन्त्रे**-

[4]रागो द्वेषश्च मोहश्च त्रय एते विषङ्गताः ।
विषत्वमुपयान्त्येव विषमेण तु सेविता ।।
अमृतत्वं पुनर्यान्ति, अमृतेन तु सेविताः ।। इति।

रत्नकूटसूत्रेऽप्याह- "तद्यथा काश्यप इक्षुक्षेत्रेषु [धान्यक्षेत्रेषु] मृद्वीकाक्षेत्रेषु [5]सङ्कारकूट उपकारीभूतो भवति। एवमेव[6] बोधिसत्त्वस्य [7]क्लेशा उपकारीभवन्ति। तद्यथा काश्यप मन्त्रौषधिपरिगृहीतं विषं न विनिपातयति, एवमेव प्रज्ञोपायसमन्वितो बोधिसत्त्वः क्लेशै[8]र्न विनिपात्यते।"

अत आह **विनयामोघसिद्धिमहातन्त्रे**-

[9]बध्यति येन जडः परिमुच्यति तेन बुधः ।
बोधिविभावनया विपरीतमिदं सकलम् ।।

---

१. महार्थं ते कथयिष्यामि - नास्ति- क., गृहीतस्तु भोटानुसारी।
२. रागादयः - नास्ति - भो०
३. क्लेश - भो०
४. द्र० - त० सि०, पृ० ५
५. संकारकूटः = नागरिकोऽवस्करः (खाद, इति भाषायाम्)।
६. काश्यप - इत्यधिकं भो०
७. ये क्लेशकूटाः सर्वज्ञस्य - भो०
८. क्लेशविषैः - भो०
९. द्र० - अ० प्र० सि०, पृ० २१७

येन मूढाः प्रबध्यन्ते शीर्यन्ते रौरवान्तिके ।
तैरेव हि विमुच्यन्ते सुखं प्रज्ञाबलेन तु ।। इति।

अनेन न्यायेन विशिष्टसमारोपाद् विशिष्टपरिणामनाच्च विशिष्टफलनिष्पत्तौ हेतुभावं प्रतिपन्नस्यानुत्तरमहासुखफलावाप्तौ नान्यत् साधनमस्ति। तदर्थं तैरेव सुखाहारादिभिरष्टगुणैश्वर्यादिसर्वज्ञसम्पत्तिरामुखीक्रियते। "**अतः सुखं सुखेनैव सर्वबुद्धत्वमाप्यते**" इति **श्रीसंवरे** निर्दिष्टम्।

तत्र रागजबोधिचर्या त्रिविधा- यदुत प्रपञ्चता, निष्प्रपञ्चता, अत्यन्तनिष्प्रपञ्चता चेति। तत्र प्रपञ्चताचर्या कतमा? यदुत तथागताश्वासे वज्रधराश्वासे च यथा निर्दिष्टं सर्वतथागतारल्लिविस्तरः सा प्रपञ्चता। निष्प्रपञ्चता कतमा? सततं व्यापिकार्यवशात् केचिद्वारल्लिः स्यात् निष्प्रपञ्चता। अत्यन्तनिष्प्रपञ्चता कतमा? सर्वसङ्गमपहाय केवलध्यानाहारविहारी ज्ञानमुद्रासमापत्त्याऽभ्यसेत् सात्यन्तनिष्प्रपञ्चता। यथा काष्ठं दहति भवति भूतिः, तालपत्रं दहति भवति भूतिः, कार्पासं दहति भवति भूतिः, सर्वं भस्मसाद् भवति। एवमेव त्रिविधचर्यादिभिर्महावज्रपदं निष्पादयन्ति।

अथवा केचित्साधकास्**तत्त्वसंग्रहादितन्त्रानु**सारिणा(णो) हस्तमुद्रागीतोपहाराक्षेपाभिनयनटनर्तकादिप्रयोगैर्नित्यमुद्युक्तमानसोऽहर्निशं प्रपञ्चचर्यया महामुद्रासिद्धिं साधयन्ति। तथा केचित् **श्रीपरमाद्यादिमहायोगतन्त्र**माश्रित्य पर्यङ्कासनबन्धननवनाट्यरसादिसर्वतथागतक्रीडाप्रपञ्चचर्यया [1]महासुखपदमावाहयन्ति।

---

१. महामुद्रा - भो०

अस्मिन् **श्रीगुह्यसमाजे** तु केवलं निष्प्रपञ्चता, अत्यन्तनिष्प्रपञ्च-चर्या च निर्दिष्टा, अधुना प्रपञ्चताचर्या **श्रीसर्वबुद्धसमागमयोगडाकिनी-जालसंवरमहायोगतन्त्रा**दवतार्यते -

अथातः संप्रवक्ष्यामि सर्वतो विश्वमुत्तमम् ।
सर्वबुद्धसमायोगडाकिनीजालसंवरम् ।।

रहस्ये परमे रम्ये सर्वात्मनि सदा स्थितः ।
सर्वबुद्धमयः श्रीमान् वज्रसत्त्वोदयः सुखः ।।

तथागतमहादिव्यरत्नजालाद्यलङ्कृतम् ।
[1]ततो घण्टावसंसक्तवितानविततोज्ज्वले ।।

[2]वज्रगीतिं च पूजां च गीतवाद्यैर्विकुर्वितम् ।
पुष्पधूपादियोगेन दीपगन्धादिभिस्तथा ।।

[3]प्रसाधयन्ति भवने सोद्यानादिषु वा पुनः ।
सर्वबुद्धसमायोगडाकिनी[4]जालसंवरम् ।।

तत्रासनं निवेश्यादौ मृदुसंस्पर्शजं सुखम् ।
विश्वपद्मपटच्छन्नं सर्वशुद्धासनं हि तत् ।।

[5]सर्वबुद्धसमायोगं योगेश्वरविकुर्वितम् ।
श्रीवज्रसत्त्वरूपास्तु विकुर्वन्ति हि यत्र(तत्तु) वै।।

---

१. घण्टाध्वजाग्रसंसक्तं - भो०
२. "वज्रगीतिं च -----दिभिस्तथा" नास्ति- क. गृहीतस्तु भोटानुसारी।
३. प्रसाधयंत्रिभुवने स्वस्थानादिषु वा पुनः। उद्यानादिषु वा - भो०
४. सर्वत्र जालस्थाने माया - भो०
५. 'सर्वबुद्ध----विकुर्वितम्'- नास्ति - क., गृहीतस्तु भोटानुसारी।

सर्वधातुमयी(यो) वापि [1]जीवमूलमयस्तथा ।
स्वाधिदैवत्प्रतिमुखैः सिद्धिमुद्राप्रवर्तनम् ।।

निषिक्तां घटितां वापि(भि)संस्कृतां वा सुचित्रिताम्।
विचित्रप्रतिबिम्बां च चिह्नमुद्रां प्रकल्पयेत् ।।

[2]तदासनेषु प्राणसर्वान् यथास्थानं हि विन्यसेत् ।
चतुरस्त्रं चतुर्द्वारं चतुस्तोरणमण्डितम् ।
वज्ररत्नपद्मादि तु द्वारपालेन योजयेत् ।।

स्वाधिदैवत्प्रतिमुखैः सुप्रसाधितयोषितम् ।
स्वमुद्राचिह्नसुभगां कल्पयेद् गणमण्डलम् ।।

इति।

एषां सूत्राणामर्थं विस्तरेण विवृणोमि। आदौ तावन्मनोनुकूले उद्यानादिविविक्तप्रदेशे [3]श्रावकादिदुर्भगरहिते इष्टकामयं त्रिपुरं देवगृहं [4]विचित्रकर्मयुक्तं कारयेत्। तत्र प्रथमपुरे महानसं स्थापयेत्, द्वितीयपुरे तन्त्रीगीतकादिपूजोपकरणं स्थापयेत्, तृतीयपुरे योगिनीभिः सह श्रीविश्वं सुभगोत्तमो(मं) विहरन्तम्। अथवा भूगृहे दृढप्राकारादिसंप्रयुक्तनानालङ्कारवज्रमयभूभागे स्फटिकवैडूर्येन्द्रनीलमरकतरागमयं महामेरुवज्रशिखरकूटागारं विचिन्त्य-

चतुरस्त्रं चतुर्द्वारं चतुस्तोरणमण्डितम् ।
चतुःसूत्रसमायुक्तमष्टस्तम्भोपशोभितम् ।।

---

१. प्राणायामोद्भवस्तथा - भो०

२. 'तदासने ------- योजयेत्' नास्ति- क. गृहीतस्तु भोटानुसारी।

३. विपरीतनया० (छुल-दङ्-मी-म्थुन-प) - भो०

४. विचित्राकारं - भो०

हारार्द्धहाररचितं पट्टस्रग्दामभूषितम् ।
घण्टापताकसंशोभं चामरादिविभूषितम् ।।

चन्द्रार्द्धवज्रकोणं च द्वारनिर्यूहसन्धिषु ।
[1]पत्वि(क्षि)णीक्रमशीर्षादिविचित्र[2]पटमण्डितम् ।।

तत्र साधको गुरुभिरनुज्ञातोऽनिष्पन्नान्निष्पन्नान् महायोगीश्वरान् संपूज्य सहचर्यानुचरादिप्रियाभिः प्रकृताऽहङ्कारमपनीतवतीभिः सह निर्विशङ्केन चेतसा सिंहवन्महामुद्रासाधनं प्रविशेदनेन क्रमेण।

तत्रायं क्रमः- परमार्थसत्यालम्बनपूर्वकं स्वाधिष्ठानक्रमेण वज्रसत्त्वरूपमात्मानं निष्पाद्य मण्डलाधिपतित्वेन निषद्य रूपविषयमनुभवति। ततः सर्वतथागतस्त्रीमायाकारप्रदर्शनाय बाह्ये काचित् [3]संचर्याकारेण रागसन्ततिस्वभावतया भगवतः पुरतः स्थिता। काचिदहो सुखाकारेण सुरतसन्ततिस्वभावतया दक्षिणदिक्स्थिता। काचित् प्रदीपाकारेण रौद्रसन्ततिस्वभावतया पश्चिमदिक् स्थिता। काचित् [4]शिष्याकारेण जीवसन्ततिस्वभावतयोत्तरदिक्स्थिता। एताः सहचर्यः काचिद् बुद्धबोध्याकारेण मोहविशोधनायाग्नेयकोणे व्यवस्थिता। काचित् धर्मचक्राकारेण त्रैलोक्यं [5]दानाक्षेपमदविशोधनाय नैर्ऋतिकोणे व्यवस्थिता। काचित् [6]त्रैलोक्याकारेण द्वेषापनयनाय वायव्यकोणे व्यवस्थिता। काचित्, कामलताकारेण

---

१. सोपानतोरणद्वारादि (स्कस्-दङ्-र्त-बबस्-स्गो-ल-सोगस्) - भो०
२. पद्म० - भो०
३. संवरमाया - भो०
४. शश्या - भो०
५. वादाक्षेपपद (गंल-चिङ्-ग्नोन-पहि-ग्नस्) - भो०
६. त्रिलोकविजया० - भो०

रागतमोऽपनयनाय ईशानकोणे व्यवस्थिता। काचिच्छुषिराकारेण बाह्या-ग्नेयकोणे व्यवस्थिता। काचित् [1]नृत्याकारेण शृङ्गारवीणावादनतया त्रैलोक्यं वशमानयन्ती बाह्यनैर्ऋतिकोणे व्यवस्थिता। काचित् वितता-कारेण मुकुन्दप्रवादनतया गरज्वरापनपनाय बाह्यवायव्यकोणे व्यव-स्थिता। काचिद् घनाकारेण मुरजवादनतया बाह्यैशानकोणे व्यवस्थिता। काचिद् वज्रपुष्पाकारेण पुष्पव्यग्रहस्ता बाह्यपट्टिकायामग्निकोणे व्यव-स्थिता। काचिद्वज्रधूपाकारेण धूपकटुच्छुकाधारितया नैर्ऋतिकोणे व्यवस्थिता। काचित् वज्रालोकाकारेण महाप्रदीपधारितया वायव्यकोणे व्यवस्थिता। काचिद्वज्रगन्धाकारेण गन्धपरिपूर्णशंखव्यग्रहस्ता बाह्यपट्टि-कायामेवैशानकोणे व्यवस्थिता। काचित् तुरगाकारेण परमाश्वमुखोद्भवा-ग्रासात् त्रिभुवनं शोषयन्ती कृतपूर्वद्वाररक्षा व्यवस्थिता। काचिद्वज्र[2]-मुख्याकारेण त्रैलोक्यं संहरन्ती कृतदक्षिणद्वाररक्षा व्यवस्थिता। काचिद् वज्रालोकाकारेण त्रैलोक्यान् निरीक्षमाणा कृतपश्चिमद्वाररक्षा व्यवस्थिता। काचिद्भस्मप्रलयवेताल्याकारेण भुर्भुवःस्वःश्वसनतया स्वभस्मकर्मापि जीवन्ती कृतोत्तरद्वाररक्षा व्यवस्थिता।

तत्र भगवान् महासुखश्चक्रवर्ती भूतनयात्मकसमाधिस्मरणपूर्वक-स्वकायमण्डलस्थान् सर्वतथागतान् प्रीणयामीति विशिष्टाहङ्कारमुत्पाद्य प्रथमरूपादित्रिविधविषयमास्वाद्य तदनु शोधनादि[3]द्विविधविधिना सर्वाका-रमभिसंस्कृत्य प्रकृतिसिद्धमध्यात्मकुण्डमनुस्मृत्याहुतीः समाधिसत्त्वस्य मुखे त्रिशिखाग्निमध्ये जुहोमीत्यहङ्कारमुत्पाद्याभ्यवहरति। ततः सुखेन

---

१. तन्त्र्या - भो०

२. वाराह - भो०

३. त्रिविध - भो०

परिणमयति रसायनञ्च भवति। एवं साधको भक्ष्यभोज्यपेयादिभिः कायवज्रं सन्तर्प्य पर्यवसाने पञ्चमं स्पर्शविषयमास्वादयति, अनेन क्रमेण च सहचर्यादिदेवीचक्रमनुरागणनिपुणं [१]दृष्ट्वा यथाऽभिमतमुद्रामादायाङ्के स्थापयित्वा महामुद्रासिद्धिं निष्पादयामीति दृढाऽधिमोक्षमुत्पाद्यालिङ्गन-चुम्बनचूषणनखप्रहरणसीत्कारकोकिलभृङ्गनादनाडीसंचोदनादिकं कृत्वा तथागतपर्यङ्कं वज्रपर्यङ्कं रत्नपर्यङ्कं पद्मपर्यङ्कं कर्मपर्यङ्कादिबन्धं बद्ध्वा कर्मस्थो भवति। तौ वज्रपद्मसंहर्षणात् प्रज्ञोपायसमापत्त्या स्कन्धादि-स्वभावान् सर्वतथागतान् मूर्ध्ने आरभ्य द्वासप्ततिनाडीसहस्रा[२]न्निर्झरधारा-कारेणालिकालिद्रवीभूय रागविरागमध्यरागक्रमेण यत्ततः प्रज्ञापारमिता-स्वरूपान् प्रत्यात्मवेद्यान् करोति।

एवं श्रीमहासुखसमाधिमभ्यस्य प्राप्तोत्कर्षो योगी तत्रैव गणमण्डले निग्रहानुग्रहेण सत्त्वान् परिपाचयति। केषाञ्चित् शून्यताभिनिवेशदृष्टि-कानां स एव भगवान् महा(श्रीमहासुखो) वैरोचनरूपेण महाशान्तिक-समाधिना न शून्यं नापि चाशून्यमित्यप्रतिष्ठितनिर्वाणलक्षणं प्रतिपाद्य शून्यतादृष्टिनिग्रहं करोति।

एवमत्यन्तरौद्रदुर्विनेयानां श्रीवज्रहेरुकक्रोध[३]समाधिना कुत्सित-दृष्टिनिग्रहं कृत्वाऽनुग्रहं करोति। मिथ्यादृष्टीनां पद्मनर्त्तेश्वररूपेण परमार्थ-सत्यं प्रतिपाद्य वश्यं करोति। अत्यन्तहीनमात्सर्यलुब्धकानां श्रीवज्रसूर्य-रूपेण महापौष्टिकसमाधिना सर्वधनरत्नप्रवर्षकैः[४] क्लेशदृष्टिनिग्रहं करोति।

---

१. आश्रित्य - भो०

२. निर्मल - भा०

३. राज - भो०

४. नास्ति - भो०

अत्यन्तहीनवीर्याणां परमाश्वरूपेण हठयोगसमाधिना पराक्रमेण हीनवीर्यनिग्रहं करोति। तत्र भगवान् श्रीमहासुखो धर्मोदयमहाऽरलिक्रीडास्वभाव[१]-प्रदर्शनार्थमनन्यमनस्थोऽन्योन्यप्रहर्षणार्थं च बुद्धनाट्यं करोति।

अनेन क्रमेण मुद्रा प्रतिमुद्रा वन्दनं [प्रतिवन्दनं] पूजा प्रतिपूजा नाटकं प्रतिनाटकं गीतं प्रतिगीतकं कायछोमा वाक्छोमासंकेतेन व्यवहारः क्रियते। तत्र वाक्छोमा निर्दिश्यते- ॐ अति होः [२]संकेतेन प्रणमामीति निर्दिशेत्। ॐ प्रतिका पुनः प्रतिप्रणामं, [३]च्छे च्छे आचार्यवन्दनं, भक्ष प्रविशन्तं, च्छे स्वागतं, च्छं अवरुन्धनं, खं भुञ्ज, खः प्रभक्ष, [४]द्रं द्रं मांसं, [५]स्रं स्रं रक्तं, द्रें द्रें मांसप्रभक्षं, [६]जं फं वज्रोदकं, सोमं [७]पञ्चामृतम्, इयदि (इदय?) मद्यं, संवरी पानं, संवरमुदकं, सुप्रियं पुष्पं, सञ्चयं फलं, जालकं वस्त्रं, क्षं गृहं, क्षोण्णं स्वगृहं, कामदं देवतागृहं, क्षेपणं मण्डलं, बोधनो मण्डलाचार्यः, उपायः शिष्यः, मित्रं भ्रातरं, रञ्जिना देवती, गोपिता वज्रयोगिनी, तत्पुरि डाकिनी, विक्लवा मातरः, स्वसृकः[८] पितरः, क योग्यः पुत्रः, प्रीं प्रीं पुत्री, बहुला [९]भद्ररूपिणी, लोटनम् अगम्यागमनं, [१०]बहरि भक्षं, धनू द्रव्यं देहि, शे शे गच्छ, प्रे प्रे आगच्छ, त्रं

१. भावदृढीभूय - भो०
२. म्लेच्छजं - क., गृहीतस्तु भोटानुसारी।
३. च्छें च्छें - भो०
४. त्रं त्रं - भो०
५. श्रं श्रं - भो०
६. जपं - क.
७. अमृतजलम् - भो०
८. स्वमुखः - भो०
९. 'भद्र' नास्ति - क.
१०. प्रीति - क.

नास्ति, विह्नमो रुष्टः, च्छोर मारणं, जीव रक्षा, नीर विरक्तं, ह्रि रागः, द्रवद्रव्यं क्रमात्पूज्य सुरतस्त्वमिति ब्रुवन् स्वदेवानुस्मरणम्। सुरतोऽहमिति ब्रुवन् अनुरागयामीति सुप्रतिवाग्वज्रसत्त्वस्य साधनः। अनुबोधयामीति प्रतिवाक् श्रीवज्रवैरोचनसाधनः। अनुमोदयामीति प्रतिवाक् श्रीहेरुकवज्रस्य साधनः। अनुरागयामीति प्रतिवाक् श्रीपद्मनर्त्तेश्वरसाधनः[१]। [२]अनुमर्दयामीति प्रतिवाक् परमाश्वस्य साधनः। देव्यास्ताः प्रतिपूजाश्च समयस्त्वमिति पञ्चवाक्। स्वदेवतास्मरणीयसमयोऽहमिति च वाक्। श्रीवज्रसत्त्वं ग[ण]मण्डलः गणपूजकमिति वाक्च्छोमपरिवर्त्या क्रमः।

इदानीं कायच्छोमा निर्दिश्यते - मूर्धस्पर्शा[त्] प्रणामः ललाटस्पर्शात् प्रतिप्रणामम्। दक्षिणभ्रूक्षेपात् [३]कार्यसिद्धिरिति वामे विजयम्। वामनेत्रस्पन्दनाद्रूपवती नारी दक्षिणे रूपवान् नरः। वामश्रोत(त्र)स्पर्शात् सुष्टुगतं दक्षिणे साधु भाषितम्। दक्षिणनासापुटस्पर्शाद्धूपं वामे गन्धं प्रयच्छेति। जिह्वाया दक्षिणे लालनान्मांसं वामे मद्यं प्रयच्छेति। वामकुक्षिस्पर्शादन्नं दक्षिणे व्यञ्जनं प्रयच्छेति कायच्छोमापरिवर्त्तक्रमः।

एवं लौकिकध्यानमपनीय मनोराज्यमपहाय सदा प्रमुदितमनस्थो योगिनीभिः सह रममाणो यथा राजा इन्द्रभूतिः [४]शुद्धक्ष(क)लेवरं परिवर्त्य वज्रकायो भूत्वाऽन्तःपुरेण सहान्तर्द्धायोऽष्टगुणैश्वर्यान्वितो बुद्धक्षेत्राद् बुद्धक्षेत्रं गच्छति।

यथोक्तं **मूलतन्त्रे**-

---

१. अनुमोदयामीति प्रतिवाग्वज्रसत्त्वस्य साधनः - इत्यधिकं क.

२. अनुवर्षयामीति - भो०

३. कायसिद्धिः - भो०

४. स्कन्ध - भो०

[1]सर्वदेव्युपभोगैस्तु सेव्यमानैर्यथासुखम् ।
स्वाधिदैवतयोगेन स्वमात्मानं प्रपूजयेत् ।।

(द्र०- सू० सं०, पृ० ८१)

पूज्यतेऽनुयोगेन सर्वयोगसुखानि तु ।
[2]समास्वादयमानस्त्वतियोगेन सिद्ध्यति ।।

अनेन सर्वबुद्धात्मा रसायनसुखेन तु ।
सिद्ध्येत् श्रीवज्रसत्त्वायुर्यौवनारोग्यसत्सुखम् ।।

सर्वबुद्धमहाकायः सर्वबुद्धसरस्वती ।
सर्वबुद्धमहाचित्तः सर्वबुद्धमहामहः ।।

सर्वबुद्धमहाराजा सर्ववज्रधराधिपः ।
सर्वलोकेश्वरपतिः सर्वरत्नाधिपेश्वरः ।।

ताभिः संरम्यमाणस्तु यात्युत्पत्तिं तु गच्छतः ।
सर्वदेवीमहासिध्य(द्ध)श्चक्रवर्ती प्रसिध्यति ।। इति।

अथवा यः कृशविभवोऽनन्तरोक्तक्रमेण क्रीडाप्रपञ्चविस्तरं सततं सम्पादयितुमशक्तः तस्य निष्प्रपञ्चता अत्यन्तनिष्प्रपञ्चता चात्र **श्रीसंवरे** निर्दिष्टा तां चर्यां निदर्शयन्नाह-

प्रत्यहं प्रतिमासं वा प्रतिसंवत्सरं तथा ।
यथाधिष्ठानतो वाऽपि नाटयेद् बुद्धसंवरम् ।। इति।

---

१. सु० सं० (पृ० ८१) मूलसूत्रादुक्तम्।

२. सदा - भो०

उत्थितो वा निषण्णो वा चंक्रमन् वा यथास्थितः ।
प्रहर्षन् वा जल्पन् वा यत्र तत्र यथा तथा ।।

इति।

यद्यदिन्द्रियमार्गत्वं यायात्तत्तत्स्वभावतः ।
असमाहितयोगेन सर्वबुद्धमयं वहेत् ।।

इति।

खसमं खसमाकारमपर्यन्तसागरोपमम् ।
रागधर्मनयो [1]द्वेषो विलासः क्रीडाविस्तरः ।।

गृहीतं वस्तुमात्रं च शिष्यबोधनकारणात् ।
कति जन्मान्तरं वक्तुं सह्यते रागदेशना ।।

इति।

श्रीसर्वबुद्धसमायोगडाकिनीजालसंवरन्यायेन
बोधिसत्त्व[2]चरितधर्मोदयाभिसंबोधिप्रपञ्चतामेलावण-
संशयपरिच्छेदो नवमः ।। ९ ।।

*

१. देशिता - भो०

२. महासत्त्व - भो० इत्यधिकम् ।

दशमः परिच्छेदः

वज्रशिष्य उवाच- सप्रपञ्चचर्या परिस्फुटभूता। निष्प्रपञ्चचर्यां निर्दिशतु भगवान् वज्रगुरुः शास्ता।

वज्रगुरुराह- साधु साधु महासत्त्व **श्रीगुह्यसमाजमहायोगतन्त्रा**-म्नायेन निष्प्रपञ्चचर्यां प्रतिपादयामि शृण्वेकाग्रचित्तेन।

महाटवीप्रदेशेषु फलपुष्पाद्यलङ्कृते।
पर्वते विजने साध्यमिदं ध्यानसमुच्चयम्॥

(गु० स० १२.२)

इत्यादि तन्त्रोक्ते मनोनुकूलप्रदेशे भूमिगृहं वा प्रासादं वा यथोक्त-विधिना संस्कृत्य तत्र चतुरस्रादिगुणयुक्तं वज्रमणिशिखरकूटागारं निष्पाद्य ततः प्रकृताहङ्कारापगतो महायोगी बाह्याङ्गनामपि[१] संस्कृत्य एकजाति-प्रतिबद्धकैः सह शिष्यगणैर्वक्ष्यमाणक्रमेण महामुद्रासाधनमारभेत।

तत्रायं क्रमः - प्रथमतरं परमार्थसत्यमालम्ब्य स्वाधिष्ठानक्रमेण [२]व्युत्थायाक्षोभ्योत्सर्गानुप्रवेशेण मण्डलाधिपतित्वेन व्यवस्थितः। ततः प्राकृताहङ्कारमपनीतानभेद्यपरिवारान् स्वकायमण्डलस्यैवावयवभूतान् वैरोचनादिमाण्डलेयदेवताकारानधिमुच्य सकलचक्रमनुरञ्ज्य निज[मुद्रया सह] पिण्डग्रहानुभेदक्रमेण परमार्थसत्यं प्रविशति। ततो लोचनादिदेवी-श्चतुर्ब्रह्मविहार[३]विशुद्ध्या **त्वं वज्रचित्ते**त्यादिगाथाभिः संचोदितः स्वाधिष्ठान-क्रमेण झटिति प्रबुद्धपरमानन्दरसानुभवनार्थं नवनाट्यरसेन क्रीडति।

---

१. ०मभिसंस्कृत्य - भो०

२. व्युत्थाय- नास्ति - भो०

३. अर्थम् - भो०

एवं पुनः पुनर्भूतकोटिं प्रविश्य पुनः पुनर्व्युत्थाय पञ्चतथागतस्वभावान् पञ्चकामगुणानास्वादयति। यथा न म्लायते मनस्तथागतोऽरलिं सम्पादयति। तत्र रूपादित्रिविधं रूपविषयमनुभवति। गीततन्त्रीवाद्यादित्रिविधं शब्दविषयमनुभवति। पुष्पधूपाऽनुलेपनादित्रिविधं गन्धविषयमनुभवति। कटुकतिक्तकषायाम्ललवणादित्रिविधं रसविषयमनुभवति। ततः षोडशाब्दिकाऽक्षतयोनिः पीनस्तनभरनम्रावयवा [1]गृहीतचर्यान्विता यथा[2] चण्डाली रजकी मालाकारी नटी वेणुकारी शिल्पिकाङ्गाविकला वा च बन्धुभूता याः स्त्रियस्तासामान्यतमां गृहीत्वा, ततो निर्विकल्पात्मको महायोगी त्वात्मनः सर्वभावस्वभावप्रतिपादनाय लोकगर्हितं भक्षणीयं समयशोधनादिक्रमेणाभिसंस्कृत्य लौकिकनिमित्तोपलम्भमपनीय प्रच्छन्ने प्रदेशे स्थित्वाऽभ्यवहरति। तथा च न मुद्राबन्धो न मण्डलं न कुण्डं न चैत्यं न पुस्तकवाचनं न कायक्लेशो न पटकाष्ठपाषाणप्रतिमां प्रणमति। न श्रावकप्रत्येकबुद्धशरणमनुस्मरति न तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रकालाक्षेपणं करोति। सर्वमेतदध्यात्मनैव सम्पादयति। यदि सामग्रीविकलः संग्रहमण्डलं सम्पादयितुमशक्तः स्यात् ततस्तेन साधकेन पञ्चगुह्यमहातत्त्वात्मकेनापि निष्प्रपञ्चचर्याऽभ्यसनीया अनेन क्रमेण।

तत्रायं क्रमः- काचिद् रूपवज्राकारेण दर्पणव्यग्रकोमलकरकमला सौम्यनयननिरीक्षणा अशेषमुक्ताहारविकटसंकटपीनपयोधरा किञ्चिच्छिथिलीकृतचेलनिदर्शितार्द्धनितम्बबिम्बा महासुखानुरागणाय पूर्वकोणे (आग्नेये) व्यवस्थिता।

---

१. गृहीतचर्यान्विता- नास्ति - भो०

२. यथा - नास्ति- क.

काचित् शब्दवज्राकारेण विकसितनयननिरीक्षणा शृङ्गाररसललितलीलाकृतियुतरागचरितधर्मदेशनाप्रकाशनकुशलकथोद्गायनप्रगीतकाकलीगीतकानुवादनवीणाप्रवादनतया दक्षिणकोणे (नैर्ऋत्ये) व्यवस्थिता।

काचिद् गन्धवज्राकारेण सस्मितनयननिरीक्षणा स्निग्धोन्नतनखमयूख[1]विराजितताम्रजालावनद्धकरकमलावर्तनाकारगृहीतमणिमयादिभाजनन्यस्तकुङ्कुमागरुमृगमदोरगसारचन्दनकर्पूरामोदवासितदशदिक्कुटीगन्धवह भाजनतया पश्चिमकोणे (वायव्ये) व्यवस्थिता।

काचिद्रसवज्राकारेण मधुनयननिरीक्षणाऽनेकमणिकनकरजतभाजनादिनिहितविविधव्यञ्जनसंकीर्णरसरसाग्रादिव्याहारमहामृतपथ्यभोजनधारितयोत्तरकोणे (ईशाने) व्यवस्थिता।

काचित् स्पर्शवज्राकारेण सर्वलक्षणालङ्कृतगात्रा त्रिवलीतरङ्गभङ्गाभिरामात्यन्तकृच्छ्रमध्या[2]चामराद्याकृतितद्विपुलप्रदक्षिणावर्तगम्भीरनाभिदेशा जघनघनदशनखरनितम्बस्तब्धशृङ्गारललितकोमलगतिस्मितवदनसौम्येक्षणा महासुखानुरागणतयोत्सङ्गे व्यवस्थिता।

ततो महासुखः श्रीसुरतसुखरागचरितप्रदर्शनायालिङ्गनचुम्बनचूषणकुचग्रहणपुलकताडनदशननखदन्तमर्दनदोलसूचीकूर्परादिकरण[3]प्रमोदनतया प्रचलितमुक्ताहारवलयकटककेयूरमुकुटनूपुररवविषयेन्द्रियवज्रपद्म[4]समायोगप्रज्ञोपायज्ञानज्ञेयसमापत्त्यालिकालिमदनातपत्रकूर्मकण्ठशशाङ्कनाडीत्रयत्र्यङ्गुलिचालनचोदनप्रचोदनस्कन्धादिस्वभावात् सर्वतथागतान् [5]निर्झर-

---

१. मयूखबिम्ब - भो०

२. ध्वजा० - भो०

३. प्रमोहन - भो०

४. समायोग- नास्ति - भो०

५. निर्मल - भो०

धाराकारेण द्रवीभूतान् ज्ञानभूमिं प्राप्य परममहासुखपदमास्वादयति। इममर्थं द्योतयन्नाह **मूलतन्त्रे-**

सेवयन् कामगुणान् पञ्च ज्ञानार्थिरागिणः सदा ।। इति।

(द्र०- गु० स० ७.७)

यदि रूपवज्रादयोऽपि न संविद्यन्ते तदैकैकस्पर्शवज्रया सह सम्पुटयोगेनापि साधयितव्यम्। यस्मात् सर्वतथागताः साधकस्य कायमण्डलेऽन्तर्भूताः। सर्वदेव्यः स्पर्शवज्रायाः कायमण्डलेऽन्तर्भूताः। तस्मादभिन्नाहङ्कारेणाविकल्पेनाभ्यसनीयमिति **मूलसूत्रे** प्रतिपादयन्नाह-

"अथ वज्रपाणिः सर्वतथागताधिपतिः सर्वतथागतकायवाक्चित्तवज्रविद्याव्रतसमादानचर्यां स्वकायवाक्चित्तवज्रेभ्यो निश्चारयेत्।

कायवाक्चित्तवज्राणां कायवाक्चित्तभावनम् ।
स्वरूपेणैव तत्कार्यं लघुसिद्धिरवाप्यते ।।

तत्रेदं कायवाक्चित्त[1]विद्याव्रतम् -

जटामुकुटधरं बिम्बं सितवर्णनिभं महत् ।
कारयेद् विधिवत् सर्वं मन्त्रसंवरसंवृतम् ।।
षोडशाब्दिकां गृह्य सर्वालङ्कारभूषिताम् ।
चारुवक्त्रां विशालाक्षीं प्राप्य विद्याव्रतं चरेत् ।।
लोचनापदसंभोगैर्वज्रचिह्नैस्तु भावयेत् ।
मुद्रामन्त्रविधानज्ञां मन्त्रतन्त्रसुशिक्षिताम् ।।
कुर्यात् ताथागतीं भार्यां बुद्धबोधिप्रतिष्ठिताम् ।
गुह्यपूजां प्रकुर्वीत चतुःसत्त्वां(सन्ध्यं)महाव्रती ।।

---

१. वज्रविद्याव्रतम् - भो०

कन्दमूलफलैः सर्वं भोज्यभक्ष्यं समारभेत् ।
एवं बुद्धो भवेच्छीघ्रं महाज्ञानोदधिः प्रभुः ।।
षण्मासेनैव तत्सर्वं प्राप्नुयान्नात्र संशयः ।
(गु० स० १६.८९-९५)

वने भिक्षां भ्रमेन्नित्यं साधको दृढनिश्चयः ।।

ददन्ति ते भय[त्र]स्ता भोजनं दिव्यमण्डितम् ।
अतिक्रमन्ति [1]यदि वज्रात्मा नाशं वज्राक्षरं भवेत् ।।

सुरीं नागीं महायक्षीमसुरीं मानुषीमपि ।
प्राप्य विद्याव्रतं कार्यं त्रिवज्रज्ञानसेवितम् ।। इति।
(गु० स० १६.९८-१००)

एवं षट्कामावचरा द्वन्द्वालिङ्गनपाण्याप्तिहसितेक्षितमैथुनाः परमानन्दसुखं क्षणं क्षणमनुभवन्ति। परिनिष्पन्नावस्थायां चासंसारं यावत् सततानन्दमूर्त्तयो भवन्ति। इममर्थं द्योतयन्नाह **सर्वदेवसमागमतन्त्रे**-

द्वयेन्द्रियसमापत्त्या [2]व्यायामविधिरन्तरे ।
हर्षचित्तं मुनेः सिद्धौ महासुखमिति स्मृतम् ।।
(द्र०- सु० सं०, पृ० ८२)

निष्प्रपञ्चचर्यामेलावणसंशयपरिच्छेदो दशमः ।। १० ।।

*

---

१. त्रिवज्रात्मा - भो०

२. ध्येयः स - मु०

एकादशः परिच्छेदः

इदानीमत्यन्तनिष्प्रपञ्चचर्यायामवतार्यते -

पर्वतेषु विविक्तेषु नदीप्रस्रवणेषु च।
श्मशानादिष्वपि कार्यमिदं ध्यानसमुच्चयम्।।

(गु० स० ११.३५)

इत्यादि तन्त्रोक्तमनोनुकूलप्रदेशेषु यक्षिणीकिंकरादीनि भक्तसरावनिमित्तं प्रसाधयेत्। अथ चोत्तरसाधकाद्वा महासत्रे वा भक्तमात्रं सम्पाद्यात्यन्तनिष्प्रपञ्चचर्यां प्रविशेदनेन क्रमेण।

तत्रायं क्रमः - प्रथमं तावत् साधकेन अनादिसांसारिकदुःखम(दुःखा)नुभवं स्मृत्य निर्वाणसुखकांक्षया सर्वसंगपरित्यागिना भवितव्यम्। अन्तशो राजैश्वर्येऽपि दुःखसंज्ञिना भवितव्यम्। द्वितीये तिलमात्रेष्वपि वस्तुषु परिग्रहबुद्धिं परित्यजेत्। तृतीये परमार्थसत्यसत्त्वाय कायजीवितनिरपेक्षेण भवितव्यम्।

यथोक्तं **समाधिराजसूत्रे**- "तस्मात् तर्हि [1]कुमार बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन इमं समाधिमाकांक्षता क्षिप्रं चानुत्तरां सम्यक्संबोधिमभिसंबोद्धुकामेन कायजीविते चाध्यवसितेन भवितव्यम्। तथा लौकिकक्षुद्रसिद्धिं(द्धिः) [2]लोकोत्तराष्टमहासिद्धयश्च न प्रार्थयितव्याः, विक्षेपत्वात् वैवर्तिकत्वाच्च"(पृ० १४३, ३२८)।

यथोक्त**मसाधारणगुह्यमहायोगतन्त्रे**- "अथापरां सर्वज्ञसिद्धिप्राप्तौ

---

१. कुलपुत्र - भो०

२. लोकोत्तर- नास्ति - भो०

न किञ्चित् सिद्धिमाकांक्षति। सर्वलोकायतनवाक्सिद्धिं किङ्करसिद्धिं भद्रघटसिद्धिं पातालसिद्धिं राज्यसिद्धिं वश्यसिद्धिं पौष्टिकसिद्धिं अभिचारसिद्धिं न प्रार्थयेत्। तत् कस्य हेतोः ? यथा महासिद्ध्यर्थी क्षुद्रसिद्धिं न कांक्षते, केवलनिर्विकल्पसिद्धौ समवधानं गच्छति।''

तथा चोक्तं **गुह्यसिद्धौ**-

प्रयोगादींश्च [1]तत्त्वेन वर्जयेत् तत्त्ववित् सदा ।
[2]वज्रसत्त्वादहंकारं मुक्त्वा नान्यत्र कारयेत् ।।
प्रयोगा अपि न [3]बुध्यन्ते शु[4]द्धतत्त्वे व्यवस्थिते ।
नैरात्म्यपदयोगेन यावत्तत् प्रत्यवेक्ष्यते ।।
निःस्वभावपदस्थस्य दिव्योपाययुतस्य च ।
सिद्ध्यते निर्विचारेण यत्किञ्चित् कल्पचोदितम् ।।
भावनायोगसामर्थ्यात् स्वयमेवोपतिष्ठते ।
तत्सर्वं क्षणमात्रेण यत्किञ्चित् सिद्धिलक्षणम् ।।

इति। (गु० सि० ६.४५-४९)

अतो बाह्याङ्गनामपनीय हृद्गतज्ञानमुद्रया सह समापत्त्या शीघ्रतरं महावज्रधरपदं निष्पादयामीति साहसमवलम्ब्य, एकाकिना वक्ष्यमाणक्रमेण ध्येयम्।

तत्रायं क्रमः- यावत् स्कन्धकरण्डकोऽस्ति तावद्विज्ञानत्रयस्वभावः प्रकृत्याभासस्य साक्षात् जगति वर्तते स्वात्मा परमात्मा चेति।

---

१. यत्नेन - भो०
२. वज्रसत्त्वध्रुवं क्रूरं - क., गृहीतस्तु - मु०
३. क्रियन्ते - भो०
४. गुह्यतत्त्वे - मु०

कथं प्रथमाभासो द्वितीयप्रकृतिः सा वायुसंयुक्ता येन दिशोदश भ्राम्यति। केन? रागविरागमध्यरागादिभिः। अपि च रौद्रं सौम्यं हर्षणं शोकः क्षुत्तृषा वेदनेत्यादिषष्ट्युत्तरशतप्रकृतयोऽहर्निशं मनसि कृत्वा अविद्यायां निरुद्धः पुनर्व्युत्थाय भ्रमति वायुवशात्तेन शरीरव्याकुलता चक्षुरादीन्द्रिययावद्विषयं नोपलभ्यते तावत् तत्रैवालम्बते, अनादिकालाभ्यासात्। अतो जन्म-परम्परया नैरात्म्यधर्माभ्यस्तो विदग्धप्रयोगाधिगतः प्रकृत्याभासस्यैकत्र मीलनं कृत्वा परमार्थसत्यमालम्बयेदनेन क्रमेण।

तत्रायं क्रमः - स्कन्धादयः सूक्ष्मधातौ प्रविशन्ति। सूक्ष्मधातुश्च पुनश्चित्ते प्रविशति। ततश्चित्तं पुनश्चैतसिके प्रविशति। चैतसिकस्तु पुनरविद्यायां तथा नियुक्तः स्वपिति। तस्मिन् काले चित्तचैतसिकाविद्या-प्रवेश[1]लक्षणविस्मृतिः। पश्चाद् विस्मृतिरपि नास्ति ज्ञानस्वभावं प्रभास्वर-मिति। पुनर्मुञ्चति वायुः प्रकृतिश्चलति। नो चेत् स्वप्नान्तरादयो यावद् विज्ञानं न चलति तावत् स्वपिति। प्रभास्वरं समीक्षते। तदेव प्रत्यात्मवेद्य कायवाक्चित्तरहितं परमार्थसत्यमध्यात्माभिसंबोधिरित्युच्यते। अनेनानु-पूर्वेण कायमण्डलस्थं तथागतव्यूहं मारयेत्। तथतायां प्रवेशयेत् सुतरां सिद्धिमाप्नुयादिति। प्रपञ्चतानिष्प्रपञ्चताचर्यामनपेक्ष्य शीघ्रतरमत्रस्वरूप-परिवर्तो भवतीत्यर्थः। इममेवार्थं **महासन्ध्याव्याकरणमहायोगतन्त्रे** -

रूपाद्याध्यात्मिकान् धर्मान् पश्येत् विपश्यनोच्यते ।
अक्षोभ्यादियथासंख्यं कल्पयेत् शमथो भवेत् ।।

अनयोर्निःस्वभावत्वात् तथताशान्तसंज्ञकम् ।
तथतामण्डले योगी सर्वबुद्धान् प्रवेशयेद् ।। इति।

---

१. क्षण - भो०

पुनश्चोक्तं **सर्वदेवसमागमतन्त्रे** -

निर्वाणाग्निमहाघोरे भस्मशोऽपि न मुच्यते ।
[1]न तत्र विद्यते तत्त्वं नेन्द्रियार्था न धातवः ।।

(द्र०- त० सि०, पृ० १५)

अनेनानुपूर्वेण युक्त्यागमाभ्यामधिगमरूपां सर्वबुद्धजननीं निश्चित्य सर्वारल्लिर्विषयासक्तिं च प्रहाय भुसुकुचर्यया चरेदनेन क्रमेण।

तत्रायं क्रमः - भु इति भुक्त्वा तन्मात्रमनुस्मरति सङ्गममपहरति दुष्करैर्नियमैरिति किञ्चिन्न चिन्तनीयम्। सु इति सुप्त्वा एतद् विज्ञाय न विद्योपलक्षितं साक्षात्कुर्वीत सैवाविद्यांकुशाकारं(रां)कितविज्ञानं पुनरावर्तयति प्रभास्वरमेव [2]साक्षात्करोति निर्मलस्वभावम्। कु इति कुटिं गच्छेद् विण्मूत्रोत्सर्गार्थं तन्मात्रमनुभवति सङ्गमपनयति कायवेदनाविषयेन्द्रियस्वभावं च न चिन्तयेदिति। उन्मत्तव्रतेनाप्यत्यन्तनिष्प्रपञ्चचर्यायां **व्याख्यातन्त्रो**क्तक्रमेण चरितव्यम्। तत्रायं क्रमः -

[3]निर्विकल्पो यदा वीरः स्थितिं हित्वा तु लौकिकीम् ।
आचरेत् सर्वकार्याणि बुद्धाः पश्यन्ति तत् तदा ।।

बालवद्विचरेद्युक्त्या [4]सर्वतश्छिन्नसंशयः ।
निराभोगो यदा योगी तदा वर्षन्ति संपदः ।।

अशेषपापयुक्तानां मोहावरणसुस्थिताः ।
उन्मत्तव्रतयोगेन षण्मासादमोघसिद्धयः ।।

---

१. ततस्तत्र विद्यते - क., ततस्तत्र विद्यते नेन्द्रियार्थोऽत्र न धातवः - भो०, गृहीतस्तु - मु०

२. अभिसंस्करोति - भो०

३. सुभाषितसंग्रहे (भाग- २, पृ० ३८-३९) इमे श्लोका बुद्धकपालतन्त्रनाम्ना उद्धृताः।

४. सर्वसिद्धिर्न संशयः - क., गृहीतस्तु - भो०

सर्वबुद्धान् स्वयं पश्येत् सर्वकामैः [1]प्रपूर्यते ।
न क्षीणो न च हानित्वं [2]स्वेच्छायुर्जायते वपुः ।।

[3]अनुत्तरां परां बोधिं संप्राप्नोत्यप्रयत्नतः ।
विना यत्नेन सिध्यन्ति सर्वकामसुखोत्सुकाः ।।

[4]गम्भीरपदं नित्यं गच्छेत् तिष्ठन् निषण्णकः ।
प्रभास्वरज्ञानकौशल्याद् योगिनां लक्षणं सदा ।।

अनेन ध्यानयोगेन चित्तरत्नं दृढीभवेत् ।
अधिष्ठानं च कुर्वन्ति बुद्धा बोधिप्रतिष्ठिताः ।।

एवं भूत्वा निविष्टस्तु भावयेद् भावतत्परः ।
यावन्न खिद्यते चित्तं समाहितमनाः सुधीः ।।

खिन्नस्तु पर्यटेत् पश्चाद्यथारुचितचेष्टितः ।
[5]भावयेद्विपुलां बोधिमीषदुन्मीलितेक्षणः ।।

हसन् जल्पन् क्वचित्तिष्ठन् क्वचित्कुर्यात् [6]प्रवर्तनम् ।
भावनासक्तचित्तस्तु यथा खेदो न जायते ।।

एवं [7]समाधियुक्तस्य निर्विकल्पस्य मन्त्रिणः ।
कालावधिं परित्यज्य सिद्ध्यतेऽनुत्तरं पदम् ।। इति।

---

१. प्रपूज्यते क., गृहीतस्तु - भो०
२. स्वच्छायु० - भो०
३. श्लोकोऽयं सुभाषितसंग्रहेऽत्रक्रमे नास्ति।
४. परमगम्भीरपदं नित्यं गच्छन्ति सुनिषण्णकाः - क., परमगम्भीरपदं चिन्त्यं - भो०, गृहीतस्तु - मु०
५. प्राप्येद् - भो०
६. नर्तनम् - भो०
७. समय - भो०

एवं मृदुमध्याधिमात्रभेदेन [1]यथानुरूपेण च त्रिविधचर्या पक्षाद्वा मासाद्वा यावत् षण्मासा[द्वा]ऽभ्यस्यमानस्य महामुद्रासिद्धिनिमित्तमुपजायते। तत्रेदं निमित्तम्-

सूक्ष्मरूपं लघुस्पर्शं व्याप्तिसंप्राप्तिमेव च।
प्रकाशं चैव स्थैर्यं च वशित्वं कामावसानिकम्।। इति।

(द्र०- सु० सं०, पृ० ८६-८८)

पुनरपि स्वप्ननिमित्तमाह **श्रीगुह्यसमाजमहायोगतन्त्रे-**

बोधिज्ञानाग्रसंप्राप्तं पश्यति बुद्ध[2]सुप्रभम्।
बुद्धसंभोगकायं च[3] आत्मानं लघु पश्यति।।

त्रैधातुकमहासत्त्वैः पूज्यमानं स पश्यति।
बुद्धैश्च बोधिसत्त्वैश्च पञ्चकामगुणैर्ध्रुवम्।।

पूजितं पश्यते [4]नित्यं महाज्ञाना[5]ग्रसम्भवम्।
वज्रसत्त्वं महाबिम्बं वज्रधर्मं महायशम्।।

स्वबिम्बं पश्यते स्वप्ने गुह्यवज्रमहायशाः।
प्रणमन्ति महाबुद्धा बोधिसत्त्वाश्च वज्रिणः।।

द्रक्ष्यन्ति ईदृशान् स्वप्नान् कायवाक्चित्तसिद्धिदान्।
सर्वालङ्कारसम्पूर्णां सुरकन्यां मनोरमाम्।।

---

१. वयसा - मु०, भो०
२. कायसमं - भो०
३. वा - मु०
४. बिम्बं - मु०
५. ज्ञानसमप्रभम् - मु०

दारकं दारिकां पश्यन् स सिद्धिमधिगच्छति ।
दशदिक्सर्वबुद्धानां क्षेत्रस्थं पश्यति ध्रुवम् ।।

ददन्ति हृष्टचित्तात्मा धर्मगञ्जं मनोरमम् ।
धर्मचक्रगतं कायं सर्वसत्त्वपरिवृतम् ।।
पश्यते योगसमये ध्यानवज्रप्रतिष्ठितः । इति।

(गु० स० १५.१२१-१२७)

वज्रशिष्य उवाच- यदि साधको दृष्टसत्योऽपि पूर्ववासनाभ्यासबलात् कृषिवाणिज्यसेवादिव्यापारैर्व्यग्रतया त्रिविधचर्यां न चरेत् सामग्रीवैकल्याद्यथातन्त्रोक्तविधानं सम्पादयितुमशक्यत्वाच्च स कालक्रियां कृत्वा जन्मान्तरे पुनर्भवं प्रतिलभेदुताहो महावज्रधरत्वं प्रतिलभते।

वज्रगुरुराह-

नापनेयमतः किञ्चित् प्रक्षेप्तव्यं न किञ्चन ।
द्रष्टव्यं भूततो भूतं भूतदर्शी विमुच्यते।। इति।

(द्र०- अभि० अ०, ५.२१; च० गी० को०, पृ० ३२)

निष्पन्नक्रमस्यैतदधिवचनं यदुत भूतदर्शनमिति। भूतदर्शनाच्छाश्वतोच्छेदसंक्रान्त्यादिदृष्टयो निरुद्ध्यन्ते तथापि व्यवहारमाश्रित्य संक्रान्तिविशुद्धि[[1]निमित्तं निश्चर्यां चरेत्। एतत्स्कन्धादि परलोके नोत्क्रम्य यास्यति, अन्यथा नित्यत्वदोषः स्यात्। परलोको मृत्योरन्यतोऽपि न यास्यति, तत्राहेतुकदोषदुष्टत्वात्। यथा दीपाद् दीपः मुद्रातो मुद्रितं ध्वनेश्च प्रतिश्रुत्कं न तदेव न च ततः पृथग्वक्तुं शक्यते।

---

१. अतः परं क. मातृकायां पाठः खण्डितः भोटानुवादमाधृत्य संस्कृतेऽनूदितः।

उक्तं च **सुवर्णप्रभाससूत्रे**-

न बुद्धः परिनिर्वाति न धर्मः परिहीयते ।
सत्त्वानां परिपाकाय परिनिर्वाणं निदर्शयेत् ।।

(सु० प्र० २.३०)

लङ्कावतारसूत्रेऽप्युक्तम्-

न ह्यत्रोत्पद्यते किञ्चित् प्रत्ययैर्न निरुध्यते ।
उत्पद्यन्ते निरुध्यन्ते प्रत्यया एव कल्पिताः ।।

(लं० सू० २.१३८)

एतयैवोक्त्या भगवतः शाक्यमुनेर्निखिला एव लीलाश्चात्र महापरिनिर्वाणं निदर्शयन्ति। एवमेव निष्पन्नाधिगमं कुर्वाणोऽपि परिनिर्वाणं लभते नात्र सन्देहलेशोऽपि। अतो यदि तत्त्वज्ञो हेत्वभावेनोक्तचर्याचार्यपि सर्वदृष्टीः परिहाय मृत्युं लभेच्चेत् तदपि परमार्थसत्यमेव। उत्पत्तिस्तु संवृतिसत्यम्। एवं सम्यगवबुद्ध्याभिसमयेन प्रभास्वरं प्रविश्य सामान्यस्कन्धात् स्वाधिष्ठानक्रमेण दृढचित्तमुत्पाद्य तत्र च मनसिकृत्वा स्थिरीभूय पुनर्भवविचारमपरित्यज्यापि तिष्ठति चेत् स सर्वज्ञो भवति।

अत **उक्तम्**-

येन येन हि भावेन मनः संयुज्यते नृणाम् ।
तेन तन्मयतां याति विश्वरूपो मणिर्यथा ।।

(यो० सं० ११.२)

एतत्सर्वं विशेषे परिवर्त्य विशेषफलमाविर्भवति। अत **उच्यते**-

उत्पत्तिर्यत् संवृतिसत्यमेतद्
मृत्युर्हि नाम परमार्थसत्यम् ।
क्रमद्वयस्यास्य गुरुकृपातो
ज्ञाता भवेद् यः स भविष्यबुद्धः ।।

सत्यद्वयस्याद्वयवत्प्रवेशोऽ-
नुच्छेदरूपोऽप्यविशेष एव ।
एकत्वमेवास्त्यनयोर्द्वयोरिति
विज्ञायते येन विमुक्त एषः ।।

गिरीन्द्रमूर्ध्नः प्रपतेत् तु कश्चिद्
नेच्छेच्च्युतिं स च्यवते तथापि ।
गुरुप्रसादाद्विहितोपदेशाद्
नेच्छेद्विमुक्तिं स तथापि मुक्तः ।।

(प० क्र०- २.६९)

मत्वा सत्त्वेषु तत्त्वाधिगमक्षमताऽभावमालोक्य लोके
उत्तालाब्धितरङ्गभङ्गविकलाद्दीपस्फुलिङ्गादिव ।
किञ्चित् किञ्चिदुपेत्य संचितवता ग्रन्थो मयाऽयं कृतो
ये वै संवृतिसत्यभीतसुभगास्तेषामलातो भवेत् ।।

अत्यन्तनिष्प्रपञ्चचर्यामेलावणसंशयपरिच्छेद एकादशः ।।

समाप्तोऽयं चर्यामेलावणप्रदीपः ।।

कृतिरियं महाचार्य-आर्यदेवपादानाम् ।।]

*

उद्धृतश्लोकार्धानुक्रमणी

अकारः सर्ववर्णाग्र्यो	३१
अक्षरं परमं सूक्ष्मम्	३१
अक्षोभ्यादि यथासंख्यं	९८
अतः सुखं सुखेनैव	८१
अतिक्रमन्ति यदि वज्रात्मा	९५
अथ भगवान् महावज्री	२२
अथ भगवान् विश्वो	२२
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि	८२
अध ऊर्ध्वसमायुक्ता	२८
अधिष्ठानं च कुर्वन्ति	१००
अनन्तजन्मसाहस्रं	५१
अनयोर्निःस्वभावत्वात्	९८
अनाख्येयमनुच्चार्यं	२९
अनिरोधः प्रशान्तश्च	२९
अनुज्ञातं ततस्तस्य	६३
अनुत्तरां परां बोधिं	१००
अनेन ध्यानयोगेन	१००
अनेन सर्वबुद्धात्मा	८९
अन्यथा नैव सिद्धिः स्यात्	७७
अपनयनादपानोऽयं	१३
अबद्धान्योन्यसंयोगा	२८
अभाव----------	६५
अभिषेको हि दातव्यो	६३
अमृतत्वं पुनर्यान्ति	८०
अर्पयेत्समयं तस्य	६३
अव्यक्तं सूक्ष्ममित्येवं	२३
अशितं खादितं लेह्यं	१३
अशेषपापयुक्तानां	९९
असमाहितयोगेन	९०
अस्तीति नास्तीति उभेऽपि	६५
अहङ्कारममकारैः	५४
अहो परमगम्भीरं	७२
अहो बुद्ध अहो बुद्ध	६६
अहोरात्रं सदा जापो	२६
अहो वज्र अहो वज्र	७२
अहो सुविस्मयकर	७२
आचरेत् सर्वकार्याणि	९९
आकाशादाकाशसंभूतं	७०
आकाशानन्तमित्यर्थं	६६
आत्मा वै सर्वबुद्धत्वं	१९
आदर्शे ह्यनिलक्षयः क्रम	६४
आदिकर्मिकसन्धानं	७
आनन्तर्यादिकं कृत्वा	५१
आभासेन यदा युक्तो	४६
आलोकालोकभासौ च	४६
इन्द्रायुधनिभं कायं	५७, ७२
इन्द्रायुधमिवाकाशे	७२
ईदृशं प्राप्यते रूपं	७२

उत्तमर्थं न बुध्यन्ति २२
उत्थितो वा निषण्णो वा ९०
उत्पत्तिर्यत् संवृतिसत्यमेतद् १०३
उत्पद्यन्ते निरुध्यन्ते १०३
उदानकर्मविज्ञोऽयं १३
उद्भूता गगनाभोगाल् ५१
उन्मत्तव्रतयोगेन ९९
उपायरहितं ज्ञानं ७८
उपायश्चैव संबुद्धैः ७
ऊर्ध्वगमात् संहरणाद् १३
एकत्वमेवास्त्यनयोर्द्वयो १०४
एकादिर्नवमध्ये तु २८
एतज्ज्ञात्वा विमुच्यन्ति ५१
एवं क्रमाज्जाग्रति सुप्तचित्तः ५८
एवं प्रकृतयः सर्वा ५१
एवं बुद्धो भवेच्छीघ्रं ९५
एवं भूत्वा निविष्टस्तु १००
एवं समाधियुक्तस्य १००
एवं स्तुत्वा तु तं दिव्यम् ६२
एवं स्वभावा विज्ञानाद् ५१
कति जन्मान्तरं वक्तुं ९०
कथं कर्मात्र संसारे ५४
कन्दमूलफलैः सर्वं ९५
कर्मजन्मविनिर्मुक्तम् ६२
कलशे वाऽथ शंखे वा ६३
कल्पितं परतन्त्रेण ५४
कायवाक्चित्तनिष्पत्तैः १८
कायवाक्चित्तवज्राणां ९४
कारयेद् विधिवत् सर्वं ९४
कालावधिं परित्यज्य १००
किञ्चित् किञ्चिदुपेत्य संचित १०४
किन्तु तस्य प्रभेदोऽस्ति ४५
कुर्यात् ताथागतीं भार्यां ९४
कुलाः शतविधाः प्रोक्ता ९, १७, २१
कृत्वा शुभाशुभं कर्म ५१
कृत्वैतदात्मनो बिम्बं २४
कोटाक्षः कोटवः कोटाः २४
कोलाक्षः कोलवः कोलः २४
कौकृत्यस्त्यानमिद्धादीन् ७७
क्रमद्वयस्यास्य गुरुकृपातो १०३
खधातुमध्यगतं चिन्तेद् १७
खसमं खसमाकारम् ९०
खसमा विरजा वररूपधरा ७३
खिन्नस्तु पर्यटेत् पश्चाद् १००
गगनं गगनोद्भूतम् ६१
गम्भीरपदं नित्यं १००
गिरीन्द्रमूर्ध्नः प्रपतेत्तु १०४
गुरुप्रसादाद्विहितोपदेशाद् १०४
गुरुवक्त्रेण संभिन्ने ६१
गुह्यपूजां प्रकुर्वीत ९४
गृहीतं वस्तुमात्रं च ९०
गृहीत्वा हृदयं शुद्धं ७३

घण्टापताकसंशोभं ८४
चतुरशीतिसाहस्रे २
चतुरस्रं चतुर्द्वारं ८३
चतुर्भिर्गुणितं सम्यक् २९
चतुर्मण्डलमेतद्धि २६
चतुःसूत्रसमायुक्तम् ८३
चन्द्रार्द्धवज्रकोणं च ८४
चारुवक्त्रां विशालाक्षीं ९४
चित्तमात्रमिदं सर्वं ५४
चित्तया रहितं यत् तद् ७०
चित्तं त्रिविधमित्युक्तम् ४६
छायामायोपमं दिव्यं ७१
जटामुकुटधरं बिम्बं ९४
ज्ञात्वा तत्त्वं ततः कृत्वा ७१
ज्ञानं मायोपमं शुद्धं ७१
ज्वलन्तं दीपसदृशं ३१
ततस्तद्भक्तिसामर्थ्याद् ७१
ततस्तं शिष्यमाहूय ६३
ततः परिणतं रूपं २९
ततः शुभाशुभं कर्म ५४
ततः समर्पयेत् तस्य ६३
ततः समाहिताचार्यो ६३
ततो घण्टावसंसक्त ८२
तत् कथं बोधिचित्तं २२
तत्त्वहीना! न सिद्ध्यन्ति २
तत्त्वं वै ये न जानन्ति २
त(त्व)त्पादपङ्कजं मुक्त्वा ६२
तत्रासनं निवेश्यादौ ८२
तत्सर्वं क्षणमात्रेण ९७
तथतामण्डले योगी ९८
तथागतमहादिव्यं ८२
तथागताधिष्ठित एक-एकशः १७
तथा सबाह्या विषयाश्च पञ्च १७
तथैव हि गुरोर्वक्त्रात् ६१
तदा तत्प्रकृतिः सर्वा ४६
तदाश्रयात्तु कर्माणि २३
तदासनेषु प्राणसर्वान् ८३
तदित्थं गुह्यसन्ध्यायां २९
तदेव त्रितयैकं स्याद् २९
तद्भावभावैर्नियतं स्वचित्तं १८
तन्मनस्त्वशीतिख्यातस् ४४
तमबद्धं विजानीयात् २८
तस्मात्प्रसीद बुद्धाग्र्य ६२
तस्मादुभे अन्तविवर्जयित्वा ६६
तस्मिन्नुत्पद्यते रूपं ७१
तस्मिन् परमनिर्वाणे ७१
ताभिः संरम्यमाणस्तु ८९
तेजः पाण्डरा ख्याता १३
तेन तन्मयतां याति १०३
तैरेव हि विमुच्यन्ते ८१
तोये निर्मलके नदीसरसि वा ६४
त्रा(त्र्या)द्याद्यर्थे समायोज(ज्य) २८

त्रैधातुकमहासत्त्वैः १०१
त्रैधातुकाभिषेकेण ६३
त्र्यध्वविदाऽकृतसंकल्पम् २९
त्वया लोकानुवृत्त्यर्थं ७२
दक्षिणात् प्रसरो धातुः २५
ददन्ति ते भय[त्र]स्ता ९५
ददन्ति हृष्टचित्तात्मा १०२
ददस्व मे महाचार्य ६२
ददस्व मे महासत्त्व ६२
दशकुशलान् कर्मपथान् ५२, ७८
दशदिक्सर्वबुद्धानां १०२
दारकं दारिकां पश्यन् १०२
दिवारात्रिविभागेन २३
दुष्करैर्नियमैस्तीव्रैः ७९
दुःखाद् विक्षिप्यते चित्तं ७९
दूरङ्गममेकचरम ३८
दृढं सारमसौशीर्यं ७३
दृश्यते परमेकेन ७१
दृष्टे धर्मे च निर्वाणं ७६
द्रक्ष्यन्ति ईदृशान् स्वप्नान् १०१
द्रष्टव्यं भूततो भूतं १०२
द्वन्द्वस्य प्रसरो धातुः २५
द्वयेन्द्रियसमापत्त्या ९५
धगित्याकारसंभूतं ७१
धर्मचक्रगतं कायं १०२
धर्मा इमे शब्दरुतेन व्याकृता ३२, ६१
ध्यानाध्ययनवीतन्तु २९
न क्षीणो न च हानित्वं १००
न चैकतां चाप्यवतीर्य ३३, ६१
न तत्र विद्यते तत्त्वं ९९
न बुद्धः परिनिर्वाति १०३
नमत खसमनिःस्वभावशुद्धं १
नमतानागतसर्वगं सुगतं १
नमस्ते वरदवज्राग्र्य ६२
नमस्ते शून्यतागर्भ ६२
न योगः प्रतिबिम्बेषु ९९
नवशतं तु यद् दृष्टं २९
न ह्यत्रोत्पद्यते किञ्चित् १०३
नागकूर्मकृकरांश्च २३
नापनेयमतः किञ्चित् १०२
नामयो नाशुचिः काये ७२
नामाचार्यमनुज्ञात ६३
नासिकाग्रे प्रयत्नेन २१
नासिकाच्छिद्रसंभूतः २५
निराभोगो यदा योगी ९९
निर्वाणाग्निमहाघोरे ९९
निर्विकल्पो यदा वीरः ९९
निर्विश्य विषयान् कृत्स्नान् ५१
निश्चार्य पद्मनासाग्रे २२
निश्वासो [हि] जगद्व्यापी २३
निषिक्तां घटितां वापि(भि) ८३
निःसृत्येन्द्रियमार्गेभ्यो ४६

निःस्वभावपदस्थस्य ९७
नैरात्म्यपदयोगेन ९७
पक्वं फलं स्याद् ५८
पञ्चज्ञानमयं श्वासं २२
पञ्चपञ्चकसंयुक्तं २८
पञ्चबुद्धात्मकु सर्वजगोऽयं १८
पञ्चवर्णं महारत्नं २१, २२
पञ्चवायुसमायुक्तं ११
पञ्चवायूर्ध्वसञ्चारो २५
पञ्चस्कन्धाः समासेन ९, ११
पञ्चहृदयमाश्रित्य ११
पञ्चात्मकं पञ्चभिरेव भूतैः १८
पत्वि(क्षि)णीक्रमशीर्षादि ८४
पयोधरा यथा नैके ५१
पर्वते विजने साध्यम् ९१
पर्वतेषु विविक्तेषु ९६
पश्यते योगसमये १०२
पाण्डराख्या भवेत्तेजः ९
पाण्डरादि जपः(पाः) प्रोक्ताः २९
पादप्रसारिकं मुक्त्वा ७७
पारमार्थिकमेवेदं २९
पुनस्त्रिविधतां यान्ति ९, १९
पुष्पधूपादियोगेन ८२
पूजितं पश्यते नित्यं १०१
पूज्यतेऽनुयोगेन ८९
पूर्वकर्मविपाकोऽयम् ५१
पृथिवी लोचना ख्याता ९, १३
प्रकाशं चैव स्थैर्यं च १०१
प्रकृत्याभासविधिना ५१
प्रक्रमणात् प्राणायाम १२
प्रक्रमते सदा कालं १२
प्रज्ञोपायैकयोगेन २३
प्रणमन्ति महाबुद्धा १०१
प्रतीत्य द्वादशाङ्गाख्यं २२
प्रतीत्योत्पद्यते यद्यद् ४४
प्रत्यहं प्रतिमासं वा ८९
प्रत्याहारमिदं मन्त्रं २९
प्रत्युत्पादाद् भवेत्तत्तु २९
प्रत्युवाच ततः सम्यक् २२
प्रभास्वरज्ञानकौशल्याद् १००
प्रयोगा अपि न बुध्यन्ते ९७
प्रयोगादींश्च तत्त्वेन ९७
प्रवेशयेत् सत्त्वहिताय ५८
प्रसन्नवदनो भूत्वा ६२
प्रसाधयन्ति भवने ८२
प्रहर्षन् वा जल्पन् वा ९०
प्राणभूतश्च सत्त्वानां २२
प्राणापानसमानाख्या २३
प्राप्य विद्याव्रतं कार्यं ९५
फले न पक्के कृतकर्मणश्च ५८
फलेन हेतुमामुद्रय ७७
बध्यति येन जडः परिमुच्यति ८०

बालवद्विचरेद्युक्त्या ९९
बुद्धसंभोगकायं च १०१
बुद्धैश्च बोधिसत्त्वैश्च १०१
बोधिचरीं चर बुद्धगुणेषु ७९
बोधिचित्तमहायोग १९
बोधिचित्तस्वभावोऽसौ २३
बोधिचित्तं भवेद्वायुः २२
बोधिचित्तात् तु तत्सर्वं २३
बोधिज्ञानाग्रसंप्राप्तं १०१
बोधितश्चोदितं चित्तं ६५
बोधिविभावनया विपरीत ८०
भक्तिभावनया गम्यं ७१
भवन्ति बोधिचित्तात्तु २३
भावनाबलसामर्थ्यात् ७१
भावनायोगसामर्थ्यात् ७२, ९७
भावनासक्तचित्तस्तु १००
भावयेद्विधिसंयोगं १८
भावयेद्विपुलां बोधिम् १००
भिक्षुभावे स्थिता येऽत्र ७८
भिन्ने तु तद्घटे पश्चाद् ६१
भूतान्तेन समायुक्तं २८
भूर्भुवःस्वरिदं सर्वं ७१
मत्वा सत्त्वेषु तत्त्वाधिगम १०४
मन्त्रनिध्यप्तिकायेन १९
मन्त्रमूर्तिप्रयोगेण १८
महाटवीप्रदेशेषु ९१
महाप्राणो ह्यनुत्पादो ३१
माङ्गल्योद्घुष्टशब्देन ६३
मात्राबिन्दुसमातीतम् ६५
मालासलिलसंबुद्धं ६३
माहेन्द्रमण्डलश्चैव २५
मुद्रामन्त्रविधानज्ञां ९४
यकारार्थेन यत्किञ्चित् २८
यत्र कायो न वाक्चित्तं ७२
यत्र न कायवाक्चित्तं ७२
यत्र यत्र स्थितो वायुः ४६
यत्र हि एकु महासुहनामा १८
यथा जिनेन्द्रो दशदिग् ५८
यथा दीपो घटान्तःस्थो ६१
यथाधिष्ठानतो वाऽपि ८९
यथारुतं ते गृह्णन्ति २२
यदि शून्यमिदं सर्वम् ५४
यद्यदिन्द्रियमार्गत्वं ९०
यावच्चालोकसंकेताः २३
यावन्न खिद्यते चित्तं १००
ये चित्तं सन्निवेशयन्ति ३८
येन मूढाः प्रबध्यन्ते ८१
येन येन हि भावेन १०३
ये वर्णाः पृष्ठतः प्रोक्ता २८
यो बुद्धा(द्ध्वा) वाञ्च्छयेत् सिद्धिं २८
रक्तवर्णमिदं वक्त्रं २५
रहस्ये परमे रम्ये ८२

रागधर्मनयो द्वेषो ९०
रागो द्वेषश्च मोहश्च ७९, ८०
रात्रिं दिवा स्वप्नमुपैति जन्तुं ५८
रूपशब्दादिभिर्मन्त्री ९, १६
रूपाद्याध्यात्मिकान् धर्मान् ९८
रेफादित्रितयेनैव २८
लोकोत्तरं कथं नाम २२
लोचनापदसंभोगैः ९४
लौकिकागममेवेदं २२
वज्र-आयतनान्येव ९
वज्रगीतिं च पूजां च ८२
वज्ररत्नपद्मादि तु ८३
वज्रसत्त्वं महाबिम्बं १०१
वज्रसत्त्वादहङ्कारं ९७
वज्रसत्त्वो महाराज ७७
वने भिक्षां भ्रमेन्नित्यं ९५
वातमूत्रपुरीषाणां १३
वामदक्षिणद्वन्द्वाश्च २५
वामाञ्च प्रसरो धातुः २५
वायुना सूक्ष्मरूपेण ४६
वायुः पञ्चात्मा दशसंज्ञकः २३
विचार्येदं समासेन १८
विचित्रप्रतिबिम्बां च ८३
विना यत्नेन सिध्यन्ति १००
विभाव्यमन्यथासिद्धिं ७७
विभूतिः श्रीविभो राजा ६६
विशती(ति) यः सर्वभावानां ६५
विश्वपद्मपटच्छन्नं ८२
विषत्वमुपयान्त्येव ८०
वृद्धभावे स्थिता ये तु ७८
वैरोचनमहाकायो २६
व्यापनं धारणं चैव १३
शब्दगन्धरसातीतं ७१
शान्तिकं पौष्टिकं चैव २३
शिष्ये कारुण्यमुत्पाद्य ६२
शुद्धतत्त्वार्थशुद्धार्थ ६६
शुद्धस्फटिकसंकाशं २५
शुभं दानादिकं कृत्वा ५१
शुभाशुभफलं त्यक्त्वा २३
शून्यताज्ञानसंभूतं ७१
शून्ये महत्त्वे सति यः प्रसुप्तः ५८
श्मशानादिष्वपि कार्यम् ९६
श्रावकयानमशिक्षथ भिक्षो ७९
श्रावकाणां महावीर ७८
श्रावयेत्समयं दिव्यं ६२
श्रीवज्रसत्त्वरूपास्तु ८२
षड्भिरुक्तं चतुरस्रै(स्त्रै)कान् २८
षण्मासेनैव तत्सर्वं ९५
षोडशाब्दिकां गृह्य ९४
स तदेव समाप्नोति २८
सत्त्वानां परिपाकाय १०३
सत्यद्वयस्याद्वयवत्प्रवेशो १०४

समानयति यो नित्यं १३
समास्वादयमानः ८९
सर्वकामोपभोगैस्तु ७९
सर्वक्लेशविनिर्मुक्तं ७१
सर्वदृष्टिप्रहाणाय २२
सर्वदेवीमहासिध्य(द्ध) ८९
सर्वदेव्युपभोगैस्तु ८९
सर्वधातुमयी(यो) वापि ८३
सर्वधातुं समुद्धृत्य २६
सर्वबुद्धमयः श्रीमान् ८२
सर्वबुद्धमहाकायः ८९
सर्वबुद्धमहाचित्तः ८९
सर्वबुद्धमहाज्ञानं ६२
सर्वबुद्धमहाराजा ८९
सर्वबुद्धसमायोग ८२
सर्वबुद्धसमायोगं योगे ८२
सर्वबुद्धान् स्वयं पश्येत् १००
सर्वलोकेश्वरपतिः ८९
सर्वसन्धिषु व्याप्तत्वाद् १३
सर्वाकारवरोपेतं ७१
सर्वाङ्गभावनातीतं ६५
सर्वाभिलापहेत्वग्र्यः ३१
सर्वालङ्कारसम्पूर्णां १०१
सर्वास्वपि क्रियाश्चै(स्वे)व २९
सर्वेन्द्रियप्रधानेदं २२
संक्षेपेण तु पञ्चधा १८
संप्रदायवशात् तत्र ७२
संप्रदाये यदावाप्तं ६३
संवित्तिमात्रकं ज्ञानम् ४५
संवृतिघ्राणसञ्चाराद् २५
संहारं च प्रकुर्वीत १७
साधयेत् प्रवरां सिद्धिं १९
साधयेद् वज्रसत्त्वाग्रं ७७
साधु साधु च गुह्येश २२
सानुस्वारं सदीर्घञ्च २८
सांकेतिकं त्रितत्त्वस्थं २९
सिद्ध्यते निर्विचारेण ९७
सिद्ध्येत् श्रीवज्रसत्त्वायुः ८९
सुखदुःखादिको धर्मो २३
सुगम्भीरगुणोदधि कारुणिका ७३
सुरीं नागीं महायक्षीम् ९५
सूक्ष्मरूपं लघुस्पर्शं १०१
सेवयन् कामगुणान् पञ्च ९४
सौशीर्यं नास्ति ते काये ७२
स्कन्धश्च धातुश्च तथैवेन्द्रियं च १७
स्कन्धे च धात्वायतनेन्द्रियादौ ५८
स्तब्धो न प्रसरो धातुः २५
स्त्रीपुन्नपुंसकास्ते च २८
स्थूलं शब्दमयं प्राहुः ७०
स्फुरज्ज्ञानोर्मिमालाभिः ७२
स्वकस्वका नित्यमधिष्ठितास्ते १७
स्वकाय एव हि घटो ६१

स्वप्नेन्द्रजालवद्विदध्वा	२८	स्वाधिदैवतयोगेन	८९
स्वप्ने प्रबुद्धे च न चान्यभेदः	५८	स्वाधिदैवत्प्रतिमुखैः	८३
स्वप्नोपमास्ते खलु सर्वधर्मा	५८	स्वाधिदैवद्य(त)योगेन	१९
स्वबिम्बं पश्यते स्वप्ने	१०१	हरितः श्यामसंकाशः	२५
स्वमुद्राचिह्नसुभगां	८३	हर्षचित्तं मुने सिद्धौ	९५
स्वयं समुच्चरेत्स्वामी	२३	हसन् जल्पन् क्वचित्तिष्ठन्	१००
स्वरव्यञ्जनवर्णांश्च	२८	हारार्द्धहाररचितं	८४
स्वरूपेणैव तत्कार्यं	९४	ह्रस्वं समस्तवाक्यं स्यान्	२८, ३०
स्वसंवेद्यं तु तत्तत्त्वं	७१		

***

उद्धृतगद्यानुक्रमणी

अकारो मुखं ---------------------------------- उत्पन्नत्वाद् ३१

अथ खलु दृढमति ------------------------- अभिमुखीभवति ४

अथ खलु महामतिः ----------------------------- न युगपत् ४

अथ ते सर्वतथागताः ------------------------- प्रवेशयामासुः १८

अथ महा[सत्त्वाः] ---------------------------- सम्भवन्तीति ४१

अथ वज्रपाणि ------------------------------- निश्चारयेत् ९४

अथापरां सर्वज्ञसिद्धि ----------------------------- गच्छति ९६

अपि तु गुह्यकाधिपते ------------------------- अनुगन्तव्यः ३३

अर्थप्रतिशरणेन ---------------------------------- यथा तथा २

अर्थप्रतिशरणेन --------------------------------अर्थान्वेषिणेति ३१

असङ्गज्ञानसमन्वागतो ------------------- सम्यक्संबुद्ध इति ४७

अस्मिन् शरीरविज्ञानं -------------------------- उपगच्छति ८

आदिशुद्धान्------------------------------ क्लेशानां भङ्ग इति ५४

उत्पादयन्तु ----------------------------- वाक्प्रव्याहारेण २०

कायाधारेण ---------------------------------- नोपलभ्यते ५५

कुतः पुनः ---------------------------------अभिनिविशत ३४

चतुर्विधं महामते ------------------------------ लक्षणमिति ३२

चित्तचैतसिक --------------------------- अन्वेषितव्य इति ५९

झटिति ज्ञानसंभूतं------------------------------ ज्वलन्तम् ४६

तत् किं मन्यसे--------------------------- विशुद्ध्यन्ते इति ५३

तत् किं मन्यसे----------------------------------- भगवन् ५९

तद्यथा काश्यप------------------------------- विनिपात्यते ८०

तद्यथापि नाम---------------------------------- गन्तव्या ५९

तद्यथा भद्रपाले-- गन्तव्यः ४५
तद्यथा महामते -----------------------------------प्रविशन्तीति ३०
तद्यथा महामते ---------------------------------------संदर्शयति ७
तस्मात् तर्हि--------------- ----------------वैवर्तिकत्वाञ्च ९६
धर्मा एव---------------------------------- प्रागेवाधर्मा इति ५२
निर्वाणं मायोपमं------------- ---------------------वदामि ७३
पुनरपरं महामते----------------------------------भवितव्यम् ३९
प्रतिपद्यस्व कुलपुत्र------------------------------समाधानेन ३८, ४७
प्राणापानोदान -----------------------------------निर्वाहश्चेति २४
बुद्धविषयानुगतास्ते -------------------------शिक्षितव्यमिति ७४
भगवानाह- अस्यैव ----------------------------------भवति ५६
भगवानाह- यद् भद्र---------------------------- पश्यति इति ३९
भगवानाह- शृणु गुह्यकाधिपते-------------सामान्यदुश्चरितमिति ४९
महाकरुणोपाय ----------------------------- मात्रानुसारिभिः ६८
यथा चित्तचर्याः ---------------------------- सम्भवो हीति ५१
यदुत प्राणापानो -------------------------------- प्रवाहश्चेति १५
यदुतादौ वा ------------------------------- संवृतिरूपमिति ४२
रागविशुद्धि-------------------------------- बोधिसत्त्वपदम् ६९
वज्रपाणिराह- कथं -------------------------------- तत्त्वम् ३
वज्रायतनान्येन------------------------------------ मण्डलः १५
शब्दरुतप्रवेशप्रतिष्ठो ---------------------------- उत्पद्येत ३६
सुभूतिराह- यदि------------------------------ प्रजायते इति ५२
स्वचित्तस्य-------------------------------------- बोधिः ३८

***

उद्धृतग्रन्थ-सूची

अध्यात्मसाधनोपायिका ७०

अनुत्तरसन्धि ४५, ५१

असाधारणगुह्यमहायोगतन्त्र ९६

आर्याष्टसाहस्रिका ७३

आर्याष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमिता ५२

उत्तरतन्त्र २५, २६

एकनयनिर्देशसूत्र ३२, ६१

किन्नरराजपरिपृच्छासूत्र ३४, ४७, ५१

खसमतन्त्र १८

गुह्यसमाज १७, १९, २०, २१, ७७, ८२

गुह्यसमाजमहायोगतन्त्र ९, १८, ५२, ५९, ६५, ६८, ९१, १०१

गुह्यसमाजयोगतन्त्र ७२

गुह्यसिद्धि ७०, ७७, ९७

गुह्येन्दुतिलक ९

चतुर्देवीपरिपृच्छामहायोगतन्त्र २

ज्ञानवज्रसमुच्चयमहायोगतन्त्र ४१, ५९

ज्ञानवज्रसमुच्चय(व्याख्यातन्त्र) ३८

तत्त्वसंग्रह २५, २६, ८१

तत्त्वसंग्रहतन्त्र ३८

तथागतकोषसूत्र ५३

देशनापाठ ६१, ७७

नामसङ्गीति ३१

परमाद्यमहायोगतन्त्र ६९, ७९, ८०, ८१

पिटकत्रयनय ३८

भद्रपालिपरिपृच्छा	८
भद्रपालिपरिपृच्छासूत्र	३९
महायानसूत्र	४१
महासन्ध्याव्याकरणमहायोगतन्त्र	९८
मूलतन्त्र	२५, २६, ४७, ८८, ९४
मूलसूत्र	७८, ७९, ९४
योगतन्त्र	५६, ६५
रत्नकूटसूत्र	८०
लङ्कावतारसूत्र	३, ७, ३०, ३१, ३९, ६८, १०३
वज्रच्छेदिका	५२
वज्रमण्डालङ्कारतन्त्र	३१
वज्रमाला	११
वज्रमालायोगतन्त्र	२६
वज्रमुखीमहायोगतन्त्र	१५, २४
वज्रोष्णीषतन्त्र	३, ४९
विज्ञानसङ्क्रान्तिसूत्र	४५, ५६
विनयामोघसिद्धिमहातन्त्र	८०
वैरोचनाभिसम्बोधिचर्यातन्त्र	३३, ३८, ७८
वैरोचनाभिसम्बोधितन्त्र	५७
व्याख्यातन्त्र	२५, २६, २७
शूरङ्गमसूत्र	४, ७४
श्रीसमाजमहायोगतन्त्र	४१
सद्भावतन्त्र	१
समाजोत्तर	२२, ४४
समाधिराजसूत्र	७३, ९६
सर्वकर्मावरणविशुद्धिसूत्र	५३, ५९

सर्वकल्पसमुच्चय ७३
सर्वदेवसमागमतन्त्र ९५, ९९
सर्वधर्माप्रवृत्तिनिर्देशसूत्र ३६
सर्वबुद्धसमागमयोगडाकिनीजालसंवरनय २४
सर्वबुद्धसमागमयोगडाकिनीजालसंवरमहायोगतन्त्र १९, ८२
सर्वरहस्यतन्त्र १८, ७७
संध्याव्याकरणमहायोगतन्त्र २७
संध्याव्याकरणमहाव्याख्यातन्त्र २२
संवर ८१, ८९
सुवर्णप्रभाससूत्र १०३

***

ग्रन्थकार एवं मत-मतान्तर सूची

आह-	७, १७, ४६
उत्तम् (यो० सं०)	१०३
उच्यते	१०३
कम्बलाचार्यपाद	७०
नागार्जुनपाद	२
भगवता	१, १८, १९, २६, ३०, ३१, ३६, ३८, ३९, ४४, ४७, ५७, ६९, ७८
भगवता (सूत्रक)	२
भट्टारकपाद	५४, ५५, ७२
वचन	७६
सन्ध्यावचन	४६
सूत्रक	८०

* * *

विशिष्टशब्दानुक्रमणी

अकार ३१
अकुशल ४७, ४९
अकुशलकर्मकथा ५०
अकुशलकर्मपथ ४९, ५०
अकृतक ६१
अक्षणवेध ५
अक्षय ६४
अक्षयपुण्यज्ञानसंभार ६५
अक्षर ३०-३२
अक्षरतत्त्व ३०
अक्षरत्रय २१
अक्षोभ्य ९-१८, २४, २६, ९१, ९८
अक्षोभ्यसमाधि १०
अगरु ९३
अग्रपुरुष ७४
अङ्गविकला ९२
अग्निमण्डल २६
अचल ६४
अचलसंज्ञा १०
अचिन्त्य ६४
अचिन्त्यज्ञान ७
अच्छटाशब्द ६७
अण्डज ४४
आततुष्ट ४४
अतितृष्णा ४३
अतिभीत ४३
अतियोग ८९
अतिविराग ४३
अतिवेदना ४३
अतिशून्य ४२
अतिशून्यमात्र ४५
अतिशून्यलक्षण ४३
अतिशोक ४३
अतिस्नेह ४३
अतीन्द्रिय ६४
अत्यन्तनिष्प्रपञ्चचर्या ९६, ९९
अत्यन्तनिष्प्रपञ्चता ८१, ८९
अदृष्टसत्य ४१
अद्वय ७३
अद्वयज्ञान ७६
अद्वैधीकारपरिज्ञान ७६
अधिमोक्ष ८६
अधिष्ठानयोग २०
अध्यात्मकुण्ड ८५
अध्यात्मपरायण १
अध्यात्ममैत्रतत्त्व २९

अध्यात्मसाधनोपायिका	७०	अनिमित्त	६४
अध्यात्मा	७३	अनिमित्तसमाधि	७७
अध्यात्माभिसम्बोधि	६३, ९८	अनिरोध	२९, ६४
अध्येषणविधि	६२	अनुतापचित्त	३६
अनक्षर	१, ३, ६४	अनुत्तर	६४
अनन्त	६४, ६५	अनुत्तरज्ञान	६४
अनन्तर्द्धिकरी	६५	अनुत्तरमहासुख	८१
अनभिभूत	३	अनुत्तरसन्धि	४५, ५१
अनभिलाप्य	६४	अनुत्तरसम्यक्संबोधि	५२
अनभिसंस्कृत	६४	अनुत्पन्न	६४
अनवसान	६४	अनुपलम्भ	६४
अनात्मक	३	अनुप्राप्तस्वकार्थ	७४
अनात्मा	७३	अनुभवलक्षण	४२
अनादि	६४	अनुयोग	८९
अनादिकालविकल्पवाक्	३२	अन्धकारसन्निभ	४५
अनादिक्लेशवासना	७७	अन्यचित्त	५९
अनादिनिधनाभास	६१	अपद	१६
अनादिप्राकृताहङ्कार	५८	अपदसंज्ञा	१०
अनाभोग	५, ६	अपरगोदानीय	११
अनाभोगफल	७७	अपरात्मा	७३
अनालम्बन	६४	अपहृतभार	७४
अनालय	६४	अपान	१२, १३, १५, २३, २४
अनावरण	६४	अपायहेतुक	८०
अनासक्त	३५	अप्रतर्क्य	६४
अनाहत	२५	अप्रतिष्ठितनिर्वाण	८६
अनित्य	७३	अब्धातु	११, १३, १७

अब्धातुसमूह १२
अभिचारक २३
अभिचारसिद्धि ९७
अभिज्ञा ६९
अभिज्ञाप्राप्त ७४
अभिलाप ३०
अभिषेक ६३
अभिषेकक्रम ६३
अभिसमय १०३
अभिसम्बोधि ६२
अभिसम्बोधिक्रम ६३, ७०
अमध्य ६४
अमिताभ ९-११, १३-१६, २४, २६
अमिताभसमाधि १०
अमूर्ति ६५
अमृत ८०
अमेध्यकुणप ३९
अमोघसिद्धि ९-१६, १८,२४,२६,९९
अमोघसिद्धिसमाधि १०
अरज ६५
अरलि ९२, ९९
अर्चादिमन्त्र २७
अर्थप्रतिशरण २
अर्हन् ४७, ७४
अलक्षण ६४
अलज्जा ४४
अवाच्य १, ३, ६४
अविज्ञप्ति ९, ३५
अविज्ञेय ६४
अवितथता ६५
अविद्या ४२, ४६, ५०, ६३, ९८
अविसंवादक २
अवृद्धिक ६४
अवैवर्तिक ६८, ६९
अव्याकृत ४७
अशीतिबिम्बप्रकृति ४४
अशीतिविधक्षण ४४
अशीतिविधचित्त ४४
अशेषगन्ध १५
अशैक्ष ६
अष्टमी भूमि ६८
अष्टविज्ञान ७८
अष्टस्तम्भ ८३
अष्टानवतिक्लेश ४४
असङ्गकोटि ६४
असङ्गज्ञान ४७
असत्य ४४
असमाहितयोग ९०
असंख्य ६४
असंस्कृत २, ५१
असाधारणगुह्यमहायोगतन्त्र ९६
असुरी ९५

अस्थानयोग ३
अस्फालक ४३
अहङ्कार ५०, ५२-५४
अहेतुकदोष ७६
आकाश १३
आकाशगर्भ १४
आकाशपुरुष ७४
आगमप्रत्यय ४४
आगमाधिगम ५६
आचार्य ६२, ६३
आजानेय ७४
आत्मतत्त्व २
आत्मा १९, ७३
आदर्शज्ञान १६
आदिकर्मिक ४९
आदिकर्मिकसन्धान ७
आदिकर्मिकसमाधि ५
आधाराधेय २५
आभासत्रय ४२, ६९
आभासत्रयहेतुक ५१
आभासलक्षण ४२
आभासविशुद्धि ६८
आभासविशुद्धिपद ६१
आभासहेतु ४१
आयतन २१, ५५, ५८
आरल्लिविस्तर ८१
आर्याष्टसाहस्रिका ७३
आर्याष्टसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता ५२
आलस्य ४४
आलिकालि ६,२१,२७,३०,८६,९३
आलिङ्गन ४४, ९३, ९५
आलिङ्गनस्पर्श १६
आलेख्य ४
आलोक ४२, ४६, ६३
आलोकत्रय ५६
आलोकत्रयाभास ४६
आलोकद्वय ५६
आलोकलक्षण ४२
आलोकस्वभाव ६४
आलोकाभास ४२, ४६, ६३
आलोकाभासलक्षण ४२
आलोकाभासोदय ७०
आलोकोपलब्ध ४३, ४६
आलोकोपलब्धज्ञान ४४, ४५
आलोकोपलब्धि ४२
आलोकोपलब्ध्युदय ७०
आस्फानकसमाधि ६७
इन्द्रजाल ५९
इन्द्रभूति ८८
इन्द्रायुध ५७, ९५
इन्द्रिय १७, ५८
इन्द्रियव्यापार २४

इन्द्रधनु ५७
इष्वस्त्रशिक्षक ५
इष्वस्त्रान्तेवासी ५
ईक्षित ९५
उच्छेद ७३, १०२
उच्छ्वास २४
उत्क्षिप्त ७४
उत्तमसाहस ४४
उत्तरकुरु ११
उत्तरतन्त्र २५, २६
उत्तरवात १३
उत्पत्तिक्रम २, २१, ५५, ५६, ६८
उत्पादक्रियायोग ६९
उत्साह ४४
उदकचन्द्रोपम ५९
उदरोष्ण १२
उदान १२, १३, १५, २३, २४
उद्देशपद ४१
उद्वाह १५, २४
उन्मत्तव्रत ९९
उपादान ४३
उपाय ७, ६९
उपायज्ञान ४४
उरगसारचन्दन ९३
ऊर्ध्ववात १३
एकनय ६४
एकनयनिर्देशसूत्र ३२, ६१
एकस्मृतिसमाधि ५
एकासनस्थस्पर्श १६
एवंकार ३२
कटक ९३
कम्बलाचार्यपाद ७०
करण ४४
करुणा ६९
कर्पूर ९३
कर्म ४९
कर्मकुलीन १७
कर्मनाथ २५
कर्मपर्यङ्क ८६
कर्मवादी ४७
कर्मविशुद्धपरिज्ञान ४९
कर्मविशुद्धि ४९, ६५
कलश ६३
कलि २४
कलियुग १
कल्प २, ३०
कल्पनाद्वय ४१
कल्पितयोग ५
कल्याणमित्र ३७, ३८, ५२, ६८
कल्याणमित्रपरिवर्त ५२
कामधात्वीश्वर ३३
कामरसाभास ७०

कामलताकार ८४
काय ५७, १०२
कायक्लमथ ५७
कायक्लेश ९२
कायच्छोमा ८७
कायच्छोमापरिवर्तक्रम ८८
कायदुश्चरित ४९
कायप्रभेददुश्चरित ४९
कायमण्डल ९४, ९८
कायवज्र १८, १९, ८६
कायवज्रसमाधि ५, १९
कायवाक्चित्त ९
कायवाक्चित्तयोग १९
कायवाक्चित्तरहित ३
कायवाक्चित्तलक्षण १८
कायवाक्चित्तवज्र ९४
कायवाक्चित्तविवेक २१, ६८
कायवाक्चित्तसिद्धि १०१
कायवाक्चित्तावरण १६
कायविज्ञान ११
कायविवेक ५, ६, ८, १९, २१, ५५
कायव्यापार २४
कायसंस्कार १०
कायायतन १४, १६
कायायतनसमूह १४
कायेन्द्रिय १४
कारुण्य ४३
काव्यनाटक ३०
काश्यप ८०
काष्ठोद्भवाग्नि १२
किङ्कर ९६
किङ्करसिद्धि ९७
किन्नरराजपरिपृच्छासूत्र ३४,४७,५१
किन्नराधिपति ३४
कुङ्कुम ९३
कुचग्रहण ९३
कुटिलचित्त ५०
कुण्ड ९२
कुत्सितदृष्टिनिग्रह ८६
कुम्भकार ४
कुलत्रय १९
कुलशत १७
कुल(शतविध) ९, २१
कुशल ४७, ४९
कुशलकर्मपथ ४९, ५०, ५२
कूर्पर ९३
कूर्म २३
कृकर २३
कृतकरणीय ७४
कृतकृत्य ७४
कृत(युग) १
कृत्यानुष्ठानज्ञान १६

केयूर ९३
कोटव २४
कोटा २४
कोटाक्ष २४
कोटाभ २४
कोटीरक २४
कोल २४
कोलव २४
कोलाक्ष २४
कोलाभ २४
कोलोपम १
कोषकारकीट ४७
कौकृत्य ४९
कौकृत्यस्त्यानमिद्धादि ७७
कौटिल्य ४४
क्रमतत्त्वाधिगम ७६
क्रमद्वय १०३
क्रमशीर्ष ८४
क्रियामार्गारूढ ७८
क्लेशकर्मप्रबन्ध ४७
क्लेशदृष्टिनिग्रह ८६
क्लेशवासनाप्रबन्ध ६९
क्लेशविशुद्धि ६५
क्षत्रिय ७४
क्षर ३२
क्षान्ति ६१, ७४
क्षितिगर्भ १३
क्षीणास्रव ७४
क्षुत् ४३, ९८
क्षुद्रसिद्धि ९७
क्षेमप्राप्त ७४
खद्योतकाकार ४६, ७०
खधातु १७
खसम १, ३, ६१, ६४, ९०
खसमतन्त्र १८
खसमस्वभाव २६, ३२, ५६
खसमा ७३
खसमाकार ९०
खेद ४४
गङ्गानदीबालुकोपम ५९
गणपूजक ८८
गणमण्डल ६२, ८३, ८८
गतिपञ्चक ५१
गन्धक्रिया १५
गन्ध(त्रय) १५
गन्धर्वनगर ५९
गन्धवज्र ९३
गन्धविषय १६
गम्भीराधिमुक्तिक ७८
गरज्वरापनयन ८५
गाथा ६६
गाथाद्वय ५६

गीत ४
गुरु ७६
गुरुकृपा १०३
गुरुदुश्चरित ५०
गुरुपर्वक्रम ५५, ५७, ६३
गुरुपादप्रसाद ६१
गुरुपादोपदेश ५७
गुरुप्रसाद १०४
गुरुवक्त्र ६१, ६७
गुरुसामान्य ५०
गुरूपदेश ३
गुह्यकाधिपति ३, ३३, ४९, ५०
गुह्यपूजा ९४
गुह्यवज्र १०१
गुह्यसन्ध्या २९
गुह्यसमाज १७, १९-२१, ७७, ८२
गुह्यसमाजमहायोगतन्त्र ९, १८, ५२, ५९, ६५, ६८, ९१, १०१
गुह्यसमाजयोगतन्त्र ७२
गुह्यसिद्धि ६५, ७०, ७७, ९७
गुह्येन्दुतिलक ९
गुह्येश २२
गुह्योत्तरपूजा ६२
गूथावस्करभक्ष ३९
गोकिल ५
ग्राह्यग्राहकविकल्पगोचर ३९
घटीयन्त्रन्याय ४८
घण्टापताकचामरादि ८४
घनाकार ८५
घ्राणविज्ञान ११
घ्राणायतन १४
घ्राणायातनसमूह १४
घ्राणेन्द्रिय १४
चक्रवर्ती ७८, ८५
चक्षुरायतन १४, १५
चक्षुरायतनसमूह १३
चक्षुरिन्द्रिय १३
चक्षुर्विज्ञान १०
चण्डाली ९२
चतुरशीतिसहस्रधर्मस्कन्ध ६६
चतुरार्यसत्य ७८
चतुर्देवी २४
चतुर्देवीपरिपृच्छामहायोगतन्त्र २
चतुर्द्वीप ११
चतुर्धातु ११
चतुर्ब्रह्मविहार ३, ९१
चतुर्मण्डल २४
चतुर्मण्डलक्रम २१
चतुर्महाभूत १३
चतुर्योग २९
चतुर्विधन्याय ७८
चतुष्पद १६

चतुष्पदसंज्ञा १०
चतुस्तोरण ८३
चतुःशून्य ७०
चतुःसत्त्व(सन्ध्या) ९४
चन्द्रप्रभकुमार ७३
चन्द्रमण्डल ४२
चन्द्ररश्मि ६४
चन्द्रालोकनिभ ४४
चरमभविकबोधिसत्त्वावस्था ७८
चर्यानय ७८
चर्यानययुक्त ७८
चर्याविशुद्धि ७६, ७७
चामर ९३
चित्त ४१, ४२, ४६, ६५, ९८
चित्तचरित ४७
चित्तचर्या ५१
चित्तचैतसिकमहायोग ५९
चित्तचैतसिकाऽविद्यादुश्चरित ५०
चित्तदुश्चरित ४९, ५०
चित्तधारा ४७
चित्तप्रकृति ३५, ५१
चित्तप्रकृतिदुश्चरित ५०
चित्तप्रत्यवेक्षण ३८
चित्तप्रभेददुश्चरित ४९
चित्तमनोविज्ञान ६९
चित्तमात्र ५४, ५६
चित्तमात्रता १६
चित्तरत्न १००
चित्तवज्र ४७, ५६
चित्तवज्रसमाधि ६
चित्तविवेक ६, ३७, ३८, ५०, ५२, ५५
चित्तसंस्कार १०
चित्तोद्भूतप्रकृतिदुश्चरित ५०
चिह्नमुद्रा ८३
चुम्बन ४४, ९३
चुम्बनस्पर्श १६
चूषण ४४, ९३
चूषणस्पर्श १६
चैतसिक ४२, ४३, ५०, ९८
चैत्य ९२
चोदन ४४
छायामायोपम ७१
जगद्गुरु २२, २८
जङ्गम ३
जन्मविशुद्धि ६५
जप २९
जम्बूद्वीप ११
जिनगोचरविषय ७
जिनमुद्रा ६३
जिनेन्द्र ५८
जिह्वायतन १४

जिह्वायतनसमूह १४
जिह्वाविज्ञान ११
जिह्वेन्द्रिय १४
ज्ञानक्रम ६
ज्ञानचक्षु ६४, ७१
ज्ञानज्ञेयसमापत्ति ९३
ज्ञानत्रय १७, ५५
ज्ञानद्वय ५८
ज्ञानभूमि ९३
ज्ञानमुद्रा ८१, ९७
ज्ञानमूर्ति ७४
ज्ञानवज्रसमुच्चयमहायोगतन्त्र ४१, ५९
ज्ञानवज्रसमुच्चयादिव्याख्यातन्त्र ३८
ज्ञानवाहिनी ६५
ज्ञानोर्मिमाला ७२
झटितिज्ञान ४६
डाकिनी ८७
तडागोदक १२
तत्त्व १-३, ६१, ९९
तत्त्वज्ञ १०३
तत्त्वज्ञान १, २, ७८
तत्त्वभावना ५७
तत्त्ववित् ९७
तत्त्वसंग्रह २५, २६
तत्त्वसंग्रहतन्त्र ३८
तत्त्वसंग्रहादितन्त्र ८१
तथता ६५, ९८
तथतामण्डल ९८
तथागत ७, १७, २३, ४७, ६२, ९२
तथागतकाय ६९, ७३
तथागतकुलीन १७
तथागतकोषसूत्र ५३
तथागतपर्यङ्क ८६
तथागतव्यूह ९८
तथागतसन्ध्यायवचन ४२, ४३
तथागतसम्प्रदाय ६८
तथागताश्वास ८१
तन्त्र २, ३०, ५८
तन्त्रोक्तविधान ६२, १०२
ताडन ९३
तामरसाकार ६४
तारा ९, १२, १३
तारासमाधि १२
तार्किक २, ३८
तिर्यग्योनि ५३
तीर्थपारग ७४
तुरगाकार ८५
तुषितभुवन ७८
तुष्ट ४४
तूष्णी ४४
तृषा ९८

तृष्णा ४३
तेजस् १३
तेजोधातु ११, १२, १७
तेजोधातुसमूह १२
त्रयस्त्रिंशत्क्षण ४३
त्रिकालात्मक ७४
त्रितत्त्व २३, २९
त्रिदशालय ५७
त्रिधातुक २८, ३९
त्रिनयात्मक ७४
त्रिपिटक ३०
त्रिपुरदेवगृह ८३
त्रिभुवन ८५
त्रिमण्डलात्मक ७४
त्रिलोकात्मक ७४
त्रिवज्र १९
त्रिवज्रज्ञान ९५
त्रिवज्रसत्त्वाक्षर १८
त्रिविधचर्या ८१, १०१, १०२
त्रिविध विज्ञान ४३
त्रिशिखाग्नि ८५
त्रिस्वभाव २८, ४२
त्रेता(युग) १
त्रैधातुकमहासत्त्व १०१
त्रैधातुकविशुद्धि ६५
त्रैधातुकाभिषेक ६३
त्रैलोक्याकार ८४
त्र्यक्षर २१
त्र्यक्षराधार २५
त्र्यक्षरोत्पत्ति २७
त्र्यध्वज्ञान २८
त्र्यध्वातीत २९
दक्षिणवात १३
दक्षिणसंज्ञा ४३
दण्ड ५
दण्डकत्राटकादि ३६
दर्पण ६३
दर्पणप्रतिबिम्ब ५९
दशदिग्लोकधातु
दशन ९३
दशबाल ५
दशभूमीश्वर ५५
दशमी भूमि ६८
दश वायु २५
दातृत्व ४४
दान १, ७४
दावाग्नि १२
दिव्यचक्षु ६५
दिव्यश्रोत(त्र) ६५
दिव्योपाय ९७
दुर्गति ५०
दुर्गतिगमन ५३

दुर्विभाव्य ६४
दुश्चरितचित्त ५०
दुष्करचर्या ७८, ७९
दुष्ट ४४
दुःखवेदना १०
दुःखस्कन्ध ४७
दुःस्पर्श ६४
दृढमतिबोधिसत्त्व ४
दृष्टिविशुद्धि ६५
देवता १९, ५५
देवतातत्त्व २, ५५
देवतानिष्पत्ति ५५, ५६
देवतामूर्ति २७
देवतायोग २१
देवताविग्रह ५६
देवताविन्यास २१
देवदत्त २३
देवीचक्र ८६
देशनापाठ २, ४९, ५५, ६१, ७७
दोल ९३
दौष्ठुल्यवासना ७
दौष्ठुल्यविकल्पाभिनिवेशवाक् ३२
द्वन्द्व ९५
द्वय ७३
द्वयेन्द्रियसमापत्ति ९५
द्वात्रिंशन्महापुरुषलक्षण ५७
द्वादशदृष्टान्त ५५
द्वादशधूतगुण ७८
द्वादशमायादृष्टान्त ५९, ६१
द्वादशाङ्गाख्य २२
द्वादशाङ्गप्रतीत्यसमुत्पादचक्र ३९
द्वापर(युग) १
द्वारनिर्यूहसन्धि ८४
द्वासप्ततिनाडीसहस्र ८६
द्वितीयक्रम ४३
द्वितीयाचार्य ६६
द्विपद १६
द्विपदसंज्ञा १०
द्वेष ४२, ७९
द्वेषविशुद्धिपद ७०
धनञ्जय २३
धन्धत्व ४४
धर्म १०३
धर्मकाय ६४
धर्मगञ्ज १०२
धर्मचक्र १०२
धर्मचक्राकार ८४
धर्मतत्त्व २
धर्मदेशना ९३
धर्मधर्मता ३३
धर्मधातु १५, ३९, ४८, ६४
धर्मनैरात्म्य ६६, ७८

धर्मस्कन्ध	२	नाडीत्रय	९३
धर्मोदयमहारल्लिक्रीडा	८७	नाडीसंचोदन	८६
धातु	९, १६, १७, २१, ५५, ५८	नाभ्युष्ण	१२
धातु(चार)	८, १७	नामसङ्गीति	३१
धातुनिर्माणकल्प	५८	निजमुद्रा	९१
धातुमण्डल	२६	नित्य	७३
धातुसमवाय	८	निराकार	७३
धारणकर्मा	११	निराकारस्वरूप	४३, ४५
धारणापद	४३	निरात्मक	६४
धूपकटच्छुक	८५	निराभास	६४
धूर्तत्व	४४	निराभासगोचर	७
धैर्य	४४	निराभोग	९९
ध्यान	६४, ६६, ७४	निरालम्बकतत्त्व	४३
ध्यानभूत	६४	निरुपलम्भदेवतातत्त्व	५६
ध्यानयोग	१००	निरुपादान	४४
ध्यानवज्र	१०२	निर्जीव	६४
नटी	९२	निर्झरोदक	१२
नद्युदक	१२	निर्देशमेलापक	४१
नवयान	५	निर्मल	६४
नपुंसकपद	४२	निर्लेप	६४
नरक	५१, ५३	निर्वाण	६४, ७३, ९९
नरकपात	४९	निर्वाणधातु	७०
नवनाट्यरस	८१	निर्वाणसुखकांक्षा	९६
नाग	२३	निर्वाह	१५, १६, २४
नागार्जुनपाद	२	निर्विकल्प	७, ९९, १००
नागी	९५	निर्विकल्पसिद्धि	९७

निश्चय ४४
निषद्यादि २९
निष्किञ्चन ७४
निष्पन्नक्रम ७, ३२, ६८, ७८, १०२
निष्पन्नक्रमसमाधि २, ३, ६, ७, २१
निष्पुद्गल ६४
निष्प्रपञ्च ७४
निष्प्रपञ्चचर्या ९१, ९२
निष्प्रपञ्चता ८१, ८९
निष्प्रपञ्चताचर्या ९८
निःक्लेश ७४
निःशुभम् ४३
निःसत्त्व ६४
निःस्वभाव १, २५, २९, ६४
निःस्वभावपद ९७
नूपुर ९३
नृत्याकार ८५
नेयनीतार्थ २१
नेयार्थ २
नैरात्म्यपद ९७
पक्षिणी ८४
पञ्चकामगुण ५८, ६०, ९२, १०१
पञ्चकामोपभोग ११
पञ्चकुल १८
पञ्चक्रम २, ७
पञ्चगति ४८
पञ्चगुह्य ९२
पञ्चगुह्यमहातत्त्वात्मक १७
पञ्चज्ञान ८, १६, २२, २४
पञ्चतथागत ९-१३, १७, २४, ९२
पञ्चतनु ११
पञ्चनासाग्र २२
पञ्चबुद्ध ९, ११
पञ्चबुद्धकुल २५
पञ्चबुद्धात्मक १८
पञ्चभूत २२
पञ्चरश्मि २४, ५६
पञ्चरश्मिपुञ्ज ६४
पञ्चवर्ण २१, २२
पञ्चवाक् ८८
पञ्चवायु ११, २४, २५
पञ्चविषय ८, ४१
पञ्चस्कन्ध ९, ११, ४१
पञ्चहृदय ११
पञ्चाकार ११, १३, १८
पञ्चामृत ८७
पञ्चेन्द्रियनिग्रह ७९
पट्टस्रग्दाम ८४
पद्म ४२
पद्मकुलीन १७
पद्मदल १६
पद्मनर्तेश्वर ८६

पद्मनर्तेश्वरसाधन ८८
पद्मनाथ २५
पद्मपर्यङ्क ८६
परचित्तज्ञान ६५
परतन्त्र ४२
परतीर्थिक ४०
परनिर्मितवशवर्ति ३३
परमनिर्वाण ७१
परमपारमिताप्राप्त ७४
परममहासुख ७८
परममहासुखपद ९३
परमाक्षर ३१
परमात्मा ९७
परमाद्य ७०
परमाद्यमहायोगतन्त्र ६९, ७९, ८०
परमानन्दमूर्ति ७०
परमानन्दसुख ९५
परमार्थमण्डल ४८
परमार्थसत्य ३, ६, ५४, ५६, ५७, ६१, ६४, ६६, ६८, ६९, ७६, ९१, ९६, ९८, १०३
परमार्थावतारण ७
परमाश्व ८५, ८७
परमाश्वसाधन ८८
परलोक ४९, ५०, १०२
परिकल्पित ४२
परिक्षीणभव ७४
परिघमर्जितकण्टक ७४
परिनिर्वाण १०३
परिनिष्पन्न ४२, ४३, ९५
परिनिष्पन्नवज्रकाय ७३
पर्यङ्कासनबन्ध ८१
पश्चिमवात १३
पाण्डरवासिनी १२
पाण्डरवासिनीसमाधि १२
पाण्डरा ९, १३
पाण्डरादि २९
पाण्याप्ति ९५
पातालसिद्धि ९७
पापविशुद्धि ६५
पारमार्थिक २९
पारमार्थिकबोधिचित्त ४२
पारमिताविशुद्धि ६५
पारुष्यवचन ५०
पाषाणोद्भवाग्नि १२
पिटकत्रय ३८
पिण्डग्रहानुभेदसमाधि ६
पिण्डग्राह ६४
पुण्यविशुद्धि ६५
पुद्गल ३६
पुनर्भव ६९
पुरुष ७४

पुरुषदमक ७४
पुरुषदम्य ७४
पुरुषनाग ७४
पुरुषरूप ४३
पुरुषवीर ७४
पुरुषशूर ७४
पुरुषसारथि ७४
पुरषसिंह ७४
पुरुषोत्तम ७४
पुलक ९३
पूजोपकरण ८३
पूर्वकर्मविपाक ५१
पूर्वनिवासानुस्मरणकरी ६५
पूर्ववात १३
पूर्वविदेह ११
पृथिवी १३
पृथिवीधातु ११, १७
पृथिवीधातुसमूह ११
पौष्टिक २३
पौष्टिकसिद्धि ९७
प्रकृताहङ्कार ८४, ९१
प्रकृतिजाप २९
प्रकृतिपरिनिर्वाण ३६
प्रकृतिप्रभास्वर ६
प्रकृतिप्रभास्वरात्मक ७३
प्रकृतिस्फरण ४३
प्रकृत्याभास ३८, ४६, ४७, ४९-५१, ५५, ९७, ९८
प्रकृत्याभासक्रम ६
प्रकृत्याभासपरिज्ञान ५५
प्रकृत्याभासप्रचार ४१
प्रज्ञा ७४
प्रज्ञाज्ञान ४३, ४४
प्रज्ञाज्ञानाभिषेक ६६
प्रज्ञाज्ञानोदय ७०
प्रज्ञापारमिता ६५, ८६
प्रज्ञापारमिताविहार ६९
प्रज्ञाबल ८१
प्रज्ञास्वभाव ४२
प्रज्ञोपाय ४१, ५६, ८०, ९३
प्रज्ञोपायसमापत्ति ८६
प्रज्ञोपायात्मक ७१, ७४
प्रज्ञोपायैकयोग २३
प्रणिधान ४७
प्रणिधानस्वभाव ३६
प्रणिधायक ४७
प्रणिधेय ४७
प्रतिगीतक ८७
प्रतिघचित्त ३६
प्रतिनाटक ८७
प्रतिपूजा ८७
प्रतिबिम्बोपम ५६

प्रतिबिम्बोपमदेवतारूप ५८
प्रतिभासोपम ५९
प्रतिमुद्रा ८७
प्रतिश्रुत्क ५९
प्रतिश्रुत्कोपम ५५
प्रतिसन्धि ४८
प्रतीत्यसमुत्पाद ३४
प्रत्यवेक्षण ४३
प्रत्यवेक्षणाज्ञान १६
प्रत्यात्मवेद्य २९, ५८, ६१, ८६, ९८
प्रत्यात्मवेद्यलक्षण ६३
प्रत्यात्मवेद्यस्वभाव ४२
प्रत्याहार २९
प्रत्येकबुद्ध ९२
प्रथमशून्य ४२
प्रथमस्त्यान ५०
प्रदीपाकार ८४
प्रपञ्चता ८१, ९८
प्रपञ्चाभिनिवेशदौष्ठुल्य ३२
प्रभास्वर ३५, ५१, ५३, ६४, ६७, ९८, ९९, १०३
प्रभास्वरज्ञान १००
प्रभास्वरपद ७०
प्रभास्वरोद्भवविज्ञान ४१
प्रवचनिक ३०
प्रवाह १५, १६, २४
प्रवेशस्थितिव्युत्थानक्रम २५, २७
प्रश्वास २४
प्राकृताहङ्कार ८, ११
प्राण १२, १५, २३, २४
प्राणातिपात ५०
प्राणायाम ६, १२, २१, २२, ४३
प्राणायामात्मक २१
प्रामोद्य ४४
फलक ५
फलविपाक ४८, ५८
फलविशुद्धि ६५
बल ४४, ६९
बहिर्धा ७३
बहुपद १६
बहुपदसंज्ञा १०
बाल ५
बाह्यमन्त्र २७
बाह्यशास्त्र १
बाह्याभिसम्बोधि ६३
बुद्ध १९, ५९, ९५, ९९, १०१, १०३
बुद्धकाय ६८
बुद्धक्षेत्र १५, ५९, ६०, ८८
बुद्धगुण ७९
बुद्धजननी ९९
बुद्धज्ञान ३१, ६४

बुद्धत्व २, ७२
बुद्धत्वकाम ३८
बुद्धनाट्य ८७
बुद्धपुत्र ७४
बुद्धबोधि ९४
बुद्धबोधिसत्त्व १८
बुद्धबोध्याकार ८४
बुद्धयान ५
बुद्धविषय ४९
बुद्धसंभोगकाय १०१
बुद्धसंवर ९०
बुद्धसुप्रभ १०१
बुद्बुद ५९
बोधि १८, ३८, ६२, ६५, ७८, ७९, १००
बोधिचरी ७९
बोधिचित्त १९, २२, २३, २९, ४३, ५९, ६३, ६६
बोधिचित्तक २२
बोधिज्ञानाग्र १०१
बोधिमूल ६७
बोधिविभावना ८०
बोधिसत्त्व १९, ३०, ३१, ३६, ५६, ५९, ७४, ९६, १०१
बोधिसत्त्वपद ६९
बोधिसत्त्वाग्र्यमण्डल ९
बोधिसत्त्वानुत्तरमण्डल १५
बोधिहेतुक ८०
ब्राह्मण ७४
भक्तिभावना ७१
भगवान् विश्व २२
भट्टारकपाद ५४, ५५, ७२
भद्रघटसिद्धि ९७
भद्रपालि ४०, ४५
भद्रपालिपरिपृच्छा ८
भद्रपालिपरिपृच्छासूत्र ३९
भद्ररूपिणी ८७
भवचक्र ४९
भविष्यबुद्ध १०३
भस्मप्रलयवेताल्याकार ८५
भावना ७६
भावनायोग ७२, ९७
भावनाविशुद्धि ७६
भाव्यभावक ७६
भिक्षु ७४
भिक्षुभाव ७८
भीत ४३
भुसुकुचर्या ९९
भूत २
भूतकोटि ६, ६२, ६४, ९२
भूतदर्शन १०२
भूतदर्शी १०२

भूतनयात्मकसमाधि २, ३, ५४, ८५
भूमिक्रमसमाधि ६९
भूमिपारमितादिचर्या ७८
भूर्भुवःस्वः ७१
भूर्भुवःस्वःसंस्कार १०
भ्रान्ति ४४
मण्डल १७, ६५, ९२
मण्डलाचार्य ८७
मण्डलाधिपति ९१
मदयन्तिका(विद्या) ३३
मद्य ८७
मध्यमतुष्ट ४४
मध्यमतृष्णा ४३
मध्यमभीत ४३
मध्यमराग ४४
मध्यमविराग ४३
मध्यमशोक ४३
मध्यमसाहस ४४
मध्यमस्नेह ४३
मध्यराग १६, ४२, ४५, ९८
मन ४२, ४४
मन-इन्द्रिय १४
मनोजवा(विद्या) ३३
मनोमयकाय ५५
मनोमय शरीर ४९
मन्त्रकल्पित १८
मन्त्रकल्पिक(देवता) ३३
मन्त्रतत्त्व २१, २६, २७, ३८
मन्त्रतन्त्र ९४
मन्त्रधर्मता ३३
मन्त्रनय ३४
मन्त्रनिध्यप्तिकाय १९
मन्त्रपरायण १
मन्त्रमुखचर्या(द्विविधा) १
मन्त्रमूर्ति १८
मन्त्रशब्द ४४
मन्त्रसंकेत २६
मन्त्रसंवर ९४
मन्त्राधिष्ठानधर्मता ३४
मन्त्रार्थ २६
मन्त्री ९, १६, ३७, १००
मन्त्रोद्धार २६
मन्त्रौषधि ८०
ममकार ५०, ५२-५४
मरीचि ५९
मरीचिकाकार ६४
मर्दन ९३
महाकरुणोपायकौशल्यानाभोग ६८
महाचार्य ६२
महाज्ञान ६२
महाज्ञानाग्र १०१
महातत्त्व ९२

महानाग ७४
महापरिनिर्वाण १०३
महापुरुष ७४
महापौष्टिकसमाधि ८६
महाप्रदीप ८५
महाप्राण ३१
महाबिम्ब १०१
महाबुद्ध १०१
महाबोधिसत्त्व १३
महामति ७
महामतिबोधिसत्त्व ४
महामुद्रासाधन ८४, ९१
महामुद्रासिद्धि ८१, ८६, १०१
महामुनि २
महामृत ९३
महामेरुवज्रशिखरकूटागार ८३
महायक्षी ९५
महायश १०१
महायान ७८
महायानक्रम ११
महायानसूत्र ४१
महायानिक २, २१, ४२
महायोग १९
महायोगी ६, ४७, ५२, ९१, ९२
महायोगीश्वर ८४
महारत्न २१, २२
महावज्रधर २०, ७०, ९७, १०२
महावज्रपद ८१
महावज्रयान ४१
महावज्री २२
महाविद्यापुरुषमूर्ति ७३
महावैरोचन ११
महाव्रती ९४
महाशान्तिकसमाधि ८६
महाशून्य ४२, ४३
महाशून्यलक्षण ४५
महासत्त्व ४, ७, १९, २१, २५, ३०,४९, ५५, ५६, ५८, ९१, ९६
महासत्र ९६
महासन्ध्याव्याकरणमहायोगतन्त्र ९८
महासिद्धि ९७
महासुख ८५, ९३, ९५
महासुखपद ८१
महासुखसमाधि ५९, ८६
महासुखानुरागण ९२, ९३
महासुह १८
महेश्वर ३३
महौषधि ४०, ५६, ५७
मात्सर्य ४३
मान ४४
मानुषी ९५

मामकी १, १२, १३
मामकीसमाधि १२
मायाकार ५४
मायाजालाभिसंबोधिक्रम १५
मायादृष्टान्त(द्वादश) ६
मायासमाधि ३
मायोपम ५६, ५९, ७१, ७३
मायोपमगुणोपेत ५६
मायोपमदेवता ५६
मायोपमसमाधि ६, ३८, ५९, ६०, ६७-६९
मारबन्धन ३८
मार्गाकारज्ञता ६५
माला ६३
मालाकारी ९२
माहेन्द्रजालिक ३३
माहेन्द्रमण्डल २५, २६
मिथ्यादृष्टि १, ८६
मुकुट ९३
मुकुन्दप्रवादन ८५
मुक्त ६८
मुक्ताहार ९२, ९३
मुद्रा ६२
मुद्रातत्त्व २
मुद्राबन्ध ९२
मुद्रामन्त्र ९४
मुनि ९५
मुरजवादन ८५
मूत्र १२
मूत्रतन्त्र २५, २६, ४७, ८८, ९४
मूलसूत्र ७८, ७९, ९४
मृगमद ९३
मेलापक ६६
मैथुन ९५
मोक्ष ५२, ६८, ७०, ७८
मोक्षकाम १, ७६
मोक्षसंस्कार १०
मोह ४२, ७९
मोहविशुद्धिपद ७०
यक्षिणी ९६
यथाभूतपरिज्ञान ६, ४७, ५२, ५५
यथारुत २२
यन्त्रकर्म ३९
यमलोक ५३
युक्त्यागम ४९, ५४, ९९
युगनद्धवाहिक्रम ३, ६, ६८
युगनद्धात्मक ७३
योग १९
योगचर्या ७७
योगतन्त्र ५६, ६२, ६५
योगयुग्मविशुद्धिरहस्याभिसंबोधिक्रम ६७
योगवित् २९

योगसमय १०२
योगी ६४, ९८-१००
योगेश्वर ८२
रक्त ४४
रजकी ९२
रत्न ४३
रत्नकूटसूत्र ८०
रत्ननाथ २५
रत्नपर्यङ्क ८६
रत्नसंभव ९-११, १३-१६, १८, २४, २६
रत्नसंभवकुलीन १७
रत्नसंभवसमाधि ९
रसगन्ध १५
रसवज्र ९३
रसविषय १६
रसायन ८६
रसायनसुख ८९
राग १६, ४२, ४४, ४५, ७९, ९८
रागचरित ९३
रागचित्त ५०
रागजबोधिचर्या ८१
रागदेशना ९०
रागधर्मचरित ७९
रागधर्मचर्या ७८
रागधर्मनय ९०
रागविरागमध्यराग ८६
रागविशुद्धिपद ६९
रागसन्तति ८४
राज्यसिद्धि ९७
रात्रिसंज्ञा ४२
राशि ८, १७
रुतघोष ३४
रुतव्यापार ३५
रूपक्रिया १५
रूपवज्र ९२, ९४
रूपविषय १५
रूपस्कन्ध ९
रूपस्कन्धसमूह ९
रौद्र ४४, ९८
रौरव ८१
लक्ष ५
लक्षणवाक् ३२
लङ्कावतारसूत्र ३, ७, ३०, ३१, ३९, ६८, १०३
लज्जा ४३
लास्य ४
लिङ्गसंयोगस्पर्श १६
लोकधातु ३३
लोकेश्वर १४
लोकोत्तर २२, ४५, ७३

लोकोत्तरमृषावाद ५०
लोकोत्तरसिद्धि ६
लोकोत्तराष्टमहासिद्धि ९६
लोचना ९, ११, १३, ९१, ९४
लौकिक ४५, ७३
लौकिकक्षुद्रसिद्धि ९६
लौकिकलोकोत्तरशास्त्र ३०, ३६
लौकिकसिद्धि ६
लौकिकागम २२
लौकिकी क्रिया ७२
वज्र ४८, ७२
वज्र-आयतन ९
वज्रकाय ७०, ७३, ८८
वज्रकुलीन १७
वज्रगन्धाकार ८५
वज्रगीति ८२
वज्रगुरु २, ३, १७-१९, २३-२६, ३०, ३८, ४४, ४५, ४९, ५५, ५६, ५८, ६०, ६१, ६८, ७६, ७९, ९१, १०२
वज्रघण्टा ६३
वज्रचित्त ९१
वज्रचिह्न ९४
वज्रच्छेदिका ५२
वज्रजाप २१, २२, २५, २७, ५५
वज्रजापक्रम ६
वज्रज्ञान ६४
वज्रदेह ७३
वज्रधराश्वास ८१
वज्रधर्म १०१
वज्रधूपाकार ८५
वज्रधृग् १७
वज्रनाथ २५
वज्रपञ्चसूचिक ४३
वज्रपद २१, ४१, ५९
वज्रपद्मसमायोग ९३
वज्रपद्मसंहर्षण ८६
वज्रपर्यङ्क ८६
वज्रपाणि ३, १४, २२, ४९, ५०, ९४
वज्रपुष्पाकार ८५
वज्रबिम्बोपमसमाधि ६९
वज्रमणिशिखरकूटागार ९१
वज्रमण्डालङ्कारतन्त्र ३१
वज्रमाला ११
वज्रमालायोगतन्त्र २६
वज्रमुखीमहायोगतन्त्र १५, २४
वज्रमुख्याकार ८५
वज्रयान १, ५, ३८, ४२, ६८
वज्रयानक्रम ११
वज्रयानिक २१
वज्रयोगिनी ८७
वज्रवैरोचनसाधन ८८

वज्रशिष्य २, ३, १७, १८, १९, २१, २३-२६, ३०, ३८, ४४, ४९, ५५, ५७, ६१, ६६, ६८, ७६, ७९, ९१, १०२
वज्रसत्त्व ६१, ७७, ८२, ८८, ८९, ९७, १०१
वज्रसत्त्वकाय ५७
वज्रसत्त्वनिष्पत्ति ५६
वज्रसत्त्वोदय ८२
वज्रसूर्य ८६
वज्रहेरुकक्रोधसमाधि ८६
वज्राक्षर ९५
वज्राचार्य ६६
वज्रात्मा ९५
वज्रायतन १५
वज्रालोकाकार ८५
वज्री १०१
वज्रोदक ८७
वज्रोपमसमाधि ६८, ७४
वज्रोष्णीषतन्त्र ३, ४९
वरदवज्र ६२
वलय ९३
वशिता ६९
वशीभूत ७४
वश्य २३
वश्यसिद्धि ९७
वाक्चित्तव्यापार १६
वाक्छोमपरिवर्त्याक्रम ८८
वाक्च्छोमा ८७
वाक्प्रभेददुश्चरित ४९
वाक्प्रव्याहार २५
वाक्संस्कार १०
वाक्स्फुट ४४
वागक्षरप्रवृत्ति ३०
वाग्दुश्चरित ४९, ५०
वाग्द्वाराश्रय ४२
वाग्द्वाराश्रयण १
वाग्वज्र १८
वाग्वज्रसमाधि ६, २१, ३६, ३७
वाग्विकल्प ३१, ३२
वाग्विकल्परुतप्रदीप ३०
वाग्विवेक ६, २१, ३८, ५५
वाग्विशुद्धि ३४
वादित्र ४
वामसंज्ञा ४२
वायव्यमण्डल २६
वायु १३, १५, २२-२४, ५६, ९८
वायुतत्त्व २१, २५, ३८
वायुधातु ११, १३, १७, ४५, ४६, ४८, ४९
वायुधातुसमूह १२
वायुमण्डल २५

वायुवाहन ६, ४६
वायुविज्ञान ४१
वारुणमण्डल २५, २६
विकल्प ४३
विकल्पाभिनिवेश ३
विचिकित्सा ५८
विज्ञान १०, ३९-४२, ५६, ५७, ९८
विज्ञानत्रय ३८,३९,४१,४५,४९,९७
विज्ञानत्रयविशुद्धि ७०
विज्ञानधातु १७, ३९, ४०, ४५
विज्ञानवैचित्र्य ४९
विज्ञानसंकल्प ६९
विज्ञानसंक्रान्तिसूत्र ४५, ५६
विज्ञानस्कन्ध(पञ्च) ११
विज्ञानस्कन्धसमूह १०
विज्ञानाभास ४५
विण्मूत्र ९९
वित् ४३
वितताकार ८५
वितर्क ७८
विद्याव्रत ९४, ९५
विद्युद् ५९
विनयामोघसिद्धिमहातन्त्र ८०
विपश्यना ९८
विभूति ६६
विमुक्तिफलसम्पद २८
विराग १६, ४२, ४३, ४५, ७८, ९८
विलास ४४
विवाह १५, २४
विशिष्टाहङ्कार ८५
विशुद्धधर्मधातुज्ञान १७
विशुद्धिपद ६९
विष ७९
विषयगन्ध १६
विषयदेवता १५
विस्मय ४४
विस्मृति ४४
वीणा ४
वीतराग ७८
वीर ९९
वीर्य ४४, ७४
वृद्धभाव ७८
वेणुकारी ९२
वेदना ४३, ९८
वेदनासंक्रान्ति ४०
वेदनास्कन्ध १०
वेदनास्कन्धसमूह ९
वैर ४४
वैरोचन ९-१६,२४,२६,६३,८६,९१
वैरोचनमहाकाय २६
वैरोचनाभिसम्बोधिचर्यातन्त्र ३३
वैरोचनाभिसम्बोधितन्त्र ३८, ५७

व्यञ्जनप्रतिशरण ३१
व्यवदान ५२, ५३, ७३
व्याकरण ३०
व्याकृत ४७
व्याख्यातन्त्र २१,२३,२६,२७,४७,९९
व्यान १२, १३, १५, २३, २४, २६
व्युत्थानक्रम ६८, ७२
व्रतचर्या ७६, ७७
शक्र ५७
शक्रायुध ५९
शतकुल ५, ९, १७, १८
शतबाल ५
शब्दक्रिया(पञ्च) १५
शब्दरुत ३२
शब्दवज्र ९३
शब्दविषय १५
शब्दवेध ५
शमथ ९८
शरीरयन्त्र ३९
शरीरविज्ञान ८
शंख ६३
शाक्यमुनि १०३
शाक्यसिंह ६७
शान्त ६४
शान्तिक २३
शान्तिकादिकर्म २७
शाश्वत ७३, १०२
शास्ता १९, २१, २४, ४४, ४५, ४९, ५६, ९१
शिल्पिका ९२
शिव ६४, ७१
शिष्यबोधन ९०
शिष्याकारजीवसन्तति ८४
शीर्षोष्ण १२
शील १, ७४
शुद्धात्मक ७४
शुद्धावासकायिक(देव) ३३
शुभ ४४
शुभाशुभकर्मपरायण १
शुषिराकार ८५
शून्य ४२, ४४, ४९, ५२-५४, ५८
शून्यचतुष्टय ६३
शून्यता ३६, ५२
शून्यतागर्भ ६२
शून्यताज्ञान ७१
शून्यतादृष्टिनिग्रह ८६
शून्यताभिनिवेशदृष्टि ८६
शून्यतास्वभाव ६६
शून्यत्रय ५०
शून्यत्रयलक्षण ४३
शूरङ्गमसमाधि ४, ५, ७४, ७५
शूरङ्गमसूत्र ४, ७४

शोक ४३, ९८
शोषणकर्मा ११
शौर्य ४४
श्मशान ९६
श्रद्धाप्रतिपत्ति ५०
श्रमण ७४
श्रावक ७८, ८०, ९२
श्रावकयान ७९·
श्रीज्ञानवज्रसमुच्चयमहायोगतन्त्र ४१
श्रीसमाजादिमहायोगतन्त्र ४१
श्रीसंवर ८९
श्रुतचिन्तामय ७६
श्रुतिपारङ्गत १
श्रोत्रविज्ञान १०
श्रोत्रायतन १४, १५
श्रोत्रायतनसमूह १४
श्रोत्रेन्द्रिय १४
श्लेष्मवातजवेदना १०
श्लेष्मादिजल १२
षट्कामावचर ९५
षट्पारमिता ५०
षडायतन ८, ४१
षड्बोधिचित्तगाथा ६५
षष्ट्युत्तरशतप्रकृति ९८
सङ्गणिकासंसर्गमिद्धनीवरण ३९
सञ्चय ८, ४३
सत्पुरुष ७४
सत्य ४४
सत्यद्वय ७६, ७८, १०४
सत्यद्वयनय ७३
सत्यद्वयाद्वयाधिगम ७८
सत्यद्वयाद्वैधीकार ३, ६
सद्धर्म ६७
सद्धर्मप्रतिक्षेप ५०
सद्भावतन्त्र १
सन्निपातपित्तोद्भववेदना ९
सप्तक्षण ४४
सप्रपञ्चचर्या ९१
समता ६५
समताज्ञान १६
समन्तभद्र ४३
समन्तभद्रसमाधि १४, १५
समय ६२
समयशोधन ९२
समवेदना १०, ४३
समाजोत्तर २२, ४४
समाधि १८, ९६, १००
समाधिराजसूत्र ७३, ९६
समाधिसत्त्व ८५
समान १२, १३, १५, २३, २४
समुद्रोदक १२
सम्पुटयोग ९४

सम्प्रदाय ६३, ७२
सम्बुद्ध ७, ६३
सम्बोधिक्रम ६६
सम्बोधिलक्षण ६५
सम्यक्संबुद्ध ४७
सम्यक्संबोधि ९६
सम्यगाज्ञा ७४
सयोजन ७४
सर्वकर्मावरणविशुद्धिसूत्र ५३, ५९
सर्वकल्पसमुच्चय ७३
सर्वकामावचर(देवपुत्र) ३३
सर्वकुलात्मक ७४
सर्वक्लेशक्षयंकरी ६५
सर्वचित्तारहित ६९
सर्वचेतोवशी ७४
सर्वज्ञ १०३
सर्वज्ञगुणोपेत ५६
सर्वज्ञता ६५
सर्वज्ञसम्पद् ७६
सर्वज्ञसिद्धि ९६
सर्वतथागत ५९, ६०, ६७, ९३, ९४
सर्वतथागतक्रीडा ८१
सर्वतथागतसम्प्रदायबहिर्मुख ३८
सर्वतथागताधिपति ९४
सर्वदृष्टिप्रहाण २२
सर्वदेवसमागमतन्त्र ९५, ९९
सर्वनिर्याणपथ ७४
सर्वनीवरणविष्कम्भी १४
सर्वप्रत्येकबुद्धजनयित्री ६५
सर्वबुद्ध ९८, १००
सर्वबुद्धक्षेत्रतीर्थायतन ६९
सर्वबुद्धमहाकाय ८९
सर्वबुद्धमहाचित्त ८९
सर्वबुद्धमहामह ८९
सर्वबुद्धमहाराजा ८९
सर्वबुद्धमाता ६५
सर्वबुद्धसमागमयोगडाकिनी-जालसंवरमहायोगतन्त्र १९, ८२
सर्वबुद्धसमागमयोगडाकिनी-जालसंवरनय २४
सर्वबुद्धसमायोग ८२
सर्वबुद्धसरस्वती ८९
सर्वबुद्धात्मा ८९
सर्वबुद्धात्माभिषेक ६
सर्वबुद्धोपदेश ५५, ५७
सर्वबोधिसत्त्वजननी ६५
सर्वमन्त्राधिपति २७
सर्वयोग ८९
सर्वरत्नाधिपेश्वर ८९
सर्वरहस्यतन्त्र १८, ७७
सर्वरूपावभास ७
सर्वलक्षणोपेतदेवता ५५

सर्वलोकधातु ७०
सर्वलोकधात्री ६५
सर्वलोकायतनवाक्सिद्धि ९७
सर्वलोकेश्वरपति ८९
सर्ववज्रधराधिप ८९
सर्वशून्य १, ३, ६४
सर्वशून्यलक्षण ६३
सर्वश्रावकधात्री ६५
सर्वाकारज्ञता ६५
सर्वाकारवरोपेत ५५, ५७, ७१
सर्वाङ्गगन्ध १५
सर्वाङ्गोष्ण १२
सर्वात्मक ७४
सलिल ६३
सहजाक्षर ३१
संकारकुट ८०
संक्लेश ५२, ५३, ७३
संक्लेशव्यवदानात्मक ४१
संग्रहकर्मा ११
संचर्याकार ८४
संज्ञास्कन्ध १०
संज्ञास्कन्धसमूह १०
संध्यायभाषित २५
संध्यायवचन ६६
संध्यायवाक्य २२
संध्यावचन ४२, ४६
संध्याव्याकरणमहायोगतन्त्र २७
संध्याव्याकरणमहाव्याख्यातन्त्र २२
संभिन्नप्रलाप ५०
संवर ८१, ८७
संवाह १५, २४
संवित्तिमात्रक ४५
संवृति ५४
संवृतिरूप ४२, ४३
संवृतिसत्य ३, ६, ४१, ५४, ५५, ६१, ७६, १०३, १०४
संसार ७३
संसारपारकोटिस्थ ७४
संस्कारस्कन्ध १०
संस्कारस्कन्धसमूह १०
संस्कृत २, १३
संहरण २५
साकार ७३
साधक ९४, ९६, १०२
साधनाङ्ग १
साधारणोत्तानशब्द २
साध्यसाधकसाधन ७६
सामान्यवाग्दुश्चरित ५०
साश्चर्य ४३
साहस ४४
सिद्धि १९, २०, ६५, ९७, ९८, १०२

सिद्धिमुद्रा ८३
सिद्धिलक्षण ९७
सुखवेदना १०
सुखाकारसुरतसन्तति ८४
सुगत १, ४१, ४९, ५०, ५२,५३, ६८
सुगति ५०
सुप्रतिवाग्वज्रसत्त्वसाधन ८८
सुप्रभास्वर ३१
सुभूति ५२, ५३
सुमेरु ११
सुरकन्या १०१
सुरतसुख ९३
सुरी ९५
सुवर्णप्रभाससूत्र १०३
सुविमुक्तचित्त ७४
सुविमुक्तप्रज्ञ ७४
सूक्ष्मधातु ४५, ४६, ७०, ९८
सूक्ष्मयोग २१, २९
सूची ९३
सूत्र १, २, ५८
सूत्रक २, ८०
सूत्रान्त ५६
सूर्याकान्तोद्भवाग्री १२
सूर्यमण्डल ४३
सूर्यरश्मि ६४
सूर्यालोकनिभ ४५
सोमादित्यमण्डल ७
सौत्रान्तिक ७८
सौम्य ४३, ९८
सौशीर्य ७२
स्कन्ध ९, १५-१७, २१, २३, ५५, ५८, ९३, ९८, १०२
स्कन्धकरण्डक ९७
स्कन्धधात्वायतन ६९
स्कन्धायतनात्मक ३
स्तोत्रोपहार ६२
स्त्रीतत्त्व २४
स्त्रीरूप ४२
स्थलगत ७४
स्थावर ३
स्थूलयोग २१
स्नेह ४३
स्पर्शक्रिया १६
स्पर्शवज्र ९३, ९४
स्पर्शविषय १६
स्फरण २५
स्फरणसंहरण ४५
स्वकाय ६१
स्वकायमण्डल १७, ९१
स्वकायवाक्चित्त १८, १९
स्वकायवाक्चित्तवज्र ९४

स्वकायविवेक ८
स्वचित्त १८, ४७, ५२, ५५
स्वचित्तदृढीकरण २१
स्वचित्तदृश्यधारा ४, ७
स्वचित्तनिराभासावतार ६९
स्वचित्तप्रत्यवेक्षण ४७
स्वचित्तमायाधिमुक्ति ६९
स्वचित्तवासना ४९
स्वचित्तस्वभाव ३८
स्वदेवताचिह्न २१
स्वप्न ५९
स्वप्नचित्त ५९
स्वप्नजाग्रदवस्था ५८
स्वप्ननिमित्त १०१
स्वप्नवाक् ३२
स्वप्नोपम ५६, ५८, ७३
स्वभावशुद्ध ६४
स्वभ्रोदक १२
स्वयम्भू ७४
स्वर्ग ५१
स्वलक्षण ३, ४२
स्वसंवित्तिज्ञान ४१
स्वसंवेद्य ९, १४, ७१
स्वात्मा ९७
स्वाधिदैवतयोग १९, ८९
स्वाधिष्ठान ५६
स्वाधिष्ठानक्रम ४७, ५७, ५८, ६०, ६१, ८४, ९१, १०३
हठ ४४
हठयोगसमाधि ८७
हरण ४४
हर्षण ४४, ९८
हवनीयाऽग्नि १२
हसित ४४, ९५
हास्य ४
हीनाधिमुक्तिक ७८
हुतभुङ्मण्डल २५
हृदयोष्ण १२
हृष्टचित्तात्मा १०२
हेतुकदोष १०२
हेतुप्रत्यय ३
हेतुफल ७६
हेतुविशुद्धि ६५
हेरुकवज्रसाधन ८८
ह्लाद ४४

***

भोट-खण्डः

༄༅། །འཕགས་པ་ལྷས་མཛད་པའི་ སྤྱོད་པ་བསྡུས་པའི་སྒྲོན་མ་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

སྤྱོད་པ་བསྡུས་པའི་སྒྲོན་མ་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

༄༅། །རྒྱ་གར་སྐད་དུ། ཙརྻཱམེལཱཔཱན[1]པྲདཱིཔཾ། བོད་སྐད་དུ། སྤྱོད་པ་བསྡུས་པའི་སྒྲོན་མ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་འཇམ་དཔལ་ཡེ་ཤེས་སེམས་དཔའ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

དངོས་མེད་རྣམ་དག་ནམ་མཁའ་མཉམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
མ་ལུས་ཚིག་མེད་ཡི་གེ་བྲལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
འདས་དང་མ་བྱོན་ཀུན་ཏུ་སོན་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
ཀུན་ཏུ་མ་ལུས་ཐམས་ཅད་སྟོང་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་འདི་ལ་སྔགས་ཀྱི་སྒོར་སྤྱོད་པ་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། སློབ་དཔོན་གསང་སྔགས་ལ་མཆོག་ཏུ་གཞོལ་བ་དང་། ནང་ལ་མཆོག་ཏུ་གཞོལ་བ་སྟེ། ཐོས་པའི་ཕ་རོལ་ཏུ་སོན་པ་རྣམས་ཀྱིས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་རྗེས་སུ་གཟུང་བར་བྱ་བའི་དོན་དུ། མདོ་སྡེ་དང་རྒྱུད་དང་རྟོགས་པ[2]དག་ལས་ཡང་དག་པར་གསུངས་པའི་ལུང་གི་ཚིག་རྣམ་པར་གསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཚིག་སྙན་ཅིང་རྒྱ་ཆེ་བ་དུ་མ་དག་བཀླས་ནས་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་དང་ཀྲུང་པ་ལ་

---

1. པཱན། གསེར། པཀ། སྡེ།
2. རྒྱུད་རྟོག་པ། གསེར། ‘རྒྱུད་དང་རྟོགས་པ་’ རྒྱ་དཔེར་མེད།

སོགས་པ་སྒྲ་སྒྲས་པ་རྣམས་དང་སྤེལ་ཞིང་རབ་ཏུ་སྤེལ་བ་རྣམས་ཀྱི་[1] རྒྱུད་ཡང་དག་པ་རྣམས་ལས་བཏུས་ཏེ། བྱིས་པའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ཀྱིས་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་ཀྱི་ཡན་ལག་མར་མེ་ལྟ་བུ་[2] བྱེད་པ་དག་སྟོན་བྱུང་བར་གྱུར་པ་ནི་མི་རིགས་[3]སོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། རྫོགས་ལྡན་དང་གསུམ་ལྡན་དང་གཉིས་ལྡན་གྱི་དུས་ན་ནི་འཇིག་རྟེན་པ་རྣམས་ཚེ་དང་། ནད་མེད་པ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་ཤིང་། སྦྱིན་པ་དང་། ཚུལ་ཁྲིམས་ལ་སྤྱོད་པ་ལ་སོགས་པ་[4] ཡོན་ཏན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་ནི་བསྟན་བཅོས་ལ་གནས་ཤིང་ཡོངས་སུ་ཚོལ་བས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཤེས་པ་ལ་མངོན་པར་ཞུགས་ཤིང་ཚིག་རྒྱ་ཆེ་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་དང་། སྒྲས་པའི་སྒྲའི་སྒོ་ནས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྟོན་ལ། དེ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་ཁོང་དུ་ཆུད་པ་ཡིན་ནོ། །ད་ལྟར་ནི་རྩོད་པའི་དུས་ཏེ་འཇིག་རྟེན་པ་རྣམས་ཚེ་དང་ནད་མེད་པ་དང་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་དམན་ཞིང་། གཡོ་དང་སྒྱུ་དང་དྲེགས་པ་དང་། ཕྲག་དོག་དང་ལྡན་ལ། ཤེས་རབ་ཞན་ཅིང་ལོག་པར་ལྟ་བས་ལས་ངན་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་དགའ་བས་ཇི་སྲིད་དུ་ཚིག་རྒྱ་ཆེ་བ་ལ་སོགས་སྒྲས་པའི་སྒྲའི་དོན་རྣམས་ལ་ངེས་པར་མི་དགའ་བས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཚོལ་

---

1. ཀྱིས། གསེར།
2. 'མར་མེ་ལྟ་བུ' རྒྱ་དཔེར་མི་སྣང་།
3. རྒྱ་དཔེར་'གྱུར་པ་ནི་རིགས་'ཞེས་གསལ།
4. 'སོགས་པ' གསེར་བྲིས་སུ་མི་སྣང་།

བར་མི་བྱེད་དོ། །དེའི་ཕྱིར་ན་དང་པོའི་[1]བསྟན་བཅོས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་སྤངས་པས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མི་རྟོགས་ཤིང་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བའི་ལས་ལ་མངོན་པར་གཞོལ་བས་དུས་བྱེད་པར་འགྱུར་རོ། །

དེ་བས་ན་ཐར་པ་ཐོབ་པར་འདོད་པ་རྣམས་ལ་དགོས་པ་མེད་པར་འགྱུར་ཏེ། ཚིག་སྙན་པ་དང་རྒྱ་ཆེ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཚིག་གི་སྒོ་ལ་གནས་པའི་སྒྲ་རྣམས་ནི་གཟིངས་དང་འདྲ་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །

བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་ཇི་སྐད་དུ། "དོན་གྱི་རྗེས་སུ་འབྲང་བར་བྱའི་སྒྲ་ཇི་བཞིན་པར་མ་ཡིན་ནོ" ཞེས་གསུངས་སོ། །དོན་གྱི་དབང་འདི་མཐོང་ནས་བདག་གི་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་ཞལ་སྔ་ནས་ཀྱི་མན་ངག་ལས་བསྐྱེད་པའི་གོ་རིམས་ཀྱིས་རྫོགས་པའི་གོ་རིམས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཐོབ་ནས་འདུས་བྱས་པ་དང་འདུས་མ་བྱས་པའི་སློབ་མ་རྣམས་ཀྱི་ཐུན་མོང་དུ་བཤད་པའི་སྒྲའི་སྒོ་ནས། སྔགས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དང་། ཕྱག་རྒྱའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དང་། བདག་གི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དང་། ཆོས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དང་། ལྷའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དེ། གོ་རིམ་[2]རྣམ་པ་ལྔ་རྣམ་པར་གསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་མདོ་སྡེ་དང་། རྒྱུད་དང་། རྟོག་པ་རྣམས་བསྲེས་ནས་བཤད་པར་བྱའོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་

1. རྒྱ་དཔེར་' དེའི་ཕྱིར་ན་ཕྱི་རོལ་པའི་'།
2. གོ་རིམས། སྡེ། ཅོ།

མདོ་སྡེ་ལ་སོ་ཀ་པ་བཤད་པའི་གསུང་རབ་[1]ཀུན་ལས། བསྐལ་པ་བྱེ་བ་རྣམས་སུ་ཡང་། །དེ་ཉིད་བྲལ་ན་[2]འགྲུབ་མི་འགྱུར། །ཞེས་གསུངས་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་ལྷ་མོ་བཞིས་ཞུས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས།[3]

ཐུབ་པ་ཆེན་པོའི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི། །
ཕུང་པོ་བརྒྱད་ཁྲི་བཞི་སྟོང་ལ། །
གང་གིས་དེ་ཉིད་མི་ཤེས་པ། །
དེ་ཡི་ཐམས་ཅད་འབྲས་བུ་མེད། །

ཅེས་གསུངས་པས་སོ། །རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མི་ཤེས་པར་འཚང་རྒྱ་བར་མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་གསུངས་ན། ཡང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཅེས་བྱ་བའི་རང་གི་མཚན་ཉིད་གསུང་རབ་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཉན་པར་འཚལ་ལོ། །གང་གི་ཕྱིར་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་པ་དང་། རྟོག་གེ་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ནི་དོན་འདི་ཉིད་ལ་གནས་ནས་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པར་བགྱིད་ན། དེ་རྣམས་བསྡུ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་

1. གསུངས་རབ། གསེར།
2. ནས། གསེར།
3. ལས་ཀྱང་། གསེར།

འདི་གང་ཡིན་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཤད་དུ་གསོལ། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། ཡང་དག་པ་གང་ཡིན་དེ་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དོ། །གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཡང་དག་པ་ཞེས་བགྱི་བ་དེ་ཇི་ལྟ་བུ་ལགས། སྨྲས་པ། གང་མི་སླུ་བ་ཞེས་བྱ་བ་དེ་ནི་ཡང་དག་པ་ཞེས་བྱའོ། །གསོལ་པ། མི་སླུ་བ་[1]ཞེས་བྱ་བ་དེ་ཇི་ལྟ་བུ་ལགས། སྨྲས་པ། ཤིན་ཏུ་ཡང་དག་པའི་ཚུལ་གྱི་[2]བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དེ་ནི་མི་སླུ་བ་[3]ཞེས་བྱའོ། །གསོལ་པ། ཡང་དག་པའི་ཚུལ་གྱི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཅེས་པ་དེ་གང་ལགས། སྨྲས་པ། གང་བདེན་པ་གཉིས་གཉིས་སུ་མེད་པའི་རྣམ་པའི་མཚན་ཉིད་ཅན་དེ་ནི་ཡང་དག་པའི་ཚུལ་གྱི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏོ། །གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་བདེན་པ་གཉིས་ཞེས་བགྱི་བ་དེ་གང་ལགས། སྨྲས་པ། དང་པོ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་དང་། གཉིས་པ་ནི་དོན་དམ་པའི་བདེན་པའོ། །གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་བདེན་པ་གཉིས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཇི་ལྟ་བུ་ལགས། རྡོ་རྗེ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་རྡོ་རྗེ་གཙུག་ཏོར་གྱི་[4]རྒྱུད་ལས་བཀའ་སྩལ་ཏེ། ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེས་གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཆོས་ཐམས་

1. མི་བསླུ་བ། གསེར།
2. གྱིས། གསེར།
3. མི་བསླུ་བ། གསེར།
4. གྱིས། གསེར།

ཅད་ཀྱི་གནས་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ཇི་ལྟ་བུ་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། གསང་བའི་བདག་པོ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་ཕུང་པོ་དང་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་རྣམས་དང་། འགྲོ་བ་རྒྱུ་བ་དང་མི་རྒྱུ་བ་རྣམས་ཏེ། དེ་ཡང་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ལ་གནས་པས་གནས་མེད་[1]པའི་ཚུལ་གྱིས་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ནི་བདག་མེད་པ་ཞེལ་གྱིས་མི་ནོན་པ་ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་སྟེ། འཕེལ་བ་མེད་པ། འགྲིབ་པ་མེད་པ། རྣམ་པར་དག་པ། ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ་དང་། དྲི་མ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད། ཡི་གེ་མེད་པ། ཚིག་མེད་པ། ལུས་དང་[2]ངག་དང་ཡིད་དང་བྲལ་བ། ཡོད་པ་མ་ཡིན། མེད་པ་མ་ཡིན། རྒྱུ་བ་མ་ཡིན། མི་རྒྱུ་བ་མ་ཡིན། ཐག་རིང་བ་མ་ཡིན། ཐག་ཉེ་བ་མ་ཡིན། སྟོང་པ་མ་ཡིན། མི་སྟོང་པ་མ་ཡིན། དབུ་མ་ཡང་མ་ཡིན་པ་འདི་ནི་དོན་དམ་པའི་བདེན་པའོ། །དེ་བས་ན་དེ་ནི་མཆོག་ཏུ་ཟབ་པ་དང་། འཇུག་པར་དཀའ་བ་དང་། སྐྱེ་བ་མེད་པ་དང་། འགག་པ་མེད་པའོ།[3] །

རྒྱུ་རྐྱེན་གྱིས་འབྱུང་བ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་སྟེ། དེ་ནི་ཇི་སྲིད་དུ་མི་ལམ་དང་། མིག་འཕྲུལ་དང་། གཟུགས་བརྙན་ལྟར་སྣང་བ་དང་ལྡན་པ་སྒྱུ་མ་

1. གནས་པ་མེད། གསེར།

2. ལུས་མེད་པ་དང་། གསེར།

3. འགག་པ་མེད་པ་སྟེ་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པའི་རྐྱེན་ཅན་ནོ། གསེར།

ལྷ་བུའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། རང་གི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་ཚངས་པའི་གནས་པ་བཞིའི་
རྒྱུར་གྱུར་པ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པའོ། །དེ་གཉིས་ཟུང་དུ་འབྲེལ་པར་འཇུག་
པའི་རིམ་པ་འདི་ནི་ཡང་དག་པའི་ཚུལ་གྱི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ།
དམིགས་པ་ཐམས་ཅད་ཉེ་བར་ཞི་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཅེས་བྱའོ།།
རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། བདག་ཅག་ལྷ་བུའི་སོ་སོའི་སྐྱེ་བོ་ཐོག་མ་མེད་པ་
ནས་ཕྱི་རོལ་གྱི་དངོས་པོ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པས་ཡོད་པ་
དང་མེད་པ་དང་། གཅིག་དང་། དུ་མ་དང་། གཉིས་དང་། གཉིས་ཀ་མ་
ཡིན་པ་དང་། ཡོད་པ་མ་ཡིན། མེད་པ་ཡང་མ་ཡིན་པ་དང་། རྟག་པ་དང་
ཆད་པ་ལ་སོགས་པའི་རང་བཞིན་གྱི་བག་ཆགས་ཀྱི་རྒྱུས་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ལ་
མངོན་པར་ཞེན་པ་ལ་ཞུགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་རྫོགས་པའི་རིམ་པའི་གོ་རིམ་གྱི་[1]
ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སློབ་པ་ན་གོ་རིམ་[2]ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་བསླབ་པར་བགྱིའམ།
ཡང་ན་བླ་མའི་མན་ངག་ཙམ་གྱིས་དེ་དག་སྐད་ཅིག་ཙམ་གྱིས་སོ་སོར་སྣང་
བར་བགྱི། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། རིམ་གྱིས་འཇུག་པས་བསླབ་པར་
བྱའི་ཅིག་ཅར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་ལང་ཀར་[3]

1. གོ་རིམས་ཀྱི། སྡེ། ཅོ།
2. གོ་རིམས། སྡེ། ཅོ།
3. ལངྐར། གསེར།

གཤེཏ་པའི་མདོ་ལས་གསུངས་ཏེ། ''དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་བློ་གྲོས་ཆེན་པོས་རང་གི་སེམས་སྣང་བའི་རྒྱུད་རྣམ་པར་དག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡང་གསོལ་བ་བཏབ། བཅོམ་ལྡན་འདས་རང་གི་སེམས་སྣང་བའི་རྒྱུད་ཅིག་ཅར་རམ། རིམ་གྱིས་འཇུག་པས་སམ། ཇི་ལྟར་རྣམ་པར་དག་པར་འགྱུར། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་རང་གི་སེམས་སྣང་བའི་རྒྱུད་ནི་རིམ་གྱིས་འཇུག་པས་རྣམ་པར་དག་སྟེ་[1]ཅིག་ཅར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འདི་ལྟ་སྟེ། བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཤིང་ཨ་མྲའི་འབྲས་བུ་[2]ནི་རིམ་གྱིས་སྨིན་པར་འགྱུར་གྱི་ཅིག་ཅར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་བཞིན་དུ་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་རང་གི་སེམས་སྣང་བའི་རྒྱུད་ཀྱང་རིམ་གྱིས་རྣམ་པར་དག་སྟེ་ཅིག་ཅར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འདི་ལྟ་སྟེ། རྫ་མཁན་གྱི་སྣོད་རྣམས་ནི་རིམ་གྱིས་བྱེད་ཀྱི་ཅིག་ཅར་ནི་མ་ཡིན་ནོ།། བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་བཞིན་དུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཡང་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་རང་གི་སེམས་སྣང་བའི་རྒྱུད་ཀྱང་རིམ་གྱིས་རྣམ་པར་སྦྱོང་སྟེ་ཅིག་ཅར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འདི་ལྟ་སྟེ་ས་ཆེན་པོ་ལས་རྩྭ་དང༌། ཤིང་གེལ་བ་དང༌། སྨན་དང་ནགས་ཚལ་རྣམས་རིམ་གྱིས་འཇུག་པས་སྐྱེའི་ཅིག་ཅར་ནི་

1. དག་པར་འགྱུར་ཏེ། གསེར།
2. ཨ་འབྲིའི་འབྲས་བུ། གསེར།

མ་ཡིན་ནོ། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་བཞིན་དུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཡང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་གི་སེམས་སྣང་བའི་རྒྱུད་རིམ་གྱིས་སྦྱོང་སྟེ་ཅིག་ཅར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འདི་ལྟ་སྟེ་བཞད་གད་དང་། རོལ་མོ་དང་། གླུ་དང་། པི་ཝང་དང་། སིལ་སྙན་དང་། རི་མོ་[1]དག་ལ་མཁས་པ་ནི་རིམ་གྱིས་འབྱུང་གི་ཅིག་ཅར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་བཞིན་དུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཡང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་གི་སེམས་སྣང་བའི་རྒྱུད་རིམ་གྱིས་རྣམ་པར་སྦྱོང་སྟེ་ཅིག་ཅར་ནི་མ་ཡིན་ནོ།'' །

རིམ་པ་འདི་ཉིད་ནི་དཔའ་བར་འགྲོ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་མདོ་ལས་ཀྱང་གསལ་བར་གསུངས་ཏེ། ''དེ་ནས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་བློ་གྲོས་བརྟན་པས་འདི་སྐད་ཅེས་གསོལ་ཏོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཇི་ལྟར་སློབ་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བསླབ་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཀློམ་སེམས་མ་མཆིས་པར་དཔའ་བར་འགྲོ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་འདི་ལ་སློབ་པ་ལགས། དེ་སྐད་ཅེས་གསོལ་པ་དང་། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་བློ་གྲོས་བརྟན་པ་ལ་འདི་སྐད་ཅེས་བཀའ་སྩལ་ཏོ། །བློ་གྲོས་བརྟན་པ་འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན་འཕོང་གི་སློབ་དཔོན་ནམ། འཕོང་གི་སློབ་མ་ནི་ཐོག་མར་བ་ལང་གི་ཀོ་བ་ལ་ཕོག་པར་བྱེད་དོ། །གང་གི་ཚེ་བ་ལང་གི་ཀོ་བ་ལ་ཐོབས་པ་

1. རོལ་མོ། བོད་དཔེར་གསལ་ཡང་གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

དེའི་ཚེ་ཤིང་ལེབ་ལ་ཕོག་པར་བྱེད་དོ། །གང་གི་ཚེ་ཤིང་ལེབ་ལ་ལོབས་པ་དེའི་ཚེ་འབེན་ལ་ཕོག་པར་བྱེད་དོ། །གང་གི་ཚེ་འབེན་ལ་ལོབས་པ་དེའི་ཚེ་དེའི་དབྱུ་གུ་ལ་ཕོག་པར་བྱེད་དོ། །གང་གི་ཚེ་དབྱུ་གུ་ལ་ལོབས་པ་དེའི་ཚེ་སྐྲ་བརྒྱ་[1] ལ་ཕོག་པར་བྱེད་དོ། །གང་གི་ཚེ་སྐྲ་བརྒྱ་ལ་ལོབས་པ་དེའི་ཚེ་སྐྲ་བཅུ་ལ་ཕོག་པར་བྱེད་དོ། །གང་གི་ཚེ་སྐྲ་བཅུ་ལ་ལོབས་པ་དེའི་ཚེ་སྐྲ་གཅིག་ལ་ཕོག་པར་བྱེད་དོ། །གང་གི་ཚེ་སྐྲ་གཅིག་ལ་ལོབས་པ་དེའི་ཚེ་སྐྲས་མཚོན་པ་ལ་[2]ཕོག་པར་བྱེད་དོ། །གང་གི་ཚེ་སྐྲས་མཚོན་པ་ལ་[3]ཕོག་པ་དེའི་ཚེ་མི་འཚོར་བར་ཕོག་པར་འགྱུར་རོ། །གང་གི་ཚེ་མི་འཚོར་བར་ཕོག་པ་དེའི་ཚེ་འཕོང་སློབ་པ་མཐར་ཕྱིན་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་འདོད་ན་ནུབ་མོ་[4]མུན་པ་མུན་ནག་གི་ནང་ན་ཡང་མི་དང་མི་མ་ཡིན་པ་གང་དང་གང་གི་སྒྲ་གྲག་པ་དེ་དང་དེར་ལྟུན་གྱིས་གྲུབ་ཅིང་མི་འཚོར་བ་ཉིད་དུ་མདའ་འགྲོའོ། །སྐྲས་མཚོན་པ་ལ་ཕོག་པར་བྱེད་པ་[5] ལོབས་པས་ཕྱིས་གང་དུ་ཡང་མི་སློབ་སྟེ། དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། སྔོན་ལེགས་པར་བསླབས་པའི་ཕྱིར་ཕོག་པར་བྱ་བ་ཐམས་ཅད་དེ་ལ་མངོན་སུམ་དུ་འགྱུར་རོ།།

---

1. བརྒྱ། གསེར་ཕྲིས་སུ་མེད།
2. མཚོན་ལ། གསེར།
3. མཚོན་ལ། གསེར།
4. ནུབ་མོ། གསེར་ཕྲིས་སུ་མེད།
5. པར། གསེར།

བློ་གྲོས་བརྟན་པ་དེ་བཞིན་དུ་དཔའ་བར་འགྲོ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་འདི་ལ་གནས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཕྱིས་ཆོས་གང་ལ་ཡང་བསླབ་པར་མི་བྱའོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། ཏིང་ངེ་འཛིན་དེ་ཉིད་ལ་སྦྱོན་ལེགས་པར་བསླབས་པའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཡོན་ཏན་གྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་དེ་ལ་མངོན་སུམ་དུ་འགྱུར་རོ། །ཡང་ཚུལ་འདི་ཉིད་ཀྱིས་རྡོ་རྗེའི་ཐེག་པ་ལ་གནས་པའི་དཔའ་བར་འགྲོ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སློབ་པར་འདོད་པས་ཀྱང་རིམ་པ་འདི་ཉིད་ཀྱིས་བསླབ་པར་བྱའོ།''།

དེའི་རིམ་པ་ཡང་འདི་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མ་ཉིད་དུ་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཐེག་པའི་བསམ་པ་ལ་སློབ་བོ། །གང་གི་ཚེ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཐེག་པའི་བསམ་པ་ལ་ཡོབས་པར་གྱུར་པ་དེའི་ཚེ་ཐེག་པ་སར་པ་[1]དྲན་པ་གཅིག་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སློབ་བོ། །གང་གི་ཚེ་ཐེག་པ་གསར་ལ་དྲན་པ་གཅིག་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་ཡོབས་པ་དེའི་ཚེ་རྟོག་པའི་རྣལ་འབྱོར་ལ་སློབ་བོ། །གང་གི་ཚེ་རྟོག་པའི་རྣལ་འབྱོར་ལ་ཡོབས་པ་དེའི་ཚེ་ལས་དང་པོ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་རབ་ཏུ་གནས་པར་འགྱུར་རོ། །གང་གི་ཚེ་ལས་དང་པོ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་གནས་པ་དེའི་ཚེ་རིཏ་བརྒྱའི་དབྱེ་བ་ལ་འཇུག་གོ །གང་གི་ཚེ་རིཏ་བརྒྱའི་དབྱེ་བ་ལ་མཁས་

1. སར་ལ། གསེར།

པས་[1]ལུས་རྣམ་པར་དབེན་པ་ཞེས་པ་དེའི་ཚེ་སྐུ་རྡོ་རྗེའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་གནས་པར་འགྱུར་རོ། །ལུས་རྣམ་པར་དབེན་པ་ལ་གནས་ནས། ཨཱ་ལི་ཀཱ་ལིའི་སྒྲོ་ནས་ངག་རྣམ་པར་དབེན་པ་ལ་འཇུག་གོ །གང་གི་ཚེ་རྡོ་རྗེ་བཟླས་པའི་རིམ་གྱིས་སྲོག་དང་རྩོལ་བ་ཞེས་པར་གྱུར་པ་དེའི་ཚེ་གསུང་རྡོ་རྗེའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་རབ་ཏུ་གནས་པར་འགྱུར་རོ། །ངག་རྣམ་པར་དབེན་པ་ལ་གནས་ནས་རང་བཞིན་གྱིས་སྣང་བའི་རིམ་གྱིས་སེམས་རྣམ་པར་དབེན་པ་ལ་འཇུག་གོ །གང་གི་ཚེ་རང་བཞིན་གྱིས་སྣང་བ་ལ་རླུང་གི་བཞོན་པའི་རབ་ཏུ་དབྱེ་བས་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ཡོབས་པ་[2]དེའི་ཚེ་སེམས་ཀྱི་[3]ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སློམས་པར་འཇུག་པར་འགྱུར་རོ། །སེམས་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ལ་གནས་ནས་སྒྱུ་མའི་དཔེ་བཅུ་གཉིས་ཀྱིས་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ལ་འཇུག་པར་འགྱུར་རོ། །གང་གི་ཚེ་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སློམས་པར་འཇུག་པ་དེའི་ཚེ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་དབང་བསྐུར་བ་ཐོབ་བོ། །གང་གི་ཚེ་དབང་བསྐུར་བ་ཐོབ་པ་དེའི་ཚེ་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་[4]གནས་ནས་སྟོང་པ་ཆེན་པོ་

1. དབྱེ་བས། གསེར།
2. སློབ་པ། གསེར།
3. རྒྱ་དཔེར་'སེམས་ཀྱི་རྡོ་རྗེའི་'།
4. ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་གནས་ལ། གསེར།

བཅོ་བརྒྱད་ཀྱི་[1]རིམ་གྱིས་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ལ་འཇུག་གོ །གང་གི་ཚེ་རི་ལ་པོར་འཛིན་པ་དང་རྗེས་སུ་གཞིག་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་ཡང་དག་པའི་མཐའ་ལ་འཇུག་པ་དེའི་ཚེ་ཉོན་མོངས་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་དག་པར་འགྱུར་རོ། །གང་གི་ཚེ་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་[2]རིམ་གྱིས་ལྷང་བའི་ཕྱིར་རང་བཞིན་གྱིས་[3]འོད་གསལ་བའི་བདེན་པ་གཉིས་ལ་གཉིས་སུ་མེད་པའི་རྣམ་པས་བདག་ཉིད་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་པ་དེའི་ཚེ་རྫོགས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་ཐོབས་པར་གྱུར་པ་ཡིན་ནོ། །གང་གི་ཚེ་རྫོགས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྐོམས་པར་ཞུགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པས་ནི་ཕྱིས་ཆོས་གང་ལ་ཡང་མི་སློབ་བོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། སྔོན་[4]ལེགས་པར་བསླབས་པའི་ཕྱིར་ཏེ་དཱི་ལྟར་འཕོང་གི་སློབ་དཔོན་ནི་སྒྲས་མཚོན་པ་ལ་ཕོག་པར་བྱེད་པར་གནས་པས་ཕྱིས་གང་དུ་ཡང་མི་སློབ་བོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། སྔོན་ལེགས་པར་བསླབས་པའི་ཕྱིར་དེའི་སྔོན་གྱི་འཕེན་ཤུགས་ཀྱི་སྟོབས་ཀྱིས་མངོན་དུ་འགྱུར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་རྫོགས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་རབ་ཏུ་གནས་པ་ནི་ཕྱིས་གང་ལ་ཡང་སློབ་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། སྔོན་ཤིན་ཏུ་ལེགས་པར་བསླབས་པའི་ཕྱིར། དེའི་འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་

1. ཀྱིས། གསེར།
2. ཀྱི། གསེར།
3. ཀྱིས། ཅོ།
4. དེས་སྔོན། གསེར།

ལས་འདས་པའི་དངོས་གྲུབ་དག་ནི་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ་པ་ཉིད་དུ་མངོན་སུམ་དུ་འགྱུར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་རྫོགས་པའི་རིམ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སློབ་པར་བྱེད་པས་ཀྱང་རིམ་གྱིས་འཇུག་པས་བསླབ་པར་བྱའི་ཅིག་ཅར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ན་ལུས་རྣམ་པར་དབེན་པ་མེད་པར་ངག་[1]རྣམ་པར་དབེན་པ་ཤེས་པར་མི་ནུས་སོ། །ངག་རྣམ་པར་དབེན་པ་དང་བྲལ་བས་ནི་སེམས་རྣམ་པར་དབེན་པ་རྟོགས་པར་མི་ནུས་སོ། །སེམས་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་སྣང་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་མེད་པར་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་མངོན་སུམ་དུ་བྱ་བར་མི་ནུས་སོ། །ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་རྟོགས་པ་དང་བྲལ་བས་ནི་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་མངོན་སུམ་དུ་བྱ་བར་མི་ནུས་སོ། །དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་རྟོགས་པ་མེད་པར་ནི་ཟུང་དུ་འཇུག་པའི་རིམ་པ་མངོན་སུམ་དུ་བྱ་བར་མི་ནུས་སོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་དོན་གྱི་དབང་འདི་གཟིགས་ནས་རིམ་གྱིས་འཇུག་པར་བསླབ་པར་བྱའི་ཅིག་ཅར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །རིམ་གྱིས་འཇུག་པས་རྫོགས་པའི་རིམ་པ་ལ་བསླབས་པས་ཅིག་ཅར་རང་གི་རྒྱུད་རྣམ་པར་དག་པར་འགྱུར་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་ལང་ཀར་གཤེགས་པའི་མདོ་ལས། ''བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འདི་ལྟ་སྟེ། མེ་ལོང་གི་ནང་དུ་གཟུགས་ཀྱི་གཟུགས་སུ་སྣང་བ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་པས་ཅིག་ཅར་སྣང་ངོ་། །དེ་བཞིན་དུ་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་བཞིན་

---

1. ངག གསེར་བྲིས་སུ་མེད།

གཤེགས་པ་ཡང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་གི་སེམས་སྣང་བའི་རྒྱུད་རྣམ་པར་མི་རྟོག་ཅིང་སྣང་བ་མེད་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་རྣམས་ཅིག་ཅར་རྣམ་པར་སྤྱོང་ངོ་[1]། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འདི་ལྟ་སྟེ། ཟླ་བ་དང་ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་ནི་འོད་ཟེར་རྣམས་ཀྱིས་གཟུགས་སུ་སྣང་བ་ཐམས་ཅད་ཅིག་ཅར་མངོན་པར་བྱེད་དོ།། དེ་བཞིན་དུ་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཡང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་[2]རང་གི་སེམས་སྣང་བའི་གནས་ངན་ལེན་གྱི་བག་ཆགས་དང་བྲལ་བ་རྣམས་ལས་[3]རྒྱལ་བའི་ཡེ་ཤེས་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་ཡུལ་དང་སྤྱོད་ཡུལ་ཡང་དག་པར་སྟོན་ཏོ།'' །འདིར་བཤད་པ།

སེམས་ཅན་དང་པོའི་ལས་ཅན་རྣམས། །
དམ་པའི་དོན་ལ་འཇུག་པ་ལ། །
ཐབས་འདི་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱིས། །
སྐྱེས་ཀྱི་རིམ་པ་ལྟ་བུར་གཞག །

ཅེས་བྱ་བའི་རིམ་པ་ལྟའི་གོ་རིམས་དང་བྲལ་བས་ནི་རྫོགས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་རྟོགས་པར་མི་ནུས་སོ་ཞེས་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །

སྤྱོད་པ་བསྡུས་པ་ལས་ཐེ་ཚོམ་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་སྟེ་ལེའུ་དང་པོའོ།། །།

---

1. སྤྱོད་དོ། ཅོ།
2. ཐམས་ཅད་ཀྱི། གསེར་བྲིས་སུ་མེད།
3. རྣམས་ལ། གསེར།

ལེའུ་གཉིས་པ།

རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་དང་པོར་རང་གི་ལུས་རྣམ་པར་དབེན་པ་ལ་ཇི་ལྟར་སློབ་པར་བགྱི། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། སེམས་ཅན་ཆེན་པོ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། །ལུས་རྣམ་པར་དབེན་པ་རྒྱ་ཆེར་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་ཁམས་བཞི་པོས་ལུས་མངོན་པར་བསྐྱེད་པ་ལས་ལུས་སུ་གྲུབ་པ་འདི་ནི་སྤུངས་པ་བཞིན་དུ་གནས་ཏེ། ཤའི་ཁམ་ཚད་དང་། རྩ་དང་། རྒྱུས་པ་དང་། མགོ་བོ་དང་། ཀླད་པ་དང་། ཀླད་རྒྱུས་དང་། རུས་པ་དང་། རྐང་དང་། རྒྱུ་མ་དང་། གཉེ་མ་དང་། མཁལ་མ་དང་། སྙིང་དང་། ལྷོ་དང་། གློ་བ་དང་། མཆེར་པ་དང་། གཅིན་དང་། ཕྱི་ས་དང་། ལྒང་པ་དང་། ཕོ་བ་དང་། ཡོང་ཀ་དང་། ཞག་དང་། ཆུ་སེར་དང་། རྣག་དང་། ཁྲག་དང་། མཁྲིས་པ་དང་། བད་ཀན་དང་། ངར་སྣབས་དང་། སྐྲ་དང་། ཁ་སྤུ་དང་། སེན་མོ་དང་། སྤུ་དང་། པགས་པ་དང་། ལག་པ་དང་། རྐང་པ་དང་། མིག་དང་། ཡན་ལག་ལ་སོགས་པ་ཚོགས་པ་ལས་སྤུངས་པ་ཞེས་བྱའོ།།

ཡང་དེ་ལ་ཕུང་པོ་ལྔ་དང་། ཁམས་བཞི་དང་། སྐྱེ་མཆེད་དྲུག་དང་། ཡུལ་ལྔ་དང་། ཤེས་པ་ལྔ་ནི་སྤུངས་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། དཔེར་ན་འབྲས་དང་།

ནས་དང་། ཏིལ་དང་། གྲོ་དང་། མོན་སྲན་སྡེའུ་མང་པོ་ལ་སྤྱངས་པ་ཞེས་བྱའོ། །དེ་བཞིན་དུ་ལུས་ཀྱི་ཡན་ལག་དང་། ཉིང་ལག་ཏུ་གཏོགས་པ་ཚོགས་པ་ལ་སྤྱངས་པ་ཞེས་བྱའོ། །

ཁམས་རྣམས་ཚོགས་པ་ལས་ཤེས་རབ་དང་། ལྟ་བ་དང་། ཡིད་དང་།[1] མ་རིག་པ་དང་། བག་ཆགས་དང་། སྲིད་པ་དང་། ཉོན་མོངས་པའི་རྒྱུན་ལ་ནི་བསགས་པ་ཞེས་བྱའོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཚོགས་པ་སྤྱངས་པ་ནི་ཉེ་བར་དམིགས་པར་མི་འགྱུར་ཏེ་གནས་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །

ཇི་སྐད་དུ། བཟང་སྐྱོང་གིས་ཞུས་པ་ལས་[2]ཀྱང་། "ལུས་འདི་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གང་ན་ཡང་མི་གནས་ཏེ། རྣམ་པར་ཤེས་པ་མེད་ན་ཡང་ལུས་སྐྱེ་བར་མི་འགྱུར་རོ།" "།བཟང་སྐྱོང་དེའི་ཕྱིར་ཉོན་ཅིག བདེན་པ་མ་མཐོང་བས་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་མི་ཤེས་མི་མཐོང་སྟེ། དེ་ནི་ལག་མཐིལ་དུ་སྐྱུ་རུ་ར་བཞག་པ་བཞིན་དུ་མཐོང་བར་མི་འགྱུར་རོ།" །ཞེས་གསུངས་སོ། །

ཡང་འདི་ལྟར་ཕུང་པོ་དང་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་རྣམས་ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་ཐ་མལ་པའི་ང་རྒྱལ་གྱིས་གནས་པ་རྣམས་ཀྱིས་[3]ནི་ད་ལྟར་དེ་བཞིན་

---

1. རྒྱ་དཔེར་(སྣན)ང་རྒྱལ་ཞེས་གསལ།

2. Toh. 83 སྡེ། བཀའ། 'ཆ' ཤོག- ༧༨བ༡, ༨༩བ༥།

3. ཀྱིས། གསེར་བྲིས་སུ་མི་གསལ།

གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་དུལ་ཕྲ་རབ་ལས་བསྒྲུབས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་བསྟན་ཏེ། གསང་བ་འདུས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས།

མདོར་ན་ཕུང་པོ་ལྔ་རྣམས་ནི། །
སངས་རྒྱས་ལྔར་ནི་རབ་ཏུ་བསྒྲགས། །
རྡོ་རྗེ་སྐྱེ་མཆེད་ཉིད་དག་ཀྱང་། །
བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་དཀྱིལ་འཁོར་མཆོག །

ས་ནི་སྤྱན་ཞེས་བྱ་བ་ནི། །
ཆུ་ཡི་ཁམས་ནི་མཱ་མ་ཀཱི། །
མེ་ཡི་ཁམས་ནི་གོས་དཀར་མོ། །
སྒྲོལ་མ་རླུང་དུ་རབ་ཏུ་བསྒྲགས། །

གཟུགས་དང་སྒྲ་སོགས་སྤྱགས་པ་ཡིས། །
ལྷ་ཉིད་དུ་ནི་རྟག་ཏུ་བསྒོམ། །

ཞེས་གསུངས་པ་དང་། ཡང་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་དེ་དག་རེ་རེ་ཞིང་ཡང་ལྔ་ལྔར་རྣམ་པར་ཕྱེ་ན་བརྒྱར་འགྱུར་ཏེ། ཟླ་གསང་ཐིག་ལེ་ལས[1]།

རིགས་ནི་རྣམ་པ་བརྒྱར་བསྟན་ཏེ། །
མདོ་རུ་བསྡུས་ན་རྣམ་པ་ལྔ། །

1. Toh. 477 སྡེ། བཀའ། རྒྱུད། 'ཛ' ཤོག་གྲངས- ༣༨༨ན༥།

ལུས་དང་ངག་ཡིད་སྒྲོར་བ་ཡིས།

གསུམ་དུ་ཡང་ནི་འགྱུར་བ་ཡིན།

ཞེས་གསུངས་པས་དེ་ལ་དང་པོ་ཉིད་དུ་རིགས་བརྒྱའི་རབ་ཏུ་དབྱེ་བ་བསྟན་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་གཟུགས་ཀྱི་ཕུང་པོའི་ཚོགས་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དོ།། དེ་ཡང་རྣམ་པ་ལྔར་ཕྱེ་བ་ལ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམ་པ་ལྔས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་རིང་པོ་དང་ཐུང་ངུ་ལ་སོགས་ཕྱི་དང་ནང་དང་གཉིས་ཀའི་དབྱེབས་ཀྱི་གཟུཏ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ།། བདག་དང་གཞན་གཉིས་ཀ་[1]ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པའི་གཟུགས་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིས་[2]སོ། །ཕྱི་ནང་གི་སྔོན་པོ་ལ་སོགས་པ་ཁ་དོག་ལྔའི་གཟུགས་ནི་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་ཀྱིས་སོ། །ཕྱི་དང་ནང་གི་ཟླ་བ་དང་། ཉི་མ་ལ་སོགས་པ་སྣང་བའི་རྣམ་པ་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པས་སོ། །རང་རིག་པ་ཙམ་འབའ་ཞིག་གི་རྣམ་པར་རིག་བྱེད་མ་ཡིན་པ་ནི་མི་བསྐྱོད་པས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་སྟེ། གཟུགས་ཀྱི་ཕུང་པོ་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ། །རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་བཤད་པ། ཚོར་བའི་ཕུང་པོའི་ཚོཏ་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་ནོ། །དེ་ཡང་དེ་བཞིན་གཤེཏ་པ་ལྔས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཡིན་ཏེ།

1. གཉིས་ག། ཅོ།

2. ཀྱིས། ཅོ།

དེ་ལ་འདུས་པ་དང་མཁྲིས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཚོར་བ་ནི་མི་བསྐྱོད་པས་སོ། །
བད་ཀན་དང་རླུང་ལས་སྐྱེས་པའི་ཚོར་བ་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིས་སོ། །
བདེ་བའི་ཚོར་བ་ནི་འོད་དཔག་མེད་ཀྱིས་[1]སོ། །སྡུག་བསྔལ་གྱི་ཚོར་བ་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པས་སོ། །ཚོར་བ་མཉམ་པ་ཉིད་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། ཚོར་བའི་ཕུང་པོ་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ། །

སྣང་བ་མཐའ་ཡས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་བཤད་པ། འདུ་ཤེས་ཀྱི་ཕུང་པོའི་ཚོགས་ནི་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་ཏེ། འདི་ནི་[2]རྒྱུ་བ་དང་མི་རྒྱུ་བའི་དངོས་པོ་རྣམས་སྐྱེས་པ་རྣམས་ཀྱི་འདུས་བྱས་པ་ཉིད་ཀུང་རྐང་གཉིས་དང་རྐང་མེད་[3]ལ་སོགས་པའི་དབྱེ་བས་ཕྱེ་ན་མིང་ཐ་དད་པའི་དངོས་པོར་ཡོད་པ་རྣམས་ལ་དེ་རྣམ་པར་ཤེས་པས་ཉེ་བར་བཟུང་ནས་ཡོངས་སུ་གཅོད་པར་བྱེད་ལ་མཚན་མ་དེའི་འདུ་ཤེས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཞེས་བྱ་བར་ཐ་དད་པར་རྣམ་པར་འཇོག་པར་འགྱུར་རོ། །འདུ་ཤེས་དེ་ཡང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་རྐང་གཉིས་པའི་འདུ་ཤེས་ནི་མི་བསྐྱོད་པའི་འོ།། རྐང་བཞི་པའི་འདུ་ཤེས་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིའོ། །རྐང་མེད་ཀྱི་འདུ་ཤེས་

1. གྱིས། ཅོ།
2. འདི་ན། གསེར།
3. རྒྱ་དཔེར་'རྐང་པ་དང་རྐང་གཉིས་'ཞེས་གསལ།

ནི་འདོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་འོ། །ཀུང་མངས་ཀྱི་འདུ་ཤེས་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པའིའོ། །མི་གཡོ་ཞིང་མི་འགྱུར་བའི་འདུ་ཤེས་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་སྟེ་འདུ་ཤེས་ཀྱི་ཕུང་པོ་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ། །དོན་ཡོད་གྲུབ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་བཤད་པ། འདུ་བྱེད་ཀྱི་ཕུང་པོའི་ཚོཊ་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པའོ། །དེ་ཡང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཡིན་ཏེ། ལུས་ཀྱི་འདུ་བྱེད་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིའོ། །ངག་གི་འདུ་བྱེད་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་འོ། །ཡིད་ཀྱི་འདུ་བྱེད་ནི་མི་བསྐྱོད་པའི་འོ། །ཁམས་གསུམ་གྱི་འདུ་བྱེད་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིའོ། །ཐར་པའི་འདུ་བྱེད་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་སྟེ། འདུ་བྱེད་ཀྱི་ཕུང་པོ་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ། །མི་བསྐྱོད་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་བཤད་པ། གང་དོན་གཟུང་བ་དང་། དོན་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་དང་། དོན་ཁོང་དུ་ཆུད་པ་དེ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པའོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་གནས་པས་ཀྱང་ཕྱིའི་དོན་གྱི་རྣམ་པར་རབ་ཏུ་བརྟགས་ལ། ཕྱིའི་དོན་གྱིས་ཀྱང་[1]རྣམ་པར་ཤེས་པར་བརྟགས་ཏེ། དེ་ལྟར་ཕན་ཚུན་ལྟོས་པས་ཤེས་པ་དང་། ཤེས་པར་བྱ་བ་གཉིས་གྲུབ་བོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པ་དེ་ཡང་རྣམ་པ་ལྔར་ཕྱེ་བ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཡིན་པར་ཤེས་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་རྣམ་

1. དོན་གྱི། གསེར།

པར་ཤེས་པའི་ཕུང་པོའི་ཚོགས་ནི་མི་བསྐྱོད་པ་སྟེ། མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིའོ། །རྣ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིའོ། །སྣའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་འོ། །ལྗེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པའི་འོ། །ལུས་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་མི་བསྐྱོད་པས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་སྟེ། རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཕུང་པོ་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ། ''།མདོར་ན་ཕུང་པོ་ལྔ་རྣམས་ནི། སངས་རྒྱས་ལྔར་ནི་རབ་ཏུ་བསྒྲགས། ''།ཞེས་བྱ་བའི་མདོའི་དོན་བཤད་ཟིན་ཏོ། །

ཁམས་རྣམ་པ་བཞིའི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་བཤད་པ། སའི་ཁམས་གང་ཞེ་ན། གང་ལྷི་བ་ཉིད་དང་སྲ་བ་ཉིད་དེ། དེ་ཡང་ལས་ནི་བརྟན་པའོ། །ཆུའི་ཁམས་གང་ཞེ་ན། གང་གཤེར་བ་ཉིད་དང་རླན་པ་ཉིད་དེ། དེ་ཡང་ལས་ནི་སྡུད་[1] པའོ།། དེ་ལ་མེའི་ཁམས་གང་ཞེ་ན། གང་དྲོ་བ་ཉིད་དང་ཡོངས་སུ་སྨིན་པ་ཉིད་དེ། དེ་ཡང་ལས་ནི་སྨྲེམས་པའོ། །དེ་ལ་རླུང་གི་ཁམས་གང་ཞེ་ན་གང་བསྐྱང་བ་དང་། བསྐུམ་པ་དང་། དབུགས་རྔུབ་པ་དང་། དབུགས་འབྱིན་པ་ཉིད་དེ། ལས་ནི་ཡང་ཞིང་གཡོ་བའོ། །

དེ་ལྟར་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་རིམ་པས་ཁམས་རྣམ་པ་བཞིའི་རང་རང་གི་མཚན་ཉིད་རྣམ་པར་བཞག་ནས། ད་ནི་ཐ་མལ་པའི་ང་རྒྱལ་རྣམ་པར་སྤང་

1. བསྡུད། གསེར།

བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་རིམ་པས་སངས་རྒྱས་ལྷའི་རང་བཞིན་དུ་བྱ་སྟེ། དེ་ལ་སའི་ཁམས་ཀྱི་ཚོགས་ནི་སངས་རྒྱས་སྤྱན་ནོ། །དེ་ཡང་ཁམས་རྣམ་པ་ལྔར་ཕྱེ་བ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔས་[1]བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཡིན་ཏེ། ཤ་དང་རུས་པ་དང་། ཕྱི་ས་དང་། མཆིན་པ་དང་། སྙིང་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིའོ། །སྤྱི་དང་། སེན་མོ་དང་། རྣག་དང་། སྙིང་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིའོ། །སོ་དང་། པགས་པ་དང་ཤ་དང་། སྙིང་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའོ། །རྒྱུས་པ་དང་ཤ་[2]དང་། རྩིབ་མ་དང་། སྙིང་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པའིའོ[3]།། ཐྲི་མ་དང་། རྒྱུ་མ་དང་མཁྲིས་པ་དང་། སྙིང་ནི་མི་བསྐྱོད་པ་སྟེ། ཇི་སྐད་དུ་རྡོ་རྗེ་ཕྲེང་བ་ལས་ཀྱང་།

སྙིང་ནི་ལྔ་ལ་ངེས་གནས་ཏེ། །
རྒྱུད་ལྔར་རྣམ་པར་འབྱུང་བ་ནི། །
རླུང་ལྔ་དང་ནི་ལྡན་པ་རུ། །
འདོད་པ་ལྔ་རྣམས་སྤྱོད་པར་བྱེད། །ཅེས་གསུངས་པས་སོ།།

དེ་བཞིན་དུ་ཡང་ཕྱི་རོལ་གྱི་སའི་ཁམས་ཀྱང་རྣམ་པ་ལྔར་དབྱེ་སྟེ། དེ་ཡང་

1. དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔ། སྡེ། ཅོ།
2. རྒྱ་དཔེར་ (མྣག)ལམ་ཞེས་གསལ།
3. གྲུབ་པའོ། སྡེ། ཅོ།

གླིང་བཞི་དང་ནི་རི་རབ་བོ། །དེ་ལ་རིའི་རྒྱལ་པོ་རི་རབ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ། །ལུས་འཕགས་པོ་ནི་མི་བསྐྱོད་པས་[1]བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ། །འཛམ་བུ་གླིང་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ། །བ་ལང་སྤྱོད་ནི་འོད་དཔག་མེད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ།། སྒྲ་མི་སྙན་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ། །སའི་ཁམས་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ། །སྣམ་ཀྱིའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་[2]བཤད་པ། དེ་ལ་ཆུའི་ཁམས་ཀྱི་ཚོགས་ནི་སྣམ་ཀྱིའོ། །དེ་ཡང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་སྟེ། བད་ཀན་དང་མཆི་མ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའོ། །གཅིན་ནི་མི་བསྐྱོད་པས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ།། རྡུལ་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ། །ཁྲག་ནི་འོད་དཔག་མེད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ། །ཁ་ཆུ་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ། །

ཕྱི་རོལ་གྱི་ཡང་རྣམ་པ་ལྔར་བསྟན་ཏེ། དེ་ཡང་རྒྱ་མཚོའི་ཆུ་ནི་མི་བསྐྱོད་པའོ། །ཆུ་བོའི་ཆུ་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིའོ། །བཀོད་མའི་ཆུ་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའོ། །ལྟེང་ཀའི་ཆུ་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པའི་འོ། །འབབ་ཆུའི་ཆུ་

1. མི་བསྐྱོད་པ་ཡིས། གསེར།
2. བྱ་ཏེ། གསེར།

ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་སྟེ་ཆུའི་ཁམས་རྣམ་པ་ལྟར་བཤད་དོ། །གོས་དཀར་མོའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་བཤད་པ[1]། མེའི་ཁམས་ཀྱི་ཚོགས་ནི་གོས་དཀར་མོའོ། །དེ་ཡང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་སྟེ། མགོ་བོའི་དྲོད་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ། །སྙིང་གའི་དྲོད་ནི་མི་བསྐྱོད་པའི་འོ། །ལྟེ་བའི་དྲོད་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིའོ། །ཡན་ལག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དྲོད་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་འོ།། ལྟོ་བའི་དྲོད་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ། །

ཕྱི་རོལ་གྱི་ཡང་རྣམ་པ་ལྟར་བསྟན་ཏེ། དེ་ལ་རྒྱུན་བཞག་གི་མེ་ནི་མི་བསྐྱོད་པའི་འོ། །རྡོ་ལས་བྱུང་བའི་མེ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིའོ། །མེ་ཤེལ་ལས་བྱུང་བའི་མེ་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིའོ། །ཤིང་ལས་བྱུང་བའི་མེ་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་འོ། །ནགས་ཀྱི་མེ་ནི་དོན་ཡོད་པར་གྲུབ་པས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་སྟེ། མེའི་ཁམས་རྣམ་པ་ལྟར་བཤད་དོ། །སྒྲོལ་མའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་བཤད་པ། དེ་ཡང་རླུང་གི་ཁམས་ཀྱི་ཚོགས་ནི་སྒྲོལ་མའོ།། དེ་ཡང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་སྲོག་ཅེས་བྱ་བ་སྙིང་ལ་གནས་པ་ནི་མི་བསྐྱོད་པའི་འོ། །ཐུར་དུ་སེལ་བ་ཞེས་བྱ་བ[2]

1. བཤད་དོ། གསེར།

2. ཞེས་བྱ་བ་ནི། གསེར།

མདོམས་ན་གནས་པ་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིའོ། །སྙིང་དུ་རྒྱུ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལྐོག་མར་གནས་པ་ནི་འོད་དཔག་མེད་ཀྱིའོ། །མེ་དང་མཉམ་དུ་གནས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལྟེ་བར་གནས་པ་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པའི་འོ། །ཁྱབ་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་ཚིགས་ཐམས་ཅད་ལ་གནས་པ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ།། ཡང་དེ་རྣམས་རེ་རེའི་ལས་བཤད་པ།

དབང་པོའི་སྣོ་ཡི་རྒྱུན་ལས་ནི། །
སྲོག་དང་རྩོལ་བ་རྒྱུ་བ་དང་། །
རྟག་པའི་དུས་སུ་རྒྱུ་བ་ནི། །
སྲོག་ཅེས་བྱ་བ་ཡིན་པར་བཤད། །

རླུང་དང་གཅིན་དང་ཕྱི་ས་དང་། །
དེ་བཞིན་དུ་ནི་ཁུ་བ་རྣམས། །
འོག་འདྲེན་འདི་ནི་ཕྱུར་སེལ་བར། །
རྟག་ཏུ་རྣལ་འབྱོར་པས་ཤེས་བྱ། །

མྱུང་དང་ཟླ་དང་བཞུག་པ་དང་། །
ཀུན་དུ་འབྱུང་དང་འཇིབ་པར་ནི། །
གང་ཞིག་རྟག་ཏུ་མཉམ་གནས་པར། །
མཉམ་དུ་གནས་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན། །

གྱེན་དུ་འགྲོ་ཞིང་སྡུད་པ་དང་། །
བཟའ་དང་མྱང་སོགས་ཟ་བ་ནི། །
ཤེས་དང་ལྷན་ཅིག་འགྱུར་པ་དག །
གྱེན་རྒྱུའི་ལས་སུ་ཤེས་པར་བྱ། །
ཁྱབ་དང་འཛིན་པ་ཉིད་དང་ནི། །
འགྲོ་དང་དེ་བཞིན་ལྡོག་པ་དང་། །
ཚིགས་རྣམས་ཀུན་ལ་ཁྱབ་པས་ན། །
ཁྱབ་བྱེད་ཅེས་ནི་བྱ་བར་བཤད།[1] །

ཕྱི་རོལ་གྱི་ཡང་རྣམ་པ་ལྔར་བལྟ་སྟེ། ཤར་གྱི་རླུང་ནི་མི་བསྐྱོད་པའི་འོ།། ལྷོའི་རླུང་ནི་རིན་འབྱུང་ལྡན་གྱི་འོ། །ནུབ་ཀྱི་རླུང་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའིའོ།། བྱང་གི་རླུང་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པའི་འོ། །སྟེང་གི་རླུང་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་སྟེ་རླུང་གི་ཁམས་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ། །འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་བཞི་པོ་འདི་རྣམས་ནི་གང་དུ་གཅིག་ཡོད་པ་དེར་བཞི་ཆར་ཡོད་དེ། དེ་བས་ན་འདི་རྣམས་ནི་ཕན་ཚུན་ལྟོས་པ་མེད་པར་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་རང་གྲུབ་པ་ནི་མེད་དོ། །ནམ་མཁའ་ནི་དབང་པོ་ལས་འདས་ཤིང་འདུས་མ་བྱས་པའི་

1. Toh. 445 རྡོ་རྗེ་ཕྲེང་བ། སྡེ། བཀའ། རྒྱུད། 'ཅ' ཤོག་གྲངས་ ༢༧༦བ༢ འགྱུར་ཕྲན་བུ་མི་འདྲ་བར་སྣང་།

ཕྱིར་འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་མ་ཡིན་ཏེ། གོ་འབྱེད་པར་བྱེད་པས་ན་ནམ་མཁའ་ནི་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ལ་མི་སྒྲིབ་པའི་བྱ་བ་བྱེད་དོ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུའོ། །

ས་ནི་སྤྱན་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན། །
ཆུ་ཡི་ཁམས་ནི་སྣ་མ་ཀྐུ[1]། །
མེ་ནི་གོས་དཀར་མོ་ཡིན་ནོ། །
རླུང་ནི་སྒྲོལ་མར་རབ་ཏུ་བསྒྲགས། །

ཞེས་བྱ་བའི་མདོའི་ཚིག་བཤད་ཟིན་ཏོ། །

ད་ནི་[2]སའི་སྙིང་པོ་ལ་སོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་བཤད་པ། དེ་ལ་མིག་གི་སྐྱེ་མཆེད་ཀྱི་ཚོགས་ནི་སའི་སྙིང་པོའོ། །དེ་ཡང་རྣམ་པ་ལྔར་ཕྱེ་བ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་མིག་གི་འབྲས་བུའི་ནང་ན་ཀུན་འབྱུམ་[3]འབྲས་བུའི་ཚད་ཙམ་གྱི་མིག་གི་དབང་པོ་དེ་ནི་མི་བསྐྱོད་པའིའོ། །མིག་འབྲས་དཀར་པོའི་རང་བཞིན་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིའོ།། ཟུར་གྱིས་ལྟ་བའི་གཟུགས་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའིའོ། །མིག་

---

1. སྣ་མ་ཀྐུ། ཅོ།
2. དེ་ནི། ཅོ།
3. ཀུན་འབྱུའི། ཅོ། སྣེ།

རྣམ་པར་གཡོ་བ་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པའི་འོ། །གཟུགས་གསུམ་འཛིན་པ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཡིན་ཏེ་མིག་གི་སྐྱེ་མཆེད་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ། །དེ་བཞིན་དུ་རྣ་བའི་སྐྱེ་མཆེད་ཀྱི་ཚོགས་ནི་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་སྟེ། འདི་ལ་རྣ་བའི་ནང་ན་གྲོ་ག་གཅུས་[1]ཏེ་བཅད་པ་ལྟ་བུའི་རྣམ་པའི་[2]དྲུལ་ཕྲ་རབ་བསགས་པའི་གཟུགས་ཅན་རྣ་བའི་དབང་པོ་ནི་མི་བསྐྱོད་པའི་འོ། །རྣ་བའི་རང་བཞིན་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིའོ། །རྣ་བའི་བུ་ག་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་འོ། །རྣ་བའི་རྩ་བ་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པའི་འོ། །སྒྲ་གསུམ་འཛིན་པ་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིས་[3]བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཡིན་ཏེ་རྣ་བའི་སྐྱེ་མཆེད་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ། །སྣའི་སྐྱེ་མཆེད་ཀྱི་ཚོགས་ནི་ནམ་མཁའི་སྙིང་པོ་སྟེ། སྣའི་ནང་གི་མིག་སྨན་གྱི་ཐུར་མ་ཕྲ་བ་ལྟ་བུའི་དྲུལ་ཕྲ་རབ་བསགས་པའི་གཟུགས་ཅན་སྣའི་དབང་པོ་དེ་ནི་མི་བསྐྱོད་པའིའོ། །སྣའི་རང་བཞིན་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིའོ། །ནང་གི་དབུས་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིའོ། །སྣ་བུག་ནི་དོན་ཡོད་པར་གྲུབ་པའི་འོ། །དྲི་གསུམ་འཛིན་པ་ནི་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་ཀྱི་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཡིན་ཏེ། སྣའི་སྐྱེ་མཆེད་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ། །ལྗེའི་སྐྱེ་

1. གྲོ་བ་བཙུས། གསེར།
2. 'རྣམ་པའི་' གསེར་ཕྲིས་སུ་མེད།
3. གྱི། གསེར།

མཆེད་ཀྱི་ཚོགས་ནི་འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག་སྟེ། དེ་ལ་རྟུལ་ཕྲ་རབ་བསགས་པའི་གཟུགས་ཅན་ཟླ་བ་ཕྱེད་པའི་དབྱིབས་ལྟ་བུའི་ལྕེའི་དབང་པོ་ནི་མི་བསྐྱོད་པའི་འོ། །ལྕེའི་རང་བཞིན་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིའོ། །ལྕེའི་རྩ་བ་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིའོ། །ལྕེའི་རྩེ་མོ་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་འོ། །རོ་གསུམ་འཛིན་པ་ནི་དོན་ཡོད་པར་གྲུབ་པས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཡིན་ཏེ། ལྕེའི་སྐྱེ་མཆེད་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ། །

ལུས་ཀྱི་སྐྱེ་མཆེད་ཀྱི་ཚོགས་ནི་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སེལ་བ་སྟེ། དེ་ལ་ལུས་ཀྱི་རྟུལ་ཕྲ་རབ་བསགས་པའི་མ་ལུས་པའི་གཟུགས་ཀྱི་[1]ལུས་དབང་པོ་དེ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིའོ། །རུས་པའི་རང་བཞིན་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིའོ། །ཤའི་རང་བཞིན་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་འོ། །པགས་པའི་རང་བཞིན་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པའི་འོ། །རེག་པ་གསུམ་འཛིན་པ་ནི་མི་བསྐྱོད་པས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཡིན་ཏེ། ལུས་ཀྱི་སྐྱེ་མཆེད་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ། །

འཇམ་དཔལ་གྱི་[2]ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་བཤད་པ། འདི་ན་ལུས་ཀྱི་ནང་ན་སྣང་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གསུམ་པོ་[3]དེ་ནི་ཡིད་ཀྱི་དབང་པོ་སྟེ།

1. གཟུགས་ཅན་གྱི། གསེར།
2. རྒྱ་དཔེར་ 'ཀུན་ཏུ་བཟང་པོའི' ཞེས་གསལ།
3. 'གསུམ་པོ' གསེར་བྲིས་སུ་མེད།

དབང་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་པོ་ཡིན་ཞིང་སོ་སོར་རང་རིག་པ་ཡིན་པས་ཕྱིའི་ཡུལ་ནི་མེད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཡུལ་དུ་བྱས་ནས་སྒྱུ་འཕྲུལ་དྲ་བས་མངོན་པར་རྫོགས་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་རིམ་གྱིས་བདག་ཉིད་རྫོགས་པར་བྱས་ནས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་མ་ལུས་པ་དང་ལྡན་པས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ནས་སངས་ཀྱི་ཞིང་དུ་འགྲོ་བའོ། །འཇམ་དཔལ་གྱི་[1]ཏིང་ངེ་འཛིན་བཤད་ཟིན་ཏོ།། རྡོ་རྗེ་སྐྱེ་མཆེད་ཉིད་དག་ཀྱང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་དཀྱིལ་འཁོར་མཆོག ཅེས་བྱ་བའི་མདོའི་དོན་བཤད་ཟིན་ཏོ། །ཡུལ་རྣམས་ལྷ་མོའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་[2]བཤད་པ། རྡོ་རྗེ་སྒོ་ཞེས་བྱ་བ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས་རླུང་བཅུ་གསུངས་ཏེ། འདི་ལྟ་སྟེ། སྲོག་དང་། ཐུར་དུ་སེལ་བ་དང་། གྱེན་དུ་རྒྱུ་བ་དང་། མཉམ་དུ་གནས་པ་དང་། ཁྱབ་བྱེད་དང་། ཀླུང་ཞིང་རྒྱུ་བ་དང་། རྣམ་པར་རྒྱུ་བ་དང་། ཡང་དག་པར་རྒྱུ་བ་དང་། རབ་ཏུ་རྒྱུ་བ་དང་། ངེས་པར་རྒྱུ་བའོ། །དེ་ལ་སྲོག་ལ་སོགས་པའི་རླུང་ལྔ་ནི་ཕུང་པོ་ལྔ་ལ་བརྟེན་ཏེ་ཕུང་པོའི་བྱ་བ་རྣམས་བྱེད་དོ། །ཀླུང་ཞིང་རྒྱུ་བ་ལ་སོགས་པའི་རླུང་ལྔ་ནི་དབང་པོ་རྣམས་ལ་གནས་ནས་ཕྱི་རོལ་གྱི་[3]བྱ་བ་རྣམས་བྱེད་དོ། །དེ་ལ་

1. རྒྱ་དཔེར་'ཀུན་ཏུ་བཟང་པོའི་'ཞེས་གསལ།
2. 'བྱས་ཏེ' གསེར་ཕྲེང་སུ་མེད།
3. རྒྱ་དཔེར་'གནས་ནས་དབང་པོའི་'ཞེས་གསལ།

ལྡང་ཞིང་རྒྱུ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་རླུང་མིག་གི་སྐྱེ་མཆེད་ལ་བརྟེན་ནས་གཟུགས་རྣམ་པ་ལྔའི་བྱ་བ་རྫོགས་པར་བྱེད་དོ། །དེ་ཡང་སྣང་བ་དང་སྒྲིབ་གཡོགས་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་དང་། མིག་གི་དབང་པོ་ཚོགས་པ་དང་ལྡན་པའི་རྒྱུས་གཟུགས་ཀྱི་ཡུལ་རྣམས་མཐོང་སྟེ། དེ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིའོ། །འཁྱིང་བག་དང་རྣམ་པར་རོལ་པ་དང་སྡེག་པའི་གཟུགས་[1]ནི་མི་བསྐྱོད་པའིའོ། །རྗེས་སུ་ཆགས་པའི་གཟུགས་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིའོ། །ཡིད་དུ་འོང་བ་དང་ཡིད་དུ་མི་འོང་བ་དང་བཏང་སྙོམས་ཀྱི་འདུ་ཤེས་ཅན་གྱི་གཟུཊ་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའིའོ། །བྱ་བ་ཐམས་ཅད་སྒྲུབ་པའི་གཟུགས་ནི་དོན་ཡོད་པར་[2]གྲུབ་པས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་སྟེ། གཟུགས་ཀྱི་ཡུལ་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ། །

རྣམ་པར་རྒྱུ་བ་[3]ཞེས་བྱ་བའི་རླུང་ནི་རྣ་བའི་སྐྱེ་མཆེད་ལ་བརྟེན་ནས་སྒྲ་རྣམ་པ་ལྔའི་བྱ་བ་བྱེད་དེ། དེ་ལ་རྣ་བའི་ནང་གི་སྒྲ་དང་མགོ་དང་སྐྲའི་སྒྲ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིའོ། །གླུ་དང་རྒྱན་གྱི་སྒྲ་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིའོ།། ཀན་དང་མཆུ་དང་ངག་གི་སྒྲ་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའིའོ། །ནཊ་ཚལ་དང་ཆུ་བོ་དང་སེ་གོལ་དང་ཐལ་མོ་དང་ཛ་ཛ་ལ་སོཊ་པའི་རོལ་མོའི་སྒྲ་ནི་དོན་ཡོད་

1. སྡེགས་པའི་གཟུགས། གསེར།
2. 'པར་' གསེར་བྲིས་སུ་མེད།
3. དེ་ལ་རྣམ་པར་རྒྱུ་བ། གསེར།

པར་གྲུབ་པའི་ཚོ། །ཡི་གེ་ཧཱུྃ་གི་ཞི་བ་དང་དྲག་པོའི་སྨྲ་ནི་མི་བསྐྱོད་པའི་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཡིན་ཏེ་སྨྲའི་ཡུལ་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ། །ཡང་དག་པར་རྒྱུ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་རླུང་ནི་སྣའི་སྐྱེ་མཆེད་ལ་བརྟེན་ནས་དྲི་རྣམ་པ་ལྔའི་བྱ་བ་བྱེད་དོ།། དེ་ལ་དྲི་མ་ལུས་པ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱི་འོ། །ཡན་ལག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དྲི་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱི་འོ། །དྲི་གསུམ་གྱི་བྱེ་བྲག་འཛིན་པ་[1]ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་འོ། །རོའི་དྲི་ནི་དོན་ཡོད་པར་[2]གྲུབ་པའི་འོ། །གྲི་མི་ཟད་པ་[3]ནི་མི་བསྐྱོད་པས་[4]བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་སྣ་དྲིའི་སྐྱེ་མཆེད་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ། །རབ་ཏུ་རྒྱུ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་རླུང་ནི་ལྗེའི་སྐྱེ་མཆེད་ལ་བརྟེན་ནས་རོ་རྣམ་པ་ལྔ་སྐྱོད་པར་བྱེད་དེ། དེ་ལ་རོ་མངར་བ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱི་འོ།། རོ་བསྐ་བ་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱི་འོ། །ལན་ཚྭའི་རོ་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་འོ། །རོ་ཁ་བ་ནི་མི་བསྐྱོད་པའི་འོ། །རོ་ཚ་བ་དང་སྐྱུར་བ་ལ་སོགས་པའི་རོ་དྲུག་གི་བྱེ་བྲག་ནི་དོན་ཡོད་པར་གྲུབ་པར་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཡིན་ཏེ་རོའི་སྐྱེ་མཆེད་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ། །ངེས་པར་རྒྱུ་བ་ནི་[5]ལུས་ཀྱི་སྐྱེ་མཆེད་ལ་

1. ‘འཛིན་པ་’ རྒྱ་དཔེ་དང་གསེར་བྲིས་སུ་མེད།
2. ‘པར་’ གསེར་བྲིས་སུ་མེད།
3. རྒྱ་དཔེར་‘ དྲིའི་ཡུལ་’ ཞེས་གསལ།
4. པའི། གསེར།
5. ངེས་པར་རྒྱུ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། གསེར།

བརྟེན་ནས་སྟོབས་འགྱེད་པ་ལ་སོགས་པ་སྟོབས་དང་སྤྲོ་བ་རྣམས་ཏེ། དེ་ཡང་རིག་བྱའི་བྱ་བ་ལྔ་རྗེས་སུ་སྐྱོང་བར་བྱེད་དོ། །དེ་ལ་ལྷན་གཅིག་ལ་གནས་པའི་རིག་བྱ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིའོ། །འཁྲུད་པའི་རིག་བྱ་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིའོ། །འོ་བྱེད་པའི་རིག་བྱ་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་འོ། །རྟུབ་པའི་རིག་བྱ་ནི་དོན་ཡོད་པར་གྲུབ་པའི་འོ། །བྷ་ག་དང་ལིངྒའི་སྦྱོར་བའི་རིག་བྱ་ཆཊ་པ་དང་བྲལ་བ་དང་། དབུ་མའི་ཆགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཉེ་བར་དམིཊ་པ་ནི་མི་བསྐྱོད་པས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་སྟེ་རིག་བྱའི་ཡུལ་རྣམ་པ་ལྔར་བཤད་དོ།།

‘‘གཟུགས་སྒྲ་ལ་སོགས་སྤྱགས་པ་ཡིས། །ལྷ་ཉིད་དུ་ནི་རྟག་ཏུ་བསྒོམ།།’’

ཞེས་བྱ་བའི་མདོའི་དོན་བཤད་ཟིན་ཏོ། །

ཡེ་ཤེས་ལྔའི་དབང་དུ་བྱ་སྟེ་བཤད་པ། མེ་ལོང་ལ་གཟུགས་བརྙན་སྣང་བ་བཞིན་དུ་དངོས་པོ་མ་ལུས་པ་རྣམས་ཅིག་ཅར་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ནི་མེ་ལོང་ལྟ་བུའི་ཡེ་ཤེས་ཏེ་དེ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱིའོ། །ཀང་མེད་དང་ཀང་གཉིས་དང་ཀང་བཞི་དང་། ཀང་མངས་ཀྱི་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱང་སེམས་ཙམ་མོ་ཞེས་རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་རྟོགས་པ་ནི་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཏེ་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱིའོ། །ཕུང་པོ་དང་ཁམས་ལ་སོགས་པའི་ཕྱི་དང་ནང་གི་དངོས་པོ་རྣམས་སོ་སོར་རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་རྣམ་པར་བརྟགས་ན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནོ་ཞེས་ཤེས་ནས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆ་ཤས་ནི་འདི་དག་གོ་ཞེས་

པདྨའི་འདབ་མ་ལྟར་སོ་སོར་རྟོག་ཅིང་རྟོག་པ་མེད་པས་གནས་པ་དེ་ནི་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཏེ་དེ་ནི་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའིའོ[1]། །བདག་དང་གཞན་གྱི་བྱ་བ་ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱི་ལས་རྫོགས་པར་བྱེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་བྱ་བ་སྒྲུབ་པའི་ཡེ་ཤེས་ཏེ་དེ་ནི་དོན་ཡོད་[2]གྲུབ་པའོ། །ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་དག་ཅིང་ལས་དང་ཉོན་མོངས་པ་ལས་གྲོལ་ཏེ་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བའི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་བག་ཆགས་རྣམ་པར་སྦྱངས་པ་ནི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་རྣམ་པར་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཏེ་དེ་ནི་མི་བསྐྱོད་པས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ། །དེ་བས་ན།

ཕུང་པོ་ཁམས་དང་དེ་བཞིན་སྐྱེ་མཆེད་[3]རྣམས། །
ལྔ་པོ་དབྱེ་བ་ལྔ་རུ་བྱས་པ་ལ། །
དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་སོ་སོར་བྱིན་བརླབས་ན། །
འཁོར་བའི་ལས་རྣམ་དག་ནི་ག་ལས་འབྱུང་། །

དེ་བཞིན་དབང་པོ་ཕྱི་རོལ་ཡུལ་བཅས་ལྔ། །
རེ་རེ་ཞིང་ཡང་བདེར་གཤེགས་ལྔ་རྣམས་ཀྱིས། །
དེ་ལ་རང་རང་རྟག་ཏུ་བྱིན་རློབ་ཅིང་། །
ཡེ་ཤེས་ལྔ་དང་གསུམ་དུའང་ཡང་དག་གནས། །

---

1. མེད་པའོ། གསེར།
2. དོན་ཡོད་པར། སྣེ། ཅོ།
3. རྒྱ་དཔེར་'དེ་བཞིན་དབང་པོ་'།

ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །རིགས་ནི་རྣམ་པ་བརྒྱར་བཤད་པ། །ཞེས་བྱ་བའི་མདོའི་དོན་བཤད་ཟིན་ཏོ། །

དོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། རིགས་བརྒྱའི་རིམ་པས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྡུལ་ཕྲ་རབ་ཡོངས་སུ་བསཏ་པ་ལས་གྲུབ་པའི་ལུས་ཡིན་པར་[1] སེམས་ཉི་མ་མཆིས་ན། ཡང་ཇི་ལྟར་ན་དེ་ནི་མདོར་བསྡུས་ན་རྣམ་པ་ལྔར་འགྱུར་པ་ལགས། དོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། ཁམས་བཞི་པོ་དག་ལས་ལུས་ཀྱི་ཕུང་པོ་མངོན་པར་འགྲུབ་པར་འགྱུར་ཏེ། ཁམས་རྣམས་ཚོགས་པའི་ཕྱིར་འབྱུང་བ་ལས་གྱུར་པ་འབྱུང་བ་སྟེ། དེ་བས་ན་གང་[2]གཟུགས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་འབྱུང་བ་ལས་གྱུར་པ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རིགས་ཅན་ཏེ། དེ་ནི་སའི་ཁམས་སྟུད་པར་བྱེད་པས་ན་བར་འགྲོའོ། །དེ་བཞིན་དུ་རིན་པོ་ཆེའི་རིགས་ཅན་རྣམས་ནི་ཆུའི་ཁམས་སོ། །པདྨའི་རིགས་ཅན་རྣམས་ནི་མེའི་ཁམས་སོ། །ལུས་ཀྱི་རིགས་ཅན་རྣམས་ནི་རླུང་གི་ཁམས་སོ། །དོ་རྗེའི་རིགས་ཅན་རྣམས་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་སུ་བསྡུས་པར་གྱུར་པ་ཡིན་ནོ། །

ཚུལ་འདིས་ན་རང་གི་ལུས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་འབྱུང་བ་དང་འབྱུང་བ་ལས་གྱུར་པའི་དབྱེ་བས་ཕུང་པོ་ལྔ་རྣམས་བརྒྱར་གྱུར་པ་ཡང་གསང་བ་ལྔའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་

1. པར་ནི། གསེར།

2. 'གང་།' གསེར་ཁྲིས་སུ་མེད།

འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་ལྔའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་འགྱུར་ཏེ། འདིར་གསང་བ་འདུས་པ་ལས།

ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ཀྱི་དབུས་གནས་པར། །
དཀྱིལ་འཁོར་རྡོ་རྗེ་ཀུན་ལས་སྐྱེས། །
ཞི་བ་རྡོ་རྗེ་འཛིན་འདོད་ན། །
བསྡུ་བ་དག་ཀྱང་རབ་ཏུ་བྱ། །

ཞེས་གསུངས་པ་དང་། དོན་དེ་ཉིད་གསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཐམས་ཅད་གསང་བའི་རྒྱུད་ལས།

འབྱུང་བ་ལྔ་ཡི་བདག་ཉིད་ལྔར། །
མི་ཡི་ལུས་ནི་བཏགས་བྱ་སྟེ། །
དངོས་དེ་ངེས་པར་བསྒོམས་པ་ཡིས། །
རང་སེམས་མཐུ་ཡིས་སངས་རྒྱས་འགྱུར། །

ཞེས་བཤད་པ་དང་། ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་རྒྱུད་ལས་ཀྱང་།

འགྲོ་བ་འདི་ཀུན་སངས་རྒྱས་ལྔ་བདག་ཉིད[1]། །
གར་མཁན་དག་དང་རི་མོ་བཟང་ལྟར་སྣང་། །
གང་དུ་བདེ་ཆེན་ཞེས་བྱ་གཅིག་པུ་ཉིད། །
གཅིག་པུ་ཉམས་ནི་དུ་མར་གར་མཛད་དོ། །

1. ལྔའི་བདག གསེར།

ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །མདོར་བསྡུ་ན་རྣམ་པ་ལྔ་ཞེས་བྱ་བའི་མདོའི་དོན་བཤད་ཟིན་ཏོ། །

རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། རྣམ་པ་ལྔ་ལས་ཇི་ལྟར་རྣམ་པ་གསུམ་དུ་འགྱུར་བ་ལགས། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་ནི་སྐུ་རྡོ་རྗེ་དང་ལྷན་ཅིག་གཉིས་སུ་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །དོན་ཡོད་གྲུབ་པ་ནི་གསུང་རྡོ་རྗེ་དང་ལྷན་ཅིག་གཉིས་སུ་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །མི་བསྐྱོད་པ་ནི་དྲུག་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དང་ལྷན་ཅིག་གཉིས་སུ་མེད་པར་འགྱུར་ཏེ། དེ་ལྟར་རིགས་བརྒྱ་ནས་བཙམས་ཏེ། རིགས་ལྔའི་བར་གྱི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ནི་རང་གི་ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱིས་བསྡུས་པར་གྱུར་པ་ཡིན་ནོ། །

ཇི་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་གསང་བ་འདུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས། "དེ་ནས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་མི་ཟད་པའི་རྡོ་རྗེ་གསུམ་གྱིས་ཉིད་ཀྱི་སྐུ་དང་གསུང་[1]དང་ཐུགས་ལ་རབ་ཏུ་ཞུགས་པར་འགྱུར་རོ།" །ཞེས་བྱ་བ་དང་།

ལུས་དང་ངག་དང་སེམས་དམིགས་ན། །
ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་དམིགས་སུ་མེད། །

1. གསུངས། གསེར།

སྔགས་ཀྱི་ལུས་སུ་སྦྱོར་བ་ལ། །
བྱང་ཆུབ་མེད་ཅིང་བསྒོམ་པའང་མེད། །
ལུས་དང་ངག་སེམས་མཚན་ཉིད་དུ། །
མདོར་ན་རྣམ་པར་དཔྱད་ནས་སུ། །
སྔགས་ཀྱིས་བརྟགས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན། །
སྦྱོར་བའི་ཚོ་ག་བསྒོམ་པར་བྱ། །

ཞེས་གསུངས་པ་དང་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་དང་མཉམ་པར་སྦྱོར་བ་མཁའ་འགྲོ་མ་སྒྱུ་མ་བདེ་བའི་མཆོག་ལས་ཀྱང་དོན་འདི་གསལ་བར་བསྟན་ཏེ།

གཟུགས་བརྙན་ལུགས་མ་སོགས་པ་ལས། །
རྣལ་འབྱོར་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་གྱི། །
བྱང་ཆུབ་སེམས་ལ་རབ་བརྟེན་ན། །
དེ་ལས་རྣལ་འབྱོར་ལྷར་འགྱུར་རོ། །

བདག་ཉིད་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་དང་། །
དཔའ་བོ་ཐམས་ཅད་བདག་ཡིན་ནོ། །
དེ་བས་བདག་ཉིད་ལྷར་སྦྱོར་བས། །
བདག་ཉིད་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ་པར་བྱ། །

ཞེས་གསུངས་པས་ཏེ། "ལུས་དང་ངག་སེམས་སྦྱོར་བ་ཡིས། །གསུམ་དུ་ཡང་ནི་འགྱུར་བ་ཡིན།" །ཞེས་བྱ་བའི་མདོའི་དོན་བཤད་ཟིན་ཏོ། །

རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། རྟོགས་པ་ཐམས་ཅད་[1]ཀྱི་བདག་ཉིད་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ནི་རང་གི་ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱིས་ཡང་དག་པར་བསྡུས་པ་ལ་ནི་སོམ་ཉི་མ་མཆིས་ན་རིགས་གསུམ་པོ་དེ་ཡང་ཇི་ལྟར་ན་རྡོ་རྗེ་གསུམ་མི་ཕྱེད་པའི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་སྐུ་རྡོ་རྗེར་འགྱུར་བ་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་སྟོན་པས་[2]བཤད་དུ་གསོལ།

རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། སེམས་ཅན་ཆེན་པོ་འདུས་པའི་དོན་ལ་ཞུགས་པ་རྣམས་ལ་ཕན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ལུས་རྣམ་པར་དབེན་པའི་མཐར་ཐུག་པ་འདྲི་བར་[3]བྱེད་པ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། །དེ་བས་ན་ངས་ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་[4]ཕན་ཚུན་གཅིག་ལ་གཅིག་རྒྱུར་གྱུར་པ་བསྟན་ནས་སྐུ་རྡོ་རྗེའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་རབ་ཏུ་གཞག་པར་བྱ་ཡིས་ཉོན་ཅིག

དོན་ལ་[5]དམིགས་པའི་ལུས་དང་ནི། །
ངག་ཀུང་ཡིད་ཀྱིས་བསྐུལ་བྱ་ཞིང་། །

1. རྒྱ་དཔེར་ 'རིགས་ཐམས་ཅད་'།
2. བསྟོན་པས། གསེར།
3. འདྲ་བར། ཅོ།
4. ཡིད་དང་། གསེར།
5. རྒྱ་དཔེར་ 'ཐུགས་ལ་'།

ཡིད་ནི་དགའ་བར་བྱེད་པ་ཡིན། །
དངོས་གྲུབ་རབ་མཆོག་བསྒྲུབ་པར་བྱ། །

ཞེས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་གསང་བ་འདུས་པ་ལས་གསུངས་ཏེ། འདིའི་དགོངས་པ་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་སྐུ་རྡོ་རྗེར་གྱུར་ནས་ཀན་དང་མཆུ་སྦྱར་བ་དང་། ཕྱིའི་ཚོ་རྣམ་པར་གྱུར་པ་ལས་གསུང་རྡོ་རྗེ་ལ་འཇུག་པར་འགྱུར་རོ།། ཐུགས་རྡོ་རྗེ་ནི་དེ་ལ་སྐུལ་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ཏེ་དེ་ལྟར་གསུམ་ཚོགས་[1]པ་ལས་ཡིད་དགའ་ཞིང་ཚིམ་པར་བྱེད་པའི་དངོས་གྲུབ་རྫོགས་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལྟར་ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ལ་སོགས་པའི་བསྒོམ་པའི་མཚན་ཉིད་བཏགས་ནས་ད་ནི་རྡོ་རྗེ་གསུམ་མི་ཕྱེད་པའི་མཚན་ཉིད་གཞག་པར་བྱ་སྟེ། གསང་བ་འདུས་པ་ལས་ཁྱེད་ཀྱི་སེམས་ལུས་ལྟ་བུ་དང་། ལུས་སེམས་ལྟ་བུ་དང་། སེམས་ཚིག་ཏུ་བརྗོད་པ་ལྟ་བུ་སྐྱིད་ཅིག་ཅེས་གསུངས་པས་བདག་ནི་རང་བཞིན་གྱི་བདག་པོའོ་ཞེས་བདག་ཉིད་བརྟན་པ་བསྐྱེད་ལ་རྡོ་རྗེ་གསུམ་གྱི་བདག་ཉིད་རྡོ་རྗེ་འཆང་ཆེན་པོར་ལྷག་པར་མོས་པར་བྱས་པ་ནི་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའི་རྣལ་འབྱོར་ཅེས་བྱ་བར་བཤད་དོ། །

ལུས་རྣམ་པར་དབེན་པ་བསྟུས་པའི་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་པ་སྟེ་ལེའུ་གཉིས་པའོ།། །།

1. རྒྱ་དཔེར་ 'དེ་ལྟར་རྡོ་རྗེ་གསུམ་ཚོགས་'།

ལེའུ་གསུམ་པ།

རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། ལུས་རྣམ་པར་དབེན་པ་ལ་བསླབ་པ་ལ་ནི་སོམ་ཉི་མ་མཆིས་ན། བཅོམ་ལྡན་འདས་ངག་རྣམ་པར་དབེན་པ་ལ་ཇི་ལྟར་བསླབ་པར་བགྱི། ཇི་ལྟར་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ་པར་བགྱི། བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་སྟོན་པས་བཤད་དུ་གསོལ། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། སེམས་ཅན་ཆེན་པོ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། །ཕུང་པོ་དང་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་ལ་སོགས་པ་བཤད་མ་ཐག་པ་ནི་ལུས་རྣམ་པར་དབེན་པ་སྟེ། དེ་ལ་ལྷ་རྣམ་པར་དགོད་པ་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐུན་མོང་སྟེ། རགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། ངག་རྣམ་པར་དབེན་པ་དེ་ཡང་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཡེ་ཤེས་ཏེ། ཤིན་ཏུ་ཕྲ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་པ་རྣམས་ཀྱི་ཡུལ་མ་ཡིན་པ་རྡོ་རྗེའི་ཐེག་པ་རྣམས་ལས་ཀྱང་བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་ལ་སྤྱོད་པ་རྣམས་ཀྱི་ཡུལ་མ་ཡིན་ཏེ་ཤིན་ཏུ་ཕྲ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བས་ན་ངས་ཁྱོད་ལ་བཤད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྗེས་སུ་འབྲངས་ནས་གསུང་རྡོ་རྗེའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་རྒྱ་ཆེར་སོ་སོར་རྟོགས་པར་བྱ་ཡིས་ཤིན་ཏུ་འབད་དེ་ཉོན་ཅིག དེ་ལ་རིགས་ནི་རྣམ་པ་བརྒྱར་གསུངས་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྔར་བཤད་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པའི་མདོ་ནི་ལུས་དང་ངག་དང་སེམས་རྣམ་པར་དབེན་པའི་ཡང་ཐུན་མོང་ཡིན་ནོ། །

དེ་ལ་ངག་རྣམ་པར་དབེན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྔགས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དོ། །དེ་ཡང་རླུང་གི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་རིམ་པ་དང་བྲལ་བས་ནི་དེ་[1]ཤེས་པར་མི་འགྱུར་རོ། ། རླུང་གི་དེ་[2]ཁོ་ན་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་སྲོག་དང་རྩོལ་བའོ། །དེ་བས་ན་རླུང་གི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྟན་པའི་ཚིག་དཔལ་གསང་བ་འདུས་པ་ལས།

རིན་ཆེན་ཁ་དོག་སྣ་ལྔ་པ། །
ཡུངས་ཀར་གྱི་ནི་འབྲུ་ཚད་ཙམ། །
སྣ་ཡི་རྩེ་མོར་ནན་ཏན་དུ། །
དེ་ཉིད་སྦྱོར་བས་རྟག་ཏུ་བསྒོམ། །ཞེས་གསུངས་ཏེ།

རྡོ་རྗེའི་ཚིག་འདི་ངེས་པ་དང་དྲང་བའི་དོན་གྱི་དབྱེ་བས་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་རྣམ་པ་གཉིས་ལ་ཡང་སྦྱར་ཏེ། དེ་ལ་བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་སྒོམ་པར་བྱེད་པས་ནི་སྣའི་རྩེ་མོར་ཡུངས་ཀར་གྱི་འབྲུ་ཚད་[3]ཙམ་གྱི་རང་གི་ལྷའི་མཚན་མ་རང་སེམས་བརྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་བསྒོམ་པར་བྱའོ་ཞེས་བསྟན་པ་འདི་ནི་ཕྲ་མོའི་རྣལ་འབྱོར་བཤད་པ་ཡིན་ནོ། །འདི་ཉིད་རྫོགས་པའི་རིམ་པ་ལ་གནས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཕྲ་མོའི་རྣལ་འབྱོར་བཤད་པ་ནི་ཨཱ་ལི་ཀཱ་ལི་རྣམས་ཀྱི་བྱུད་མེད་དང་

1. 'དེ་' གསེར་བྲིས་སུ་མེད།
2. 'དེ་' ཅོ་ནེར་མེད།
3. འབྲུ་ཚོད། སྡེ། ཅོ།

སྐྱེས་པ་དང་མ་ཉིང་གི་ཚུལ་གྱི་ཡི་གེ་གསུམ་བསྐྱེད་ལ་ཡི་གེ་གསུམ་ཡང་འཇུག་པ་དང་གནས་པ་ལྡང་བར་ངེས་པར་སྦྱར་ལ་དཀྱིལ་འཁོར་བཞིའི་རིམ་གྱིས་སྲོག་དང་རྩོལ་བའི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་རྡོ་རྗེའི་བཟླས་པ་བྱའོ། །དོན་འདི་ཉིད་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་གསང་བ་འདུས་པའི་རྒྱུད་ཕྱི་མ་ལས།

ཡེ་ཤེས་ལྷ་ཡི་རང་བཞིན་དབུགས། །
འབྱུང་བ་ལྷ་ཡི་ངོ་བོ་ཉིད། །
གོང་བུའི་གཟུགས་ཀྱིས་ཕྱུང་ནས་ནི། །
སྣ་ཡི་རྩེ་མོར་རབ་ཏུ་བརྟག །

རིན་ཆེན་ཁ་དོག་སྣ་ལྔ་པ། །
སྲོག་དང་རྩོལ་བ་ཞེས་བྱར་བཤད། །

ཅེས་གསུངས་པའོ། །མདོར་བསྟན་པ་འདིའི་བཤད་པ་གསང་བ་འདུས་པའི་བཤད་པའི་རྒྱུད་དགོངས་པ་ལུང་སྟོན་པ་ལས་བཤད་དེ།

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་རྡོ་རྗེ་ཅན། །
རྡོ་རྗེ་སྙིང་པོའི་དོན་གསུངས་པ། །
འགྲོ་བའི་བླ་མ་གཅིག་པུ་ལ། །
ཕྱག་འཚལ་ནས་ནི་སླར་གསོལ་པ། །
འཇིག་རྟེན་པ་ཡི་ལུང་ཉིད་ཀྱིས། །
བྱང་ཆུབ་སེམས་ནི་རབ་གསུངས་ན། །

ཇི་ལྟར་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པ། །
མ་འོངས་པ་ཡིས་ཇི་ལྟར་རྟོགས། །

ལྟ་བ་ཐམས་ཅད་རབ་སྤང་ཕྱིར། །
ཁྱེད་ནི་ཆོས་རྣམས་སྟོན་མཛད་ན། །
ཇི་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དེ་ཉིད། །
ལྟ་བ་དེ་ནི་རབ་བརྟན་[1]འགྱུར། །

དགོངས་པའི་ཚིག་ལ་རྨོངས་པ་རྣམས། །
གསུངས་པའི་དོན་ནི་མ་རྟོགས་ནས། །
གསུངས་པ་འདི་ལས་གཞན་མིན་ཞེས། །
དེ་ནི་ཇི་བཞིན་སྒྲར་འཛིན་ཏོ། །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་སྣ་ཚོགས་པས། །
ལག་ན་རྡོ་རྗེ་ལ་གསུངས་པ། །
ཁྱེད་གསང་དགོངས་པ་མ་རྟོགས་པ། །
འདྲི་བར་བྱེད་པ་ལེགས་སོ་ལེགས། །

བྱང་ཆུབ་སེམས་ནི་ཀླུང་འགྱུར་ཞིང་། །
ནམ་མཁའ་ལ་ནི་རྣམ་གནས་པ། །

1. བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་‘རབ་བརྟན་’ཞེས་ཡོད་ཀྱང་གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་སྲོག་གྱུར་ཡིན། །
ལྔ་ཡི་བདག་ཉིད་བཅུ་མིང་ཅན། །

རྟེན་འབྲེལ་བཅུ་གཉིས་ཞེས་གྲགས་པ། །
ངོ་བོ་ཉིད་རྣམས་གསུམ་དུ་འགྱུར། །
རླུང་ཞེས་བྱ་བའི་བྱང་ཆུབ་སེམས། །
དབང་པོ་ཀུན་གྱི་གཙོ་འདི་ཡིན། །

འདི་ལྟར་མི་མངོན་ཕྲ་བ་ལས། །
རྟག་ཏུ་གསལ་བར་བརྗོད་པ་ཡིན། །
འགྲོ་བ་ཡུལ་སོགས་ལས་བྱེད་པ། །
འདིར་ནི་དེ་ལ་བརྟེན་པ་ཡིན། །

ཞི་བ་དང་ནི་རྒྱས་པ་དང་། །
དབང་དང་དེ་བཞིན་མངོན་སྤྱོད་རྣམས། །
དེ་ཉིད་གསུམ་གནས་ལ་བརྟེན་ནས། །
དེ་ཀུན་བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱིས་[1]བྱེད། །

ཇི་སྲིད་འཇིག་རྟེན་བརྟག་པ་དང་། །
དེ་བཞིན་བརྟག་པ་སྣ་ཚོགས་རྣམས། །

1. གྱི། གསེར།

རྣམ་རྟོག་བྱང་ཆུབ་སེམས་ཞེས་པའི། །
རླུང་ལས་རྟག་ཏུ་འབྱུང་བ་ཡིན། །

བདེ་སྡུག་ལ་སོགས་ཆོས་རྣམས་ཀྱི། །
ས་བོན་ལྟ་བུར་བཤད་པ་ཡིན། །
བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་ངོ་བོ་འདི། །
ཕྱང་སོགས་གཉིས་མེད་མཁའ་དང་མཉམ། །

ཤེས་རབ་ཐབས་གཅིག་སྦྱོར་བ་ཡིས། །
བྱང་ཆུབ་སེམས་ནི་འགྲོ་བར་འགྱུར། །
རློག་དང་བསམ་གཏན་རྣམས་སྤངས་པར། །
བདག་པོ་རང་ཉིད་བློས་པ་སྟེ། །

ཉིན་དང་མཚན་མོ་དབྱེ་བ་ཡིས། །
ཉི་ཟླ་རབ་ཏུ་སྦྱོར་བ་ཡིན། །
དངོས་པོ་མེད་པས་[1]འགྲོ་ཁྱབ་པའི། །
བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་རླུང་གཅིག་པུ། །

དགེ་དང་མི་དགེའི་འབྲས་སྤངས་ན། །
ནམ་མཁའ་འདྲ་བར་འགྱུར་བ་ཡིན། །

1. 'དབུགས་འབྱུང་བ་ཡིས་' རྒྱ་དཔེ།

ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། རླུང་ལྷའི་བདག་ཉིད་བཅུ་མིང་ཅན། །ཞེས་གསུངས་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཐུགས་བརྩེ་བ་ཉེ་བར་བཞག་སྟེ། རེ་རེའི་མིང་གི་དབྱེ་བ་གཞན་བཤད་དུ་གསོལ། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། བཤད་མ་ཐག་པའི་བཤད་པའི་རྒྱུད་ཉིད་ལས་བསྟན་པ་དེ་དགྲོལ་བར་བྱའོ། །

དེ་ནས་དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་དང་། །
དེ་བཞིན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས། །
དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་བདག་པོ་དེ། །
མཉེས་བྱའི་ཕྱིར་ནི་ཞུགས་པར་འགྱུར། །

སྲོག་དང་ཐུར་སེལ་གྱེན་རྒྱུ་དང་། །
ཁྱབ་དང་མཉམ་གནས་ཞེས་བཤད་དང་། །
ཀླུ་དང་རུས་སྦལ་རྩངས་པ་དང་། །
ལྷ་སྦྱིན་དང་ནི་གཞུ་ལས་རྒྱལ། །

དེ་དག་བདག་གཟུགས་བུད་མེད་དུ། །
སླར་ཡང་སྤྲུལ་པར་མཛད་པ་ཡིན། །[1] །

1. དགོངས་པ་ལུང་བསྟན་པ། Toh. 444 སྡེ། བཀའ། རྒྱུད། 'ཙ' ཤོག་གྲངས། ༢༥༨བ༧ ཚིགས་བཅད་གཉིས་དང་ཕྱེད་པོ་འདི་དག་འགྱུར་ཅུང་ཟད་མི་འདྲ་བ་སྣང་།

ཐུང་བཅུ་པོ་འདི་དག་ནི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་དང་མཉམ་པར་སྦྱོར་བ་མཁའ་འགྲོ་མ་བདེ་བའི་མཆོག་གི་རྒྱལ་ལས་ནི་སྒྲ་ཇི་བཞིན་མ་ཡིན་པས་གསུངས་ཏེ།

ཀོཊླཱཿ ཀོཊཀྵཿ ཀོཊླཿ ཀོཊླཧྲྀཾ ཀོཊྲིརཀཿ །
ཀོལླཱཿ ཀོལཀྵཿ ཀོལཿ ཀོལླཧྲྀཾ ཀཡིསྟྭ །།[1]

མིང་བཅུ་པོ་དེ་དག་ནི་རྡོ་རྗེའི་སྙིང་ཞེས་བྱ་བའི་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས་ཀྱང་སྒྲ་ཇི་བཞིན་པའི་དོན་གྱིས་ཐུང་བཅུར་གསུངས་ཏེ། སྲོག་དང་ཐུར་དུ་སེལ་བ་དང་། མེ་དང་མཉམ་དུ་གནས་པ་དང་། གྱེན་དུ་རྒྱུ་བ་དང་། ཁྱབ་བྱེད་དང་། རྒྱུ་བ་དང་། རྣམ་པར་རྒྱུ་བ་དང་། ཡང་དག་པར་རྒྱུ་བ་དང་། རབ་ཏུ་རྒྱུ་བ་དང་། ངེས་པར་རྒྱུ་བ་ཞེས་བྱའོ། །རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། སྲོག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐུང་བཅུ་པོ་ལུས་འདི་ལ་གང་ཞིག་རབ་ཏུ་གནས་ནས་ཅི་ཞིག་བགྱིད་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་སྟོན་པས་བཤད་དུ་གསོལ། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། ཐུང་ལྔ་ནི་ལུས་ཀྱི་ཆ་ལ་གནས་ནས་ལུས་ཀྱི་བྱ་བ་རྣམས་བྱེད་དོ། །ཐུང་ལྔ་ནི་མིག་ལ་སོགས་པའི་སྐྱེ་མཆེད་ལ་གནས་

1. ཀོཊཁྲ། ཀོཊབ། ཀོཊ། ཀོཊབཛྷཀ། ཀོཊྲི(ཀོཊི—གསེར་ཕྲེང་)རཀཿ། ཀོལཁྲ། ཀོལབྷ(ཀོལབ—གསེར་ཕྲེང་)། ཀོལ། ཀོལབཛྷ། ཀོལཏྭ། བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་འདི་ལྟར་གསལ་ཀྱང་གོང་དུ་ནི་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

ནས་དབང་པོ་རྣམས་ཀྱི་བྱ་བ་རྣམས་བྱེད་དོ། །དེ་ལ་སྒྲོག་ཅེས་བྱ་བའི་རླུང་སྙིང་གར་གནས་པ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་མི་བསྐྱོད་པའོ། །ཐུར་དུ་སེལ་བ་མདོམས་ན་གནས་པ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་ནོ། །ཁྱེན་དུ་རྒྱུ་བ་ལྐོག་མར་གནས་པ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའོ། །མེ་དང་མཉམ་དུ་གནས་པ་ལྟེ་བར་གནས་པ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དོན་ཡོད་གྲུབ་པའོ། །ཁྱབ་བྱེད་[1]ཚིགས་ཐམས་ཅད་ལ་གནས་པ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དོ། །རྒྱུ་བའི་རླུང་ནི་གཟུགས་སོ། །རྣམ་པར་རྒྱུ་བ་ནི་སྒྲའོ། །ཡང་དག་པར་རྒྱུ་བ་ནི་དྲིའོ། །རབ་ཏུ་རྒྱུ་བ་ནི་རོའོ། །ངེས་པར་རྒྱུ་བ་ནི་རེག་བྱའོ། །ཡང་རླུང་བཅུ་པོ་འདི་དག་ནི་དབུགས་[2]འབྱུང་བ་དང་རྔུབ་པར་འགྱུར་བ་དང་། དེ་རྣམས་ཀྱང་རླུང་ལ་སོགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་བཞིའི་བདག་ཉིད་ཅན་དུ་འགྱུར་བ་དང་། ཡང་དེ་རྣམས་ལྷ་མོ་བཞིའི་བདག་ཉིད་ཅན་དུ་འགྱུར་བ་དང་། ཡང་དེ་རྣམས་འབྱུང་བ་རྣམ་པ་ལྔར་འགྱུར་བ་དང་། ཡང་དེ་རྣམས་མེ་ལོང་ལྟ་བུ་ལ་སོགས་པའི་ཡེ་ཤེས་རྣམ་པ་ལྔར་འགྱུར་བ་དང་། ཡང་དེ་རྣམས་དཀར་པོ་ལ་སོགས་པ་འོད་ཟེར་རྣམ་པ་ལྔའི་བདག་ཉིད་ཅན་དུ་འགྱུར་བ་དང་། ཡང་དེ་རྣམས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔའི་བདག་ཉིད་ཅན་དུ་འགྱུར་བ

1. ཁྲབ་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་ནི། གསེར།
2. བུགས། གསེར།

དང་། ཡང་དེ་རྣམས་ཡི་གེ་གསུམ་གྱི་གཞིར་གྱུར་ནས་འཇུག་པ་དང་གནས་པ་དང་ལྡང་བའི་རིམ་གྱིས་རྡོ་རྗེ་བཟླས་པ་བྱེད་པར་འགྱུར་བ་དང་། ཡང་རླུང་དེ་རྣམས་ཡི་གེ་ཨའི་གཞིར་གྱུར་ནས་ཚིག་མ་ལུས་པར་སྨྲ་བར་བྱེད་པ་དང་། ཡང་དེ་རྣམས་མི་ཤེགས་པ་ཐོབ་ན་དངོས་པོ་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །

རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཇི་ལྟར་ན་རླུང་བཅུ་པོ་འདི་དག་གཅིག་དང་དུ་མའི་ངོ་བོས[1]རང་གི་ལུས་ལ་ཉིན་དང་མཚན་དུ་སྤྱོ་བ་དང་སྤྱོད་པར་བགྱིད། བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་སྟོན་པས་བཤད་དུ་གསོལ། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། །དཔལ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྡུས་པ་ལ་སོགས་པ་རྩ་བའི་རྒྱུད་བླ་མ་ལས་ཇི་ལྟར་རླུང་གི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དགོངས་པར་བཤད་ཀྱིས་གསལ་བར་མ་གསུངས[2]ལ། དེ་བཤད་པའི་རྒྱུད་ལས་སྒྲ་ཇི་བཞིན་པར་གསུངས་པས་དེ་ལ་འཇུག་པར་བྱའོ། །

སངས་རྒྱས་ལྔ་ཡི་རིགས་གནས་པ། །
སྣ་རྩེའི་བུ་ག་ལས་བྱུང་ཞིང་། །
རླུང་ལྔ་སྟེང་དུ་ཡང་དག་རྒྱུ། །
ལུས་ལ་རྟག་ཏུ་སྤྱོད་པར་འགྱུར། །

---

1. ངོ་བོ། གསེར།

2. གསལ་བར་གསུངས། གསེར།

ཀུན་རྫོབ་སྣར་ནི་སྤྱོད་པ་ཡི། །
སྒྲོ་དེ་[1]ལས་ནི་རྣམ་པར་འབྱུང་། །
གཡོན་དང་གཡས་དང་གཉིས་ཀ་དང་། །
དལ་བར་རྒྱུ་དང་རྣམ་པ་བཞི། །

གཡས་པ་ནས་ནི་འབྱུང་བའི་ཁམས། །
མེ་ཡི་དཀྱིལ་འཁོར་ཉིད་ཡིན་ཏེ། །
ཁ་དོག་དམར་བའི་མཆོག་འདི་ནི། །
པདྨ་མགོན་པོ་རྒྱུ་བའོ། །

གཡོན་པ་ནས་ནི་འབྱུང་བའི་ཁམས། །
རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་འབྱུང་བ་དག །
ལྗང་སེར་དག་ཏུ་སྣང་བ་སྟེ། །
ལས་ཀྱི་མགོན་པོ་རྒྱུ་བའོ། །

གཉིས་ཀ་ལས་ནི་འབྱུང་བའི་ཁམས། །
གསེར་གྱི་མདོག་ཏུ་སྣང་བ་སྟེ། །
དབང་ཆེན་གྱི་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་ཉིད། །
རིན་ཆེན་མགོན་པོ་རྒྱུ་བའོ། །

---

1. སྒྲོང་། གསེར།

དལ་ཞིང་རྒྱུ་བ་མེད་པའི་ཁམས། |
དག་པའི་ཤེལ་ལྟར་སྣང་བ་སྟེ། |
སྐད་ཅིག་ཆུ་ཡི་དཀྱིལ་འཁོར་ཏེ། |
རྡོ་རྗེ་མགོན་པོ་རྒྱུ་བའོ། |

ཁམས་ཀུན་ཡང་དག་འབྱུང་བ་ཉི།[1] |
རྟེན་དང་བརྟེན་པར་བཟུང་བ་ཉི། |
རླུང་སྣང་མཛད་ཆེན་སྐུ་ཡིན་ནོ། |
འཆི་བའི་མཐར་ནི་འབྱུང་བར་འགྱུར། |

དཀྱིལ་འཁོར་བཞི་པོ་འདི་དག་ནི། |
མཉམ་པར་གཞག་པས་རྟག་ཏུ་བློས། |
སྔགས་བཟླས་པ་ཡི་གྲངས་ཀྱིས་ནི། |
ཉིན་དང་མཚན་དུ་རྟག་པར་བློས། |

ཞེས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་རྡོ་རྗེ་ཕྲེང་བ་ཞེས་བྱ་བ་རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་ཆེན་པོ་ལས་[2]གསུངས་སོ། །འདིའི་དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། པདྨ་དང་རྡོ་རྗེའི་སྣ་དག་ལས་འོད་ཟེར་རྣམས་བྱུང་ནས་སྙིང་དུ་སོང་སྟེ། ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་སྣའི་སྒོ་

1. ཁམས་གསུམ་ཡང་དག་འབྱུང་བ་ཡི། གསེར།

2. Toh. 445 སྡེ། བཀའ། རྒྱུད། 'ཅ' ཤོག་གྲངས་ - ༢༣༦བ༥།

ལས་གཡོན་པ་དང་གཡས་པ་དང་གཉིས་ཀ་དང་དལ་གྱིས་[1]རྒྱུ་བའི་རིམ་གྱིས་འབྱུང་ངོ་། །

དེའི་རིམ་པ་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། སྣ་གཡོན་པ་ནས་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་རླུང་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དོན་ཡོད་པར་གྲུབ་པའི་རླུང་གི་ངོ་བོ་སྟེ། རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་མདོག་ལྗང་སེར་འོད་ཟེར་ནག་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ། །སྣ་གཡས་ནས་རྒྱུ་བའི་རླུང་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པ་སྟེ་མེའི་རང་བཞིན་མེའི་དཀྱིལ་འཁོར་འོད་ཟེར་དམར་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ། །སྣ་གཉི་ག་ལས་བྱུང་བའི་རླུང་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་ཏེ། དབང་ཆེན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་འོད་ཟེར་སེར་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ། །དལ་ཞིང་རྒྱུ་བ་བུལ་བའི་རླུང་ནི་མི་བསྐྱོད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ། །གསལ་བའི་རང་བཞིན་ཆུའི་དཀྱིལ་འཁོར་འོད་ཟེར་དཀར་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ། །ཁྱབ་བྱེད་ཀྱིས་ནི་ཁམས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་བཞི་ཆར་ལ་ཁྱབ་པའི་རླུང་སྟེ་མི་འབྱུང་ཞིང་ཁྱབ་པའི་འོད་ཟེར་ཅན་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དེ། དེ་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ། །དེ་ལྟ་མོད་ཀྱི་འོད་ཟེར་རེ་རེ་འབྱུང་བ་ན་ཡང་འོད་ཟེར་ལྔ་ལྔ་ངེས་པར་འབྱུང་སྟེ། ཁམས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གཅིག་གིས་ཀྱང་ཁམས་བཞི་ཆར་ལ་ཁྱབ་པ་ཡིན་ནོ།། དཀྱིལ་འཁོར་རེ་རེ་ལ་ཡི་གེ་གསུམ་གྱི་སྔགས་ཀྱི་བདག་པོ་འདུག་པ་ལ་སོགས་

1. གྱི། གསེར།

པའི་རིམ་གྱིས་རྟག་ཏུ་རང་ཉིད་བློས་པ་ཡིན་ཏེ། འདི་[1]ཀླུང་གི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མདོར་བསྡུས་ནས་བཤད་པ་ཡིན་ནོ། །

རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། བླ་མའི་ཞལ་སྔ་ནས་ཀྱི་བཀའ་དྲིན་གྱིས་ཀླུང་གི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་[2]ལུང་དང་རྟོགས་པ་དག་གིས་ལེགས་པར་བསྟན་ཏེ། ད་ནི་སྔགས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་རང་གི་མཚན་ཉིད་ཤེས་པར་འཚལ་ན་ཐུགས་བརྩེ་བ་ཉེ་བར་བཞག་སྟེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་སྟོན་པས་བཤད་དུ་གསོལ། སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། སེམས་ཅན་ཆེན་པོ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ།། སྔགས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་གང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྡུས་པ་ལ་སོགས་པའི་རྩ་བའི་རྒྱུད་དང་རྒྱུད་ཕྱི་མ་ལས་སྔགས་ཙམ་གསུངས་ཀྱི་སྔགས་བདུ་བ་ནི་མ་བསྟན་ཏོ། །བཤད་པའི་རྒྱུད་ལས་ནི་སྔགས་བདུ་བ་དང་། སྔགས་ཀྱི་བཟླ་དང་། སྔགས་ཀྱི་དོན་དང་། སྔགས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བདེན་པ་ཁོ་ནས་གསུངས་སོ། །དེ་ནས་བཤད་པའི་རྒྱུད་མ་རྟོགས་ན་ཕྱི་རོལ་གྱི་སྔགས་[3]ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཤེས་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། དེ་བས་ན་འབད་པས་ཉོན་ཅིག བཤད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྗེས་སུ་འབྲངས་ནས་སྔགས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་

1. འདི་ནི། གསེར།
2. གྱི་ཀླུང་གི་དེ་ཁོ་ཉིད། གསེར།
3. སྔགས་རྣམས། གསེར།

ཉིད་འབབ་ཞིག་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་སྨྲུལ་ལ་[1]སོགས་པའི་སྔགས་རྣམས་ནི་ཨཱ་ལི་ཀཱ་ལི་ལས་ཡང་དག་པར་བྱུང་བ་རྣམས་སོ། །དེ་རྣམས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ནི་མི་ཤིགས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཡི་གེ་གསུམ་སྟེ། གང་གི་ཕྱིར་སྔགས་ཐམས་ཅད་ནི་བུད་མེད་དང་སྐྱེས་པ་དང་མ་ནིང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་མན་ངག་ཇི་ལྟར་ཐོས་པས་ཡི་གེ་གསུམ་ལ་རབ་ཏུ་འདུག་གོ །དེ་བས་ན་[2]ཡི་གེ་གསུམ་ནི་སྔགས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་པོའོ། །དེ་ནི་ཡང་རེ་རེ་ཞིང་མི་ཤིགས་པ་དང་ལྷན་ཅིག་ཡི་གེ་གསུམ་གསུམ་ལས་འབྱུང་བ་ཡིན་ནོ། །

ད་ནི་ཡི་གེ་གསུམ་གྱི་བྱ་བ་བསྟན་པར་བྱ་སྟེ། དེ་ལ་དང་པོར་གསུམ་ཡང་དག་པར་སྦྱོར་བ་ལས་ལྷའི་སྐུ་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ཉིད་འཇུག་པ་དང་གནས་པ་དང་ལྡང་བའི་རིམ་གྱིས་ལུས་ཉིན་མཚན་དུ་འཛིན་པར་བྱེད་དོ། །དེ་ཉིད་ཨཱ་ལི་ཀཱ་ལི་རྣམས་དང་ལྷན་ཅིག་དབང་པོ་གཉིས་མཉམ་པར་སྦྱོར་བའི་དུས་སུ་ཁ་སྦྱར་དུ་བཙུས་པར་གྱུར་པས་གསང་བའི་སྣའི་བུ་ག་ནས་སོ་བོན་གྱི་གཟུགས་ཀྱིས་བྱུང་ནས་སེམས་ཅན་གྱི་ཁམས་རྣམས་སྐྱེད་པར་བྱེད་དོ། །དེ་ཉིད་སྲོག་དང་རྩོལ་བ་དང་ལྷན་ཅིག་ཡང་སྙིང་དུ་སོང་ནས་དབང་པོའི་སྒོ་རྣམས་སད་པར་བྱེད་ཅིང་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་སྣའི་སྒོ་ནས་གཡོན་དང་གཡས་ལ་

1. དེ་ལ་སྨྲུལ་ལ། ཅོ། རྒྱ་དཔེར་ 'དེ་ལ་མཆོད་པ་ལ་'ཞེས་གསལ།

2. དེ་ནས། གསེར།

སོགས་པའི་རིམ་པས་བྱུང་ནས་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ་པས་དོ་རྗེ་བཟླས་པ་བྱ་སྟེ། སྔོན་གྱི་ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་རྣམ་པར་སྦྱོང་བར་བྱེད་དོ། །དེ་ཉིད་ཉིན་མོ་དང་མཚན་མོའི་རིམ་གྱིས་བཟླས་པའི་གྲངས་ཉེ་བར་བཟུང་ནས་རྒྱ་ལ་སོགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་བྱུང་སྟེ། དཀར་པོ་ལ་སོགས་པའི་ཁ་དོག་ལ་གནས་ནས་ཞི་བ་ལ་སོགས་པའི་ལས་རྣམས་བྱེད་དོ། །དེ་ཉིད་ཡི་གེའི་གཟུགས་སུ་ཡོངས་སུ་བརྟགས་ལ་ལྷེ་རྩེ་ཤིན་ཏུ་མི་བསྐྱོད་ཅིང་། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོཏ་པའི་ངག་གི་བཟླས་བརྗོད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་བཟླས་བརྗོད་བྱས་ནས་ཕྱིའི་ཁ་དོག་ལ་སོགས་པའི་བྱ་བ་ལ་བརྟེན་ཏེ་ཞི་བ་ལ་སོགས་པའི་ལས་རྣམས་བྱེད་དོ། །

ཡི་གེ་གསུམ་པོ་དེ་ཉིད་ནི་སྦྱང་བར་བྱ་བ་དང་། རྫོགས་པར་བྱ་བ་དང་། འབར་བར་བྱ་བའི་རིམ་གྱིས་ཁ་ཟས་རྣམ་པར་སྦྱངས་ཏེ། སྐྱོན་མེད་པར་བྱེད་དོ། །དེ་ལྟར་ལུས་ལ་གནས་པའི་སྐབས་སུ་ཐམས་ཅད་བྱ་སྟེ། མཐར་མི་ཤིགས་པར་ཞུགས་ནས་ཡང་ཐ་མལ་པའི་ལུས་ལ་བརྟེན་ཏེ་དེ་བཞིན་དུ་ཐམས་ཅད་བྱེད་དོ། །ད་ནི་ཡི་གེ་གསུམ་བསྐྱེད་པ་དགོངས་པ་ལུང་སྟོན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས་གསུངས་པ།

---

1. བྱ་བ་བའི། སྡེ། གསེར།

2. རྒྱ་དཔེར་ 'དེ་ལྟར་མཆོག་ལ་'།

3. Toh. 444 སྡེ། བཀའ། རྒྱུད། 'ཅ' ཤོག་- ༡༦༧ན༡།

དང་པོ་གཅིག་ནི་དགུ་དབུས་ན།
གང་ཞིག་བཅུ་ཡིས་མ་བཅིངས་པ།
དེ་ནི་བཅིང་མེད་ཅེས་བྱ་སྟེ།
དེ་ཤེས་པ་ནི་མཆོག་གི་གནས།

དབྱངས་དང་གསལ་བྱེད་ཡི་གེ་སྟེ།
གྲངས་དགུ་ཡི་ནི་རྗེས་འཇུག་པ།
ཨས་བཅིངས་ཕན་ཚུན་སྦྱོར་བ་ལ།
གང་གིས་དེ་ཤེས་འགྲོ་བའི་བླ།

གང་ཞིག་ཤེས་ནས་རྣམ་གྲོལ་བའི།
འབྲས་བུ་ཕུན་ཚོགས་གྲུབ་འདོད་པ།
དེ་ནི་དེ་ཉིད་འགྲུབ་འགྱུར་ཏེ།
དངོས་མེད་པས་ནི་དངོས་སྤངས་པ།

འབྱུང་བའི་མཐའ་ནི་ཡང་དག་ལྡན།
ཆ་ལ་སོགས་པ་བཅུ་དྲུག་གནས།
ལྔ་པ་ལྔ་དང་ཡང་དག་ལྡན།
བཞི་ནི་[1]གསུམ་དུ་ངེས་པར་སྦྱར།

1. བཞི་ན། གསེར།

ཡི་གེ་ཨུྃ་བཅས་རིང་པོར་བཅས། །
ཡོན་ཏན་སྦྱོར་སོགས་ཕྱིས་དང་ལྡན། །
བྱུང་ངུ་མ་ལུས་ངག་ཏུ་འགྱུར། །
གཅིག་མིན་དུ་མ་མ་ཡིན་ནོ། །
ཡ་ཡི་དོན་གྱིས་གང་ཅིའང་རུང་། །
བྱ་བའི་དངོས་གྲུབ་འདོད་གྱུར་པས། །
ར་ལ་སོགས་པ་གསུམ་ཉིད་ཀྱིས། །
འགྲོ་བའི་དོན་ལ་རབ་ཏུ་འཇུག །
ཡི་གེ་གང་ཞིག་སྔར་བཤད་དང་། །
གང་ཡང་མངོན་པར་ཕྱོགས་པ་རྣམས། །
བུད་མེད་སྐྱེས་པ་མ་ཉིང་སྟེ། །
ཁམས་ལ་སོགས་པར་རབ་ཏུ་བརྟག །
འོག་ནས་སྟེང་དུ་བཅས་པར་ནི། །
ཤེས་ནས་ཟློས་ནི་ངེས་པར་སྦྱར། །
དྲུག་བཤད་བཞི་དང་གསུམ་དང་གཅིག །
དངོས་མེད་ངོ་བོ་གཅིག་ལས་བྱུང་། །
དེ་ནི་ཡང་སོགས་དོན་སྦྱར་ནས། །
དུས་གསུམ་ཤེས་པའང་འབྱུང་བར་འགྱུར། །

མཁས་པས་སྒྱུ་མ་མིག་འཕྲུལ་བཞིན།
འགྲོ་བ་རྣམས་ནི་རྒྱུ་མཐར་བྱ།

བརྗོད་པ་ཡི་ནི་སྔགས་འདི་དག
དངོས་མེད་ངོ་བོ་ལས་བྱུང་བ།
དེ་ནི་ཡོངས་སུ་གྱུར་པའི་གཟུགས།
ལྷ་རུ་ཉེ་བར་དམིགས་པ་གང་།

བརྟ་ཡིས་དེ་ཉིད་གསུམ་གནས་པ།
རང་བཞིན་བརླབས་པའི་མཚན་ཉིད་དོ།
མིང་མེད་བརྗོད་དུ་མེད་པ་སྟེ།
བྱང་ཆུབ་སེམས་མཆོག་འདི་ཡིན་ནོ།

གསུམ་པོ་དེ་ཉིད་གཅིག་གྱུར་པ།
འགྲོ་བ་མེད་ཅིང་འོང་བ་མེད།
འགག་མེད་རབ་ཏུ་ཞི་བ་ཉིད།
རྟག་དང་ཆད་པ་རྣམ་སྤངས་པ།

དུས་གསུམ་མཁྱེན་པས་མ་བྱས་པའི།
རྟོག་པ་ནམ་མཁའ་དབྱེར་མེད་མཚན།
འདི་ཉིད་ཁོ་ན་དོན་དམ་སྟེ།
སོ་སོ་རང་རིག་མཚན་ཉིད་དོ།

[1]བྱ་བ་ཐམས་ཅད་ཉིད་དུ་ཡང་། །
རྣལ་འབྱོར་རིག་པ་ཞལ་སོགས་ལ། །
མིང་མེད་བརྗོད་དུ་མེད་པ་དང་། །
དུས་གསུམ་བཟླས་པ་རྟག་ཏུ་བཟླ། །
གོས་དཀར་ལ་སོགས་བཟླས་བཤད་པ། །
བརྒྱ་ཕྲག་གཉིས་དང་ཉི་ཤུ་ལྔ། །
བཞི་པོ་ལེགས་པར་བསྡུས་པ་ཡིས། །
སྦྱོར་བཞི་བསྡུས་པས་བརྒྱ་ཕྲག་དགུ །
དགུ་བརྒྱ་དག་ཏུ་གང་བསྟན་པ། །
ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་རིམ་གྱིས་ནི། །
དེ་ནི་སོ་སོར་འབྱུང་བ་ལས། །
ཉི་ཁྲི་ཆིག་སྟོང་དྲུག་བརྒྱ་འོ། །
དེ་འདིར་གསང་བ་དགོངས་པ་ཡིས། །
ཕྲ་མོ་རྣལ་འབྱོར་བསྟན་པ་ཡིན། །
ཐིག་དང་བསམ་གཏན་མེད་མོད་ཀྱི། །
འོན་ཀྱང་བཟླས་པ་ཡིན་པར་བཤད། །

ཅེས་གསུངས་ཏེ། དེ་ནི་ཐུགས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཡིན་པར་བཤད་དོ། །

---

1. Toh. 444 སྡེ། བཀའ། རྒྱུད། 'ཅ' ཤོག- ༡༢༡ན༦།

རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། ནང་གི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་ངག་གི་ཡི་གེ་ལ་འཇུག་པར་བྱ་བ་ལ་ནི་སོམ་ཉི་མ་མཆིས་ན། གཞན་ཡང་། ``ཐུང་ངུ་མ་ལུས་ཚིག་ཏུ་འགྱུར།'' །ཞེས་གསུངས་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་ཇི་ལྟར་ན་ཐུང་ངུ་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་གེ་ཨ་ཚིག་མ་ལུས་པ་ལ་རབ་ཏུ་འཇུག་པའི་རྒྱུར་འགྱུར། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། །འདི་ན་གསུང་རབ་འཆད་པ་དག་ནི་བྱཱ་ཀ་ར་ཎའི་ཚིག་སྔོན་དུ་བྱས་ནས་སྒྲའི་དོན་འབའ་ཞིག་གི་རྗེས་སུ་འབྲང་གི ཡང་ཡི་གེས་བརྗོད་པ་གང་དུ་གང་གི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་རབ་ཏུ་འཇུག་པར་ཤེས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །ཡི་གེའི་དོན་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཇི་ལྟ་བ་ཉིད་མི་ཤེས་ཏེ། སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །བསྟན་པའི་རིམ་གྱིས་དེ་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱ་ཡིས་ཉོན་ཅིག དེ་ལ་སྔྲ་ནི་ཨཱ་ལི་ཀཱ་ལི་རྣམས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཏེ། ཨཱ་ལི་ནི་ཨ་ལ་སོགས་པ་དབྱངས་ཀྱི་ཡི་གེ་བཅུ་དྲུག་གོ །ཀཱ་ལི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡི་གེ་ཀ་ལ་སོགས་པ་ཡི་གེ་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་སྟེ། དབྱངས་ཀྱི་ཡི་གེ་བཅུ་དྲུག་དང་ལྡན་པའི་ཡི་གེ་བཞི་བཅུ་རྩ་དགུ་པོ་མ་ལུས་ཤིང་ལུས་པ་མེད་པ་ཐམས་ཅད་དེ་དབྱངས་ཀྱི་ཡི་གེ་དང་། གསལ་བྱེད་དང་། ཐིག་ལེ་དང་། ཚིག་དྲག་དང་བཅས་པ་དང་། སྐད་ཀྱི་བྱེངས་དང་། རྣམ་པར་འབྱེད་པའི་ཚིག་དང་། མཚམས་སྦྱར་བ་དང་། ཚིག་རྣམ་པར་སྦྱར་བ་

དང་། རྟགས་གསུམ་དང་། ཏིང་མཐའ་ཅན་[1]གསུམ་དང་། བྱ་བ་དང་དེ་ལ་ཕན་པའི་རྐྱེན་ལ་སོགས་པ་ནས་བཤད་པའི་མཐར་ཐུག་པ་ནི་བྱཱཀརཎ་ཞེས་པའི་མིང་གི་བརྡས་ཡོངས་སུ་བཤད་པས་ཤེས་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་ན་དེའི་ཚིག་དང་ངག་དང་སྡེབ་སྦྱོར་དང་། འགྲེལ་པ་དང་། ཚིགས་སུ་བཅད་པ་དང་། རྐྱང་པ་དང་རྒྱུན་ཆགས་ལ་སོགས་པས་ཆོས་ཀྱི་ཕུང་པོ་བརྒྱད་ཁྲི་བཞི་སྟོང་གི་མདོ་སྡེ་དང་། རྒྱུད་དང་། རྟོག་པ་དང་། སྡེ་སྣོད་གསུམ་དང་། སྙན་ངག་དང་། གར་གྱི་བསྟན་བཅོས་ལ་སོགས་པ་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་[2]བསྟན་བཅོས་རྣམས་ཡང་དག་པར་འབྱུང་སྟེ། བསྟན་བཅོས་ལ་བརྟེན་ནས་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་རྫོགས་པར་འགྱུར་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ལང་ཀར་གཤེགས་པའི་མདོ་ལས་ཀྱང་།

“བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་འདི་ལྟ་སྟེ། སྐྱེས་བུ་ལ་ལ་ཞིག་མར་མེ་ཐོགས་ནས་ཕྱོགས་འདི་ན་ངའི་ནོར་འདི་ལྟ་བུ་འདི་ཡོད་དོ་ཞེས་ནོར་ལྟ་བ་དེ་བཞིན་དུ་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཚིག་ཏུ་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སྒྲའི་མར་མེས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་རྣམས་ཚིག་གི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་བྲལ་བ་སོ་སོ་རང་གིས་རིག་པའི་དོན་གྱི་ཡུལ་ལ་རྗེས་སུ་འཇུག་གོ” །ཞེས་གསུངས་སོ། །འོན་

---

1. ཏ་མཐའ། གསེར། བདག་ཐབས། སྣེ། ཅོ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
2. འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི། རྒྱ་དཔེ།

ཀྱང་ཚིག་དེ་རྣམས་ཀྱི་ཚིག་དང་ངག་ལ་སོགས་པར་གཏོགས་པའི་ཡི་གེ་རྣམས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་རྣམ་པར་ཤེས་པར་འགྱུར་བ་ནི་ཨ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ཡིན་ཏེ། གང་གི་ཕྱིར་ཨ་དང་ཡང་དག་པར་ལྡན་པར་མ་གྱུར་པའི་ཀ་ལ་སོགས་པའི་ཡི་གེ་ནི་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། མཐའ་ཅན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཚིག་ཏུ་མི་འགྱུར་རོ། །ཇི་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་མཚན་ཡང་དག་པར་བརྗོད་པ་ལས།

ཨ་ནི་ཡིག་འབྲུ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག །
དོན་ཆེན་ཡི་གེ་དམ་པ་ཡིན། །
ཁོང་ནས་འབྱུང་བ་སྐྱེ་བ་མེད། །
ཚིག་ཏུ་བརྗོད་པ་སྤངས་པ་སྟེ། །
བརྗོད་པ་ཀུན་གྱི་རྒྱུ་ཡི་མཆོག །
ཚིག་ཀུན་རབ་ཏུ་གསལ་བར་བྱེད། །

ཅེས་གསུངས་ཏེ་དེ་བས་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་“བསམ་གཏན་མ་ལུས་པའི་སྒོའི་ས་བོན་གྱི་ཚིག་ཨ་ནི་སྐྱེ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒོའོ་” ཞེས་གསུངས་པ་དང་། ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་ཡི་གེ་ཡིན་པར་ཡང་གསུངས་ཏེ། རྡོ་རྗེ་དཀྱིལ་འཁོར་རྒྱན་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱུད་ལས་ཨ་ནི་[1]གསལ་བར་བསྟན་པའི་ཕྱིར།

1. ‘ནི་’ གསེར་བྲིས་སུ་མི་སྣང་།

སྙིང་གི་དབུས་ན་མི་ཤིགས་པ། །
འབར་ཞིང་མར་མེ་དག་དང་མཚུངས། །
མི་འགྱུར་མཆོག་ཏུ་ཕྲ་བ་སྟེ། །
ཨ་ཉི་གཙོ་བོ་དམ་པའོ། །ཞེས་གསུངས་སོ།།

དེ་ལྟར་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཨའི་རིགས་སུ་[1]གྱུར་པ་དང་། ཨ་ཀྱུར་གྱུར་པ་དང་། ཨ་ལས་ངེས་པར་འབྱུང་བ་སྟེ། བརྗོད་བཞིན་པ་ན་འགག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ངག་གི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་མཚན་ཉིད་ཅན་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་ཉིད་ཤེས་ན། སྒྲ་དང་སྒྲ་མ་ཡིན་པ་ལ་ལྟོས་པ་[2]མེད་པར་སེམས་ཅན་གྱི་བསམ་པའི་དབྱེ་བས་གདུལ་བྱའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ལ་ཆོས་སྟོན་པར་མཛད་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ལང་ཀར་གཤེགས་པའི་མདོ་ལས། ''བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོས་དོན་ལ་རྟོན་པར་བྱའི་ཡི་གེ་ལ་རྟོན་པར་མི་བྱའོ[3]། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཡི་གེའི་ཕྱིར་འབྲང་བའི་རིགས་ཀྱི་བུ་ཕོའམ། རིགས་ཀྱི་བུ་མོ་ནི་བདག་ཀྱང་དོན་དམ་པ་ལས་ཉམས་པར་བྱེད་ཅིང་གཞན་ཡང་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་མི་བྱེད་དོ། །འདི་ལྟ་སྟེ་བློ་

1. ཨའི་རིམ་པར། ཀྱ་དཔེ།
2. བལྟོས་པ། གསེར།
3. དོན་ལ་རྟེན་པར་བྱའི་ཡི་གེ་ལ་རྟེན་པར་མི་བྱའོ། ཅོ།

གྲོགས་ཆེན་པོ་ལ་ལས་གཅིག་གིས་གཅིག་ལ་སོར་མོའི་རྩེ་མོས་ཅི་ཞིག་བསྟན་ན་སོར་མོའི་རྩེ་མོ་ཉིད་ལ་ལྟ་ཞིང་འབྲང་བ་དེ་བཞིན་དུ་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་བྱིས་པ་སོ་སོའི་སྐྱེ་བོའི་སྡེ་རྣམས་ཀྱིས་བྱིས་པའི་རང་བཞིན་ཅན་ལྟ་བུ་སྒྲ་ཇི་བཞིན་གྱི་སོར་མོའི་རྩེ་མོ་ལ་མངོན་པར་ཆགས་ཤིང་ཞེན་ཏོ། །མངོན་པར་ཞེན་ཅིང་དུས་བྱེད་དེ་སྒྲ་ཇི་བཞིན་པའི་སོར་མོའི་རྩེ་མོ་ལྟ་བུའི་དོན་སྤངས་ནས་དོན་དམ་པ་ལ་ཐོབ་པར་མི་བྱེད་དོ། །དེ་བས་ན་དོན་འདོད་པས་དེ་བསྙེན་པར་བྱའོ།། དེའི་ཕྱིར་ན་གང་སྒྲ་ཇི་བཞིན་པའི་ཕྱིན་ཅི་ལོག་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་དེ་ནི་སྤང་བར་བྱའོ། །དོན་བཙལ་བར་བྱའོ།'' །ཞེས་བྱ་བའི་ཚིག་ལ་འཇུག་པ་ཡང་རྣམ་པ་བཞིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་མདོ་སྡེ་འདི་ཉིད་ལས་གསུངས་ཏེ། ''བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཚིག་གི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་མཚན་ཉིད་རྣམ་པ་བཞི་ཡོད་དེ། འདི་ལྟར་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་དང་། རྨི་ལམ་གྱི་ཚིག་དང་། གནས་ངན་ལེན་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་ཚིག་དང་། ཐོག་མ་མེད་པའི་[1]དུས་ཀྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ཚིག་གོ །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་ལ་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ནི་རང་གི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་གཟུགས་ལ་མཚན་མར་མངོན་པར་ཞེན་པ་ལས་བྱུང་ངོ་། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་རྨི་ལམ་གྱི་ཚིག་ནི་སྔོན་མྱོང་བའི་ཡུལ་རྗེས་སུ་དྲན་ནས་རྟོག་པའི་ཡུལ་མེད་བཞིན་དུ་འབྱུང་བའོ། །ཡང་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་གནས་ངན་ལེན་གྱི་རྣམ་པར་

1. 'པའི་' གསེར་བྲིས་སུ་མི་གསལ།

རྟོག་པ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་ཚིག་ནི་སྔོན་སྦྲས་བྱས་པའི་ལས་རྗེས་སུ་དྲན་པ་ལས་འབྱུང་ངོ་། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ནས་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ཚིག་ནི་ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ཀྱི་སྤྲོས་པ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་གནས་ངན་ལེན་གྱི་རང་གི་ས་བོན་ལས་འབྱུང་སྟེ། འདི་ནི་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཚིག་གི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་མཚན་ཉིད་རྣམ་པ་[1]བཞིའོ། ''།ཞེས་གང་བརྗོད་པ་དེའི་ཕྱིར་བཤད་པའོ། །རིགས་པ་འདིས་ནི་སྒྲ་རྣམས་ནི་ཡི་གེ་ཨ་ལས་བྱུང་བས་ན་[2]མི་འགྱུར་བ་སྟེ། འགྱུར་བ་ནི་འཇིག་པའོ། །མི་འགྱུར་བ་ནི་མི་འཇིག་པ་སྟེ། མི་བདེན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་[3]ཀྱི་སྒྲའི་སྒོ་ནས་རབ་ཏུ་བསྟན་པ་[4]དེ་ཡང་མ་བཅོས་པའི་ཐོག་མ་དང་ཐ་མ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ། །

ཇི་སྐད་དུ་ཚུལ་གཅིག་པར་བསྟན་པའི་མདོ་ལས།

ཆོས་འདི་སྒྲ་སྐད་དག་གིས་ལུང་བསྟན་ཏེ། །
ཆོས་དང་སྒྲ་དག་འདིར་ནི་སྣང་མི་འགྱུར། །
ཆོས་ཉིད་ཚུལ་གཅིག་དངོས་ལའང་འཇུག་བྱེད་པ། །
བཟོད་མཆོག་བླ་ན་མེད་ལ་རེག་པར་འགྱུར། །

---

1. རྣམ་པར། ཙོ།
2. བྱུང་བ་ན། གསེར།
3. མཁའ་དང་མཉམ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད། རྒྱ་དཔེ།
4. རབ་ཏུ་བསྟན་པ་རྫོགས་རིམ། རྒྱ་དཔེ།

ཞེས་གསུངས་པ་དང་། རྣམ་པར་སྣང་མཛད་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་སྤྱོད་པའི་རྒྱུད་ལས།

‘‘གསང་བའི་བདག་པོ་གཞན་ཡང་གསང་སྔགས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མ་བྱས་བྱེད་དུ་མ་བཅུག རྗེས་སུ་ཡི་རང་བ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། འདི་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་དོ།། འདི་ལྟ་སྟེ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་བྱུང་ཡང་རུང་མ་བྱུང་ཡང་རུང་སྟེ། ཆོས་རྣམས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་དེ་ནི་ཡེ་ནས་གནས་པ་སྟེ། དེ་ཡང་འདི་ལྟར་གསང་སྔགས་རྣམས་ཀྱི་གསང་སྔགས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་དོ། །དེ་ལ་གསང་བའི་བདག་པོ་འདོད་པའི་ཁམས་ཀྱི་དབང་ཕྱུག་ལ་སྨྱོས་པར་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་རིག་སྔགས་ཡོད་དེ། དེས་འདོད་པ་ན་སྤྱོད་པའི་ལྷའི་བུ་ཐམས་ཅད་སྨྱོས་པས་བརྒྱལ་བར་བྱེད་ཅིང་། མེ་ཏོག་མང་པོ་སྣ་ཚོགས་དང་ལྡན་པའི་ས་ཕྱོགས་ཉམས་དགའ་བ་སྣ་ཚོགས་ཀུང་སྟོན་ལ། ཡོངས་སུ་སྤྱད་པ་དང་། ཉེ་བར་སྤྱད་པ་རྣམ་པ་ཐ་དད་པ་སྣ་ཚོགས་པ་རྣམས་ཀུང་མངོན་པར་སྤྲུལ་ནས། གཞན་འཕྲུལ་དབང་བྱེད་ཀྱི་ལྷ་རྣམས་ལ་ཡང་སྦྱིན་ལ། བདག་ཉིད་ཀུང་ཡོངས་སུ་སྤྱོད་དོ། །འདི་ལྟ་སྟེ་ལྷའི་བུ་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ་ལ་ཡིད་མགྲོགས་ཞེས་བྱ་བའི་གསང་སྔགས་[1] ཡོད་དེ། དེས་སྟོང་གསུམ་གྱི་སྟོང་ཆེན་པོའི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་སུ་སེམས་

1. རིག་པ། རྒྱ་དཔེ།

ཅན་གྱི་དགོས་པ་བྱེད་ཅིང་[1]ཉེ་བར་སྤྱོད་པ་དང་། ཡོངས་སུ་སྤྱོད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་མངོན་པར་སྤྲུལ་ནས་གནས་གཙང་མའི་རིས་ཀྱི་ལྷའི་བུ་རྣམས་ལ་ཡང་སྦྱིན་ལ། བདག་ཉིད་ཀྱང་ཀུན་དུ་སྤྱོད་དོ། །འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན་མིག་འཕྲུལ་མཁན་གྱིས་གསང་སྔགས་ཀྱིས་ཀུན་དགའི་ར་བ་དང་། མཚོ་དང་འབབ་ཆུ་དང་།[2] མི་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པ་ཐ་དད་པ་སྣ་ཚོགས་སྟོན་ཏོ། །འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན་ལྷ་མ་ཡིན་རྣམས་ནི་གསང་སྔགས་ཀྱིས་སྒྱུ་མ་རྣམས་སྟོན་ཏོ།། འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན་གསང་སྔགས་དག་གིས་ནི་དུག་དང་རིམས་ལ་སོགས་པ་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །འདི་ལྟ་སྟེ་མ་མོ་ཞེས་[3]བྱ་བའི་ལྷ་མོ་རྣམས་ནི་གསང་སྔགས་ཀྱིས་ནད་འགོ་བ་གཏོང་ངོ་། །འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན་གསང་སྔགས་ཀྱིས་མེའི་ཚ་བ་མེད་པར་བྱས་ནས་གྲང་བར་བྱེད་པར་འགྱུར་རོ། །རིགས་ཀྱི་བུ་དག་[4]དཔེའི་ཚིག་འདི་རྣམས་ཀྱིས་གསང་སྔགས་ཀྱི་མཐུ་ལ་མངོན་པར་དད་པར་བྱའོ། །གསང་སྔགས་ཀྱི་མཐུ་དེ་ཡང་གསང་སྔགས་རྣམས་ལས་བྱུང་བ་མ་ཡིན།[5] རྫས་ལས་འདུག་པ་ཡང་མ་ཡིན། སྦྱོར་བ་པོ་ལས་དམིགས་པ་ཡང་

---

1. ཁམས་སུ་……བྱེད་ཀྱང་། གསེར། ཁམས་སུ་དགོས་པ་ཐམས་ཅད་བྱེད་ཅིང་། ཀྱུ་དཔེ།
2. ‘ཀུན་དགའི་ར་བ་དང་། མཚོ་དང་འབབ་ཆུ་དང་།’ ཀྱུ་དཔེར་མེད།
3. འདི་ལྟ་སྟེ་སྔགས་ཞེས། ཀྱུ་དཔེ།
4. ‘རིགས་ཀྱི་བུ་དག’ ཀྱུ་དཔེར་མེད།
5. དེའི་རྗེས་སུ་‘སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་འདུག་པ་མ་ཡིན་’ ཞེས་ཀྱུ་དཔེར་ལྷག་པོར་སྣང་།

མ་ཡིན་མོད་ཀྱི། རིགས་ཀྱི་བུ་དག་འོན་ཀྱང་གསང་སྔགས་ཀྱི་བྱིན་གྱི་རླབས་ཀྱིས་ཆོས་ཉིད་འབྱུང་བ་ལས་འདའ་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། གྱུས་གསུམ་ལས་འདས་པའི་ཕྱིར་དང་། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་པར་འབྱུང་བ་ཟབ་མོ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ལས་མངོན་པར་གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །རིགས་ཀྱི་བུ་དག་དེ་ལྟ་བས་ན་ཆོས་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་རྟོགས་པ་ཁོང་དུ་ཆུད་པས་རྟག་ཏུ་རྒྱུན་མི་འཆད་པར་གསང་སྔགས་ཀྱི་ཚུལ་གྱི་རྗེས་སུ་འཇུག་པར་བྱའོ། ''།ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་ལྟར་ཕྱི་དང་ནང་གི་སྔགས་དང་། ནོར་བུ་དང་སྨན་རྣམས་ཀྱི་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་མཐུ་རྟོགས་པ་དག་བསྟན་ནས། ད་ནི་[1]རྫོགས་པ་དང་མ་རྫོགས་པའི་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ཁམས་རྣམས་ཀྱི་ངག་རྣམ་པར་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་ཉིད་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་བཤད་པ། མིའམ་ཅིའི་རྒྱལ་པོས་ཞུས་པའི་མདོ་ལས་གསུངས་པ[2]། ''མིའམ་ཅིའི་བདག་པོ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲ་སྐད་གང་ལས་བྱུང་སྙམ་པ། རིགས་ཀྱི་བུ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲ་སྐད་ནི་ནམ་མཁའ་ལས་བྱུང་ངོ་། །སྙམ་པ། མིའམ་ཅིའི་བདག་པོ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲ་སྐད་ཁོང་པའི་ནང་ནས་མི་འབྱུང་ངམ། སྙམ་པ། རིགས་ཀྱི་

1. དེ་ནི། ཅོ།

2. Toh. 157 མདོ་སྡེ། 'པ' ཤོག་གྲངས་- ༡༦༧བ༧།

བུ་ཧི་སྐམ་དུ་སེམས། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲ་སྐད་ལུས་ཀྱི་ནང་ཁོང་ནས་འབྱུང་ངམ། འོན་ཏེ་སེམས་ལས་འབྱུང་། སྨྲས་པ། མིའམ་ཅིའི་བདག་པོ་ལུས་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན། སེམས་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན་ནོ། །ཅིའི་ཕྱིར་ན[1]། ལུས་ནི་བེམས་པོ་གཡོ་བ་མེད་པ་བྱེད་པ་མེད་པ[2]། རྡུ་དང་བོང་བ་དང་། རྩིག་པ་དང་། ཤིང་དང་མིག་ཡོར་ལྟ་བུའོ། །སེམས་ནི་གཟུགས་མེད་པ[3]། བསྟན་དུ་མེད་པ། ཐོགས་པ་མེད་པ། རྣམ་པར་རིག་པ་མེད་པ་སྣེ་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའོ།། སྨྲས་པ། རིགས་ཀྱི་བུ་ལུས་དང་སེམས[4]མ་གཏོགས་པར་གཞན་གང་ནས་སྒྲ་འབྱུང་བར་འགྱུར། སྨྲས་པ། མིའམ་ཅིའི་བདག་པོ་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་སྒྲ་ནི་ནམ་མཁའ་ལས་འབྱུང་བར་རྟོགས་སོ[5]། །སྨྲས་པ། གལ་ཏེ་ནམ་མཁའ་མེད་ན་སྒྲ་གང་ལས་འབྱུང་། སྨྲས་པ། མིའམ་ཅིའི་བདག་པོ་ནམ་མཁའ་མ་གཏོགས་པར་གཞན་གང་ནས་སྒྲ་འབྱུང་བར་འགྱུར། སྨྲས་པ། རིགས་ཀྱི་བུ་དེའི་ཕྱིར་རྣམ་གྲངས་འདིས་སྒྲའི་ཐ་སྙད་གང་ཇི་སྙེད་འབྱུང་བ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ནི་ནམ་མཁའ་ལས་འབྱུང་བར་རིག་པར་བྱའོ། །ནམ་མཁའི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་

1. ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། གསེར།
2. བྱེད་པ་མེད། གསེར། ‘བྱེད་པ་མེད་པ་’ རྒྱ་དཔེར་མེད།
3. ‘གཟུགས་མེད་པ་’ རྒྱ་དཔེར་མེད།
4. ལུས་དང་ངག་དང་སེམས། རྒྱ་དཔེ།
5. སྒྲ་ནི་ཡིད་བྱེད་པ་ལས་འབྱུང་བར་བཏགས་སོ། མདོ་དེ་ཉིད་དུ་གསལ།

སྒྲ་སྟེ། རྣམ་པར་རིག་མ་ཐག་ཏུ་འགག་གོ །འགགས་ནས་ནམ་མཁའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཡང་དག་པར་གནས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་ཞེས་བྱ་སྟེ། རྣམ་པར་རིག་པ་མེད་པ་དེ་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་མོད་ཀྱི་སྒྲ་དང་སྒྲའི་བརྡས་བརྗོད་དོ། །བརྗོད་པ་དེ་ཡང་ཐ་སྙད་དོ།། གང་སྒྲས་བརྗོད་པ་འདི་འདྲ་བར་རབ་ཏུ་ཤེས་པ་དེ་ནི་ཆོས་གང་ལ་ཡང་མངོན་པར་མི་ཆགས་སོ། །གང་མངོན་པར་མི་ཆགས་པ་དེ་རྣམ་པར་མི་འཕྲོ། གང་རྣམ་པར་མི་འཕྲོ་བ་དེ་མི་འཁོར་རོ། །གང་མི་འཁོར་བ་དེ་ནི་མི་ཕྱེད་པའོ།། གང་མི་ཕྱེད་པ་དེ་ནི་མི་སྐྱེ་བའོ། །གང་མི་སྐྱེ་བ་དེ་ནི་[1]མི་འཇིག་པར་འདོད་དོ།། གང་མི་འཇིག་པ་དེ་དང་བའོ། །གང་དང་བ་དེ་དག་པའོ། །གང་དག་པ་དེ་དྲི་མ་མེད་པའོ། །གང་[2]དྲི་མ་མེད་པ་དེ་འོད་གསལ་བའོ། །གང་འོད་གསལ་བ་དེ་སེམས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནོ། །སེམས་ཀྱི་རང་བཞིན་གང་ཡིན་པ་དེ་འཇུག་པའོ།། གང་འཇུག་པ་དེ་མཚན་མ་ཐམས་ཅད་གནོན་[3]པའོ། །གང་མཚན་མ་ཐམས་ཅད་གནོན་[4]པ་དེ་སྐྱོན་མེད་པ་ལ་འཇུག་པ་ཞེས་བྱའོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྐྱོན་མེད་པ་ལ་འཇུག་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་མི་སྐྱེ་བའི་ཆོས་ལ་

---

1. ‘ནི་’ གསེར་ཕྲེས་སུ་མེད།
2. ‘དྲི་མ་མེད་པའོ། །གང་’ གསེར་ཕྲེས་སུ་མ་གསལ།
3. གནོད། གསེར།
4. གནོད། གསེར།

བཟོད་པ་ཐོབ་པ་སྟེ། དེས་ན་སྐྱོན་མེད་པ་ལ་ཞུགས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནི་མི་སྐྱེ་བའི་ཆོས་ལ་བཟོད་པ་ཐོབ་པ་ཞེས་བྱའོ། །

གང་བཟོད་པ་ཐོབ་པ་དེས་ཐམས་ཅད་བཟོད་དོ། །དེས་སྟོང་པར་ཡང་བཟོད། གང་ཟག་ཏུ་ཡང་བཟོད་དོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། གང་ཟག་ལས་སྟོང་པ་གཞན་མ་ཡིན་ཏེ་གང་ཟག་ཉིད་སྟོང་པའོ། །དེ་མཚན་མར་ཡང་བཟོད་དོ།། མཚན་མ་མེད་པར་བཟོད་དོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། མཚན་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་མཚན་མ་མེད་པའོ། །དེ་སྨོན་པར་ཡང་བཟོད། སྨོན་པ་མེད་པར་ཡང་བཟོད་དོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། སྨོན་ལམ་གྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ནི་སྨོན་པ་མེད་པའོ། །དེ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་གྱིས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདའ་བར་ཡང་བཟོད། དེ་སེམས་ཅན་རྣམས་འཆི་འཕོ་དང་སྐྱེ་བར་ཡང་བཟོད་དོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། འཆི་འཕོ་དང་སྐྱེ་བ་ནི་སྒྱུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ།། རིགས་ཀྱི་བུ་དེ་ལྟར་མི་སྐྱེ་བའི་ཆོས་ལ་བཟོད་པ་ཐོབ་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནི་འགལ་བ་[1]མེད་པ་སྟེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་དང་འགལ་བ་མེད་པ་ཡིན་ནོ།།'' དེ་ལྟར་གསུང་གི་རྡོ་རྗེའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་གནས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཆེན་པོས་རྟོགས་པ་དང་མ་རྟོགས་པའི་སེམས་ཅན་གྱི་ཁམས་རྣམས་ཀྱི་ཉེས་པ་དང་ཡོན་ཏན་བརྗོད་པའི་ཚིག་ཐོས་ནས་རྗེས་སུ་ཆགས་པར་མི་བྱ། ཡང་དག་

1. འགག་པ། གསེར།

པར་དགའ་བར་མི་བྱ། སྐྲག་པར་མི་བྱ། ཀུན་དུ་སྐྲག་པར་མི་བྱ། སྨོད་པར་མི་བྱའོ། །འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་བསྟན་བཅོས་རྒྱུན་ཆགས་དང་རྒྱང་པ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲ་རྣམ་པར་དགོད་པའི་ཁྱད་པར་ཐོས་ནས་ཞེན་པར་མི་བྱ། སྨད་པར་མི་བྱ། སྨོངས་པར་མི་བྱ་སྟེ། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འགྲོ་བ་རྟོགས་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་དང་། སྒྲའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར། ཇི་སྐད་དུ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་འཇུག་པ་བསྟན་པར་བྱ་བའི་མདོ་ལས།

"ལྷའི་བུ་སྒྲ་གྲག་པ་ལ་འཇུག་པས་ཞུགས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ནི་གལ་ཏེ་གངྒཱའི་ཀླུང་གི་བྱེ་མ་སྙེད་ཀྱི་བསྐལ་པར་མི་བདེན་ཞིང་བསྙེན་བཀུར་མ་ཡིན་པའི་ཚིག་སྨྲས་པར་གྱུར་ཅིང་། ཡོངས་སུ་བརྗོད་པར་གྱུར་ཀྱང་དེ་དེ་ལ་ཁོང་ཁྲོ་བར་མི་འགྱུར་རོ། །གལ་ཏེ་གངྒཱའི་ཀླུང་གི་བྱེ་མ་སྙེད་དུ་བསྙེན་བཀུར་བྱེད། བླ་མར་བྱེད་ཅིང་། བདེ་བའི་ཡོ་བྱད་ཐམས་ཅད་དང་ཆོས་གོས་དང་། བསོད་སྙོམས་དང་། མལ་སྟན་དང་། ན་བའི་གསོས་སྨན་དང་། ཡོ་བྱད་རྣམས་ཀྱིས་[1]མཆོད་ཅིང་རྗེད་ཀྱང་དེ་ལ་རྗེས་སུ་ཆགས་པའི་སེམས་སྐྱེ་བར་མི་འགྱུར་རོ།" །ཞེས་གསུངས་སོ།།

1. ཀྱི། སྡེ། ཅོ།

དེ་བཞིན་དུ་གསུང་གི་རྡོ་རྗེའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་གནས་པའི་སྔགས་པས་བརྒྱད་པའི་དབང་ཕྱུག་ཉི་སྙེད་པ[1]དང་། མ་སྙེད་པ་དང་། གྲགས་པ་དང་། མ་གྲགས་པ་དང་། བསྟོད་པ་དང་། སྨད་པ་དང་། བདེ་བ་དང་། སྡུག་བསྔལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་འཆིང་བར་མི་འགྱུར་རོ། །ཡང་དག་པར་དགའ་བར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་ན་འཇིག་རྟེན་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཟིལ་གྱིས་མནན་ནས་བསྐྱེད་པའི་རིམ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་འདས་པ་སེམས་རྣམ་པར་དབེན་པ་ཚོལ་བར་འདོད་པས་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་ལ་བསྟེན་བཀུར་བྱའོ། །ངག་རྣམ་པར་དབེན་པ་བསྟུས་པའི་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་པ་སྟེ་ལེའུ་གསུམ་པའོ།། །།

1. སྔགས་པས་ས་བརྒྱད་པའི་དབང་ཕྱུག་ཉི་སྙེད་པ། གསེར།

ལེའུ་བཞི་པ།

རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། སློབ་དཔོན་གྱི་ཞལ་སྔ་ནས་ཀྱི་བཀའ་དྲིན་གྱིས་རླུང་གི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་རིམ་པས་སྔགས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དང་། ངག་རྣམ་པར་དབེན་པ་ལ་ཡང་སོམ་ཉི་མ་མཆིས་ཏེ། ད་ནི་སེམས་རྣམ་པར་དབེན་པ་ལ་སློབ་པར་འཚལ་ན་ཇི་ལྟར་བསླབ་པར་བགྱི། ཟབ་མོ་ལ་ལྷག་པར་མོས་པ་རྣམས་ལ་ཕན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་སྟོན་པས་བཤད་དུ་གསོལ། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། སེམས་ཅན་ཆེན་པོ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མན་ངག་ཡང་དག་པར་འགྲོ་བ་ལས་ཁ་ཕྱིར་བལྟས་པ་རྣམས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་མ་ཡིན་པ། ཤིན་ཏུ་ཟབ་པ། མཆོག་ཏུ་གཟུང་བར་དཀའ་བ། སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་ཡོངས་སུ་དྲིས་པའི་སེམས་གང་ཡིན་པ་དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་རྩ་བ་མེད་པ། གནས་མེད་པ། གཞི་མེད། མཚན་མ་མེད་པ།[1] དབྱིབས་དང་ཁ་དོག་[2]མེད་པ། དབང་པོ་ལས་འདས་པ། རྟོག་གེ་རྣམས་ཀྱི་ཡུལ་མ་ཡིན་པའོ་ཞེས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་རྒྱུད་ཐམས་ཅད་ལས་བསྟན་པའི་ཚིག་ལ་གསུངས་པའོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་ལ་གནས་ནས་སངས་རྒྱས་ཉིད་ཐོབ་པར་འདོད་པས་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་

---

1. 'མཚན་མ་མེད་པ།' གསེར་བྲིས་སུ་མེད།
2. ཁ་དོག ཅོ།

མཉེས་པར་བྱས་ནས་རང་གི་སེམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་བཙལ་བར་བྱའོ། །ཇི་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྡུས་པའི་རྒྱུད་ལས། "རིགས་ཀྱི་བུ་མཉམ་པར་གཞག་པས་རང་གི་སེམས་སོ་སོར་རྟོགས་ཤིག[1]" ཅེས་གསུངས་པ་དང་། དཔལ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་རྒྱུད་ལས་ཀྱང་། "བྱང་ཆུབ་ནི་རང་གི་སེམས་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པའོ" །ཞེས་གསུངས་པ་དང་། སྡེ་སྣོད་གསུམ་གྱི་ཚུལ་ལས་ཀྱང་།

གཅིག་པུ་འགྲོ་ཞིང་རིང་དུ་རྒྱུ། །
ལུས་མེད་དབང་པོའི་ཕུག་ན་གནས། །
གདུལ་བར་དཀའ་བའི་སེམས་འདུལ་བྱེད། །
དེ་ནི་བྲམ་ཟེར་ངས་བཤད་དོ། །
བདུད་ཀྱི་བཅིང་བ་ལས་གྲོལ་འགྱུར། །ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་བས་ན་སྒྲུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་མངོན་སུམ་དུ་བྱེད་པར་འདོད་པས་གཡེང་བ་དང་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་སྤངས་ཏེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མན་ངག་ཡང་དག་པར་ཐོབ་པའི་རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་མཉེས་པར་བྱས་ལ་དཔལ་ཡེ་ཤེས་རྡོ་རྗེ་ཀུན་ལས་བཏུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་བཤད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྗེས་སུ་འབྲངས་ནས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གསུམ་གྱི་རང་བཞིན་སྣང་བ་རྟོགས་

1. རྟོག་ཤིང་། གསེར།

པར་བྱའོ། །ཇི་སྐད་དུ་ལང་ཀར་གཤེགས་པའི་མདོ་ལས་ཀྱང་། ''ཡང་བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་གཞན་ཡང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོས་རང་གི་སེམས་ཀྱི་སྣང་བའི་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པར་འདོད་པས་འདུ་བ་དང་། འདུ་འཛི་དང་། གཉིད་དང་། སྒྲིབ་པ་མེད་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གསུམ་ནི་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྒྱུར་གྱུར་པ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟ་སྟེ། མཐོ་རིས་དང་། ངན་འགྲོ་དང་། རྒྱུ་བ་དང་། མི་རྒྱུ་བ་དང་། གཟུང་བ་དང་། འཛིན་པ་དང་། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་ཡན་ལག་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་དང་། དགེ་བ་དང་། མི་དགེ་བ་དང་། རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་། སྣང་བ་དང་། མུན་པ་དང་། སྐྱེས་པ་དང་། བུད་མེད་དང་། མ་ནིང་ལ་སོགས་པའི་བདག་ཉིད་ཅན་དང་། སྐྱེ་བ་དང་། གནས་པ་དང་། འཇིག་པ་སྟེ། མདོར་ན་ཁམས་གསུམ་པོའི་དབང་པོའི་སྤྱོད་ཡུལ་རྣམས་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གསུམ་ཡིན་ནོ། ''།ཞེས་གསུངས་པ་དང་། ཇི་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་བཟང་སྐྱོང་གིས་ཞུས་པའི་མདོ་ལས་[1] ཀྱང་། ''བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། བཟང་སྐྱོང་འབྲུལ་འཁོར་དེ་ནི་ལས་ཀྱི་དབང་གིས་འདུག་སྟེ། ལས་དེ་ཡང་གཟུགས་ཅན་མ་ཡིན་[2]ཞིང་

1. Toh. 83 སྡེ། བཀའ། ‘ཆ’ ཤོག- ༧༦ན༩།
2. ལས་དེ་དང་རྗེས་སུ་མཐུན། རྒྱ་དཔེ།

རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལས་མངོན་པར་གྲུབ་པའོ། །དེ་བཞིན་དུ་ལུས་ཀྱི་འཕྲུལ་འཁོར་འདི་ཡང་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་དབང་གིས་འབྱུང་སྟེ། རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་འདི་ནི་ལུས་སྣ་ཚོགས་[1]ལ་འཇུག་པ་ཡིན་ནོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་འདི་ནི་ལུས་སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་བྱེད་པ་པོ་ཡང་ཡིན་ནོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་འདི་ནི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ལ་བརྟེན་[2]པའི་ཕྱིར་མི་ཟད་པ་ཡང་ཡིན་ནོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་འདི་ནི་སྔོན་གྱི་ལུས་ཀྱི་གནས་རྗེས་སུ་དྲན་པའི་ཕྱིར་བློ་གྲོས་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ཡང་ཡིན་ནོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་འདི་ནི་ཉི་མའི་འོད་ཟེར་དང་འདྲ་བར་བལྟ་བར་བྱ་སྟེ། དཔེར་ན་ཉི་མའི་འོད་ཟེར་ནི་དྲི་ང་བ་དག་དང་མི་གཙང་བ་དག་དང་། རོ་དག་ལ་ཡང་འབབ་སྟེ[3]། འོན་ཀྱང་དྲི་དེས་གོས་པར་ཡང་མི་འགྱུར་ལ། ཉི་མ་ཡང་དྲི་ང་བ་བོར་ཏེ་ཡང་མི་འགྲོའོ།། དེ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་འདི་ཡང་ཕྱི་ས་དང་། སྡུག་སྔིག་ཟ་བའི་ཁྲི་དང་། ཕག་གི་སྐྱེ་བ་དག་ཏུ་ཡང་སྐྱེ་བ་ཡོངས་སུ་འཛིན་ཏེ། འོན་ཀྱང་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་ལ་སྐྱོན་པ་ངན་པ་དེ་དག་གིས་གོས་པ་མེད་དོ།'' ''།དེ་ནས་སྨན་ཆེན་གྱིས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་ཞབས་

1. འདི་ནི་ངོ་མཚར་བ་སྣ་ཚོགས། རྒྱ་དཔེ།
2. ཁམས་འདི་ནི་ལུས་ཀྱི་ཁམས་ལ་སྟེན། མདོ་དེ་ཉིད་དུ་གསལ།
3. འབབ་པ་སྟེ། སྟེ། ཅོ།

ལ་གཏུགས་ནས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་འདི་སྐད་ཅེས་གསོལ་ཏོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལུས་ལས་འཕོ་བ་དེའི་རང་བཞིན་ཇི་ལྟ་བུ་ཞིག་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། སྨན་ཆེན་ད་ལྟར་ཁྱོད་ཀྱིས་ང་ལ་ཇི་སྐད་དུ་བསྐུལ་བ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་ཏེ། ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། །དྲི་བ་དེ་ནི་མཆོག་ཏུ་ཟབ་བོ།། དྲི་བ་འདི་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་བསྟན་པར་བྱ་བ་ཡིན་ཏེ། རྣམ་པར་ཤེས་པ་དེ་སྟོན་པ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་མ་གཏོགས་པ་གཞན་མེད་དོ། །དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་བཟང་སྐྱོང་གིས་འདི་སྐད་ཅེས་གསོལ་ཏོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་རྒྱལ་པོའི་བུ་གཞོན་ནུ་སྨན་ཆེན་ནི་ཟབ་མོའི་དོན་ཞུ་བ་ལ་མཁས་ལགས་ཏེ། སློ་ཞིབ་ཅིང་མཛངས་ལ་[1]མཁས་པ་ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། བཟང་སྐྱོང་དེ་དེ་བཞིན་ཏེ། རྒྱལ་པོའི་བུ་གཞོན་ནུ་སྨན་ཆེན་འདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམ་པར་གཟིགས་ལ་དགེ་བའི་རྩ་བ་བསྐྱེད་པ་ཡིན་ནོ།། བཟང་སྐྱོང་རྒྱལ་པོའི་བུ་གཞོན་ནུ་སྨན་ཆེན་འདི་ནི་ཚེ་རབས་ལྔ་བརྒྱའི་བར་དུ་གཞན་མུ་སྟེགས་ཅན་དུ་གྱུར་ནས་དེ་འདི་སྙམ་དུ་སེམས་ཏེ། རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་འདི་ཅི་ཡིན། རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་འདི་གང་ཡིན། རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་འདི་ཇི་ལྟ་བུ་ཞིག་སྙམ་མོ། །བཟང་སྐྱོང་འོན་ཀྱང་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་འགྲོ་བ་དང་འོང་བ་ཁོང་དུ་མ་ཆུད་དེ་ངས་འདིའི་ཐེ་ཚོམ་བསལ་

---

1. མཛངས་ལས། ཅོ།

བར་བྱའོ།[1]" "།གཞན་ཡང་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཅི་ཞེ་ན། ས་བོན་གྱིས་ལུས་ཀྱི་མྱུ་གུ་མངོན་པར་གྲུབ་པར་བྱེད་ལ། སེམས་པས་ཤེས་པ་དྲན་པ་ཐོབ་པར་འགྱུར་ཏེ། དེ་བས་ན་ས་བོན་དང་ཤེས་པ་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཞེས་བྱའོ།[2]" "།དཔེར་ན་རྒྱ་ཤུག་དང་། འབྲ་གོ་དང་། ཨམྲ་དང་། ནོ་ཏིང་[3]དང་། སེའུ་དང་། བིལ་བ་དང་ཀཔིཏྠ[4]ལ་སོགས་པའི་འབྲས་བུ་རྣམས་ནི་རོ་དུ་མར་འགྱུབ་སྟེ། ཚ་བ་དང་། ཁ་བ་དང་། སྐྱུར་བ་དང་། མངར་བ་དང་། ལན་ཚྭའི་རོ་དང་། བསྐ་བ་ལ་སོགས་པའི་རོ་རེ་རེར་རྣམ་པར་སྨིན་པར་འགྱུར་ཏེ། ལ་ལ་ནི་རོ་ཚ་བར་འགྱུར། ལ་ལ་ནི་སྐྱུར། ལ་ལ་ནི་མངར་རོ། །འབྲས་བུ་དེ་དག་མེད་པར་གྱུར་པའི་ས་བོན་གང་དང་གང་དུ་འཕོ་བར་གྱུར་པ་དེ་དང་དེར་རོ་ཡང་འཕོ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་འདི་གང་དང་གང་དུ་འཕོ་བ་དེ་དང་དེར་ཚོར་བ་ཡང་འཕོ་བར་འགྱུར་རོ། །བསོད་ནམས་དང་བསོད་ནམས་མ་ཡིན་པ་དང་དྲན་པ་ཡང་འཕོ་བར་འགྱུར་རོ། །གཞན་ཡང་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་འདིས་ནི་

---

1. Toh. 83 སྡེ། བཀའ། 'ཆ' ཤོག- ༡༣ན༢།
2. Toh. 83 སྡེ། བཀའ། 'ཆ' ཤོག- ༢༥ན༢།
3. ནོ་ཏི། གསེར།
4. ཀཔེད། གསེར། ཀཔིཐ། རྒྱ་དཔེ།

ལུས་ཡོངས་སུ་བཏང་ནས་བདག་གི་ལུས་འདི་ཡོངས་སུ་གཏོང་ངོ་སྙམ་དུ་རབ་ཏུ་ཤེས་ཏེ། དེ་བས་ན་འདི་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་ཞེས་བྱའོ། །དགེ་བའི་ལས་ཀྱང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ། །མི་དགེ་བའི་ལས་ཀྱང་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ།། ལས་འདི་དག་ནི་བདག་གི་ཕྱི་བཞིན་འབྲང་ངོ་། །བདག་ཀྱང་འདི་དག་གི་ཕྱི་བཞིན་འབྲང་ངོ་སྙམ་དུ་དེ་ལྟར་རབ་ཏུ་ཤེས་ཏེ་དེ་བས་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཞེས་བྱའོ། །གཞན་ཡང་ལུས་འདིའི་བྱ་བ་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་ཤེས་ཏེ་དེ་བས་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཞེས་བྱའོ།[1]’’ ‘‘།ལུས་འདི་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གང་ན་ཡང་མི་གནས་ཏེ། རྣམ་པར་ཤེས་པ་མེད་ན་ཡང་ལུས་སྐྱེ་བར་མི་འགྱུར་རོ།།[2]’’ ‘‘བཟང་སྐྱོང་དེའི་ཕྱིར་ཉོན་ཅིག བདེན་པ་མ་མཐོང་བས་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་འདི་མི་ཤེས་སོ།[3]’’།ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེ་ལྟར་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་ཁ་དོག་མེད་པ། མཚན་མ་མེད་པ། དབྱིབས་མེད་པའི་བདག་ཉིད་ཅན་རང་རིག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཙམ་དུ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་སྡེ་ལས་བསྟན་ཏོ། །གཞན་ཡང་‘‘རྡོ་རྗེའི་ཐེག་པ་གསང་བ་འདུས་པ་ལ་སོགས་པ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལ་མ་ཞུགས་པར་གངྒཱའི་ཀླུང་གི་བྱེ་མ་དང་མཉམ་པ་སྙེད་ཀྱི་བསྐལ་པ་ཐམས་ཅད་

---

1. Toh. 83 སྡེ། བཀའ། ‘ཆ’ ཤོག- ༡༠ན༦།
2. Toh. 83 སྡེ། བཀའ། ‘ཆ’ ཤོག- ༢༤བ༧།
3. Toh. 83 སྡེ། བཀའ། ‘ཆ’ ཤོག- ༤༣བ༥།

ཀྱིས་ཀྱང་རང་གི་སེམས་ཀྱི་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་ཉིད་ཤེས་པར་བྱ་བར་མི་ནུས་ཤིང་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་མཐོང་བར་མི་འགྱུར་རོ་''ཞེས་སོ། །དེ་བས་ན་དཔལ་ཡེ་ཤེས་རྡོ་རྗེ་ཀུན་ལས་བཏུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྗེས་སུ་འབྲངས་ནས། བླ་མའི་ཞལ་སྔ་ནས་ཀྱི་བཀའ་[1]དྲིན་ལས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གསུམ་གྱི་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བར་ཤེས་པར་བྱའོ། །རྒྱུད་དེ་ལས་རྡོ་རྗེ་ལྟ་བུའི་ཚིག་བཤད་པ་ཙུང་ཟད་གཅིག་ལ་འཇུག་པར་བྱ་སྟེ། ''དེ་ནས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་ཞབས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་ཞབས་གཉིས་ལ་བཏུད་ནས་སླར་ཡང་ཞུས་པ། ཨེ་མའོ་སྟོན་པ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གསུམ་ནི་རྟོག་པར་དཀའ་ཞིང་མཆོག་ཏུ་རྟོགས་པར་དཀའ་སྟེ། རྣམ་པར་ཤེས་པ་གསུམ་གྱི་དབྱེ་བ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཤད་དུ་གསོལ། བདེ་བར་གཤེགས་པ་བཤད་དུ་གསོལ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་འོད་གསལ་བ་ལས་བྱུང་བའོ། །དེ་ཉིད་ནི་སེམས་དང་ཡིད་ཅེས་བྱ་སྟེ། ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་དང་རྣམ་པར་བྱང་བའི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་དེའི་རྩ་བ་ཅན་ཡིན་ནོ། །དེ་ལས་བདག་དང་གཞན་དུ་རྟོག་པ་རྣམ་པ་གཉིས་སུ་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པ་དེ་རླུང་ལ་ཞོན་ཏེ་བྱུང་། རླུང་ལས་ནི་མེའོ།།

1. 'བཀའ་' གསེར་བྲིས་སུ་མེད།

མེ་ལས་ནི་ཆུའོ། །ཆུ་ལས་ནི་སའོ། །དེ་རྣམས་ལས་ནི་ཕུང་པོ་ལྔ་དང་། སྐྱེ་མཆེད་དྲུག་དང་། དབང་པོ་ལྔ་རྣམས་ཏེ། དེ་དག་ཐམས་ཅད་ནི་ཀླུང་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་དག་པར་འདྲེའོ། །དེ་ནས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གསུམ་གྱི་རང་བཞིན་སྣང་བ་ལ་རབ་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡོངས་སུ་གསལ་བར་ཉམས་སུ་མྱོང་བར་འགྱུར་ཞིང་སྣང་བའི་རྒྱུས་རང་བཞིན་རྣམས་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ། ''།མདོར་བསྟན་པའི་ཚིག་དེ་རྣམས་ཀྱིས་རྒྱས་པར་བཤད་པའི་བསྡུས་པ་བསྟན་པར་བྱ་སྟེ། དེ་ལ་དང་པོ་ཁོ་ནར་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གསུམ་གྱི་རྣམ་གྲངས་དག་བཤད་པར་བྱའོ། །དེ་ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཞེས་བྱ་བའི་མིང་གསལ་བའི་དགོངས་པས་བཤད་པ་འདིས་མ་ཉིད་གི་ཚིག་ནི་ཉེ་བར་མཚོན་པ་ཡིན་ལ། ཉེ་བར་ཐོབ་པའི་ཡེ་ཤེས་ནི་གསལ་བ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ན་སེམས་དང་ཡིད་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། ཀུན་བརྟགས་པ་དང་། གཞན་དབང་དང་། ཡོངས་སུ་གྲུབ་པ་དང་། འདོད་ཆགས་དང་། ཞེ་སྡང་དང་། གཏི་མུག་ཅེས་བྱ་བ་དང་། ངོ་བོ་ཉིད་གསུམ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་གྲངས་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་དང་ཐུན་མོང་དུ་གྱུར་པའོ། །རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་འདིར་རྣམ་གྲངས་གསུངས་པ། སྣང་བ་དང་། སྣང་བ་མཆེད་པ་དང་། སྣང་བ་ཐོབ་པ་དང་། སྟོང་པ་དང་། ཤིན་ཏུ་སྟོང་པ་དང་། སྟོང་པ་ཆེན་པོ་དང་། སེམས་

དང་སེམས་ལས་འབྱུང་བ་དང་། མ་རིག་པ་དང་། འདོད་ཆགས་དང་། འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བ་དང་། འདོད་ཆགས་བར་མ་ཞེས་བྱའོ། །

དེ་ལྟར་སེམས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་བསྟན་ནས། ད་ནི་སོ་སོ་རང་རིག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་རང་གི་མཚན་ཉིད་ངག་གི་སྒོ་ལ་བརྟེན་ནས་བསྟན་པར་བྱ་སྟེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་“སེམས་ནི་དབྱིབས་དང་ཁ་དོག་དང་བྲལ་བ་ནམ་མཁའི་མཚན་ཉིད་ཅན་ནོ”ཞེས་གསུངས་པ་དང་། ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་“སྣང་བའི་མཚན་ཉིད་ཅན་དང་། རྗེས་སུ་སྤྱོད་པའི་མཚན་ཉིད་དུ་སོ་སོར་རྟོགས་པར་བྱའོ”ཞེས་ལུང་ལས་བསྟན་ཏོ། །དེ་བས་ན་དེའི་མན་ངག་ལ་འཇུག་པར་བྱ་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ། དང་པོ་ཀུན་དུ་[1]སྣང་བ་དང་། ཕྱི་ནས་རང་བཞིན་ནོ། །དེ་ལ་སྣང་བ་དང་། སྣང་བ་མཆེད་པ་དང་། སྣང་བ་ཐོབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ་སྣང་བ་གསུམ་མོ། །དེ་ལ་སྣང་བའི་མཚན་ཉིད་གང་ཞེ་ན། རྣམ་པ་མེད་པའི་རང་བཞིན་ལུས་དང་ངག་མེད་པ་སྟེ། ཇི་ལྟར་སྟོན་གྱི་[2]དུས་སུ་ནམ་མཁའ་དྲི་མ་མེད་པ་ལ་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འོད་ཟེར་སྣང་བར་བྱེད་པས་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་བཞིན་དུ་རང་བཞིན་གྱིས་གསལ་བའི་རྣམ་པར་དངོས་པོ་མ་ལུས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་དམིགས་པས་ན་སྣང་བ་སྟེ། འདི་ནི་དོན་དམ་པའི་བྱང་

1. དང་པོ་ཇི་སྲིད་དུ། རྒྱ་དཔེ།
2. གྱིས། གསེར།

ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཤེས་རབ་ཀྱི་སྣང་བ་[1]སྟོང་པ་དང་པོ་སྟེ། ཨོཾ་ཞེས་བྱ་བ་ངག་གི་སྒྲ་ལ་བརྟེན་པའི་ས་བོན་བརྟན་པར་བྱེད་པའི་རྒྱུ་སྟེ། མོས་པ་ཆུང་བའི་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་དགོངས་ཏེ་གསུངས་པ་རྟོགས་པར་མི་འགྱུར་བས་དེ་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་གཟུགས་ལ་བརྟེན་ནས་དམིགས་[2]པར་བྱེད་ཅིང་པདྨ་འམ། བུད་མེད་ཀྱི་གཟུགས་སམ། གཡོན་པའི་མིང་ངམ། མཚན་མོའི་མིང་དང་། འཛམ་པའི་དངོས་པོར་སེམས་ཀྱི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་གཟུགས་གསལ་བའོ། །

སྣང་བ་མཆེད་པའི་མཚན་ཉིད་གང་ཞེ་ན། དེ་ཡང་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་དང་བྲལ་བའི་རྣམ་པ་མེད་པའི་རང་བཞིན་ཅན་ལུས་དང་ངག་མེད་པ་སྟེ། ཇི་ལྟར་སྟོན་ཀའི་དུས་སུ་ཉི་མའི་འོད་ཟེར་གྱིས་ཁྱབ་པ་བཞིན་དུ་ཤིན་ཏུ་གསལ་ཞིང་དྲི་མ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་དངོས་པོ་མ་ལུས་པར་དམིགས་པ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་གཉིས་པ་སྟེ། རིམ་པ་གཉིས་པ་ཤིན་ཏུ་སྟོང་པའི་མཚན་ཉིད་ཅན་ཨཿ[3]ཞེས་བྱ་བ་ངག་གི་སྒྲ་ལ་བརྟེན་པའི་ས་བོན་བརྟན་པར་བྱེད་པའི་རྒྱུ་སྟེ། མོས་པ་ཆུང་བའི་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱིས་དེ་བཞིན་གཤེགས་

1. ཤེས་རབ་ཀྱི་རང་བཞིན། རྒྱ་དཔེ།

2. གཟུགས་སོ་ཞེས་དམིགས། བོད་དཔེར་འདི་ལྟར་གསལ་ཡང་གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

3. ཨཿ། གསེར།

པས་དགོངས་ཏེ་གསུངས་པ་རྟོགས་པར་མི་འགྱུར་བས་ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་བརྟེན་ནས་དམིགས་པར་བྱེད་ཅིང་རྡོ་རྗེ་རྩེ་ལྔ་པའམ། རིན་པོ་ཆེའམ། ཉིན་མོའམ། སྐྱེས་པའི་གཟུགས་སམ། གཡས་པ་ཞེས་བྱ་བའམ། རྟུབ་པའི་རྣམ་པ་ནི་སེམས་ལས་བྱུང་བའི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་གཟུགས་སོ། །

སྣང་བ་ཐོབ་པ་གང་ཞེ་ན། དེ་བཞིན་དུ་ནམ་མཁའི་མཚན་ཉིད་དངོས་པོ་མེད་པའི་གཟུགས་ཅན་ལུས་དང་ངག་མེད་པ་སྟེ། ཇི་ལྟར་མཚམས་ཀྱི་སྨག་ལ་བབ་པའི་ངོ་བོར་ཁྲབ་པ་ཕྲ་ཞིང་བདག་མེད་པ་སྒྲོག་དང་རྟོལ་བ་མི་རྒྱུ་བས་རྒྱུ་བ[1]མེད་པ་སྟེ། སེམས་མེད་པ་མི་གཡོ་བ་ངག་གི་ས་བོན་ལ་བརྟེན་པའི་སྒྲ[2]ཡོངས་སུ་གྲུབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི་སྣང་བ་ཐོབ་པ་མ་རིག་པའི་མཚན་ཉིད་ཅན་སྟོང་པ་ཆེན་པོ[3]སྟེ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གསུམ་དུ་བཤད་དོ། །

དེ་ལྟར་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མན་ངག་སྟོང་པ་གསུམ[4]གྱི་མཚན་ཉིད་བསྟན་ནས། ད་ནི་ཡེ་ཤེས་རེ་རེ་འབྱུང་བ་ལ་རང་བཞིན་འབྱུང་བར་རྣམ་པར་གཞག་པར་བྱ་སྟེ། དེ་ལ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནི་འདོད་

1. རྟོལ་བ་མི་རྒྱུ་བ། གསེར།
2. ངག་གི་ས་བོན་ལ་མི་བརྟེན་པའི་སྒྲ། རྒྱ་དཔེ།
3. མ་རིག་པ་མི་ཟད་པའི་སྟོང་པ་ཆེན་པོ། རྒྱ་དཔེ།
4. སྟོང་གསུམ། གསེར།

ཆཏ་དང་བྲལ་བ་དང་། འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བ་བར་མ་དང་། ཤིན་ཏུ་འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བ་དང་། གང་ཡིད་ཀྱིས་[1]འགྲོ་བ་དང་འོང་བ་དག་དང་། མྱ་ངན་དང་། མྱ་ངན་བར་མ་དང་། ཤིན་ཏུ་མྱ་ངན་དུ་གྱུར་པ་དང་[2]། ཞི་བ་དང་། རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་། འཇིགས་པ་[3]དང་། འཇིགས་པ་བར་མ་དང་། ཤིན་ཏུ་འཇིགས་པ་དང་། སྲེད་པ་དང་། སྲེད་པ་བར་མ་དང་། ཤིན་ཏུ་སྲེད་པ་དང་། ཉེ་བར་ལེན་པ་དང་། མི་དགེ་བ་དང་། བཀྲེས་པ་དང་། སྐོམ་པ་དང་། ཚོར་བ་དང་། ཚོར་བ་བར་མ་དང་། ཤིན་ཏུ་ཚོར་བ་དང་། རིག་པ་པོ་དང་། རིག་པ་དང་། འཛིན་པའི་གཞི་དང་། སོ་སོར་རྟོག་པ་དང་། ངོ་ཚ་ཤེས་པ་དང་། སྙིང་རྗེ་དང་། བརྩེ་བ་དང་། བརྩེ་བ་བར་མ་དང་། ཤིན་ཏུ་བརྩེ་བ་དང་། དོགས་པ་དང་[4]བཅས་པ་དང་། སྡུད་པ་དང་། ཕྲག་དོག་སྟེ། མཚན་ཉིད་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་མོ། །ཐབས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནི་ཆགས་པ་དང་། ཀུན་ཏུ་ཆགས་པ་དང་། དགའ་བ་དང་། དགའ་བ་བར་མ་དང་། ཤིན་ཏུ་དགའ་བ་དང་། རངས་པ་དང་། རབ་ཏུ་མགུ་བ་དང་། ངོ་མཚར་བ་དང་། དགོད་པ་དང་། ཚིམ་པ་དང་། འཁྱུད་པ་དང་། འོ་བྱེད་པ་དང་།

1. བྲལ་བའི་གང་ཡིད་ཀྱི། གསེར།
2. གྱུར་བ། ཅོ།
3. རྣམ་པར་རྟོག་པ་འཇིགས་པ། རྒྱ་དཔེ།
4. ངོ་མཚར་དང་། རྒྱ་དཔེ།

འཛིབ་པ་དང་། བརྣན་པ་དང་། བརྩོན་པ་དང་། ཁེངས་པ་དང་། བྱ་བ་དང་། དབྲོག་པ་དང་། སྟོབས་དང་། སྲོ་བ་དང་། དཀའ་བ་ལ་སྦྱོར་བ་དང་། དཀའ་བ་ལ་སྦྱོར་བ་བར་མ་དང་། ཤིན་ཏུ་དཀའ་བ་ལ་སྦྱོར་བ་དང་། དྲག་པ་དང་། རྣམ་པར་སྣེག་པ་དང་། འགྲུས་པ་དང་། དགེ་བ་དང་། ཚིག་གསལ་བ་དང་། བདེན་པ་དང་། མི་བདེན་པ་དང་། ངེས་པ་དང་། ཉེ་བར་མི་ལེན་པ་དང་། སྒྲིན་པ་པོ་དང་། བསྐུལ་བ་དང་། དཔའ་བ་དང་། ངོ་ཚ་མེད་པ་དང་། སྒྱུ་ཟིན་པ་དང་།[1] གདུག་པ་དང་། མི་སྲུན་པ་དང་། གྱ་གྱུ་ཆེ་བ་སྟེ། མཚན་ཉིད་བཞི་བཅུ་ཐམ་པའོ། །སྣང་བ་ཐོབ་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནི་འདི་ལྟ་སྟེ། ཆགས་པ་བར་མ་དང་། བརྗེད་ངས་པ་དང་། འཁྲུལ་པ་དང་། མི་སྨྲ་བ་དང་། སྐྱོ་བ་དང་། ལེ་ལོ་དང་། ཐེ་ཚོམ་དང་བཅས་པ་སྟེ། འདིའི་རང་བཞིན་གྱི་མཚན་ཉིད་ནི་བདུན་པོ་འདི་དག་གོ །རང་བཞིན་རྣམ་པ་བརྒྱད་ཅུ་པོ་དེ་དག་གི་མཚན་ཉིད་ནི་མཚོན་སུམ་དུ་ཕྱེ་བར་གྱུར་ན་བརྒྱ་དྲུག་ཅུ་སྟེ། ཉིན་དང་མཚན་དུ་སྣོང་ལས་སྐྱེས་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱང་ཉིན་དང་མཚན་དུ་སྤྱོད་དེ་ཕོ་དང་མོའི་སྐྱེ་གནས་ཀྱི་དབྱེ་བས་ཕྱེ་བའི་ཕྱིར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། རང་བཞིན་རྣམ་པ་བརྒྱད་ཅུའི་སེམས་ཉིད་[2]དང་མཚན་

1. སྒྲིན་པ་དང་། གསེར།
2. སེམས་ཉིད། ཅོ། སྡེ།

དུ་རབ་ཏུ་རྒྱུ་བ་བདག་དང་གཞན་[1]རྣམས་ཀྱི་སོ་སོ་རང་རིག་པ་ཡིན་པ་[2]ཉི་སེམས་ཉི་མ་མཆིས་ན། འོན་ཀྱང་ལུང་གིས་ཡིད་ཆེས་པར་བགྱི་བ་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་སྟོན་པས་བཤད་དུ་གསོལ། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། ཐུགས་ཀྱི་སྒྲའི་ངེས་པའི་ཚིག་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་གསང་བ་འདུས་པའི་རྒྱུད་ཕྱི་མ་ལས་གསུངས་ཏེ།

རྐྱེན་ལས་བྱུང་བ་གང་དང་གང་། །
དབང་པོ་དང་ནི་ཡུལ་གྱིས་ཡིད། །
ཡིད་དེ་མན་ཞེས་བྱ་བར་བཤད། །
ཏྲ་ནི་སྐྱོབ་པར་[3]བྱེད་པའི་དོན། །ཞེས་བྱའོ། །

རང་བཞིན་རྣམ་པ་བརྒྱད་ཅུ་ལས། ཉོན་མོངས་པ་དགུ་བཅུ་རྩ་བརྒྱད་འབྱུང་བ་དང་། ཡང་ལྟ་བ་དྲུག་ཅུ་རྩ་གཉིས་ལ་སོགས་པ་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ།། རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། ཤེས་རབ་དང་སྟོང་པའི་[4]ཡེ་ཤེས་ནི་ཟླ་བ་ལྟ་བུ་སྣང་བ་སྟོང་པ་ཉིད་ཙམ་མོ། །ཐབས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱང་ཉི་མའི་སྣང་བ་ལྟ་བུ་ཤིན་ཏུ་སྟོང་པ་ཉིད་ཙམ་མོ། །དེ་བཞིན་དུ་སྣང་བ་ཉེ་བར་ཐོབ་པའི་ཡེ་ཤེས་ནི་མུན་

---

1. བདག་གཞན། གསེར།
2. ཡིན་པར། གསེར།
3. ཏྲ་ནི་གསལ་བར། བོད་དཔེར། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
4. ‘སྟོང་པའི་’ རྒྱ་དཔེར་མེད།

ནག་ལྟ་བུ་སྟེ། སྟོང་པ་ཆེན་པོའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ལ། རྣམ་པར་ཤེས་པ་གསུམ་པོ་དེ་དག་ནི་ནམ་མཁའི་མཚན་ཉིད་ཅན་རྣམ་པ་མེད་པའི་ངོ་བོར་ཁྲབ་པ་[1]འགྲོ་བ་དང་འོང་བ་དང་བྲལ་བའོ་ཞེས་བཤད་ན། ཇི་ལྟར་ན་ཉིན་དང་མཚན་དུ་ལུས་ལས་སྒྲོ་ཞིང་སྡུད་པར་བྱེད། གང་ཞིག་འདིར་མེལ་ཚེ་བྱེད། སུ་ཞིག་ནི་སེམས་པ་མེད་པར་བྱེད། འདོད་ཆགས་དང་། འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བ་དང་། འདོད་ཆགས་བར་མ་ལ་སོགས་པ་རང་བཞིན་བརྒྱ་དྲུག་ཅུ་གང་ལས་ཉམས་སུ་མྱོང་བར་འགྱུར་བའི་རྒྱུ་འདིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་སྟོན་པས་བཤད་དུ་གསོལ། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། རྣམ་པར་ཤེས་པ་གསུམ་ནི་རྩ་བ་མེད་པ། གནས་པ་མེད་པ། གཞི་མེད་པ། མཚན་ཉིད་མེད་པ[2]། ཁ་དོག་དང་དབྱིབས་མེད་པ། དབང་པོ་ལས་འདས་པ་ཡིན་པར་ནི་བདེན་ཏེ། དེ་ལྟ་མོད་ཀྱི་སྣང་བ་དང་བཅས་པ་ཡིན་ལ་དེས་ན་རླུང་གི་ཁམས་དང་ལྷན་ཅིག་མེལ་ཚེ་བྱེད་དེ་གང་གི་ཕྱིར་རླུང་གི་ཁམས་ནི་གཟུགས་མེད་ཀྱང་གཡོ་ཞིང་བསྐྱོད་པ་ལ་སོགས་པའི་བྱ་བ་སྟོན་པས་རྗེས་སུ་དཔག་པ་ལས་ཤེས་པར་བྱའོ། །དེ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྣང་བ་ཡང་གཟུགས་མེད་པ་ལ་འདོད་ཆགས་དང་། འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བ་དང་། འདོད་ཆགས་བར་མ་

1. ཁྱབ་པར། གསེར།
2. ཚད་མ་མེད་པ། རྒྱ་དཔེ།

ལ་སོགས་པའི་རང་བཞིན་རྣམས་ལ་རྗེས་སུ་དཔག་པར་བྱ་བ་ཡིན་པས་ན་རྗེས་སུ་དཔག་པར་བྱ་བའོ། །

ཇི་སྐད་དུ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་འཕོ་བའི་མདོ་ལས[1]། "བཟང་སྐྱོང་དཔེར་ན་རླུང་གི་ཁམས་གཟུགས་ཅན་མ་ཡིན་ཡང་བསྟན་དུ་ཡོད་ཅིང་གཟུང་དུ་མེད་པ་ལས་གཟུགས་སུ་སྣང་ངོ་། །དེ་ལ་བསྟན་དུ་ཡོད་པ་ནི་ཤིང་འགྱུལ་ཞིང་གཡོ་བ་དང་སྒྲ་སྐད་ཨུར་ཨུར་པོའི་སྒྲ་སྐད་འབྱིན་པ་དང་། གྲང་བ་དང་དྲོ་བའི་རེག་པས་ཚོར་བ་སྐྱེད་པ་ཡིན་ཡང་དེ་ལ་ཁང་ལག་དང་མིག་དང་གདོང་དམིགས་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། སྔོ་བསངས་དང་དཀར་བ་ཞེས་ཁ་དོག་ལྷག་པར་མ་དམིགས[2]སོ། །བཟང་སྐྱོང་དེ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་འདི་ཡང་གཟུགས་སུ་མི་དམིགས་ཤིང་གཟུགས་སུ་སྣང་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། ཁྱོད་ཀྱི་རྒྱུའི་བྱེ་བྲག་དག་གིས་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་རྟོགས་པར་བྱའོ། །"ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །

གཏན་ཚིགས་དེས་ན་ཁམས་ཕྲ་བ་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྣང་བ་དག་ནི་གཟུགས་མེད་པས་མར་གྱི་ནང་དུ་མར་བཙུག་པ་དང་འདྲ་བར་འདྲེས་པར་

1. བཟང་སྐྱོང་གིས་ཞུས་པའི་མདོ། Toh. 83 སྡེ། བཀའ། 'ཆ' ཤོག-༧༩བ༧།
2. མི་དམིགས། གསེར།

གྱུར་ནས་[1]འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་བྱ་བ་ཐམས་ཅད་རྫོགས་པར་བྱེད།། ཇི་སྐད་དུ་དགོངས་པ་བླ་ན་མེད་པ་ལས།

རང་རིག་ཙམ་གྱི་ཡེ་ཤེས་ནི། །
ནམ་མཁའ་འདྲ་བར་མཚན་ཉིད་མེད། །
འོན་ཀྱང་དེ་ལ་དབྱེ་ཡོད་དེ། །
བར་མཚམས་ཉིན་དང་མཚན་མོའི་བདག །

སྣང་བ་དང་ནི་སྣང་བ་མཆེད། །
དེ་བཞིན་སྣང་བ་ཐོབ་པ་ཅན། །
སེམས་ནི་རྣམ་པ་གསུམ་དུ་བཤད། །
དེ་ཡི་གཞི་ནི་བཤད་པར་བྱ། །

ཕྲ་བའི་གཟུགས་ཅན་རླུང་དང་ནི། །
ཡེ་ཤེས་དག་ནི་འདྲེས་གྱུར་པ། །
དབང་པོའི་ལམ་ནས་བྱུང་ནས་ནི། །
ཡུལ་རྣམས་ལ་ནི་དམིགས་པར་འགྱུར། །

གང་ཚེ་སྣང་བ་ལྡན་གྱུར་པ། །
རླུང་གི་བཞོན་པར་གྱུར་པ་ཡིན། །

---

1. འདྲེས་པར་གྱུར་ནས་འཇིག་རྟེན་དང་། ཀྲུ་དཔེ།

དེ་ཚེ་རང་བཞིན་དེ་ཐམས་ཅད། |
མ་ལུས་ལུས་པ་མེད་པར་འགྱུར། |

རླུང་ནི་གང་དང་གར་གནས་པ། |
རང་བཞིན་དེ་དང་དེར་རྗེས་སྤྱོད། |

ཅེས་གསུངས་པ་དང་། དོན་འདི་ཉིད་གསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡེ་ཤེས་སྐད་ཅིག་མར་ཡང་དག་པ་འབྱུང་བ་ནམ་མཁའ་སྣང་བྱེད་ལྟ་བུ་ཕྱོགས་བཅུ་ཁྱབ་པར་རབ་ཏུ་འབར་བའོ་ཞེས་དགོངས་པས་བཤད་པ་གསུངས་པས་སོ།། ཇི་ལྟར་ན་ཡེ་ཤེས་སྐད་ཅིག་མར་འབྱུང་བ་ཡིན་ཞེ་ན། སྐད་ཅིག་དང་ཐང་ཅིག་དང་། ཡུད་ཙམ་དང་། མིག་བཙུམས་དང་། ཐལ་མོ་བརྡབས་པ་ཙམ་དུ་སྣང་བ་འབྱུང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །ནམ་མཁའ་སྣང་བྱེད་ལྟ་བུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ནམ་མཁའ་ནི་[1]གསལ་བར་བྱེད་པས་ནམ་མཁའ་གསལ་བར་བྱེད་པ་སྟེ། དོན་དེ་དང་འདྲ་བའི་དོན་གྱིས་ཕྱོགས་བཅུ་ཁྱབ་ཅིང་རབ་ཏུ་འབར་བའི་སྣང་བ་གསུམ་དུ་སྣང་སྟེ། མཁའ་སྣང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྲིན་བུ་མེ་ཁྱེར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། |

དེ་བས་ན་ཁམས་ཞུ་བ་ལ་འཇུག་པ་ལས་སྐད་ཅིག་དང་། ཐང་ཅིག་དང་། ཡུད་ཙམ་དང་། མིག་བཙུམས་དང་། ཐལ་མོ་བརྡབས་པར་སྣང་བ་གཡོ་བའོ། །དེ་ནས་སྐད་ཅིག་དང་། ཐང་ཅིག་དང་། ཡུད་ཙམ་དང་། མིག་

---

1. 'ནི་' གསེར་ཕྲེང་སུ་མ་གསལ།

བརྩམས་དང་། ཐལ་མོ་བརྡབས་པ་ལས་རང་བཞིན་རྣམས་རྗེས་སུ་སྨྲོང་བར་འགྱུར་རོ། །སེམས་པ་མེད་པ་གང་ཡིན་ཞེ་ན། མ་རིག་པ་སྟེ། དེ་བས་ན་མ་ལུས་པར་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ནས་རླུང་གི་ཁམས་ཀྱི་རྒྱུས་རང་བཞིན་རྣམས་ཕན་ཚུན་གཅིག་ལ་གཅིག་ཡུལ་གྱི་ལོངས་སྤྱོད་མ་ལུས་ཤིང་ལུས་པ་མེད་པ་རྣམས་ཉིན་དང་མཚན་དུ་རང་དང་གཞན་གྱི་རྒྱུད་ལ་རྗེས་སུ་སྨྲོང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་ན་རང་བཞིན་གྱི་སྣང་བ་རླུང་གི་བཞོན་པ་དང་བཅས་པའི་དབྱེ་བ་རྟོགས་པར་གྱུར་པའི་རྣལ་འབྱོར་པས་འདས་པ་དང་། མ་འོངས་པ་དང་། ད་ལྟར་བྱུང་བའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་སྤྱོད་པ་རྣམ་པར་གཡོ་བ་ཤེས་པར་འགྱུར་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཇི་སྐད་དུ་མིའམ་ཅིའི་རྒྱལ་པོ་ལྗོན་པས་ཞུས་པའི་མདོ་ལས[1]།

''ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ནི་ཐོགས་པ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་མཐོང་བ་དང་ལྡན་ནོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། རིགས་ཀྱི་བུ་གང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འདས་པའི་སེམས་ཀྱི་རྒྱུད་ཟད་པ་དང་། འགགས་པ་དང་། བྲལ་བ་དང་། རྣམ་པར་འགྱུར་བ་ཐམས་ཅད་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་རབ་ཏུ་མཁྱེན་ཏེ[2]། རྒྱུ་གང་དག་ལས་སེམས་ཀྱི་རྒྱུད་དེ་དག་འབྱུང་བ་དང་། རྒྱུ་

1. Toh. 157 སྡེ། བཀའ། མདོ་སྡེ། 'པ' ཤོག་གྲངས་-༡༠༡བ༡།

2. རབ་ཏུ་མཁྱེན་ཏོ། གསེར།

གང་དག་མེད་པས་ཟད་ཅིང་བྲལ་བར་བསྟན་པ་དགེ་བའམ། མི་དགེ་བའམ། ལུང་དུ་བསྟན་པའམ། ལུང་དུ་མ་བསྟན་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་རྣམ་པ་དང་བཅས། གཞི་དང་བཅས། གཏན་ཚིགས་དང་བཅས་པར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ། །ད་ལྟར་བྱུང་བའི་དུས་ཀྱི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་རྒྱུད་དུ་འབྱུང་བ་དགེ་བའམ། མི་དགེ་བའམ། ལུང་དུ་བསྟན་པའམ། ལུང་དུ་མ་བསྟན་པ་ཡང་རུང་སྟེ། སེམས་གང་གི་འོག་ཏུ་སེམས་གང་འབྱུང་བ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀུང་རྣམ་པ་དང་བཅས། ཡུལ་ཕྱོགས་དང་བཅས། གཞི་ཅི་ལས་གྱུར་པ་དང་བཅས་པར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ། །གང་མ་འོངས་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་རྒྱུད་དང་། སེམས་ལས་བྱུང་བའི་ཆོས་དགེ་བའམ། མི་དགེ་བའམ། ལུང་དུ་བསྟན་པའམ། ལུང་དུ་མ་བསྟན་པ་ཡང་རུང་སྟེ། སེམས་གང་གི་འོག་ཏུ་སེམས་གང་འབྱུང་བར་འགྱུར་བ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀུང་རྣམ་པ་དང་བཅས་ཡུལ་ཕྱོགས་དང་བཅས; གཞི་ཅི་ལས་གྱུར་པ་དང་བཅས་པར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་རབ་ཏུ་ཤེས་སོ། །རིགས་ཀྱི་བུ་དེ་ལྟར་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ནི་ཐོགས་པ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་ནི་ལྡན་པ་ཡིན་ནོ། '' །ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །རིགས་པ་འདིས་ན་ཐུགས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་གནས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཅན་གྱིས་སྨིན་པ་པོ་དང་། སྨིན་ལམ་དང་།

སྨོན་པར་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཕྱི་རོལ་གྱི་དངོས་པོ་སྣ་ཚོགས་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་སྤངས་ནས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་སྒོ་ལ་མངོན་པར་ཕྱོགས་པར་འགྱུར་ཏེ། རྩ་བའི་རྒྱུད་ལས། ''རིགས་ཀྱི་བུ་མཉམ་པར་གཞག་པས་རང་གི་སེམས་ལ་སོ་སོར་རྟོགས་ཤིག'' ཅེས་གསུངས་པས་སོ། །

དེ་ལྟར་བཤད་པའི་རྒྱུད་ལ་བརྟེན་ནས་རང་གི་རང་བཞིན་སྣང་བའི་རྗེས་སུ་འབྲངས་ནས་རང་གི་སེམས་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་མ་རྟོགས་པར་ལས་སུ་སླ་བའི་སེམས་ཅན་རྣམས། འཁོར་བ་ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་རང་གི་སེམས་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ལས་བྱུང་བའི་ལས་དང་ཉོན་མོངས་པའི་འཆིང་[1]བས་དར་གྱི་སྲིན་བུ་བཞིན་དུ་རང་ཉིད་ཀྱིས་སྡུག་བསྔལ་གྱི་ཕུང་པོ་ཆེན་པོ་མངོན་པར་འདུས་བྱས་ནས་སྐྱེ་བ་གཅིག་ནས་གཅིག་ཏུ་ཉེ་བར་བསགས་པའི་དགེ་བ་དང་། མི་དགེ་བའི་ལས་རྣམས་ཀྱི་འབྲས་བུ་རྣམ་པར་སྨིན་པ་མྱོང་ནས་ཡང་དོན་དམ་པའི་བདེན་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་འཇུག་པའི་རིམ་གྱིས་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་སྤངས་ཏེ། རླུང་གི་ཁམས་ཀྱིས་བླངས་ནས་ཚོར་བ་དང་ལྡན་ཞིང་སྲིད་པས་རྗེས་སུ་བཅིངས་ལ། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་རྒྱ་མཐུན་པ་ལས་བྱུང་བའི་དྲན་པས་ཡོངས་སུ་བཟུང་བ། དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བའི་རྣམ་པའི་ཡིད་དང་ལྡན་པ། བྱིས་པ་ལོ་ལྔ་པ་དང་མཉམ་པ་ཐམས་ཅད་མཐོང་བ། དབང་པོ་ཐམས་ཅད་

1. མཆིང་། གསེར།

ཚང་བ། དེའི་ཟས་ལ་སྤྱོད་པ། རྡོ་རྗེ་ལ་སོགས་པས་ཀྱང་མི་བཟློག་ལ་མཚན་ཉིད་ཐམས་ཅད་དང་ལྡན་པ། ལས་ཀྱི་རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་ཤུགས་དང་ལྡན་པ། ཉི་མ་བདུན་གྱིས་འོང་བའི་བར་ལ་གནས་ནས་རང་གི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ལས་བྱུང་བའི་ལས་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བས་བསྐལ་པར་གྱུར་པས་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ཐོབ་ནས་འགྲོ་བ་ལྔ་རྣམས་སུ། ཪྙ་རྒྱུན་གྱི་འཁྲུལ་འཁོར་གྱི་ཚུལ་གྱིས་ཡང་དང་ཡང་དུ་ཉིང་མཚམས་སྦྱོར་བ་ཡིན་པར་བྱེད་ཅིང་། འཁོར་བའི་སྡུག་བསྔལ་རྗེས་སུ་མྱོང་བར་འགྱུར་རོ།།

སེམས་རྣམ་པར་དཔེན་པ་བསྡུས་པའི་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ་ལེའུ་བཞི་པའོ།། །།

ལེའུ་ལྔ་པ།

རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྣ་ཚོགས་པ་གཞན་དག་ཀྱང་ཞུ་བར་འཚལ་ལོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་གལ་ཏེ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གསུམ་གྱི་[1]སྣང་བ་ནི་གཟུགས་མེད་པ་ཡིན་ལ་རླུང་གི་ཁམས་ཀྱང་གཟུགས་མེད་པ་ཡིན་ཞིང་ལས་ཀྱང་གཟུགས་མེད་པ་སྟེ། དེ་བཞིན་དུ་འདི་རྣམས་ཀྱི་ཕན་ཚུན་ཤེས་པ་མེད་པས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ལུང་གི་ཚིག་ལས་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་གསུངས་ན། དེ་ཇི་ལྟར་ན་ལས་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བས་འཁོར་བ་ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་ཡོད་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་[2]ལུས་དེ་བཅིངས་པར་མ་གྱུར། དེ་བཞིན་དུ་རང་བཞིན་བརྒྱ་དྲུག་ཅུ་པོ་འདི་རྣམས་ཀྱི་[3]དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བ་རྣམས་ཉེ་བར་བསགས་ནས་དེ་འདི་ཉིད་སྐད་ཅིག་ཐང་ཅིག་ཏུ་སྐྱེ་ཞིང་རབ་ཏུ་འཇིག་པར་འགྱུར་ན་དེས་ཇི་ལྟར་ན་ཡང་ནས་ཡང་དུ་འཇིག་རྟེན་ཕ་རོལ་ཏུ་ཉེ་བར་དམིགས་པར་འགྱུར། ཡང་ན་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བ་དེ་དག་གཞན་དག་ལས་མཆི་བར་འགྱུར། ཡང་ན་རང་གི་སེམས་ཀྱི་བག་ཆགས་ལས་

1. གསུམ་གྱི་རང་བཞིན་གྱི། གསེར།
2. གྱིས། གསེར།
3. ཀྱིས། གསེར།

འབྱུང་བར་འགྱུར་བ་ལགས། བདག་གི་འགྲོད་པ་འདི་དག་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་སྟོན་པས་རྣམ་པར་བསལ་དུ་གསོལ།

རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། སེམས་ཅན་ཆེན་པོ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ།། ལས་རྣམ་པར་དག་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པར་བྱ་བ་ཤིན་ཏུ་ཡང་ཟབ་པ་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་ཏེ། རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ནི་ལས་དང་པོ་བ་རྣམས་དང་ལས་སུ་སྨྲ་བ་རྣམས་ཀྱིས་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ན་ལུང་དང་རིགས་པ་དག་གིས་ལས་རྣམ་པར་དག་པ་སོ་སོར་རྟོགས་པར་བྱ་ཡིས་[1]རབ་ཏུ་འབད་པས་ཉོན་ཅིག དེ་ལ་དང་པོ་ཁོ་ནར་ལས་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བ་རྣམས་ཀྱི་རང་གི་མཚན་ཉིད་གཞག་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་དགེ་བ་བཅུའི་ལས་ཀྱི་ལམ་རྣམས་དང་། དེ་ལས་བཟློག་པ་ནི་མི་དགེ་བ་བཅུའི་ལས་ཀྱི་ལམ་རྣམས་ཏེ། ལས་ཀྱི་ལམ་འདི་རྣམས་ནི་ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ལས་ཀུན་དུ་བྱུང་བའོ་ཞེས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་རྡོ་རྗེ་གཙུག་ཏོར་གྱི་རྒྱུད་ལས་གསུངས་པས་དེ་ལ་འཇུག་པར་བྱ་སྟེ། ''བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། གསང་བའི་བདག་པོ་ཉོན་ཅིག ལུས་ཀྱི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པ་ནི་རྣམ་པ་གསུམ་མོ། །ངག་གི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པ་ནི་རྣམ་པ་བཞིའོ།། ཡིད་ཀྱི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པ་ནི་རྣམ་པ་གསུམ་སྟེ། དེ་དག་གིས་སེམས་ཅན་དམྱལ་བར་ལྟུང་བར་འགྱུར་རོ། །ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེས་གསོལ་པ། ལུས་ཀྱི་ཉེས་པར་སྤྱོད་

---

1. བྱ་བ་ཡིས། གསེར།

པ་དང་ངག་གི་སྤྱོད་པའི་རབ་ཏུ་དབྱེ་བ་དང་། ཡིད་ཀྱི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པ་དུ་ཞིག་མཆིས་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཤད་དུ་གསོལ། བདེ་བར་གཤེགས་པ་བཤད་དུ་གསོལ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། གསང་བའི་བདག་པོ་ཉེས་པར་སྤྱོད་པ་དེ་ཉིད་ནི་ལྔ་བར་གྱུར་པ་དང་། ཐ་མལ་པ་རྣམས་ཏེ། དེ་ལ་ཕ་དང་མ་དང་། བླ་མར་གྱུར་པ་ལ་སོཏ་པ་ལ་གསོད་པ་དང་བརྡེག་པ་[1]ལ་སོགས་པ་ནི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པ་ལྔ་བའོ། །སྲོག་གཅོད་པ་ལ་སོགས་པ་མི་དགེ་བའི་ལས་ཀྱི་ལམ་རྣམས་ནི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པ་ཐ་མལ་བའོ། །ངག་གིས་ཉེས་པར་སྤྱོད་པ་གང་ཞེ་ན། དམ་པའི་ཆོས་སྤོང་བའི་ཚིག་སྨྲ་བ་ཉིད་ཀྱིས་ངག་གི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པའི་ཚིག་ཉིད་དང་། ཕ་དང་མ་དང་བླ་མར་གྱུར་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ལ་ཚིག་ངན་པར་སྨྲས་པ་ནི་ངག་གི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པ་ལྔ་བའོ། །སྐྱེས་བུ་འགའ་ཞིག་གང་ཟག་དད་པ་ཅན་གཞན་དག་ནན་ཏན་ཉམས་སུ་ལེན་ཅིང་དགེ་བ་སྒོམ་པའི་གཏམ་གྱི་སྐབས་སུ་འཇིག་རྟེན་ཕ་རོལ་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱ་ཆེ་བའི་ཚིག་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་བརྟན་ཟླ་བས་[2]དགེ་བའི་ལས་ཀྱི་བར་ཆད་བྱེད་པ་དང་། ཚིག་འཁྲུལ་པར་སྨྲ་བ་དང་། ཕྲག་འཕྲུས་བྱེད་པ་དང་། མི་དགེ་བའི་ལས་ཀྱི་གཏམ་རྣམས་ནི་ངག་གི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པ་ཐ་མལ་བའོ། །

1. རྡེག་པ། གསེར།
2. ཟླ་ལས། ཙོ།

ཡིད་ཀྱི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པ་ནི། གང་དང་པོར་ནི་རྨུགས་པ་སྟེ། དེ་ཉིད་ཀྱི་རང་བཞིན་ནི་ཡིད་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་སེམས་ཀྱི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པ་དང་། སེམས་ལས་བྱུང་བའི་རང་བཞིན་གྱི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པ་དང་། མ་རིག་པའི་རང་བཞིན་གྱི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པའོ། །ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེས་གསོལ་པ། སེམས་དང་སེམས་ལས་བྱུང་བ་དང་། མ་རིག་པའི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པ་རྣམས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཤད་དུ་གསོལ། བདེ་བར་གཤེགས་པ་བཤད་དུ་གསོལ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། གསང་བའི་བདག་པོ་ཉོན་ཅིག རྣམ་པར་གསོད་པའི་སེམས་དང་མ་ཆགས་པའི་སེམས་དེ་དང་དགེ་བ་བཅུའི་ལས་ཀྱི་ལམ་རྣམས་ལ་མ་ཆགས་པ་དེ་ཉིད་ནི་སེམས་ཀྱི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པའོ། །རྒྱགས་པ་དང་། དྲེགས་པ་དང་། ང་རྒྱལ་དང་། ཁྲོ་བོ་དང་། སེམས་ཅན་རྣམ་པར་འཇིག་པ་དང་། འདོད་ཆགས་ཀྱི་སེམས་ཀྱིས་གཞན་གྱི་བུད་མེད་ལ་ཆགས་པ་དང་། གཞན་གྱི་ནོར་འཕྲོག་པ་དང་། བླ་མར་གྱུར་པ་ལ་སེམས་གྱ་གྱུ་ཞིང་རབ་ཏུ་སྡང་བ་ནི་སེམས་ལས་བྱུང་བའི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པའོ། །དགེ་བ་བཅུའི་ལས་ཀྱི་ལམ་རྣམས་དང་། ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དྲུག་རྣམ་པར་འདོར་ཞིང་བརྗེད་ངས་པ་དང་། སོམ་ཉི་མཚན་མའི་གདོང་དང་། ཡིད་ཤིན་ཏུ་རྨོངས་པར་གྱུར་པས་ན་མ་རིག་པའི་ཉེས་པར་སྤྱོད་པ་ཐ་མལ་བའོ། ''།

དེ་ལྟར་འདི་དག་ནི་ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱི་[1]ཉེས་པར་སྤྱོད་པའོ་ཞེས་མི་ཤེས་ཤིང་རང་ཉིད་ཀྱིས་རང་བཞིན་གྱི་སྣང་བ་རླུང་གི་བཙོན་པའི་རང་བཞིན་ཅན་མ་ཤེས་ནས་ངའི་ལུས་དང་། ངའི་ངག་དང་། ངའི་སེམས་ཡིན་ནོ་ཞེས་བདག་ཏུ་རློམ་པ་དང་། ངར་སེམས་པས་ལས་[2]དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བ་རྣམས་བྱས་ནས་བདེ་འགྲོ་དང་ངན་འགྲོར་མཆོག་ཏུ་གཞོལ་བར་འགྱུར་རོ། །རང་བཞིན་སྣང་བའི་རིམ་གྱིས་སེམས་རྣམ་པར་དབེན་པ་རྟོགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཅན་ནི་ལུས་དང་། ངག་དང་། ཡིད་ཀྱི་ལེགས་པར་སྤྱོད་པ་དང་། ཉེས་པར་སྤྱོད་པར་སེམས་པར་མི་བྱེད་ཅིང་རྟོགས་པར་མི་བྱེད་དེ། གང་གི་ཕྱིར་ཞེ་ན། དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བའི་རང་བཞིན་ནི་སྟོང་པ་གསུམ་ལས་ཀུན་དུ་བྱུང་བ་[3]རླུང་གི་བཙོན་པའི་དབང་གིས་སྐད་ཅིག་ཐང་ཅིག་ལ་འབྱུང་ཞིང་། ཡུལ་རྣམས་རྗེས་སུ་སྒྲོང་ནས་ཡང་ནས་[4]ཡང་དུ་འོད་གསལ་བར་འཇུག་པར་འགྱུར་རོ།
ཇི་སྐད་དུ། དགོངས་པ་ལྷ་ན་མེད་པ་ལས།

ཇི་ལྟར་སྤྲིན་ནི་སྣ་ཚོགས་ཤིང་། །
མདོག་དང་དབྱིབས་ནི་ཐ་དད་པ། །

1. ཡིད་ཀྱི་ལེགས་པར་སྤྱོད་པ་དང་། རྒྱ་དཔེ།
2. 'ལས་' གསེར་བྲིས་སུ་མེད།
3. ཀུན་ཏུ་བྱུང་བ། སྣེ། ཀུན་ཏུ་གྱུར་བ། ཅོ།
4. ཡོང་ནས། སྣེ། ཅོ།

ནམ་མཁའི་དབྱིངས་སུ་བྱུང་ནས་ནི། །
དེ་ཉིད་དུ་ནི་ཐིམ་པར་འགྱུར། །

དེ་བཞིན་རང་བཞིན་ཐམས་ཅད་ནི། །
སྣང་བ་གསུམ་གྱི་རྒྱུ་ཅན་ཏེ། །
མ་ལུས་ཡུལ་ལ་ཞུགས་ནས་ནི། །
འོད་གསལ་བར་ནི་འདུག་པར་འགྱུར། །

དེ་འདྲའི་རང་བཞིན་མ་ཤེས་པས། །
མི་ཤེས་མུན་པས་ཁེབས་པ་རྣམས། །
དགེ་དང་མི་དགེའི་ལས་བྱས་ནས། །
འགྲོ་བ་ལྔར་ནི་འཁོར་བར་འགྱུར། །

མཚམས་མེད་ལ་སོགས་བྱས་ནས་ནི། །
དམྱལ་ལ་སོགས་པར་འཚེད་[1]པར་འགྱུར། །
སྦྱིན་སོགས་དགེ་བ་བྱས་ནས་ནི། །
མཐོ་རིས་ལ་སོགས་དག་ཏུ་མཆོད། །

སྐྱེ་བ་དཔག་མེད་སྟོང་ཕྲག་ནི། །
འདི་ནི་ཡང་དང་ཡང་ཐོབ་པ། །

1. འཚོད། གསེར།

འདི་ནི་སྟོན་ལས་རྣམ་སྨིན་ཞེས། །
ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་ནི་སྐྱུ་ངན་བྱེད། །
རང་བཞིན་སྣང་བའི་ཚུལ་གྱིས་ནི། །
གང་གིས་སྐྱེ་བོ་ཉོན་མོངས་པ། །
དེ་ཉིད་ཤེས་ནས་ཡེ་ཤེས་ཅན། །
སྲིད་པའི་གཟེབ་ལས་གྲོལ་བར་འགྱུར། །

ཞེས་གསུངས་པ་དང་། དོན་འདི་ཉིད་གསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་མི་འཁམ་ཅེའི་རྒྱལ་པོ་ལྷོན་པས་ཞུས་པའི་མདོ་ལས་ཀྱང་། ''སེམས་ཀྱི་སྤྱོད་པ་རྣམས་ནི་འདུས་མ་བྱས་པ་གཟུགས་ཅན་མ་ཡིན་པ་ལས་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་གྱི་དབྱེ་བས་རླུང་ཡང་ཐོགས་པ་མེད་པ་སྟེ། འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཤེས་པ་དེ་ནི་རྣམ་པར་དག་པ་ཡིན་པས་ན་ཉོན་མོངས་པར་འབྱུང་བར་[2] འགྱུར་བ་མི་སྲིད་དོ། ''།ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །

ཡང་རིགས་པ་འདིས་སེམས་རྣམ་པར་དབེན་པ་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཆེན་པོས་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བའི་ལས་ཀྱི་འབྲས་བུ་ལ་ལྟོས་པ་མེད་པར་ཐར་པ་ལ་མངོན་པར་ཕྱོགས་པར་འགྱུར་རོ། །ཇི་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་

1. སྡེ་དགེ། གསེར།

2. 'འབྱུང་བར་' གསེར་བྲིས་སུ་མེད།

འདས་ཀྱིས་རྡོ་རྗེ་གཅོད་པ་ལས། ''ཆོས་ཀྱང་སྤང་བར་བྱ་ན་ཆོས་མ་ཡིན་པ་ལྟ་སྨོས་ཀྱང་ཅི་དགོས། ''ཞེས་གསུངས་པ་དང་། གསང་བ་འདུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ''དགེ་བ་བཅུ་ཡི་ལས་ཀྱི་ལམ།།
བྱེད་པ་ཡེ་ཤེས་སྤངས་པའོ། ''།ཞེས་གསུངས་པའོ། །

དེ་ལྟར་ན་[1]སེམས་ཅན་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་དང་བྲལ་བས་རང་གི་སེམས་ཇི་ལྟ་བ་ཉིད་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་མ་རྟོགས་པས་[2]ངར་འཛིན་པ་དང་། ང་ཡིར་འཛིན་པ་དང་། གསོབ་དང་། གསོག་ལ་བརྟགས་ནས་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བ་ལ་སོགས་པར་བརྟགས་པས་འཁོར་བ་ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་སྡུག་བསྔལ་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་ཡིན་ནོ། །དེ་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་བརྒྱད་སྟོང་པའི་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་གྱི་ལེའུ་ལས། ''རབ་འབྱོར་གྱིས་གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་གལ་ཏེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་དབེན་པ་དང་སྟོང་པ་ལགས་ན། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཇི་ལྟར་ན་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་གདའ་བར་འགྱུར། ཇི་ལྟར་རྣམ་པར་བྱང་བར་འགྱུར། བཅོམ་ལྡན་འདས་དབེན་པ་ནི་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པར་ཡང་མི་འགྱུར། རྣམ་པར་བྱང་བར་ཡང་མི་འགྱུར་རོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་སྟོང་པ་ནི་

---

1. དེ་ལྟ་ན། ཅོ།
2. མ་རྟོགས་པར། གསེར།

ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པར་ཡང་མི་འགྱུར།[1] རྣམ་པར་བྱང་བར་ཡང་མི་
འགྱུར་རོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་དཔེན་པའམ་སྟོང་པ་ཉིད་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་
དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་འཚང་མི་རྒྱ་ལ། བཅོམ་
ལྡན་འདས་དཔེན་པ་དང་། སྟོང་པ་ཉིད་ལས་གུད་ན་ཆོས་གང་བླ་ན་མེད་པ་
ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་པའམ།
མངོན་པར་རྫོགས་པར་འཚང་རྒྱ་བའམ། མངོན་པར་རྫོགས་པར་འཚང་རྒྱ་བའི་
ཆོས་དེ་དམིགས་སུ་མ་མཆིས་ན། བཅོམ་ལྡན་འདས་བཤད་པ་དེའི་དོན་ཇི་ལྟ་
བུར་འཚལ་བར་བགྱི། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བསྟན་དུ་གསོལ། བདེ་བར་
གཤེགས་པ་བསྟན་དུ་གསོལ། དེ་སྐད་ཅེས་གསོལ་པ་དང་། བཅོམ་ལྡན་
འདས་ཀྱིས་ཚེ་དང་ལྡན་པ་རབ་འབྱོར་ལ་འདི་སྐད་ཅེས་བཀའ་སྩལ་ཏོ། །རབ་
འབྱོར་དེ་ཇི་སྙམ་དུ་སེམས། སེམས་ཅན་རྣམས་ནི་ཡུན་རིང་པོ་ནས་ངར་
འཛིན་པ་དང་། ང་ཡིར་འཛིན་པ་ལ་སྤྱོད་དམ། རབ་འབྱོར་གྱིས་གསོལ་པ།
བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །བདེ་བར་གཤེགས་པ་དེ་དེ་བཞིན་ཏེ།
སེམས་ཅན་རྣམས་ནི་ངར་འཛིན་པ་དང་། ང་ཡིར་འཛིན་པ་ལ་སྤྱོད་དོ།།
བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། རབ་འབྱོར་དེ་ཇི་སྙམ་དུ་སེམས།
འོན་ཀྱང་ངར་འཛིན་པ་དང་། ང་ཡིར་འཛིན་པ་སྟོང་པ་ཡིན་མོད། རབ་

1. མི་འགྱུར་རོ། གསེར།

འབྱོར་གྱིས་གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་སྟོང་པ་ལགས་སོ། །བདེ་བར་གཤེགས་པ་སྟོང་པ་ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། རབ་འབྱོར་དེ་ཇི་སྙམ་དུ་སེམས། ངར་འཛིན་པ་དང་། ང་ཡིར་འཛིན་པས་སེམས་ཅན་རྣམས་འཁོར་བ་ན་འཁོར་རམ། རབ་འབྱོར་གྱིས་གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་དེ་བཞིན་ནོ། །བདེ་བར་གཤེགས་པ་དེ་དེ་བཞིན་ཏེ། ངར་འཛིན་པ་དང་། ང་ཡིར་འཛིན་པས་སེམས་ཅན་རྣམས་འཁོར་བ་ན་འཁོར་རོ།། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། རབ་འབྱོར་དེ་ལྟར་ན་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པར་ཡང་སྣང་ངོ་། །རྣམ་པར་བྱང་བར་ཡང་སྣང་ངོ་།'' །ཞེས་གསུངས་པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་དག་པའི་མདོ་ལས་ཀྱང་[1]། ''དགེ་སློང་འདི་ཇི་སྙམ་དུ་སེམས། ཅི་སྐྱེ་བ་མེད་པ་སྐྱེ་བའམ། འགག་པའམ། ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པའམ། རྣམ་པར་བྱང་བར་འགྱུར་རམ། གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་ནི་མ་ལགས་སོ།། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། དགེ་སློང་འདི་ཇི་སྙམ་དུ་སེམས། ཅི་སྐྱེ་བ་མེད་པའི་ཆོས་རྣམས་སེམས་ཅན་དམྱལ་བར་འགྲོ་བར་འགྱུར་རམ། དུད་འགྲོའི་སྐྱེ་གནས་སམ། གཤིན་རྗེའི་འཇིག་རྟེན་དུ་སྐྱེ་བར་འགྱུར་རམ། གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་སྐྱེ་བ་མ་མཆིས་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་མཆིས་པ་ལ་

---

1. Toh. 218 སྡེ། བཀའ། 'ཚ' ཤོག-༢༦༤ན༥, ༢༦༥བ༡།

ན། ངན་འགྲོར་མཆི་བར་འགྱུར་བ་ལྟ་ག་ལ་མཆིས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། དགེ་སློང་དེ་ལྟར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་དེ་ལྟར་འོད་གསལ་བ་ཡིན་ན་ཡང་བྱིས་པ་སོ་སོའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ནི་ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པའི་ཆོས་རྣམས་ལ་བརྟགས། ཕྱིན་ཅི་ལོག་ལ་བརྟགས། གསོབ་དང་། གསོག་ལྟ་བུའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་བརྟགས་པས། སེམས་ཅན་དམྱལ་བ་དང་དུད་འགྲོའི་སྐྱེ་གནས་དང་གཤིན་རྗེའི་འཇིག་རྟེན་དུ་འགྲོ་བར་འགྱུར་རོ། །དགེ་སློང་ཅི་དེ་ལྟར་[1]"སེམས་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པས་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་དུ་འགྱུར་རམ། སེམས་རྣམ་པར་དག་པས་སེམས་ཅན་རྣམ་པར་འགྱུར་རོ།"།ཞེས་གསུངས་པ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་མཛོད་ཀྱི་མདོ་ལས་ཀྱང་། "ཐོག་མར་དག་པས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་[2]མངོན་པར་དད་ཅིང་ལྷག་པར་མོས་ན་དེས་ནི་[3]སེམས་ཅན་དེ་ངན་འགྲོར་འགྲོ་བར་མི་སླའོ[4]།། དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་ལ་ཕུང་པོ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཉོན་མོངས་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་དབེན་པ་ལས་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ཚོགས་པ་དང་ཕྲད་

1. 'དེ་ལྟར་' གསེར་བྲིས་སུ་མ་གསལ། མདོ་དེ་ཉིད་ནང་'གཞན་ཡང་།' ཞེས་གསལ།
2. ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་དད་པ་མེད་པས། བོད་དཔེར་འདི་ལྟར་གསལ་ཡང་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་ལེཊ་པར་མཐོང་སྟེ་གོང་དུ་བཞག་པ་ཡིན།
3. དེ་ནི། གསེར།
4. འགྲོ་བར་ང་མི་སླའོ། གསེར།

པ་ལས་སྐྱེ་བར་འགྱུར་ལ། སྐྱེས་པ་ཙམ་གྱིས་འགག་པར་འགྱུར་ཏེ། གང་སྐྱེ་བ་དང་འཇིག་པ་དེ་ནི་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་ཀྱིས་འཇིག་པའོ། ''།ཞེས་གསུངས་པ་དང་། ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་[1]ཞལ་སྔ་ནས་ཀྱིས་དོན་འདི་གསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར།

གལ་ཏེ་འདི་ཀུན་སྟོང་པ་དང་། །
སྐྱེ་མེད་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་ན། །
བདེ་དང་སྡུག་བསྔལ་སོགས་འདུག་འདིར། །
ཇི་ལྟར་ལས་ཀྱིས་འཁོར་བར་འགྱུར། །
བདག་ཏུ་རློམ་པར་གྱུར་མ་ཐག །
དེ་བཞིན་འདོད་ཆགས་སོགས་དྲི་མ། །
བརྟགས་པས་གཞན་གྱི་དབང་གྱུར་པས། །
ཕྱིས་པ་སྡུག་བསྔལ་གྱིས་ཉོན་མོངས། །
འདི་དག་ཐམས་ཅད་སེམས་ཙམ་སྟེ། །
སྒྱུ་མའི་རྣམ་པར་ཡང་དག་འབྱུང་། །
དེ་ནས་དགེ་དང་མི་དགེའི་ལས། །
དེས་ནི་བདེ་འགྲོ་ངན་འགྲོར་སྐྱེ།[2] །

---

1. རྗེ་བཙུན་གྱི། ཀྱི་དཔེ།
2. ཚིགས་བཅད་ཐ་མ་འདི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཉི་ཤུ་པའི་ནང་ཐོབ་ཀྱང་འགྱུར་ལ་ཁྱད་པར་ཅུང་ཟད་སྣང་བ་འདི་ལྟར་ཏེ། འདི་དག་ཐམས་ཅད་སེམས་ཙམ་སྟེ། །སྒྱུ་མ་ལྟ་བུར་གནས་པ་ཡིན། །དགེ་དང་མི་

ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །དེ་ལྟར་ན་རིགས་པ་འདིས་ལུང་དང་རིགས་པ་དག་གིས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོའི་བདག་ཉིད་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་སྡུག་བསྔལ་གྱི་དབའ་གློང་[1]དུ་ལྷུང་བར་གྱུར་ཅིང་སྐྱབས་མེད་པ་དཔུང་གཉེན་མེད་པ་རྣམས་ལ་གཟིགས་ནས་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པའི་ཚུལ་གྱིས་ཉོན་མོངས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡོངས་སུ་ཤེས་པས་ཉོན་མོངས་པ་རྣམ་པར་དག་པར་མཛད་ཅིང་། ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ཡང་དོན་དམ་པའི་བདེན་པས་རྣམ་པར་སྦྱངས་ནས་ཡང་དག་པའི་ཚུལ་གྱི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་ཡང་དག་པར་འཇོག་པར་མཛད་པ་ཡིན་ནོ། །

ལས་ཀྱི་མཐའ་རྣམ་པར་འབྱེད་པའི་བསྡུས་པའི་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་པ་སྟེ་ལེའུ་ལྔ་པའོ།། །།

དགེ་ལས་རྣམས་ཀྱིས། །དེ་ཡིས་བཟང་ངན་སྐྱེ་བ་རྣམས།། Toh.3833 སྡེ། བསྟན། དབུ་མ། ‘ཙ’ ༡༣༨ན༤།

1. ཐ་གློང་། གསེར།

ལེའུ་དྲུག་པ།

རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ།   ཁྱེད་ཀྱི་ཞལ་སྔ་ནས་ཀྱི་བཀའ་དྲིན་གྱིས་[1] བཤད་མ་ཐག་པའི་གསུང་རབ་[2]ཀྱི་རྗེས་སུ་འབྲངས་ནས་ལུས་དང་ངག་དང་སེམས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ལ་སོ་སོར་བརྟགས་པས་ངེས་པར་འཚལ་ཏེ།   ཏིང་ངེ་འཛིན་གཞན་གྱི་ཁྱད་པར་ཡང་རྗེ་བཙུན་གྱི་ཞལ་སྔ་ནས་གསོལ་ནས་གོང་ནས་གོང་དུ་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཁྱད་པར་ཞུ་བར་འཚལ་ལོ། །བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་ནས་བརྩམས་ཏེ་ལུས་རྣམ་པར་དབེན་པའི་མཐར་ཐུག་པའི་བར་དུ་རྡོ་རྗེ་གསུམ་ལ་སོགས་པས་ཀུང་མཚན་ཉིད་ལ་ལྷག་པར་མོས་པ་ཙམ་ལགས་ཏེ།   དེ་བས་ན་ལུས་རྣམ་པར་དབེན་པ་ལ་ཡང་ལྷའི་གཟུགས་མེད་དེ།   ལུས་ནི་རྡུལ་ཕྲ་རབ་བསགས་པ་ཙམ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།   །ངག་རྣམ་པར་དབེན་པའི་མཐར་ཐུག་པ་ཡང་འདུག་པ་ལ་སོཏ་པའི་རིམ་གྱིས་རྡོ་རྗེ་བཟླས་པ་ཙམ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་སྟེ། དེ་ལ་ཡང་ལྷའི་རྣམ་པ་མེད་དེ་སྒྲ་རྣམས་ནི་བྲག་ཅ་ལྟ་བུ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།   ། སེམས་རྣམ་པར་དབེན་པའི་མཐར་ཐུག་པ་ཡང་རང་བཞིན་གྱིས་སྣང་བ་ཙམ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཙམ་དུ་ཟད་པས་དེར་ཡང་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྡན་པའི་ལྷའི་སྐུའི་ངོ་བོར་རྙེད་པར་མི་འགྱུར་ཏེ།   སེམས་ནི་སྣང་བ་ཙམ་

1. ཀྱི། གསེར།

2. གསུངས་རབ། གསེར།

ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །རིགས་པ་འདིས་ནི་[1]ཀུན་རྫོབ་ལ་བརྟེན་ནས་གནས་པ་རྣེད་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་ན་ཡེ་ཤེས་ཙམ་གྱིས་ལྷ་ཉིད་དུ་བསྐྱེད་པ་[2]སློབ་དཔོན་གྱི་ཞལ་སྔ་ནས་རྟོགས་པར་བགྱིད་འཚལ་ལོ། །དོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། སེམས་ཅན་ཆེན་པོ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། །ལྷའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བཤད་པ་[3]བླ་མ་བརྒྱུད་པའི་རིམ་པ་ལས་འོངས་པ། ས་བཅུའི་དབང་ཕྱུག་རྣམས་ཀྱི་ཡང་ཡུལ་མ་ཡིན་པ་དེ་ངས་ཁོད་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །རང་གི་སེམས་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་[4]ཞེས་བྱ་བ་ཕུང་པོ་དང་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་རྣམས་ལ་ཡང་མེད་པ། ཡེ་ཤེས་ཙམ་དུ་ཡོངས་སུ་[5]སྣང་བ་ཙམ་གྱིས་མཚན་ཐམས་ཅད་དང་ལྡན་པའི་ལྷའི་སྐུར་གཟུང་བ་དེ་ཡང་སྒྲུ་མ་དང་། མི་ལམ་ལ་སོགས་པའི་དཔེ་རྣམ་པ་བཅུ་གཉིས་ཀྱིས་ཉེ་བར་མཚོན་པ་འདི་ནི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་ཡིད་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་སྐུ་ཡིན་ནོ། །

རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། བརྟེན་པའི་ལུས་མེད་པར་སེམས་ཀྱི་རང་

1. 'ནི་' གསེར་ཁྲིམ་སུ་མེད།
2. ལྷ་ཉིད་དུ་རྟོགས་པ། རྒྱ་དཔེ།
3. བཤད་པ་མན་ངག གསེར།
4. ཤེས་པར། གསེར།
5. ཡེ་ཤེས་གསུམ་གྱི་རང་བཞིན། རྒྱ་དཔེ།

བཞིན་ཡང་མེད་ལ[1]། སེམས་མེད་པར་ཡང་ལུས་དམིགས་སུ་མེད་དོ་ཞེས་ལུང་གི་ཚིག་ལས་གསུངས་ན། དེ་ཇི་ལྟར་ན་སེམས་འབའ་ཞིག་ཙམ་གྱིས་ཕྱག་དང་ཞབས་ལ་སོགས་པ་མཚན་ཐམས་ཅད་དང་ལྡན་པའི་ལྷའི་སྐུ་རྫོགས་པར་འགྱུར། དམིགས་པའི་ལྷ་བ་ཅན་རྣམས་ནི་ལུང་དང་རྟོགས་པ་མེད་པར་ཡིད་ཆེས་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་ན་དེ་རྣམས་དམིགས་སུ་མེད་པའི་ལྷའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བདེ་བླག་ཏུ་མངོན་དུ་བྱ་བའི་ཐབས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་སྟོན་པས་བཤད་དུ་གསོལ། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱི་སྨྲས་པ། སེམས་ཅན་ཆེན་པོ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། །གང་མདོ་སྡེ་ལ་སོགས་པའི་ཚུལ་ལ་ཞུགས་པ་དང་། བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་ལ་གནས་པའི་སྔགས་པ་པོ་རྣམས་ཀྱང་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུ་དང་། མི་ལམ་ལྟ་བུ་དང་། གཟུགས་བརྙན་ལྟ་བུ་ཞེས་དཔེར་བརྗོད་ཅིང་ལྷག་པར་མོས་ཀྱང་དེ་རྣམས་དཔེས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་མན་ངག་ཤེས[2]ཙམ་གྱིས་ཡིད་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་ལྷའི་སྐུ་རྫོགས་པར་འགྱུར་བ་ཤེས་པར་ནི་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་ན་ངས་རྣལ་འབྱོར་གྱི[3]རྒྱུད་ཀྱི་རྗེས་སུ་འབྲངས་ནས་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་རྫོགས་པར་འགྱུར་བའི་རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ཁྱད་ལ་

---

1. མེད་པ། ཅོ། སྡེ།
2. ཡེ་ཤེས། གསེར།
3. གྱིས། གསེར།

ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །བདེན་པར་ན་སེམས་ནི་དབྱིབས་དང་ཁ་དོག་དང་བྲལ་བ་སྣང་བ་ཙམ་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་དང་འདྲ་བར་རིག་པར་དཀའ་བའོ། །དེ་ལྟ་མོད་ཀྱི་སྣང་བ་ཙམ་གྱི་སྣང་བ་གསུམ་པོ་རླུང་ལ་བརྟེན་པར་གྱུར་པ་དང་། ཐུན་མོང་དུ་གྱུར་པས་ཡང་བ་སྟེ། དེ་བས་ན་རླུང་གིས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་བཅིངས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ནས་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱི་སྣང་བ་གཉིས་འོད་ཟེར་ལྔ་དང་བཅས་ཤིང་སྣ་ཚོགས་པའི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་དང་ལྡན་པའི་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ལྷའི་སྐུ་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ། །

འདིའི་བཞིན་པ་གང་ཡིན་ཞེ་ན། རླུང་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ་སེམས་རྡོ་རྗེ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལྟ་བུའི་རླུང་ལ་ཞོན་ནས། གང་དུ་འདོད་པ་དེར་འགོ་བར་འགྱུར་རོ། །

རྣམ་པར་ཤེས་པ་འཕོ་བའི་མདོ་ལས་[1]ཀྱང་གསལ་བར་གསུངས་ཏེ། "བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། སྨན་ཆེན་ངས་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་ཕྱེད་ཀྱི་དོན་གྱི་ཕྱིར་བྲག་གི་རྩེ་མོ་ནས་ལུས་བོར་ཏེ་དཀའ་བ་རྣམ་པ་བརྒྱ་སྟོང་དུ་མ་ཉམས་སུ་མྱོང་ངོ་། །སྨན་ཆེན་ཁྱོད་ཅི་དང་ཅི་འདོད་པ་དྲིས་ཤིག་དང་། ངས་ཁྱོད་ལ་ལན་གདབ་བོ། །དེ་སྐད་ཅེས་བཀའ་སྩལ་པ་དང་། བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་སྨན་ཆེན་གྱིས་འདི་སྐད་ཅེས་གསོལ་ཏོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམ་

1. Toh. 83 སྡེ། བཀའ། 'ཆ' ཤོག-༡༣ན༢།

2. ཚིགས་སུ་བཅད་པ་གཉིས་ཀྱི། རྐྱ་དཔེ།

པར་ཤེས་པ་འདིའི་རང་བཞིན་ཅི་ལགས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། སྨན་ཆེན་སྒྲུ་མ་མཁན་གྱི་མའི་[1]རང་བཞིན་གང་ཡིན་པ་དང་། མིའི་གྲིབ་མ་[2]ཆུའི་ནང་དུ་འབྱུང་བ་གསལ་བ་མ་ཡིན་ཞིང་མི་གསལ་བའི་རང་བཞིན་གང་ཡིན་པ་དང་། མིག་དང་ནམ་མཁའི་རང་བཞིན་གང་ཡིན་པ་དང་།[3] སྲིད་པའི་རང་བཞིན་གང་ཡིན་པ་དེ་བཞིན་ནོ། །གང་ཡང་སྨན་ཆེན་ཁྱོད་ཀྱིས་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཇི་ལྟར་ཐོག་མར་འཆི་བས་བྱས་པའི་གཟུགས་བལྟ་བར་བྱ་ཞེས་བྱ་བ་བཤད་པར་བྱའོ། །འདི་ལྟ་སྟེ། ཆུའི་ནང་དུ་བྱུང་བའི་སྐྱེས་བུའི་གྲིབ་མའི་གཟུགས་བཞིན་དུ་བལྟ་བར་བྱའི་[4]དེའི་ནང་དུ་བྱུང་བའི་སྣང་བ་བཞིན་དུ་ནི་བལྟ་བར་མི་བྱའོ།[5] །ཡང་སྨན་ཆེན་དེའི་མགོ་བོ་དང་ལག་པ་དང་རྐང་པ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་པ་ཡང་ཆུའི་ནང་དུ་བྱུང་བའི་སྐྱེས་བུ་ཉིད་བཞིན་ནོ།། དེ་ལ་ནི་གྲང་བའམ་དྲོ་བའམ་ལུས་དུབ་པ་ལ་སོགས་པ་མེད་དེ། དེ་ལ་ཤ་དང་

---

1. མའི། གསེར། མིའི། རྒྱ་དཔེ།
2. མའི་གྲིབ་མ། གསེར།
3. ‘མིག་དང་ནམ་མཁའི་རང་བཞིན་གང་ཡིན་པ་དང་།’ གསེར་བྲིས་ནང་མ་གསལ།
4. བྱའོ། གསེར།
5. ‘སྐྱེ་བ་མེད་པ་དེའི་རང་བཞིན་ནི་ཐོག་མར་འཆི་བས་ཟླ་བའི་གཟུགས་བརྙན་བཞིན་དུ་ངས་བཤད་པར་བྱའོ། །གཟུགས་བརྙན་ཉིད་དུ་བལྟ་བར་བྱའི་གཟུགས་བདེན་པར་བལྟ་བར་མི་བྱའོ། །དེ་བཞིན་དུ།’ རྒྱ་དཔེར་ལྷག་པོར་སྣང་།

ཉ་ཤ་ལ་སོགས་པ་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་དང་། གྲིབ་མ་ནི་ཁམས་ཀྱིས་རྣམ་པར་གཞིག་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ན་ཆུའི་ནང་དུ་འབྱུང་བའི་སྐྱེས་བུའི་གཟུགས་བརྙན་ནི་བདེ་བའི་སྙའམ་སྡུག་བསྔལ་བའི་སྙ་བརྗོད་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་འདི་ཡང་ཐོག་མར་འཆི་བའི་ལུས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོངས་སུ་སྤངས་ནས་དེས་བྱས་པའི་གཟུགས་སུ་གྱུར་པའོ།'' །དེ་ལྟར་བྱིས་པ་སོ་སོའི་སྐྱེ་བོ་སྲིད་པ་བར་མ་པ་ཞེས་བྱ་བའི་འཁོར་བའི་རྒྱུར་འགྱུར་རོ། །དེ་ཉིད་བླ་མ་བརྒྱུད་པའི་རིམ་གྱིས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མན་ངག་ཐོབ་པ་རྣམས་ནི་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ལྟར་རྟོག་པའི་རས་རིས་མེ་ལོང་གི་ནང་དུ་ཉེ་བར་སྣང་བ་དེ་བཞིན་དུ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་[1] སྒྲུའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་བདག་ཉིད་སྤྲུལ་ཏེ། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྡན་པ་སྒྲ་བརྙ་བས་ཚིག་མི་ཤེས་པ་སྐྱེས་བུ་ཆེན་པོའི་མཚན་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་ལ་སོགས་པས་ལུས་ལ་བརྒྱན་པ་སྟེ། མདོར་ན་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་གྱིས་བརྒྱན་པ་ཞེས་པའི་བར་དུའོ། །ཇི་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་རྒྱུད་ལས། ''འཇའ་ཚོན་ལྟ་བུའི་ལུས་དག་ནི། །དེ་ཉིད་བསྒོམས་པས་ཐོབ་པར་འགྱུར།'' །ཞེས་གསུངས་སོ། །

1. 'སེམས་དཔའི་' གསེར་བྲིས་སུ་མེད།

འདིའི་དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། འཇའ་ཚོན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷའི་དབང་པོའི་གཞུ་སྟེ། གྱི་ཡང་གང་ཞེ་ན། དངོས་སུ་འོད་ཟེར་ལྔས་ཉེ་བར་མཚོན་པ་སྟེ། ཇི་ལྟར་འཇའ་ཚོན་ནམ་མཁའི་དཀྱིལ་ན་ཁ་དོག་ལྔའི་དབྱེ་བ་ཡོངས་སུ་གསལ་བ་ཡིན་ཏེ། ལུས་ཀྱང་དེ་དང་འདྲ་བར་ཉེ་བར་མཚོན་པའི་ཕྱིར། ''འཇའ་ཚོན་ལྟ་བུའི་ལུས་དག་ནི།''།ཞེས་བྱ་བའི་[1]དོན་ཏོ། །

''དེ་ཉིད་བསྒོམས་པས་ཐོབ་པར་འགྱུར།''།ཞེས་བྱ་བ་ནི་བླ་མ་ལས་མན་ངག་ཡང་དག་པར་ཐོབ་ནས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྒོམ་ཞིང་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ལ་དམིགས་པས་འཐོབ་པའི་དོན་ཏོ། །

རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་སོམ་ཉིར་གྱུར་པ་གཞན་འགའ་ཞིག་བདག་ལ་མཆིས་ཏེ། ཅིའི་ཕྱིར་ཡུན་རིང་པོར་གཉིད་ལོག་ནས་ཅིའི་ཕྱིར་ལུས་ཀྱི་ཁོག་པ་བོར་ཏེ། རྨི་ལམ་དུ་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་པའི་གནས་སམ། ཡུལ་ཕྱོགས་གཞན་དག་ཏུ་སོང་ནས་འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་ལྔ་ཉམས་སུ་སྤྱོད་སྟེ། ཡང་ཡུལ་[2]འདིར་འོངས་ནས་ཅིའི་ཕྱིར་རྨི་ལམ་ན་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བ་མཐོང་བའི་འབྲས་བུ་ཐོབ་པར་འགྱུར། དེ་བཞིན་དུ་གཉིད་ལོག་པའམ།

1. ཞེས་པའི། གསེར།
2. ཡང་ལུས། རྒྱ་དཔེ།

གཉིད་མ་ལོག་པའི་གནས་སྐབས་དག་ཅི་ཐ་དད་པར་[1]མཆིས་སམ། འོན་ཏེ་མ་མཆིས། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། སེམས་ཅན་ཆེན་པོ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། །ཐོག་མ་མེད་པའི་རང་བཞིན་ཅན་གྱི་ལུས་ལ་དངོས་པོར་བལྟས་ནས་འཛིན་པ་རྣམས་ཀྱི་ཐེ་ཚོམ་བསལ་བའི་ཕྱིར་དང་། བདག་[2]ལ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པར་བཤད་པ་རྣམ་པར་གསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རྨི་ལམ་གྱི་མཚན་ཉིད་ཡོངས་སུ་འདྲི་བར་བྱེད་པ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། །དེ་བས་ན་རྨི་ལམ་གྱི་སྒོ་ནས་གཟུགས་བརྙན་དུ་བཤད་པའི་ལྷའི་སྐུ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སོ་སོ་རང་རིག་པར་གྱུར་པ་རྒྱུད་དང་མདོ་སྡེ་རྣམས་ཀྱི་རྗེས་སུ་འབྲངས་ནས་རབ་ཏུ་རྟོགས་པར་བྱ་ཡིས་རྩེ་གཅིག་པའི་སེམས་ཀྱིས་ཉོན་ཅིག

ཕུང་པོ་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་དབང་སོགས་ལ། །
ཤེས་པ་གཉིས་པོ་དེ་འདིར་རབ་འདུས་ནས། །
སྣང་ཆེན་གྱུར་པ་གང་ཞིག་གཉིད་ལོག་པ། །
རླུང་གི་ཤུགས་ཀྱིས་རྨི་ལམ་མཐོང་བར་འགྱུར། །

རྨི་ལམ་སད་ལ་བྱེ་བྲག་གཞན་མེད་པར། །
ཀུན་དུ་རྟོག་པས་རྨི་ལམ་འབྲས་འདོད་པས། །

---

1. ཅི་རྣམ་པ་ཐ་དད་པར། རྒྱ་དཔེ།
2. ཡང་དང་ཡང་དུ་བདག རྒྱ་དཔེ།

འགྲོ་བ་ཉིན་མཚན་ཉེ་བར་གཉིད་ལོག་ཅིང་། །
ས་མཐུག་གྱུར་པས་རབ་ཏུ་རིང་གཉིད་ལོག །

འབྲས་བུ་མ་སྨིན་བྲུས་པའི་ལས་རྣམས་ཀྱིས། །
སྐྱེ་འདིར་རླུང་ནི་སྣར་ཡང་འཇུག་པར་འགྱུར། །
འབྲས་བུ་སྨིན་པར་གྱུར་ན་རླུང་འདི་ཉིད། །
འཇིག་རྟེན་འཆི་བ་གཞན་དུ་སྤྱུར་འགྲོར་འགྱུར། །

ཇི་ལྟར་ཕྱོགས་བཅུར་བཞུགས་པའི་རྒྱལ་དབང་པོ། །
དེ་ཡི་སྐུ་ལ་ཀྲང་རུས་ཤ་མེད་ཀྱང་། །
སེམས་ཅན་ཕན་ཕྱིར་ཁམས་ལ་འཇུག་མཛད་ཅིང་། །
སྤྲུལ་པའི་སྐུ་ཡིས་བྱ་བ་མཛད་པ་ཡིན། །

རིམ་པ་དེ་བཞིན་གཉིད་ལོག་སད་པའི་སེམས། །
འབྲས་བུ་འདོད་པའི་རྣམ་རྟོག་དྲ་བ་ཅན། །
དེ་བས་ཆོས་ཀུན་རྨི་ལམ་ལྟ་བུ་སྟེ། །
བདེན་དང་བརྫུན་པ་དག་ཀྱང་ཡོད་མ་ཡིན། །ཞེས་བྱའོ། །

དོན་འདི་ཉིད་གསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་དག་པའི་མདོ་ལས་[1]ཀྱང་། ''དགེ་སློང་འདི་ཇི་སྙམ་དུ་སེམས། ཅི་ཁྱོད་

1. Toh. 218 སྟེ། བཀའ། 'ཚ' ཤོག-༣༤༥བ༥།

ཀྱིས་གཉིད་ལོག་པའི་རྨི་ལམ་ན་ཀུན་དུ་རྟོག་པའི་ཚེ་འདོད་ཆགས་སྤྱོད་པ་སྤྱོད་ངམ། གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་སྤྱོད་ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། དགེ་སློང་སེམས་ཀྱིས་འདོད་ཆགས་སྤྱད་པར་ཁྱོད་ཀྱིས་མི་ཤེས་སམ[1]། གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་ནི་དེ་ལྟ་བུ་ལགས་སོ[2]།། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། དགེ་སློང་ཅི་ཁྱོད་ཀྱིས་རྨི་ལམ་གྱི་སེམས་དང་། གཉིད་མ་ལོག་པའི་སེམས་འདི་ལ་བྱེ་བྲག་དང་ཐ་དད་དུ་བྱེ་བ་ཞིག་ཡོད་པར་མཐོང་ངམ། གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་བདག་གིས་ནི་རྨི་ལམ་གྱི་སེམས་དང་གཉིད་མ་ལོག་པའི་སེམས་ལ་ཐ་དད་དུ་བགྱི་བ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མ་མཐོང་ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། དགེ་སློང་འདི་ཇི་སྙམ་དུ་སེམས། ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་རྨི་ལམ་ལྟ་བུར་ཞེས་ངས་མ་བསྟན་ཏམ། གསོལ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་ནི་དེ་ལྟར་ལགས་སོ།''།ཞེས་གསོལ་པ་དང་། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དོན་འདི་ཉིད་གསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་གསང་བ་འདུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས་ཀྱང་། ''ཀྱེ་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་འདི་ལྟ་སྟེ། དཔེར་ན་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་བར་

---

1. མདོ་དེ་ཉིད་དུ་'ཁྱོད་ཀྱིས་མི་ཤོད་དམ།' ཞེས་གསལ།
2. མདོ་དེ་ཉིད་དུ་' དེ་ནི་དེ་ལྟ་བུ་མ་ལགས་སོ།' ཞེས་གསལ།

བྱེད་པ་རྡོ་རྗེའི་གནས་ལྟ་བུ་སྟེ། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དེ་ཡང་ལུས་ལ་མི་གནས། ངག་ལ་མི་གནས། སེམས་ལ་མི་གནས་སོ། །ཆོས་གང་ཁམས་གསུམ་ན་མི་གནས་པ་དེ་ལ་སྐྱེ་བ་ཡང་མེད་དེ། འདི་ནི་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་བའི་རྡོ་རྗེའི་གནས་དེ་ཡིན་ནོ། །ཀྱེ་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་རྨི་ལམ་འདི་ནི་བདག་གིས་ཁམས་གསུམ་དུ་རྨི་ལམ་མཐོང་བར་བྱའོ་སྙམ་དུ་མི་སེམས་སོ།། མི་ཡང་བདག་གིས་རྨི་ལམ་མཐོང་ངོ་སྙམ་དུ་མི་སེམས་ཏེ། ཁམས་གསུམ་གྱི་བྱ་བ་དེ་རྣམས་ཀྱང་རྨི་ལམ་ལྟ་བུ་རྨི་ལམ་དང་འདྲ་བ་རྨི་ལམ་ལས་བྱུང་བའོ།། དེ་བཞིན་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཕྱོགས་བཅུའི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཀྱི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཇི་སྙེད་པ་རྣམས་དང་། སེམས་ཅན་ཇི་སྙེད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་རྨི་ལམ་ལྟར་བདག་མེད་པའི་གནས་སུ་རིག་པར་བྱའོ། ''།ཞེས་གསུངས་པ་དང་། སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་འདི་ཉིད་གསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡེ་ཤེས་རྡོ་རྗེ་ཀུན་ལས་བཏུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས་ཀྱང་།

''སེམས་དང་སེམས་ལས་བྱུང་བའི་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ་ནི་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏོ། །དེ་ནི་སྒྱུ་མའི་དཔེས་ཉེ་བར་མཚོན་པ་སྟེ། དེ་བས་ན་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་གངྒཱའི་ཀླུང་གི་བྱེ་མ་སྙེད་ཀྱི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ནི་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུ་དང་། ཆུ་ཟླ་ལྟ་བུ་དང་། མིག་ཡོར་ལྟ་བུ་དང་། སྨིག་རྒྱུ་ལྟ་

བུ་དང་། རྨི་ལམ་ལྟ་བུ་དང་། བྲག་ཅ་དང་། དྲི་ཟའི་གྲོང་ཁྱེར་དང་། མིག་འཕྲུལ་དང་། འཇའ་ཚོན་དང་། གློག་དང་། ཆུའི་ཆུ་བུར་དང་། མེ་ལོང་གི་གཟུགས་བརྙན་ཏེ། སྒྱུ་མའི་དཔེ་བཅུ་གཉིས་ཀྱིས་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཉེ་བར་མཚོན་པར་འགྱུར་བ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟར་ཕྱོགས་བཅུའི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་[1]ན་གནས་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་འཁོར་བ་ཇི་སྲིད་པའི་བར་དུ་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་བཞུགས་ནས་འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་ལྔ་རྣམས་ཀྱིས་རོལ་པར་མཛད་ཅིང་དགའ་བར་མཛད་པས་ཡོངས་སུ་སྤྱོད་པར་མཛད་ལ། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་པས་བདག་ཉིད་བཞིན་པ་ཙམ་གྱིས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ནས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དུ་གཤེགས་པར་མཛད་དོ།'' །དེ་ལྟར་དུས་གསུམ་གྱི་འཁོར་བའི་སྡུག་བསྔལ་རྗེས་སུ་དྲན་ནས་རྣམ་པར་གྲོལ་བར་འདོད་པས་རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་འབད་པས་མཉེས་པར་བྱས་ལ་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་རིམ་པའི་མན་ངག་ཐོབ་ནས། དེ་རྣམ་པར་དག་པའི་ཐབས་བཙལ་བར་བྱའོ། །

ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་བསྟུས་པའི་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་པ་སྟེ་ལེའུ་དྲུག་པའོ།། །།

1. 'ཁམས' རྒྱ་དཔེར་མེད།

ལེའུ་བདུན་པ།

རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ལ་ནི་སོམ་ཉི་མ་མཆིས་ན། ད་ནི་སྣང་བ་རྣམ་པར་དག་པའི་གནས་དོན་དམ་པའི་བདེན་པའི་ཆ་བླ་མའི་ཞལ་སྔ་ནས་ཀྱི་བཀའ་དྲིན་གྱིས་ཆེས་ཤེས་པར་འཚལ་ལོ། །

རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་རིམ་གྱིས་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་སྐུར་རྫོགས་པ་ནི་སྒྱུ་མའི་དཔེ་བཅུ་གཉིས་ཀྱིས་རབ་ཏུ་བསྟན་པར་ནུས་ཀྱི་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ནི་ཡང་ལུས་མེད་པ། དཔེ་མེད་པ། རྟོམ་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ་སོ་སོ་རང་གིས་རིག་པ་སྟེ། དེ་བས་ན་བླ་མའི་ཁ་ལས་བསྟན་པ་མེད་པར་ཤེས་པར་མི་འགྱུར་རོ། །ཇི་སྐད་དུ་གསུངས་པའི་ཚིག་ལས་ཀྱང་།

ཇི་ལྟར་མར་མེ་བུམ་ནང་གནས། །
ཕྱི་རོལ་དུ་ནི་སྣང་མི་འགྱུར། །
བུམ་པ་དེ་ཉིད་བཅག་གྱུར་ན། །
དེ་འོག་མར་མེ་འོད་སྣང་འགྱུར། །

དེ་བཞིན་བུམ་པ་རང་ལུས་ཉིད། །
དེ་ཉིད་མར་མེ་ལྟ་བུ་ཉིད། །

ཟླ་མའི་ཁ་ཡིས་ལེགས་བཅག་ན། །
སངས་རྒྱས་ཡེ་ཤེས་གསལ་བར་འགྱུར། །
ནམ་མཁའ་ལས་ནི་ནམ་མཁའ་འབྱུང་། །
མཁའ་ཡིས་ནམ་མཁའ་མཐོང་འགྱུར་བའི། །
དེ་ཉིད་ཟླ་མའི་ཁ་ཉིད་ལས། །
སྦྱོར་བ་ལེགས་པར་སྟོན་པ་ཡིན། །ཞེས་གསུངས་ཏེ།

རིགས་པ་འདིས་ན་སྒྲའི་རྣམ་པ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན་པས་ཐོག་མ་དང་ཐ་མ་མེད་ཅིང་། དངོས་པོ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་དང་བྲལ་བ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་སྒྲ་གང་[1]ཡིན་པའི་སྒོ་ནས་རབ་ཏུ་བསྟན་པའོ། །དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་དེ་ཡང་མ་བཅོས་པའི་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ་དྲི་མ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དེ་དོན་འདི་ཉིད་གསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཚུལ་གཅིག་པར་བསྟན་པའི་མདོ་ལས།

ཆོས་འདི་སྒྲ་སྐད་དག་གིས་ལུང་བསྟན་ཏེ། །
ཆོས་དང་སྒྲ་དག་འདི་ར་ནི་རྙེད་མི་འགྱུར། །
ཆོས་ཉིད་ཚུལ་གཅིག་དངོས་ལའང་འདུག་བྱེད་པ། །
བཟོད་མཆོག་བླ་ན་མེད་ལ་རེག་པར་འགྱུར། །

1. སྡེབས་སྦྱོར་གང་། རྒྱ་དཔེ།

ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་ལྟར་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་གཉིས་སུ་མེད་པར་ཁོང་དུ་ཆུད་པའི་སློབ་མས་བླ་མས་བསྟན་པའི་ལུང་ཐོབ་ནས་རྒྱུད་ལས་ཇི་སྐད་བཤད་པའི་ཆོ་ག་དང་། འབྱོར་པ་ཅི་ཡོད་པས་ཚོགས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་བྱས་ལ་ནམ་ཕྱེད་ན། ལེགས་པར་བསླབས་པའི་ཕྱག་རྒྱ་ལུས་དྲི་ཞིམ་པོས་བྱུགས་ཤིང་རྒྱན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བརྒྱན་པ་བླ་མ་ལ་ཕུལ་ཏེ། གསང་བ་དང་དེ་ལས་གཞན་པའི་མཆོད་པས་ཡང་དག་པར་མཆོད་ལ་བླ་མའི་མདུན་དུ་པུས་མོ་གཡས་པའི་ལྷ་ང་ས་ལ་བཙུགས་ཏེ། ཐལ་མོ་སྦྱར་བ་བྱས་ལ་འཁོར་བ་ལ་སྐྱོ་བའི་[1]ཡིད་ཀྱིས་སློབ་དཔོན་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་མངོན་སུམ་བཞིན་དུ་ལྷག་པར་མོས་པ་དང་། བསྟོད་པའི་མཆོད་པ་འདིས་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པར་གསོལ་བ་གདབ་པར་བྱའོ། །

མཆོག་སྦྱིན་རྡོ་རྗེ་མཆོག་ཁྱོད་འདུད། །
ཡང་དག་མཐའ་གྱུར་ཁྱོད་ལ་འདུད། །
སྟོང་ཉིད་ལས་བྱུང་ཁྱོད་ལ་འདུད། །
སངས་རྒྱས་བྱང་ཆུབ་ཕྱག་འཚལ་འདུད། །
མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་མཐོང་བ་ནི། །
སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་བདག་འཚལ་ལོ། །

1. འཁོར་བ་ལས་སྐྱོབ་པའི། ཞོད་དཔེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱི་ཡེ་ཤེས་ཆེ། །
ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་བླ་ན་མེད། །

རང་སྒྲོང་མཚན་ཉིད་གཅིག་པ་ཉིད། །
སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་སྟྭལ་དུ་གསོལ། །
ལས་དང་སྐྱེ་ལས་རྣམ་གྲོལ་བའི། །
ཚེ་འདིར་བྱང་ཆུབ་ཉིད་འཐོབ་པ། །

ཕྲིད་ཞབས་[1]པདྨ་སྤངས་ནས་ནི། །
གཙོ་བོ་གཞན་དུ་སྐྱབས་མ་མཆིས། །
འགྲོ་བའི་དཔའ་བོ་ཐུབ་ཆེན་པོ། །
དེ་བས་སངས་རྒྱས་མཆོག་མཉེས་མཛོད། །

དེ་ལྟར་གསོལ་བའི་ཚོ་ག་མཆོག །
དམ་པ་དེ་ནི་ཐོས་གྱུར་ནས[2]། །
བླ་མ་དཔལ་ལྡན་ཡོན་ཏན་མཚོ། །
སྙིང་རྗེས་སློབ་མ་ལ་སྐྱེད་ལ། །

བཞིན་ནི་རབ་ཏུ་དང་གྱུར་པས། །
རང་གི་བརྩེ་བས་རབ་དགའ་ཞིང་། །

---

1. ཕྲོད་ཞབས། གསེར།
2. དེ་ནི་བསྒོད་གྱུར་ནས། རྒྱ་དཔེ།

རྣལ་འབྱོར་རྒྱུད་ལས་བྱུང་བའི་མཆོག |
དམ་ཚིག་བཟང་པོ་བསྟན་པར་བྱ[1]། |

དེ་ནས་སློབ་དཔོན་སྙོམས་ཞུགས་ནས། |
བྱང་ཆུབ་སེམས་ནི་བསྒྲུབ་པར་བྱ།[2] |
བུམ་པའམ་ཡང་ན་དུང་ཆོས་སུ། |
བྱང་ཆུབ་སེམས་ནི་གཞག་པར་བྱ། |

དེ་ནས་སློབ་མ་དེ་བོས་ཏེ། |
སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱིས་བྱིན་བརླབས་ལ། |
རྒྱལ་བའི་ཕྱག་རྒྱར་བཅས་པ་ཡིས། |
དམ་ཚིག་དག་ནི་བསྟན་པར་བྱ། |

རྡོ་རྗེ་ཅན་ནི་གཉིས་པ་ཡིས། |
དབང་བསྐུར་བ་ནི་སྦྱིན་པར་བྱ། |
བཀྲ་ཤིས་སྒྲ་ནི་བསྒྲགས་པ་དང་། |
རོལ་མོའི་སྒྲ་སྐད་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས། |

ཁམས་གསུམ་པ་ཡི་དབང་བསྐུར་བས། |
སློབ་མ་འདུད་ཅིང་ཐལ་སྦྱར་བ། |

---

1. མཉན་པར་བྱ། རྒྱ་དཔེ།
2. ཚིག་རྐང་འདི་བོད་དཔེར་མེད་པས་རྒྱ་དཔེ་ལས་བོད་བསྒྱུར་གང་ཐུབ་ཀྱིས་གོང་དུ་བཀོད་ཡོད།

དེར་ནི་རབ་ཏུ་བསྐུལ་བ་ཡིས། །
རྗེས་སུ་གནང་བ་དེ་ནས་སྦྱིན། །

ཕྲེང་བ་ཆུ་དང་རྫོགས་སངས་རྒྱས། །
རྡོ་རྗེ་དྲིལ་བུ་མེ་ལོང་དང་། །
མིང་དང་སློབ་དཔོན་རྗེས་གནང་སྟེ། །
དབང་བསྐུར་རིམ་པ་འདི་ཡིན་ནོ། །

དེ་ནས་བྱང་ཆུབ་མཚན་ཉིད་ནི། །
བླ་མ་བརྒྱུད་རིམ་[1]ལས་འོངས་པ། །
མན་ངག་གི་ནི་གཞི་ཐོབ་པ། །
དེ་ནས་དེ་ལ་སྦྱིན་པར་བྱ། །

དེ་ལ་མདོར་ན་བྱང་ཆུབ་པའི་རིམ་པ་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། འདི་ལྟ་སྟེ་ཕྱི་དང་ནང་གི་འོ། །དེ་ལ་དང་པོར་ཕྱིའི་བསྟན་པར་བྱ་སྟེ། ཐོ་རངས་ཀྱི་ཐུན་མཚམས་སུ་མ་རིག་པའི་སྣང་བ་འདས་ནས་ཇི་སྲིད་ཉི་མ་གསལ་བར་[2]མ་གྱུར་པ་སྟེ། འདི་ལ་ནི་འོད་གསལ་བ་དྲི་མ་མེད་པའི་རྣམ་པ་གསལ་ཞིང་ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་དང་བྲལ་བ་ཐམས་ཅད་སྟོང་པའི་མཚན་ཉིད་ཅན་ནོ། །ཉི་མ་

1. རྒྱུད་རིམ། གསེར།
2. ཉི་མ་རིག་པར། རྒྱ་དཔེ།

ཤར་བ་ནི་སྣང་བ་མཆེད་པའོ། །ཉི་མ་ནུབ་པའི་ཐུན་མཚམས་སུ་མ་རིག་པའོ།། ཟླ་བ་ཤར་བའི་ཚེ་ནི་སྣང་བའོ། །

དེ་ལྟར་སྟོང་པ་ཉིད་རྣམ་པ་བཞི་ཕྱི་རོལ་ལ་ངེས་པར་བསྟན་པ་བཤད་ནས། ད་ནི་ནང་གི་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པ་སོ་སོ་རང་གིས་རིག་པའི་མཚན་ཉིད་ཅན་རིམ་པ་འདིས་བསྟན་པར་བྱ་སྟེ། [1]དང་པོར་སྨིག་རྒྱུ་ལྟ་བུ་ལ་འོད་ཟེར་ལྔའི་ཚོགས་དང་ལྡན་པར་མཐོང་ངོ་། །གཉིས་པ་ནི་སྣང་བ་སྟེ། ཟླ་ཉའི་འོད་ཟེར་ལྟ་བུའོ། །གསུམ་པ་ནི་སྣང་བ་མཆེད་པ་སྟེ་ཉི་མའི་འོད་ཟེར་ལྟ་བུའོ། །བཞི་པ་ནི་སྣང་བ་ཐོབ་པ་སྟེ་མུན་པ་ལྟ་བུའོ། །

དེ་ནས་མུན་པ་དང་བྲལ་བའི་སྐད་ཅིག་ལ་འོད་གསལ་བ་སྟེ། ཤིན་ཏུ་གསལ་བ་རྟག་ཏུ་སྣང་བའི་མཚན་ཉིད་ཅན་དོན་དམ་པའི་བདེན་པའི་རང་གི་མཚན་ཉིད་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མིག་གིས་མཐོང་ངོ་། །དེ་ལྟར་ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་ཉིད་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་ནས་རིམ་པ་འདིས་བསམ་གཏན་རྣམ་པ་གཉིས་[2]ལ་དམིགས་པར་བྱེད་དོ། །དེའི་རིམ་པ་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ཆུ་པོའམ་ལྗེང་ཀའི་ཆུ་ནི་དྲི་མེད་དག་ལ་གོར་བུ་གནས་པ་ལྟར། དེ་བཞིན་དེ་ལ་རིམ་གྱིས་རྗེས་སུ་གཞིག་པར་བྱེད་པས་རྣལ་འབྱོར་པས་ནི་རྟག་ཏུ་བསམ། མི་ལོང་ལ་ནི་རླུང་དག་རིམ་གྱིས་

1. ' དེའི་རིམ་པ་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ' རྒྱ་དཔེར་ལྷག་པོར་གསལ།

2. རྣམ་པ་ཉིད། སྣེ། ཅོ།

ཟད་པར་བྱེད་པ་བཞིན་དུ་འང་བལྟ་བྱ་སྟེ། རིལ་པོར་འཛིན་ལའང་བྱ་བའི་རིམ་པ་འདིར་ནི་དེ་བཞིན་ཡང་དག་བརྟག[1]

ད་ནི་མིང་ལ་[2]མངོན་པར་ཞེན་པ་རྣམས་ཀྱིས་འབྲུལ་པ་བསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དོན་དམ་[3]པའི་བདེན་པའི་མིང་གི་རྣམ་གྲངས་འགའ་ཞིག་ལ་འཇུག་པར་བྱ་སྟེ། དེ་ལ་དང་པོར་ནི་འོད་གསལ་བ་དང་། ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་དང་། སངས་རྒྱས་ཀྱི་[4]ཡེ་ཤེས་དང་། རྡོ་རྗེའི་ཡེ་ཤེས་དང་། བླ་ན་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་། དྲི་མ་མེད་པ་དང་། དངོས་པོ་མེད་པ་དང་། སྣང་བ་མེད་པ་དང་། བདག་མེད་པ་དང་། མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་དང་། སེམས་ཅན་མེད་པ་དང་། སྲོག་མེད་པ་དང་། གང་ཟག་མེད་པ་དང་། གསོས་པ་[5]མེད་པ་དང་། སྐྱེ་བ་མེད་པ་དང་། འགག་པ་མེད་པ་དང་། ཡི་གེ་མེད་པ་དང་། ཚིག་མེད་པ་དང་། དམིགས་སུ་མེད་པ་དང་། བླ་ན་མེད་པ་དང་། བརྗོད་དུ་མེད་པ་དང་། བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་དང་། མཐའ་ཡས་པ་དང་། གྲངས་མེད་པ་དང་། དཔང་པོ་ལས་འདས་པ་དང་། གནས་མེད་པ་དང་། མཚན་ཉིད་མེད་པ་དང་། འདུས་

1. ‘ཆུ་བོ་འམ་ལྷིང་ཀའི་ཆུ··········དེ་བཞིན་ཡང་དག་བརྟག’ ཀྱི་དཔེར་ཚིག་བཅད་ཐོག་གསལ།
2. ད་ནི་བརྗོད་པ་(སྣཱ)ལ། ཀྱི་དཔེ།
3. དོན་ནམ། གསེར།
4. སངས་རྒྱས། སྣེ། ཅོ།
5. གསོ་བ། སྣེ། ཅོ།

མ་བྱས་པ་དང་། མཚན་མ་མེད་པ་དང་། མི་གཡོ་བ་དང་། དམིགས་པ་དང་བྲལ་བ་དང་།[1] རྣམ་པར་མི་ཤེས་པ་དང་། བརྟག་[2]ཏུ་མེད་པ་དང་། ཟད་པ་མེད་པ་དང་། འཕེལ་བ་མེད་པ་དང་། ཚིག་མེད་པ་དང་། སྒྲིབ་པ་མེད་པ་དང་། ཚུལ་གཅིག་པ་དང་། ཞི་བ་དང་། ཞི་བ་ཉིད་དང་། ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པ་དང་། རང་བཞིན་གྱིས་དག་པ་དང་། ཐོག་མ་མེད་པ་དང་། དབུས་མེད་པ་དང་། ཐ་མ་མེད་པ་དང་། འགྲོ་བ་མེད་པ་དང་། འོང་བ་མེད་པ་དང་། རིང་བ་མ་ཡིན་པ་དང་། ཉེ་བ་མ་ཡིན་པ་དང་། གཅིག་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། རིག་པར་དཀའ་བ་དང་། རྣམ་པར་བསྒོམ་པར་དཀའ་བ་དང་། བསམ་གཏན་ཉིད་དང་། ཡང་དག་པ་དང་། ཆོས་ཀྱི་སྐུ་དང་། ཡང་དག་པའི་མཐའ་དང་། ཆགས་པ་མེད་པའི་མཐའ་དང་། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་དང་། ལུས་མེད་པ་དང་། རྡུལ་མེད་པ་དང་། མཐའ་མེད་པ་དང་། གྲུབ་པ་དང་། གསང་བ་གྲུབ་པ་དང་། ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་རྣམ་པར་དག་པ་དང་། ལྟ་བ་རྣམ་པར་དག་པ་དང་། རྒྱུ་རྣམ་པར་དག་པ་དང་། འབྲས་བུ་རྣམ་པར་དག་པ་དང་། ཁམས་གསུམ་རྣམ་པར་དག་པ་དང་། བསོད་ནམས་རྣམ་པར་དག་པ་དང་། སྡིག་པ་རྣམ་པར་དག་པ་དང་། ཉོན་མོངས་པ་རྣམ་

1. དམིགས་པ་དང་། ལ་བ་དང་། གསེར།
2. རྟག གསེར།

པར་དག་པ་དང་། ལས་རྣམ་པར་དག་པ་དང་། སྐྱེ་བ་རྣམ་པར་དག་པ་དང་། དེ་དག་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དང་། སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུམ་དང་། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་དང་། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་དང་། ལམ་གྱི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་[1]མཁྱེན་པ་དང་། དེ་བཞིན་ཉིད་དང་། མ་ནོར་བ་དེ་བཞིན་ཉིད་དང་། མཉམ་པ་ཉིད་དང་། བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་མི་ཟད་པ་ཉིད་དང་། ཡེ་ཤེས་འབའ་ཞིག་པ་ཉིད་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་བསྐྱེད་པ་དང་། ཉན་ཐོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུམ་དང་། རང་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་བསྐྱུན་པ་[2]དང་། འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་འདྲེན་པ་དང་། ལྷའི་མིག་རྣམ་པར་དག་པར་བྱེད་པ་དང་། ལྷའི་རྣ་བ་རབ་ཏུ་སྐྱེར་བར་བྱེད་པ་དང་། གཞན་གྱི་སེམས་ཤེས་པར་བྱེད་པ་དང་། སྔོན་གྱི་གནས་རྗེས་སུ་དྲན་པར་བྱེད་པ་དང་། རྫུ་འཕྲུལ་དཔག་ཏུ་མེད་པར་བྱེད་པ་དང་། ཉོན་མོངས་པ་ཐམས་ཅད་ཟད་པར་བྱེད་པ་ཞེས་བྱའོ། །དེ་བཞིན་དུ་གསང་བ་འདུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས་ཀྱང་། ''དངོས་པོ་མེད་པ་སྒོམ་པའི་དངོས། ''།ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དྲུག་གི་ཚིགས་

1. ལམ་ཐམས་ཅད། གསེར།

2. སྐྱུན་པ། གསེར།

སུ་བཅད་པ་རྣམས་ཀྱིས་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་མཚན་ཉིད་གསུངས་པ་དང་། རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་གཞན་དག་ལས་ཀྱང་།

ཡན་ལག་ཀུན་བསྒོམ་[1]ལས་འདས་ཤིང་། །
རྟོག་དང་རྣམ་རྟོག་སྤངས་ནས་ཀྱང་། །
གུག་སྐྱེད་ཐིག་ལེ་ལས་འདས་པ། །
འདི་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་མཆོག་ཡིན་ནོ། །
སེམས་ཅན་[2]ཐམས་ཅད་འདུག་པ་ནི། །
གཟུགས་དང་གཟུགས་མེད་དྲི་མེད་ལ། །
སེམས་ནི་བསྐྱལ་ཞིང་རྟོགས་བྱས་[3]པའི། །
དཀྱིལ་འཁོར་དཀྱིལ་འཁོར་ལྷ་བུའོ། །
ཡོད་དང་མེད་པ་གཉི་ག་མཐའ་ཡིན་ཏེ། །
དག་དང་མ་དག་འདི་ཡང་མཐའ་ཉིད་ཡིན། །
དེ་བས་མཐའ་གཉིས་རྣམ་པར་སྤངས་ནས་ནི། །
མཁས་པ་དབུས་ལའང་[4]གནས་པར་མི་བྱེད་དོ། །

ཞེས་གསུངས་པ་དང་།

1. བསྒོམས། གསེར།
2. དངོས་པོ། རྒྱ་དཔེ།
3. རྟོག་བྱས། གསེར།
4. དབུས་ལ། སྣེ། ཅོ།

ནམ་མཁའ་མཐའ་མེད་བརྟག་[1]པའི་དོན། །
སེམས་ཅན་[2]ཀུན་གྱི་གནས་ཆེན་པོ། །
དཔལ་གྱི་འཁོར་པས་འཁོར་པའི་རྒྱལ། །
བསམ་པ་ཐམས་ཅད་རྫོགས་བྱེད་པ། །

ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་སོ། །དགོངས་པས་བཤད་པའི་ཚིག་མང་པོའི་མིང་གི་རྣམ་གྲངས་བསྡུས་པས་ཅི་ཞིག་བྱ་ཞེ་ན། དེ་སྲིད་ཆོས་ཀྱི་ཕུང་པོ་བརྒྱད་ཁྲི་བཞི་སྟོང་གི་སྒྲའི་དོན་དཀའ་བ་དང་[3]། མཚན་ངེས་པ་མེད་པའི་ཚིག་འདི་དག་ནི་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ལ་བརྟེན་པར་མངོན་པར་[4]གྲགས་སོ། །དེ་ནས་དོ་རྗེ་སློབ་མས་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་རིམ་པ་རྣམ་པ་གཉིས་དང་། བསམ་གཏན་རྣམ་པ་གཉིས་རྫོགས་པར་གྱུར་ཅིང་དོན་དམ་པའི་བདེན་པའི་མིང་གི་རྣམ་གྲངས་ཐོས་ནས་[5]མངོན་པར་ཞེན་པ་སྤངས་ཏེ། བཞིན་རབ་ཏུ་དང་བ་དང་། ཐལ་མོ་སྦྱར་བ་བྱས་ཏེ་ཆེད་དུ་[6]བརྗོད་པའི་ཚིག་འདི་སྨྲས་སོ། །

---

1. བརྟགས། རྒྱ་དཔེ།
2. འབྱུང་བ། རྒྱ་དཔེ།
3. ‘དཀའ་བ་དང་’ རྒྱ་དཔེར་མེད།
4. ‘མངོན་པར་’ ཅོ་ནེ་དང་སྡེ་པར་གཉིས་སུ་མི་སྣང་།
5. རྣམ་གྲངས་བསྡུས་པ་ཐོས་ནས། རྒྱ་དཔེ།
6. མཆེད་དུ། གསེར།

ཨེ་མའོ་སངས་རྒྱས་ཨེ་སངས་རྒྱས། །
ཆོས་བཤད་པ་ཉི་ངོ་མཚར་ཆེ། །
ཡང་དག་དོན་ཉི་དག་པའི་དོན། །
བྱང་ཆུབ་སེམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

དེ་ནས་དོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས། །
སློབ་དཔོན་གཉིས་པ་ལྷར་བལྷས་ནས། །
དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ། །
ཕུང་པོ་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་དང་། །

གཟུང་དང་འཛིན་པ་རྣམ་[1]སྤངས་པ། །
ཆོས་ལ་བདག་མེད་མཉམ་ཉིད་པས། །
རང་སེམས་གཟོད་ནས་[2]མ་སྐྱེས་པ། །
སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་རང་བཞིན་ནོ། །

ཞེས་བྱ་བའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་བརྗོད་ནས་གཉིས་སུ་མེད་པར་དམིགས་ཏེ། ཤེས་རབ་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་དབང་བསྐུར་བ་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །རིམ་པ་འདི་ཉིད་ཀྱིས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དཔལ་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་

1. རྣམས། གསེར།
2. རང་སེམས་ཙམ་ལས། རྒྱ་དཔེ།

ཅན་ཀྱིས་སེ་གོལ་གྱི་[1]སྒྲས་བསྐུལ་བར་གྱུར་པས་མི་གཡོ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་བཞེངས་ཏེ། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཤིང་དྲུང་ལ་བཞུགས་ནས་མཚན་ཕྱེད་ཀྱི་དུས་སུ་འོད་གསལ་བ་མངོན་དུ་མཛད་དེ། སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་བཞེངས་ནས། འགྲོ་བ་རྣམས་ལ་ཆོས་སྟོན་པར་མཛད་པ་ཡིན་ནོ། །དེང་ནས་བརྩམས་ཏེ་དམ་པའི་ཆོས་ཇི་སྲིད་གནས་པ་དེ་སྲིད་དུ་བླ་མའི་ཁ་ནས་བླ་མའི་ཁར་བརྒྱུད་པ་ཡིན་ནོ། །

རྣལ་འབྱོར་གཉིས་རྣམ་པར་དག་པ་ལ་དགའ་བ་རྣམས་ཀྱི་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་རིམ་པ་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་བསྡུས་པའི་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་པ་སྟེ་ལེའུ་བདུན་པའོ།། །།

1. གྱིས། གསེར།

ལེའུ་བརྒྱད་པ།

རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་རྟོགས་པ་ལ་ནི་སོམ་ཉི་མ་མཆིས་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཇི་ལྟར་ན་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ལ་ཞུགས་ཏེ་དངོས་པོ་མེད་པར་གྱུར་ནས་ལྡང་བར་བགྱིད། འདིར་མངོན་དུ་ཕྱོགས་པ་[1] ཉམས་སུ་མྱོང་བ་ནི་གང་ཞིག་ལགས། མི་ལྡོག་[2]པར་གྱུར་པ་ནི་གང་ཞིག་ལགས། ཐར་པའི་དོན་ནི་གང་ཞིག་ལགས། ཅིའི་ཕྱིར་ན་གྲོལ་བར་འགྱུར། གྲོལ་བ་ནི་སུ་ཞིག་ལགས།[3] རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས[4]སླས་པ། སེམས་ཅན་ཆེན་པོ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། །འོད་གསལ་བ་ལས་ལྡང་བའི་རིམ་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་མན་ངག་ལས་ཁ་ཕྱིར་བལྟས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཡུལ་མ་ཡིན་པ་གསང་བ་འདུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྗེས་སུ་འབྲངས་ནས་ཁྱོད་ལ་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱ་ཡིས། རྩེ་གཅིག་པའི་ཡིད་ཀྱིས་ཉོན་ཅིག །རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་འདི་ལ་བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་ལ་བསླབས་ནས་ས་བརྒྱད་པ་ཐོབ་སྟེ། ཡང་ནས་ཡང་དུ་བདེ་འགྲོར་སྐྱེ་ཞིང་ཇི་སྲིད་རྫོགས་པའི་རིམ་པ་མ་ཐོབ་པ་དེ་སྲིད་དུ་དགེ་

1. འདིར་རང་ཉིད་བདེ་བ། རྒྱ་དཔེ།
2. རྗེར་མི་ལྡོག གསེར།
3. 'གྲོལ་བ་ནི་སུ་ཞིག་ལགས།' རྒྱ་དཔེར་མེད།
4. ཀྱི། ཅོ།

བའི་བཤེས་གཉེན་མཉེས་པར་བྱའོ། །སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་མངོན་པར་རྟོགས་ནས་ཀྱང་ས་བཅུ་ཐོབ་པ་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་སོ་སོར་ཐོབ་ཅིང་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཡང་དག་པར་རྟོགས་ནས་སྣང་བ་རྣམ་པར་དག་པ་སོ་སོར་ཐོབ་སྟེ། སྣང་བ་མེད་པ་ལས་ལངས་ནས་ཟུང་དུ་འཇུག་པར་གནས་པའི་རིམ་གྱིས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྐུ[1]མངོན་སུམ་དུ་བྱས་ནས། རྡོ་རྗེ་ལྟ་བུའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བརྒྱན་ནས་གནས་པར་འགྱུར་རོ། །

ཇི་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ལང་ཀར་གཤེགས་པའི་མདོ་ལས་ཀྱང་། ''བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ཐབས་ལ་མཁས་པའི་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ་པའི་སྦྱོར་བ་དང་། སེམས་ཅན་གྱི[2]ཁམས་ཐམས་ཅད་སྒྱུ་མ་དང་། གཟུགས་བརྙན་དང་། མཉམ་པ་ཉིད་དང་། རྐྱེན་གྱིས་མ་བརྩམས་པས་ཕྱི་དང་ནང་གི[3]ཡུལ་རྣམ་པར་དབེན་པ་དང་། སེམས་ཕྱི་རོལ་དུ་ལྟ་བས་མཚན་མ་མེད་པའི་བྱིན་གྱིས་བརླབས[4]དང་ལྡན་པ་རྣམས་རིམ་གྱིས་སའི་རིམ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཡུལ་ལ་རྗེས་སུ་འཇུག་ན། ཁམས་གསུམ་དག་གི་སེམས[5]སྒྱུ་མར་ཤིན་

1. སངས་རྒྱས་ཀྱིས་བྱ་བ། གསེར། སངས་རྒྱས་ཀྱི་བྱ་བ། སྡེ།ཅོ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།

2. གྱིས། གསེར།

3. གིས། གསེར།

4. བྱིན་གྱི་རླབས། སྡེ། ཅོ།

5. ཁམས་གསུམ་རང་གི་སེམས། རྒྱ་དཔེ།

ཏུ་མོས་པར་[1]རབ་ཏུ་བསྒོམ་པ་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་རབ་ཏུ་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་ལྟ་བས་ན་བདག་གི་སེམས་སྣང་བ་མེད་པ་ཙམ་ལ་འཇུག་པས་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་གནས་པ་རྗེས་སུ་ཐོབ་པ་སྐྱེ་བ་དང་། བྱ་བ་དང་བྲལ་བའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཏིང་ངེ་འཛིན་རྡོ་རྗེའི་གཟུགས་ལྟ་བུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐུའི་རྗེས་སུ་སོང་བ་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་སྤྲུལ་པ་དང་ལྡན་པའི་སྟོབས་དང་། མངོན་པར་ཤེས་པ་དང་། དབང་དང་། སྙིང་བརྗེ་བ་དང་།[2] སྙིང་རྗེ་དང་། ཐབས་ཀྱིས་བརྒྱན་པ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཞིང་གི་མུ་སྟེགས་ཅན་གྱི་གནས་སུ་ཉེ་བར་འགྲོ་བའི་སེམས་དང་། ཡིད་དང་། ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་བྲལ་ནས་[3]རིམ་གྱིས་གནས་འཕོས་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐུ་རབ་ཏུ་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། །བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དེ་བས་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐུའི་རྗེས་སུ་འབྲང་བ་[4]རབ་ཏུ་ཐོབ་པ་རྣམས་ཀྱི་[5]ཕུང་པོ་དང་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་དང་། སེམས་དང་། རྒྱུ་དང་། རྐྱེན་དང་། བྱ་བ་དང་ལྡན་པ་དང་།

1. མོས་པས། གསེར།
2. སྙིང་བརྗེ་བ་དང་། རྒྱ་དཔེར་མེད།
3. བྲལ་བའི། གསེར།
4. འབྲངས་པ། གསེར།
5. ཀྱིས། གསེར།

སྐྱེ་བ་དང་། གནས་པ་དང་། འཇིག་པའི་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སྤྲོས་པ་དང་བྲལ་བར་སེམས་ཅམ་གྱི་[1]རྗེས་སུ་འབྲང་བར་བྱའོ། ''།ཞེས་གསུངས་པས་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སློམས་པར་[2]ཞུགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་ཇི་སྲིད་དུ་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་མངོན་པར་རྟོགས་པ་ཐོབ་པ་མ་ཡིན་པ་དེ་སྲིད་ཀྱི་བར་དུ་ནི་ཕྱིར་ལྡོག་པར་འགྱུར་བ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། ཇི་སྲིད་དུ་སྣང་བ་གསུམ་རྣམ་པར་དག་པར་མ་གྱུར་པ་དེ་སྲིད་དུ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཀུན་དུ་རྟོག་པའོ། །ཇི་སྲིད་དུ་ཀུན་དུ་རྟོག་པ་དེ་སྲིད་དུ་ནི་ཉོན་མོངས་པའི་བག་ཆགས་ཀྱི་རྒྱུན་ནོ། །ཉོན་མོངས་པའི་བག་ཆགས་ཀྱི་རྒྱུན་གྱིས་ནི་ཡང་སྲིད་པར་འགྱུར་བ་ཡིན་ལ། གང་སེམས་གཞན་[3]དག་དང་བྲལ་བ་དེ་ནི་རྣམ་པར་དག་པའི་གནས་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ་དཔལ་མཆོག་དང་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་[4]རྒྱུད་ལས་ཀྱང་།

''འདི་ལྟ་སྟེ་འདོད་ཆགས་རྣམ་པར་དག་པའི་གནས་དེ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་གནས་སོ། །འདི་ལྟ་སྟེ། ཞེ་སྡང་རྣམ་པར་དག་པའི་གནས་དེ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་གནས་སོ། །འདི་ལྟ་སྟེ་གཏི་མུག་རྣམ་པར་དག་པའི་

---

1. གྱིས། གསེར།
2. སློམ་པར། གསེར།
3. གང་སེམས་དཔའ་གཞན། སྡེ། ཅོ།
4. གྱིས། གསེར།

གནས་དེ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་གནས་སོ། ''།ཞེས་གསུངས་པ་དང་། རྡོ་རྗེ་[1]སློབ་དཔོན་ཀ་མླའི་ཞལ་སྔ་ནས་ཀྱིས་ཀྱང་ནང་གི་བདག་ཉིད་སྒྲུབ་ཐབས་ལས། ''སྒྲ་ཇི་བཞིན་པའི་རང་བཞིན་སྒོམ་པོར་བཤད་ལ། དེ་བཞིན་དུ་སེམས་དཔའི་རང་བཞིན་ནི་ཕྲ་བ་སྟེ། སེམས་དཔའ་དང་བྲལ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་གི་གནས་སོ།[2]''།ཞེས་བཤད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་རིགས་པ་འདིས་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་རིམ་པ་འདིས་འོད་གསལ་བ་ཡང་དག་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་པ་དེའི་ལུས་དང་ངག་དང་སེམས་དྲི་མ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་ཉིད་ཡིན་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གསུམ་རྣམ་པར་དག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་ནི་སེམས་པ་མེད་ཅིང་སྨྲ་བ་མེད་པ་གང་ཡིན་པ་འདི་ནི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་ཁམས་ཏེ། གཟུགས་མེད་པ། རིག་པར་དཀའ་བ། ལས་དང་སྐྱེ་བ་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བ། ཉི་མ་དང་། ཟླ་བ་དང་། མེ་དང་། ནོར་བུའི་འོད་ཀྱིས་ངོ་བོ་ཉིད་བཞིན་དུ་གསལ་བའོ། །དེ་ལས་ནི་མུན་པའི་སྣང་བ་སྟེ་སྣང་བ་ཉེ་བར་ཐོབ་པ་ལ་སོགས་པར་འགྱུར་རོ།།

སྣང་བ་ཉེ་བར་ཐོབ་པ་ལས་གསལ་བའི་ཉི་མའི་འོད་ཀྱི་སྣང་བའི་ཚ་བའི་ངོ་བོ་སྣང་བ་མཆེད་པ་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལས་ནི་གསལ་བ་ཟླ་བའི་འོད་

---

1. 'རྡོ་རྗེ་' གསེར་བྲིས་སུ་མེད།
2. 'སྒྲ་ཇི་བཞིན་པའི·······མཆོག་གི་གནས་སོ།' རྒྱ་དཔེར་ཚིགས་བཅད་དུ་གསལ།

ཟེར་བསིལ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་སྣང་བས་ཁྱབ་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ། །

དཔལ་མཆོག་དང་པོ་ལས་ཀྱང་། "ནམ་མཁའ་ལས་ནི་ནམ་མཁའ་འབྱུང་། །ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་ནམ་མཁའ་ཆེ།" །ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་བས་ན་སྟོང་པ་ཉིད་གཞི་[1]གཅིག་ཏུ་གྱུར་པའི་སྣང་བའི་ཚོཏ་ནམ་མཁའ་སྣང་བྱེད་ལྟ་བུས་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་སྣང་བར་བྱས་ཏེ། ཁམས་ཕྲ་བ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་གྲིབ་མ་དང་འདྲ་བར་གཅད་དུ་[2]མེད་པ་དང་གཞིག་ཏུ་མེད་པའི་རྡོ་རྗེའི་སྐུའི་ངོ་བོ་ཉིད་འཕོ་བ་མེད་ཅིང་། ཟག་པ་མེད་པས་ཉོན་མོངས་པའི་བག་ཆཏ་ཐམས་ཅད་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་འདོད་པ་ཙམ་གྱིས་[3]དབང་དུ་གྱུར་པ་ཐོབ་པ་ཆུ་ལས་ཉ་ལྟ་བུའམ། སྨུར་བར་གཉིད་ལོག་ཅིང་སད་པ་བཞིན་མཆོག་ཏུ་དགའ་བའི་ལུས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་གཟུགས་འབྱུང་བར་འགྱུར་བའི་གཟུགས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་མིང་ནི་རྡོ་རྗེ་འཆང་[4]ཞེས་བྱའོ། །འཁོར་བའི་འཆིང་བ་ལས་ངེས་པར་གྲོལ་བས་ན་ཐར་པ་ཞེས་བྱའོ། །དོན་འདི་

1. བཞི། ཀྲུ་དཔེ།
2. བཅད་དུ། གསེར།
3. གྱི། གསེར།
4. འཆང་ཆེན་པོ། གསེར།

ཉིད་གསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དཔལ་གསང་བ་གྲུབ་པ་ལས[1]།

རང་གིས་རིག་པའི་དེ་ཁོ་ན། །
གཞན་གྱིས་[2]བརྗོད་ལས་མི་འབྱུང་སྟེ། །
མོས་དང་བསྒོམས་པས་རྟོགས་འགྱུར་གྱི། །
དམ་ཚིག་དེ་ནི་གཞན་དུ་མིན།[3] །

དེ་ཉིད་དེ་ཉིད་མིན་སྤངས་ཏེ།[4] །
མོས་པའི་[5]བསམ་པས་ཉིན་མཚན་དུ། །
ཞི་བའི་གོ་འཕང་བླ་ན་མེད། །
མཆོག་ཏུ་མྱ་ངན་འདས་པ་དེར། །

དེ་དང་དེ་མོས་པ་ཡི་མཐུས། །
བསྒོམས་[6]པའི་སྟོབས་ཀྱིས་གང་སྤྲུལ་པ། །

---

1. ལས་ཀྱང་། གསེར།
2. གྱི། གསེར།
3. དེ་ནི་གཞན་དུ་རྟོགས་བྱ་མིན། (ཨགམྱཾ ཙནྱཐཱ ཏུ ཏཏ྄) རྒྱ་དཔེ།
4. དེ་ནས་དེ་ཉིད་ཤེས་བྱས་ནས། (ཛྙཱཏྭ ཏཏྟྭཾ ཏཏཿ ཤྲིཏྭ) རྒྱ་དཔེ།
5. མོས་པས། གསེར།
6. བསྒོམ། གསེར།

དེར་ནི་སྐྱེ་བར་འགྱུར་བའི་གཟུགས། །
ཀུན་དགའ་ལས་འབྱུང་མཆོག་སྐྱེས་པའང་། །
སྐད་ཅིག་ཙམ་གྱིས་འབྱུང་བ་སྟེ། །
སྲོ་དང་སྡུད་པར་བྱེད་པའོ། །
ཁམས་གསུམ་འདི་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱི[1]། །
འགྲོ་དང་མི་འགྲོ་བཅས་སྣང་བྱེད། །
བསྒོམ་པའི་དེ་ཉིད་[2]མཐུ་ཡིས་ནི། །
ཐབས་ཤེས་བདག་ཉིད་ཅན་ཞི་བ། །
ཉོན་མོངས་ཀུན་ལས་རྣམ་གྲོལ་ཞིང་། །
མཚན་རྣམས་ཀུན་གྱིས་རབ་བརྒྱན་པར། །
སྟོང་ཉིད་ཡེ་ཤེས་ལས་བྱུང་བ། །
གཉིས་མེད་མཆོག་ཏུ་ཞི་བ་ཉིད། །
རྣམ་པ་ཀུན་གྱི་[3]མཆོག་ལྡན་ཞིང་། །
གཟུང་དང་འཛིན་པ་རྣམ་སྤངས་པ། །

1. ཀྱིས། གསེར།
2. བསྒོམ་པའི་སྟོབས་ཀྱི། རྒྱ་དཔེ།
3. གྱིས། གསེར།

ཡེ་ཤེས་སྒྱུ་མ་འདྲ་ཞིང་དག
འོད་གསལ་རང་བཞིན་དྲི་མ་མེད།
སྒྲ་དང་དྲི་དང་རོ་ལས་འདས།
དེ་བཞིན་རིག་པ་རྣམ་སྤངས་པ།
ཏིང་འཛིན་ཡེ་ཤེས་མིག་ཅན་གྱི།
མཆོག་གཅིག་གིས་ནི་མཐོང་བར་འགྱུར།
གྲིབ་མ་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་མཆོག
མཆོག་གི་དབྱིབས་དང་ཡང་དག་ལྡན།
ཡེ་ཤེས་ཆུ་རླབས་འཁྲིས་པ་ཡིས།
རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་དཔག་མེད་གཟུགས།
འཇའ་ཚོན་ལྟ་བུའི་ལུས་ཉིད་ནི།
དེ་ཉིད་བསྒོམས་པས་ཐོབ་པར་འགྱུར།
བསྒོམ་པའི་སྦྱོར་བའི་སྟོབས་ཀྱིས་ནི།
དམ་ཚིག་དག་ནི་བསྲུངས་པ་ཡིས།
རྒྱལ་བས་ཀྱང་ནི་བརྗོད་མེད་པའི།
འདི་འདྲའི་གཟུགས་ནི་ཐོབ་པར་འགྱུར།

གང་དུ་སེར་སྐྱའི་གནས་གྱུར་པའི། །
ལུས་ངག་ཡིད་དང་བྲལ་བའི་མཆོག །
དེར་ནི་ཡང་དག་བསྟན་དབང་གིས། །
རང་གི་གཟུགས་ནི་རྣམ་པར་བསྒོམ། །

ཨེ་མའོ་ཤིན་ཏུ་སྨད་བྱེད་པ[1]། །
ཨེ་མའོ་ཞི་བ་དབང་པོ་འདས། །
ཨེ་མའོ་མཆོག་ཏུ་ཟབ་པ་ཉིད། །
སངས་རྒྱས་ཉིད་ཀྱི[2]་གནས་མཆོག་ཡིན། །

ཞེས་བཤད་པ་དང་། ལྷང་བའི་རིམ་པ་འདི་ཉིད་གསང་བ་འདུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་གསུངས་ཏེ།

ཨེ་མའོ་རྡོ་རྗེ་ཨེ་རྡོ་རྗེ། །
ཨེ་མའོ་རྡོ་རྗེ་ཆོས་བསྟན་པ། །
གང་དུ་ལུས་ངག་སེམས་མེད་པ། །
དེར་ནི་གཟུགས་སུ་རྣམ་པར་བསྒོམ། །

---

1. བྱུང་བ། གསེར།
2. ཀྱིས། གསེར།

ཞེས་གསུངས་པ་དང་། རྗེ་བཙུན་གྱི་ཞལ་སྔ་ནས་ཀྱིས་ཀྱང་།

ཁོང་སྟོང་ཁྱོད་ཀྱི་སྐུ་ལ་མེད། །
ཤ་དང་རུས་པ་ཁྲག་ཀྱང་མེད། །
ནམ་མཁའ་ལ་ནི་འཇའ་ཚོན་ལྟར། །
ཁྱོད་ཀྱི་སྐུ་ནི་སྟོན་པར་མཛད། །

སྐུ་ལ་བསྙུན་མེད་མི་གཙང་མེད། །
བཀྲེས་དང་སྐོམ་པ་འབྱུང་མེད་ཀྱང་། །
ཁྱོད་ནི་འཇིག་རྟེན་འཇུག་པའི་ཕྱིར། །
འཇིག་རྟེན་བྱ་བ་སྟོན་པར་བྱེད། །

ཅེས་བཤད་པ་དང་། རྟོག་པ་ཀུན་ལས་བཏུས་པ་ལས་ཀྱང་།

དག་པའི་སེམས་ནི་གཟུང་[1]གྱུར་ན། །
རྡོ་རྗེ་ལུས་ནི་རྣམ་བསྒོམས་པས། །
བརྟན་ལུས་[2]ཁོང་སྟོང་མ་ཡིན་པ། །
རྡོ་རྗེའི་སྐུ་ནི་དེས་ཐོབ་འགྱུར། །

ཞེས་གསུངས་པ་དང་། ཏིང་ངེ་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་མདོ་ལས། ཟླ་འོད་གཞོན་ནུར་གྱུར་པས་ཀྱང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐུར་བཤད་དེ།

1. བཟུང་། གསེར།

2. བརྟན་སྣང་། རྒྱ་དཔེ།

ནམ་མཁའ་འདྲ་ཞིང་རྡུལ་བྲལ་གཟུགས་བཟང་འཆང་།།
ཤེས་རབ་སྲས་པོ་ལུས་དང་མཚན་མི་མངའ། །
ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོ་རབ་ཟབ་ཐུགས་རྗེ་ཅན། །
མཚུངས་མེད་ཕྱག་ནི་བདག་གི་སྤྱི་བོར་ཞོག །

ཅེས་གསུངས་པ་དང་། འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་བརྒྱད་སྟོང་པ་ལས་ཀྱང་། ‘‘རབ་འབྱོར་གྱིས་སྨྲས་པ། ལྷའི་བུ་དག་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཡང་རྨི་ལམ་ལྟ་བུ་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུར་སྨྲའོ། །མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ལས་ཆེས་ལྷག་པའི་ཆོས་གཞན་ཞིག་ཡོད་ཀྱང་དེ་ཡང་རྨི་ལམ་ལྟ་བུ་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུར་སྨྲའོ།’’ །ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །དེ་ནས་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཁྱད་པར་ནི་གཟུགས་ཅན་མ་ཡིན་པ་དང་། གཟུགས་མེད་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། བདེན་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། བརྫུན་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། དངོས་པོ་མ་ཡིན་པ་དང་། དངོས་པོ་མེད་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། རྟག་པ་མེད་པ་དང་། ཆད་པ་མེད་པ་དང་། རྣམ་པ་དང་བཅས་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། རྣམ་པ་མེད་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། ཆོས་མ་ཡིན་པ་དང་། ཆོས་མ་ཡིན་པའང་མ་ཡིན་པ་དང་། ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། རྣམ་པར་བྱང་བ་མ་ཡིན་པ་དང་། འཁོར་བ་མ་ཡིན་པ་དང་། མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། རྟག་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། མི་རྟག་པ་མ་ཡིན་པ་དང་།

བདག་མ་ཡིན་པ་དང་། བདག་མེད་པ་མ་ཡིན་པ་དང་།[1] གཞན་གྱི་བདག་ཉིད་མ་ཡིན་པ་དང་། ནང་མ་ཡིན་པ་དང་། ཕྱི་རོལ་མ་ཡིན་པ་དང་། འཇིག་རྟེན་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། གཉིས་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། གཉིས་སུ་མེད་པ་མ་ཡིན་པ་ཞེས་བྱ་བའོ། །

ཟུང་དུ་འཇུག་པའི་སྐུ[2]ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་འདི་མིང་གི་རྣམ་གྲངས་འགའ་ཞིག་ལ་འཇུག་པར་བྱ་སྟེ། རིག་པ་ཆེན་པོའི་སྐྱེས་བུའི་གཟུགས་དང་། བདེན་པ་གཉིས་ཀྱི་ཚུལ་ལ་གནས་པ་དང་། རང་བཞིན་གྱིས་འོད་གསལ་བའི་བདག་ཉིད་ཅན་དང་། ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཅན་དང་། འཇིག་རྟེན་གསུམ་གྱི་བདག་ཉིད་ཅན་དང་། དུས་གསུམ་གྱི་བདག་ཉིད་ཅན་དང་། ཐེག་པ་གསུམ་གྱི་བདག་ཉིད་ཅན་དང་། དཀྱིལ་འཁོར་གསུམ་གྱི་བདག་ཉིད་ཅན་དང་། ཐབས་ཀྱི[3]བདག་ཉིད་ཅན་དང་། དེ་བཞིན་དུ་སྐྱེས་བུ་དམ་པ་དང་། སྐྱེས་བུ་མཆོག་དང་། སྐྱེས་བུ་ཆེན་པོ་དང་། སྐྱེས་བུ་ཅང་ཤེས་དང་། སྐྱེས་བུ་དཔའ་བོ་དང་། སྐྱེས་བུ་བརྟན་པོ་དང་། སྐྱེས་བུ་འདུལ་བ་དང་། སྐྱེས་བུ་

1. བདག་མེད་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། བོད་དཔེར་མི་སྣང་ཡང་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་གོང་དུ་བཀོད་པ་ཡིན།
2. ཟུང་དུ་འཇུག་པའི་སྐུ་རྡོ་རྗེ། རྒྱ་དཔེ།
3. རིགས་ཐམས་ཅད་ཀྱི། རྒྱ་དཔེ།

འདུལ་བ་པོ་དང་། སྐྱེས་བུ་མཆོག་དང་།[1] སྐྱེས་བུ་ཁ་ལོ་སྒྱུར་བ་དང་། སྐྱེས་བུ་སེང་གེ་དང་། སྐྱེས་བུ་ནམ་མཁའ་དང་། སྐྱེས་བུ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཅན་དང་། སྐྱེས་བུ་དག་པའི་བདག་ཉིད་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་འཁོར་བ་ལས་རྒལ་བ་[2]དང་། སྨམ་སར་ཕྱིན་པ་དང་། བདེ་བ་ཐོབ་པ་དང་། འཇིགས་པ་མེད་པ་ཐོབ་པ་དང་།[3] ཕ་རོལ་ཏུ་འགྲོ་བས་འབར་བ་དང་། ཚེར་མ་དཀྲུགས་པ་དང་། སྦྲིས་པ་མེད་པ་དང་། དགེ་སློང་དང་། དཀྲ་བཅོམ་པ་དང་། ཟག་པ་ཟད་པ་དང་། ཅི་ཡང་མེད་པ་དང་། དགེ་སྦྱོང་དང་། བྲམ་ཟེ་དང་། རྒྱལ་རིགས་དང་། སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྲས་དང་། ཉོན་མོངས་པ་མེད་པ་དང་། དབང་དུ་གྱུར་པ་དང་། སེམས་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་དང་། ཤེས་རབ་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་དང་། ཀུན་ཤེས་པ་དང་། གླང་པོ་ཆེན་པོ་དང་། བྱ་བ་བྱས་པ་དང་། བྱེད་པ་བྱས་པ་དང་། ཁུར་བོར་བ་དང་། བདག་གི་དོན་རྗེས་སུ་ཐོབ་པ་དང་། སྲིད་པ[4]སྦྱོར་བ་ཡོངས་སུ་ཟད་པ་དང་། ཡང་དག་པའི་བཀས་

1. 'སྐྱེས་བུ་མཆོག་དང་། 'བོད་དཔེར་ཚིག་འདི་ཉིད་བལྟབས་པ་ལྟར་སྣང་ཡང་རྒྱ་དཔེར་དེའི་སྐད་དོད་ཐ་དད་དུ་སྣང་སྟེ་པུཎྜ་རཱི་ཀཿ དང་། པུཎྜ་རཱོ་ཧམ། ཞེས་པ་གསལ།
2. བརྐལ་བ། གསེར།
3. འཇིགས་པ་མེད་པ་ཐོབ་པ་དང་། རྒྱ་དཔེར་མེད།
4. སྲིད་པར། གསེར།

སེམས་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་དང་། ཤེས་རབ་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་དང་།[1] སེམས་ཐམས་ཅད་ལ་དབང་ཐོབ་པ་དང་། མཆོག་ཏུ་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དང་། འཁོར་བའི་ཕ་རོལ་གྱི་མཐའ་ལ་གནས་པ་དང་། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྐུ་དང་། རང་བྱུང་ཞེས་བཤད་དོ། །དོ་རྗེ་ལྷ་བུའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་འདི་ཉིད་ཀྱི་ཁྱད་པར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དཔའ་བར་འགྲོ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་མདོ་ལས་ཀྱང་།

''གང་གི་དཔའ་བར་འགྲོ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་འདི་དག་ཐོབ་པའི་སྐྱེས་བུ་དམ་པ་ནི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་དུ་མཆིས་པ་ལགས་སོ། །རང་དབང་གི་ཡེ་ཤེས་ལ་དབང་བསྒྱུར་པ་ལགས་སོ། །དཔའ་བར་འགྲོ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་འདི་མ་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་ལ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཞེས་ང་མི་སྨྲའོ། །དཔའ་བར་འགྲོ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་འདི་མ་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་ལ་ནི་མངོན་པར་ཤེས་པ་ཐོབ་པའོ་ཞེས་ང་[2]མི་སྨྲའོ། །དཔའ་བར་འགྲོ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་འདི་[3]མ་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་ལ་ནི་སྦྱང་བ་བྱས་པའོ་ཞེས་ང་མི་སྨྲའོ། །དཔའ་བར་འགྲོ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་འདི་མ་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་ལ་ནི་སྦྱིན་པ་

---

1. 'ཤེས་རབ་ ……… དང་།' ཅོ་སྣེ་གཉིས་དང་རྒྱ་དཔེར་ཡང་མེད།
2. ཞེས་པ། སྣེ།
3. 'འདི་' གསེར་བྲིས་སུ་མེད།

དང་། ཚུལ་ཁྲིམས་དང་། བཟོད་པ་དང་། བརྩོན་འགྲུས་དང་། བསམ་གཏན་དང་། ཤེས་རབ་དང་། ཐབས་[1]དང་ལྡན་པའོ་ཞེས་ང་མི་སྨྲའོ། ། དཔའ་བར་འགྲོ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་འདི་མ་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་ལ་ནི་མང་དུ་ཐོས་པ་ཞེས་ང་མི་སྨྲའོ། །དཔའ་བར་འགྲོ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་འདི་མ་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་ལ་ནི་སྟོབས་པ་དང་ལྡན་པའོ་ཞེས་ང་མི་སྨྲའོ། །རིགས་ཀྱི་བུ་དག་དེ་བས་ན་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་ལམ་ཐམས་ཅད་དུ་ངེས་པར་འབྱུང་བར་འདོད་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམ་སེམས་ཐམས་ཅད་མེད་པའི་ཕྱིར་དཔའ་བར་འགྲོ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་འདི་ལ་བསླབ་པར་བྱའོ།'' །ཞེས་གསུངས་སོ། །

མི་གནས་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་ཁམས་བསྟུས་པའི་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་པ་སྟེ་

ལེའུ་བརྒྱད་པའོ།། །།

---

1. ཐབས་དང་། རྒྱ་དཔེར་མེད།

ལེའུ་དགུ་པ།

རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། གྲོས་པ་དང་བསམ་པའི་རང་བཞིན་གྱིས་འབྲས་བུ་དང་བཅས་[1]པའི་རིམ་པས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པ་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་བླ་མས་རྗེས་སུ་གནང་བ་བྱས་པས་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཞུན་སུམ་ཚོགས་པ་ལ་སློབ་པར་འདོད་པའི་རྣལ་འབྱོར་པས་རྒྱུའི་གནས་སྐབས་སུ་ཇི་ལྟར་གནས་པར་བགྱི། ཇི་ལྟར་བསྒོམ་པར་བགྱི། ཇི་ལྟར་བརྟུལ་ཞུགས་ཀྱི་སྤྱོད་པ་སྤྱད་པར་བགྱི་བ་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་སྟོན་པས་ལུང་བསྟན་དུ་གསོལ།

རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ།། ཁྱད་པར་གྱི་རྒྱུ་ཐོབ་ཅིང་བརྩོན་འགྲུས་འབར་བ་རྣམས་དང་། ལུས་དང་སྲོག་ལ་ལྟོས་པ་མེད་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཚེ་འདི་ཉིད་ལ་རང་གི་གཟུགས་སུ་འཛིན་པ་ལས་ཡོངས་སུ་ལོག་ནས། ཡོན་ཏན་གྱི་དབང་ཕྱུག་བརྒྱད་ཀྱི་འབྲས་བུ་རྟོགས་པར་བྱེད་པར་འདོད་པ་རྣམས་ཀྱི་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་འདྲི་བར་བྱེད་པ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། །དངོས་པོར་འཛིན་པ་རྣམ་པར་བསལ་ནས་ཐར་པ་[2]འདོད་པ་རྣམས་ཀྱི་སྒོམ་པ་རྣམ་པར་དག་པ་དང་། སྤྱོད་པ་རྣམ་པར་དག

1. ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་དང་བཅས་(སཀལ) རྒྱ་དཔེ།
2. ཐར་པར། གསེར།

པ་ཁྱེད་ལ་རིམ་བཞིན་དུ་བཤད་ཀྱིས་ཉོན་ཅིག འདི་ལ་བདེན་པ་རྣམ་པ་གཉིས་གཉིས་སུ་མེད་པས་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་ཀྱང་གཉིས་སུ་མེད་པ་ཡིན་ལ། རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་གཉིས་སུ་མེད་པས་ཐོབ་པ་དང་ཐོབ་པར་བྱ་བ་དག་ཀྱང་གཉིས་སུ་མེད་པ་ཡིན་ལ། ཐོབ་པ་དང་ཐོབ་པར་བྱ་བ་གཉིས་སུ་མེད་པས་སྒོམ་པ་དང་བསྒོམ་པར་བྱ་བ་དག་ཀྱང་གཉིས་སུ་མེད་པ་སྟེ། གཉིས་སུ་མེད་པ་ལ་ནི་སྒྲུབ་པ་པོ་དང་། སྒྲུབ་པ་དང་། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དམིཏ་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་དམིགས་པར་མི་འགྱུར་བས་འདིས་གང་ཞིག་ལ་ནི་བསྒོམ་པར་བྱ་བའམ། སུ་ཞིག་སྤྱོད་པ་སྤྱད་པར་འགྱུར་ཞེས་རྣམ་པར་བརྟགས་ནས་[1]སློབ་པར་བྱེད་པ་དང་། ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་དག་ལ་ཁྱད་པར་མེད་དེ། ''མཐོང་བའི་ཆོས་ལ་མྱ་ངན་འདས། །བྱ་བ་བྱས་པའང་དེ་ཉིད་ཡིན།''།ཞེས་བཤད་པའི་ཕྱིར་རོ།།

འོན་ཀྱང་གནས་སྐབས་ཀྱི་ཁྱད་པར་[2]ཐོབ་པ་ན་ནི་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་ཀྱང་འཇིག་རྟེན་དུ་སྣང་སྟེ། གཞན་དུ་རྒྱུ་མེད་པའི་ཉེས་པ་དང་བཅས་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་ན་སློབ་བཞིན་པའི་གནས་སྐབས་སུ་ནི་སྒོམ་པ་པོ་དང་སྒོམ་པ་དང་བསྒོམ་པར་བྱ་བ་དང་། སྒྲུབ་པ་པོ་དང་། སྒྲུབ་པ་དང་། བསྒྲུབ་

1. བརྟགས་ན། གསེར།

2. ཁྱད་པར་མེད་པ། རྒྱ་དཔེ།

པར་བྱ་བའི་[1]སྤྱོད་པ་རྣམས་ཀྱང་ཡོད་དོ་ཞེས་པའམ། མེད་དོ་ཞེས་སོམ་ཉིར་མི་བྱ་སྟེ། འདིར་སྒྲུབ་པ་པོ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་རྟོགས་པའོ། །སྒྲུབ་པ་ནི་དོན་དམ་པའི་བདེན་པའོ། །བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ནི་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་སོ།། དེ་བས་ན་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུ་དག་གཉིས་སུ་མེད་པར་བྱ་བ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ནི་འདིར་སྒོམ་པ་ཉིད་དུ་བཤད་དོ།[2] །ཇི་སྐད་དུ་ཐམས་ཅད་གསང་བའི་རྒྱུད་ལས།

འབྲས་བུས་རྒྱུ་ནི་རྒྱས་བཏབ་ཅིང་། །
རྒྱུས་ཀྱང་འབྲས་བུ་[3]རྒྱས་བཏབ་པར། །
བསྒོམ་གྱི་གཞན་དུ་དངོས་གྲུབ་ནི། །
བསྐལ་པ་བྱེ་བར་འབྱུང་མི་འགྱུར། །

ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །སྤྱོད་པ་རྣམ་པར་དག་པ་བཤད་པ་ནི། གཉིས་སུ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་རྟོགས་པར་གྱུར་ནས་མཉམ་པར་བཞག་པ་དང་། མཉམ་པར་མ་བཞག་པའི་གནས་སྐབས་སུ་གཉིས་སུ་མེད་པར་འགྱུར་ལ། དེ་གཉིས་སུ་མེད་ན་[4]སུ་ཞིག་སྤྱོད་པ་རྣམས་སྤྱོད་དེ། ཇི་ལྟར་བྱེད་པ་པོ་མེད་པར་གྱུར་པས་བྱ་བ་རྣམས་ཀྱང་མེད་པར་འགྱུར་བ་ནི་འཇིག་རྟེན་ན་ངེས་པ་ཡིན་ནོ། །ཡང་བརྟུལ་

---

1. བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཁྱད་པར་གྱིས། གསེར།
2. བཤད་དེ། གསེར།
3. རྒྱུ་ཡང་འབྲས་བུས། བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་གསལ་ཡང་གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
4. ནས། གསེར།

ཞུགས་ཀྱི་སྤྱོད་པ་མེད་པར་ཐོག་མ་མེད་པའི་ཉོན་མོངས་པའི་བག་ཆགས་ཟད་པར་བྱ་བར་ནི་མི་ནུས་སོ། །ཞེས་ལུང་ལས་བཤད་པ་དང་འཇིག་རྟེན་དུ་གྲགས་སོ། །ཇི་སྐད་དུ་གསང་བ་འདུས་པའི་རྒྱུད་ལས། "རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་རྒྱལ་པོ་ཆེ། །ཡང་དང་ཡང་དུ་བསྒྲུབ་པར་བྱ།" །ཞེས་གསུངས་པ་དང་། ཇི་སྐད་དུ་གསང་བ་གྲུབ་པ་ལས་ཀྱང་།

རྐང་བརྒྱང་[1]བྱ་བ་སྤངས་ན་ནི། །
འཁོར་བའི་ཚོགས་ནི་དོར་ནས་སུ། །
རྟག་ཏུ་བརྩོན་དང་ལྡན་ཡིད་ཀྱིས། །
རྡོ་རྗེ་སེམས་མཆོག་བསྒྲུབ་པར་བྱ། །
འགྲོད་དང་གཉིད་དང་རྨུགས་ལ་སོགས། །
རབ་ཏུ་འབད་དེ་སྤང་བར་བྱ། །
གཞན་དུ་བསྐལ་པ་བྱེ་བར་ནི། །
བཀུར་ཡང་འགྲུབ་པར་མི་འགྱུར་རོ། །

ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་བས་ན་མཚན་མ་མེད་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྒོམས་པར་ཞུགས་པས་ཐོག་མ་མེད་པའི་ཉོན་མོངས་པའི་བག་ཆགས་ཀྱི་དྲི་མ་[2]སྤངས་ནས། ལྷུན་གྱིས་གྲུབ་པའི་འབྲས་བུ་ཐོབ་པར་འདོད་པས་སྤྱོད་པ་སྤྱད་ན་སྤྱོད་དོ་

---

1. རྐང་བརྒྱད། བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་གསལ་ཡང་གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།
2. བག་ཆགས་ཀྱིས་སློབས། གསེར། བག་ཆགས་ཀྱི་སློབས། སྡེ། ཅོ།

ཞེའམ་མི་སྤྱོད་དོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་སྤངས་ནས་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཆོས་བརྒྱད་ཐེལ་གྱིས་མནན་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ་བཤད་པའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་སྤྱོད་པ་ལ་སྦྱད་པར་བྱའོ། །

དེ་བས་ན་ཡང་དག་པར་གྱུར་པའི་སྤྱོད་པ་དེ་བླ་མའི་ཞལ་སྔ་ནས་ཀྱི་དྲིན་གྱིས་ཅི་ནུས་པར་རྣམ་པར་དབྱེ་བར་བྱའོ། །དེ་ལ་ཐོག་མ་ཁོ་ནར་བཅོམ་ལྡན་འདས་སྤྱོད་པ་མཛད་པའི་སྤྱོད་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་གནས་སྐབས་སུ་གླིང་ལ་སོགས་པ་ལ་གཟིགས་པར་མཛད་དེ་དགའ་ལྡན་གྱི་གནས་ནས་བབས་པར་[1]མཛད་ནས་རྒྱུད་ལ་སོགས་པའི་ཚུལ་རྣམ་པ་བཞིར་བསྟན་ཏེ། འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བའི་གཟུགས་སུ་མངོན་པར་སྤྲུལ་ནས། དམན་པ་ལ་མོས་པ་རྣམས་ལ་འཕགས་པའི་བདེན་པ་རྣམ་པ་བཞི་རྟོགས་པར་མཛད་ཅིང་འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བའི་སྤྱོད་པ་བསྟན་པ་དང་། ཡང་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་རྣམས་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཚོགས་བརྒྱད་ལ་སོགས་པ་ཆོས་བདག་མེད་པ་རྟོགས་པར་མཛད་ཅིང་ས་དང་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་སྤྱོད་པ་སྟོན་པར་མཛད་པ་དང་། ཡང་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བའི་གཟུགས་སུ་མངོན་པར་སྤྲུལ་ནས། ཟབ་མོ་ལ་ལྷག་པར་མོས་པ་རྣམས་ལ་འདོད་ཆགས་ཀྱིས་བདེན་པ་གཉིས་རྟོ་

1. བབ་པར། སྡེ། ཅོ།

པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་འདོད་ཆགས་ཀྱི་ཆོས་སྟོན་པར་[1]མཛད་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ན་བདེན་པ་གཉིས་ཡོངས་སུ་གཟུང་བའི་ལུས་དངོས་པོའི་དོན་མ་ལུས་པ་ཡོངས་སུ་གཅོད་པར་བྱེད་ཅིང་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་འབྲས་བུའི་མཆོག་ལ་མངོན་པར་དགའ་བ་རྣམས་ལ་ཉན་ཐོས་དང་མདོ་སྡེའི་ཚུལ་དང་ལྡན་པའི་སྤྱོད་པ་མ་གསུངས་ཏེ། གང་གི་ཕྱིར་ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པ་ནི་དམན་པ་ལ་ལྷག་པར་མོས་ཤིང་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ལ་སྤྱོད་པ། བདག་ལ་བསྒྲུབ་པ་དང་བྲལ་བ། སྦྱིན་པ་དང་ཚུལ་ཁྲིམས་ལ་སོགས་པའི་བྱ་བའི་ལམ་ལ་ཞུགས་པ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ལ་དད་པ་མེད་པ། ཐར་པ་དང་རྒྱང་རིང་བ་ཞེས་བྱ་བ་བདེ་བའི་ཐབས་མ་རྟོགས་པ་སྤྲངས་པའི་ཡོན་ཏན་བཅུ་གཉིས་ལ་སོགས་པ་སྤྱོད་པ་དཀའ་བ་[2] རྣམས་ཀྱིས་དུས་རིང་པོར་བྱང་ཆུབ་ཚོལ་བར་བྱེད་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་ཐོབ་པར་མི་བྱེད་དེ། རྫོགས་པའི་རིམ་པ་མ་རྟོགས་ཤིང་ཁོང་དུ་མ་ཆུད་པའི་ཕྱིར་རོ།། དེ་བས་ན་འདི་ལྟར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས།

གང་ཞིག་དགེ་སློང་དངོས་གནས་དང་། །
གང་ཡང་རྟོག་ལ་དགའ་བའི་མི། །

---

1. རྣམས་ལ་བདེན་པ་གཉིས་གཉིས་སུ་མེད་པ་རྟོགས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་འདོད་ཆགས་ཀྱི་ཆོས་དང་སྦྱོར་པ་སྟོན་པར། རྒྱ་དཔེ།
2. དཀའ་བ། སྣེ། ཅོ།

གང་ཞིག་ཤན་པོར་གནས་གྱུར་པ། །

དེ་ལ་དེ་ཉིད་མི་བསྟན་ཏོ། །

ཞེས་གསུངས་པ་དང་། རྣམ་པར་སྣང་མཛད་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་སྤྱོད་པའི་རྒྱུད་ལས་ཀྱང་།

ཐབས་དང་མི་ལྡན་ཡེ་ཤེས་དང་། །

བསླབ་པ་དག་ཀྱང་བཤད་པ་ནི། །

དཔའ་བོ་ཆེན་པོས་ཉན་ཐོས་རྣམས། །

དེ་ལ་གཟུང་བའི་ཕྱིར་བཤད་དོ། །

ཞེས་གསུངས་པ་དང་། རྩ་བའི་མདོ་ལས་ཀྱང་། ‘‘དགེ་བ་བཅུ་ཡི་ལས་ཀྱི་ལམ། །བྱེད་པ་ཡེ་ཤེས་སྤངས་པའོ།’’།ཞེས་གསུངས་པ་དང་། དེ་བས་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས།

དགེ་སློང་ཉན་ཐོས་ཐེག་པ་ལ་མི་བསླབ། །

བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་པ་དེ་ལ་བསླབ་བྱ་སྟེ། །

བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་པ་སངས་རྒྱས་ཡོན་ཏན་དང་། །

གླིང་གཞི་འདི་ལས་རང་འབྱུང་དག་ཏུ་འགྱུར། །ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་བས་ན་ཁྱད་པར་གྱི་རྒྱུ་ལས་ཁྱད་པར་གྱི་འབྲས་བུ་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་འདོད་པ་ལྷའི་ཡུལ་རྣམས་ལ་ཁྱད་པར་གྱི་ལོངས་སྤྱོད་ཀྱི་ངོ་བོར་གྱུར་པས་ཁྱད་པར་གྱི་འབྲས་བུ་ཐོབ་པར་

འགྱུར་བ་ཡིན་པར་ཤེས་པར་བྱའོ། །གཞན་དུ་སྤྱོད་པ་དཀའ་བ་རྣམས་ཀྱིས་སེམས་རྩེ་གཅིག་པ་འཐོབ་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། དབང་པོ་ལྷ་ཚར་བཅད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཇི་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དཔལ་མཆོག་དང་པོའི་རྒྱུད་ལས།

དཀའ་ཐུབ་སྡོམ་པ་མི་བཟད་པས། །
ལུས་སྐམ་འགྱུར་ཞིང་སྡུག་བསྔལ་ལ། །
སྡུག་བསྔལ་གྱིས་ནི་སེམས་གཡེངས་པས། །
གཡེངས་པས་དངོས་གྲུབ་གཞན་དུ་འགྱུར། །

ཞེས་གསུངས་པ་དང་། རྩ་བའི་རྒྱུད་ལས་ཀྱང་།

དཀའ་ཐུབ་དཀའ་སྤྱད་[1]མི་བཟད་པས། །
བསྙེན་ན་འགྲུབ་པར་མི་འགྱུར་གྱི། །
འདོད་པ་ཀུན་ལ་ལོངས་སྤྱོད་ཅིང་། །
བསྙེན་ན་མྱུར་དུ་འགྲུབ་པར་འགྱུར། །

ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། "འདོད་ཆགས་ཞེ་སྡང་གཏི་མུག་སྟེ། །འདི་དག་འཇིག་རྟེན་དུག་གསུམ་མོ། "།ཞེས་གསུངས་པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་རྣམས་ནི་ཉོན་མོངས་པ་རབ་ཏུ་སྐྱེ་བའི་རྒྱུར་གྱུར་པ་ཡིན་པས་ངན་སོང་གི་རྒྱུ་ཡིན་པར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་

---

1. དཀའ་ཐུབ་སྡོམ་པ། རྒྱ་དཔེ།

གསུངས་ན། ཇི་ལྟར་ན་ཡང་དེ་དག་བསྙེན་པར་གྱུར་པས་བླ་ན་མེད་པའི་གོ་འཕང་འགྲུབ་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བགྱི་བ་ཕན་ཚུན་འགལ་བར་མི་འགྱུར་ལགས་སམ། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། རྡོ་རྗེ་སློབ་མ་ཁྱོད་གང་འདོད་ཆགས་ལ་སྤྱོད་པ་རྣམས་ཀྱི་ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར[1]། ཡོངས་སུ་འདྲི་བར་བྱེད་པ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། །དེ་བས་ན་དོན་ཆེན་པོ་བསྟན་པར་བྱ་ཡིས་ཉོན་ཅིག ཉོན་མོངས[2]་པ་རྣམས་ནི་ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པ་དམིགས་པར་ལྷ་བ་རྣམས་ཀྱི་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་ཀྱི་རྒྱུན་དུ་འགྱུར་ཏེ། ཉོན་མོངས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡོངས་སུ་མ་ཤེས་པའི་ཕྱིར་རོ། །ངོ་བོ་ཉིད་ཡོངས་སུ་ཤེས་ན་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་རྒྱུར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་མདོ་སྡེ་དག་ལས་གསུངས་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ་དཔལ་མཆོག་དང་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས་ཀྱང་།

འདོད་ཆགས་ཞེ་སྡང་གཏི་མུག་གསུམ། །
འཛིན་པས་དུག་ཏུ་འགྱུར་བ་ཡིན། །
དུག་ཉིད་ཉེ་བར་ཞི་གྱུར་ན། །
དུག་ནི་དུག་མེད་བྱས་པ་ཡིན། །
བདུད་རྩི་རིམ་གྱིས་བརྟེན་ནས་ནི། །
བདུད་རྩི་ཉིད་དུ་འགྱུར་བའང་ཡིན། །

1. ཕྱིར་རོ། གསེར།

2. འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པའི་ཉོན་མོངས། རྒྱ་དཔེ

ཞེས་གསུངས་པ་དང་། དཀོན་མཆོག་བརྩེགས་པའི་མདོ་ལས་ཀྱང་།

''འོད་སྲུངས་འདི་ལྟ་སྟེ། དཔེར་ན་གྲོང་ཁྱེར་ཆེན་པོའི་ལུད་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་བུ་རམ་ཤིང་གི་ཞིང་དག་དང་། འབྲས་ཀྱི་ཞིང་དག་དང་།[1] རྒུན་འབྲུམ་གྱི་ཞིང་དག་ལ་ཕན་པར་འགྱུར་བ་ཡིན་ནོ། །འོད་སྲུངས་དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཉོན་མོངས་པའི་ལུད་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ལ་ཕན་པར་འགྱུར་བ་ཡིན་ནོ། །འོད་སྲུངས་འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན་སྔགས་དང་སྨན་གྱིས་ཡོངས་སུ་ཟིན་པའི་དུག་གིས་འཆི་བར་བྱེད་མི་ནུས་སོ། །འོད་སྲུངས་དེ་བཞིན་དུ། ཤེས་རབ་དང་ཐབས་མཁས་པས་ཡོངས་སུ་ཟིན་པའི་ཉོན་མོངས་པའི་དུག་གིས་ཀྱང་ལོག་པར་ལྟུང་བར་བྱེད་མི་ནུས་སོ།'' །ཞེས་གསུངས་པ་དང་། གཞན་ཡང་འདུལ་བ་དོན་ཡོད་པར་གྲུབ་པ་ཞེས་བྱ་བའི་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས་ཀྱང་།

གང་གིས་བླུན་པོ་འཆིང་འགྱུར་པ། །
དེ་ཡིས་མཁས་པ་ཡོངས་གྲོལ་ཞེས། །
བྱང་ཆུབ་རྣམ་པར་བསྒོམས་ནས་ནི། །
འདི་དག་ཐམས་ཅད་ཕྱིན་ཅི་ལོག །

1. 'འབྲས་ཀྱི་ཞིང་དག་དང་།' རྒྱ་དཔེར་མ་གསལ།

གང་གིས་སྨོངས་པ་འཆིང་འགྱུར་ཞིང་། །
ངུ་འབོད་མཐར་ནི་ངེས་འགྱུར་བ། །
དེ་ཉིད་ཀྱིས་ནི་གྲོལ་འགྱུར་ཞིང་[1]། །
ཤེས་རབ་སྟོབས་ཀྱིས་བདེ་བ་ཐོབ། །ཅེས་གསུངས་ཏེ།

རིགས་པ་འདིས་ནི་ཁྱད་པར་ཅན་བསྐྱལ་བར་འགྱུར་བ་དང་། ཁྱད་པར་ཅན་གྱིས་ཡོངས་སུ་བསྐྱལ་བར་གྱུར་པས་ཁྱད་པར་ཅན་གྱི་འབྲས་བུ་ཡིད་དུ་འོང་བ་སྐྱེད་པའི་རྒྱུར་གྱུར་པར་ཞུགས་པའི་བླ་ན་མེད་པའི་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་འབྲས་བུ་ཐོབ་པར་བྱ་བ་ལ་སླུབ་པ་གཞན་མེད་དེ། དེའི་དོན་དུ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་བཟའ་བ་དང་གནས་ལ་སོགས་པ་བདེ་བ་རྣམས་ཀྱིས་ཡོན་ཏན་གྱི་དབང་ཕྱུག་བརྒྱད་ལ་སོགས་པ་དང་ལྡན་པའི་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་མངོན་སུམ་དུ་བྱེད་པར་འགྱུར་རོ། །བདེ་མཆོག་ལས་ཀྱང་། ''དེས་ན་བདེ་བ་བདེ་ཉིད་ཀྱིས། །སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཉིད་ཐོབ་འགྱུར། ''།ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་ལ་འདོད་ཆགས་ལས་བྱུང་བའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྤྱོད་པ་ནི་རྣམ་པ་གསུམ་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ། སྤྲོས་པ་དང་བཅས་པ་དང་། སྤྲོས་པ་མེད་པ་དང་། ཤིན་ཏུ་སྤྲོས་པ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བའོ། །དེ་ལ་སྤྲོས་པ་དང་བཅས་པའི་སྤྱོད་པ་

1. ཅེང་། གསེར།

གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་དབུགས་དབྱུང་བ་དང་། རྡོ་རྗེ་འཆང་བའི་དབུགས་དབྱུང་བ་ཇི་སྐད་དུ་བསྟན་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཨ་ར་ལི་རྒྱས་པ་དེ་ནི་སྤྲོས་པ་དང་བཅས་པའོ། །དེ་ལ་སྤྲོས་པ་མེད་པ་ནི་གང་ཡིན་ཞེ་ན། རྟག་ཏུ་ཁྲབ་པ་ལས་དགོས་པའི་དབང་དུ་འགའ་ཞིག་ལ་རོལ་པ་དེ་ནི་སྤྲོས་པ་མེད་པའོ། །ཤིན་ཏུ་སྤྲོས་པ་མེད་པ་གང་ཡིན་ཞེ་ན། འདུ་འཛི་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྤངས་ནས་བསམ་གཏན་གྱི་ཟས་དང་། གནས་པ་འབའ་ཞིག་དང་། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་དང་། སྙོམས་པར་འཇུག་པ་ལས་གོམས་པ་དེ་ནི་ཤིན་ཏུ་སྤྲོས་པ་མེད་པ་སྟེ། དཔེར་ན་ཤིང་ཆིག་པར་གྱུར་ཀྱང་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །ཏཱ་ལའི་ལོ་མ་ཆིག་པར་གྱུར་ཀྱང་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །རས་བལ་གྱི་ལོ་མ་ཆིག་པར་གྱུར་ཀྱང་ཐལ་བར་འགྱུར་ཏེ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་སྤྱོད་པ་གསུམ་ཆར་[1]གྱིས་ཀྱང་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པའི་གོ་འཕང་མངོན་པར་འདོད་པ་ཉིད་སྐྱེ་བར་འགྱུར་རོ། །

ཡང་སྒྲུབ་པ་པོ་ལ་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྡུས་པ་ལ་སོགས་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྗེས་སུ་འབྲངས་ནས་ལག་པའི་ཕྱག་རྒྱ་དང་། གླུའི་མཆོད་པ་དང་། སྟང་སྟབས་ལ་སོགས་པའི་ཚུལ་དང་། གར་ལ་སོགས་པའི་སྦྱོར་བ་རྟག་ཏུ་བརྩོན་པའི་ཡིད་དང་། ཉིན་དང་མཚན་དུ་སྤྲོས་པ་དང་བཅས་པའི་མཆོད་པས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་

1. གསུམ་ཅར། གསེར།

པོའི་དངོས་གྲུབ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་དོ། །དེ་བཞིན་དུ་ལ་ལ་ནི་དཔལ་མཆོག་དང་པོ་ལ་སོགས་པ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལ་བརྟེན་ནས་སྐྱིལ་མོ་ཀྲུང་གི་འདུག་སྟངས་དང་། ཉམས་རྣམ་པ་དགུ་ལ་སོགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རོལ་མོ་སྤྲོས་པ་དང་བཅས་པའི་སྤྱོད་པས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་གོ་འཕང་ཐོབ་པར་བྱེད་དོ། །གསང་བ་འདུས་པའི་རྒྱུད་འདི་ལས་ནི་སྤྲོས་པ་མེད་པ་དང་ཤིན་ཏུ་སྤྲོས་པ་མེད་པའི་གནས་འབའ་ཞིག་སྟོན་ཏོ། །

ད་ནི་སྤྲོས་པ་དང་བཅས་པའི་སྤྱོད་པ་དཔལ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་དང་མཉམ་པར་སྦྱོར་བ་མཁའ་འགྲོ་མ་སྒྱུ་མ་བདེ་བའི་མཆོག་ཅེས་བྱ་བ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལ་འཇུག་པར་བྱ་སྟེ།

དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་བྱ་བ། །
རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་མཆོག་གྱུར་པ། །
སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་མཉམ་སྦྱོར་བ། །
མཁའ་འགྲོ་སྒྱུ་མ་བདེ་བའི་མཆོག །
གསང་བ་མཆོག་གི་དགྱེས་པ་ན། །
ཐམས་ཅད་བདག་ཉིད་རྟག་ཏུ་བཞུགས། །
དཔལ་ལྡན་སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱི་དངོས། །
རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་བདེ་འབྱུང་བ། །

དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ལྷ་རྫས་མཆོག །
རིན་ཆེན་རྒྱན་ལ་[1]སོགས་པས་སྤྲས། །
དྲིལ་བུ་རྒྱལ་མཚན་མཆོག་ལྡན་པའི། །
བླ་རེ་དམ་པ་བྲིས་པ་ན། །

རྡོ་རྗེ་གླུ་དང་མཆོད་ལ་སོགས། །
གླུ་དང་སིལ་སྙན་རྣམ་པར་འཕྲུལ། །
མེ་ཏོག་བདུག་པའི་སྦྱོར་བ་དང་། །
མར་མེ་དྲི་དང་སོགས་ལྡན་པར། །

སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་མཉམ་སྦྱོར་བ། །
མཁའ་འགྲོ་སྒྱུ་མ་བདེ་མཆོག་བསྒྲུབ། །
ཡང་ན་སྲིད་པ་གསུམ་དག་གམ། །
ཡང་ན་བདག་གི་གནས་དག་གམ།[2] །
སྐྱེད་མོས་ཚལ་ལ་སོགས་པར་བསྒྲུབ། །

དེར་ནི་དང་པོར་གདན་བཞམ་སྟེ། །
འཛམ་གླིང་རིག་ན་བདེ་འགྱུར་བ། །

1. རིན་ཆེན་སྒྱུ་མ། རྒྱ་དཔེ།
2. ཡང་ན་སྲིད་པ·······དག་གམ། ཞེས་བོད་དཔེར་གསལ་བའི་ཚིག་རྐང་གཉིས་པོ་རྒྱ་དཔེར་ཚིག་རྐང་གཅིག་ཏུ་གསལ།

སྣ་ཚོགས་པདྨོ་[1]རས་ཀྱིས་གཡོགས། །
དེར་ནི་ཐམས་ཅད་དག་པའི་གདན། །
སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་མཉམ་སྦྱོར་བས། །
སྦྱོར་བའི་དབང་ཕྱུག་རྣམ་འཕྲུལ་བས། །
རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་དཔལ་གྱི་ལྷ། །
དེ་ནི་རྣམ་པར་འཕྲུལ་པར་མཛད། །
ཁམས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཐམས་ཅད་དང་། །
དེ་བཞིན་སྲོག་དང་རྩོལ་ལས་[2]བྱུང་། །
རང་གི་ལྷ་ལ་མངོན་ཕྱོགས་པའི། །
གྲུབ་པའི་ཕྱག་རྒྱས་རབ་ཏུ་བསྐོར། །
ལུགས་མཐའ་ཡང་ན་འབྱུང་དང་ནི། །
མངོན་པར་འདུས་བྱས་ལེགས་བྲིས་པ། །
རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་གཟུགས་བརྟན་ནི། །
མཚན་མའི་ཕྱག་རྒྱ་རབ་ཏུ་བརྟག །
སྟན་དེ་དག་ནི་ཐམས་ཅད་ལ། །
ཇི་ལྟར་གནས་པ་བཞིན་དུ་དགོད། །

1. པདྨ། གསེར།
2. རྩ་ལས། རྒྱ་དཔེ།

གྲུ་བཞི་པ་ལ་སྒོ་བཞི་པ། །
རྟ་བབས་བཞི་ཡིས་མཛེས་པར་བྱས། །
རྡོ་རྗེ་རིན་ཆེན་པདྨ་སོགས། །
སྒོ་སྲུང་དང་ནི་ལྡན་པར་བྱ། །
རང་གི་ལྷ་དང་ལྡན་པ་ཡི། །
བུད་མེད་དག་ནི་ལེགས་བསླབས་པ། །
སྐལ་བཟང་རང་བཞིན་ཕྱག་རྒྱ་མཚན། །
ཚོགས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་བརྟག་པར་བྱ། །

ཞེས་གསུངས་པའོ། །མདོའི་[1]ཚིག་དེ་རྣམས་ཀྱི་དོན་རྒྱ་ཆེར་དགྲོལ་བར་བྱ་སྟེ། དེ་ལ་དང་པོ་ཁོ་ནས་[2]སྐྱིད་མོས་ཚལ་ལ་སོགས་པ་ཡིད་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པ་རྣམ་པར་དབེན་པའི་གནས་སུ་རྩུལ་དང་མི་མཐུན་པ་[3]ལ་སོགས་པ་སྐལ་པ་ངན་པ་རྣམས་དང་བྲལ་བའི་གནས་དག་ཏུ་སོ་ཕག་ལས་བྱས་པའི་ཁང་པ་སུམ་བརྩེགས་ལ་རྒྱན་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་དང་ལྡན་པར་བྱེད་དུ་གཞུག་གོ །དེ་ལ་ཁང་པ་དང་པོར་ནི་ཚང་མང་གཞག་པར་བྱའོ། །ཁང་པ་གཉིས་པར་ནི་ཡི་

1. དེ་ལ་མདོའི། གསེར།
2. ཁོ་ནར། གསེར།
3. རྣམ་པར་དབེན་པའི་གནས་སུ་ཉན་ཐོས། རྒྱ་དཔེ།

ཕྱང་ལ་སོགས་པ་གླུ་གར་དང་རོལ་མོའི་མཆོད་པའི་ཡོ་བྱད་རྣམས་གཞག་པར་བྱའོ། །ཁང་པ་གསུམ་པར་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་དཔལ་སྣ་ཚོགས་སྐལ་བ་བཟང་པོའི་མཆོག་གནས་པར་བྱའོ། །

ཡང་ན་སའི་ཁང་པར་རབ་ཏུ་བརྟན་[1]པ་ལ་སོགས་པ་དང་ཡང་དག་པར་ལྡན་པ་རྒྱན་རྣམ་པ་[2]སྣ་ཚོགས་དང་། རྡོ་རྗེའི་རང་བཞིན་གྱིས་སའི་ཆ་ལ་ཤེལ་དང་། བཻཌཱུརྻ་དང་། ཨིནྡྲནཱིལ་དང་། མརྒད་དང་། པདྨརཱགའི་རང་བཞིན་ཅན་རིའི་རྒྱལ་པོ་རི་རབ་ལ་རྡོ་རྗེ་རྩེ་མོ་ཅན་གྱི་གཞལ་ཡས་ཁང་དུ་རྣམ་པར་བསམས་ཏེ།

གྲུ་བཞི་པ་ལ་སྒོ་བཞི་པ། །
རྟ་བབས་བཞིས་ནི་མཛེས་པར་བྱས། །
ཐིག་བཞི་དང་ནི་ཡང་དག་ལྡན། །
ཀ་བ་བརྒྱད་ཀྱིས་མཛེས་བྱས་པ། །

དྲ་བ་དྲ་བ་ཕྱེད་པས་སྤྲས། །
དར་དང་མེ་ཏོག་ཕྲེང་བས་བརྒྱན། །
དྲིལ་བུ་བ་དན་ལེགས་པར་མཛེས། །
རྔ་ཡབ་ལ་སོགས་རྣམས་ཀྱིས་བརྒྱན། །

---

1. རབ་བརྟན། གསེར།
2. རྣམས་པ། གསེར།

སྔོ་ཡི་མཚམས་ནི་ཐམས་ཅད་དང་། །
མཚམས་སུ་བླ་ཕྱེད་རྡོ་རྗེར་ལྡན། །
སྐས་དང་ཧ་བབས་སྔོ་ལ་སོགས། །
སྣ་ཚོགས་པདྨས་མཛེས་བྱས་པ། །

ཞེས་བྱ་བ་བསྟན་ཏེ། དེར་སློབ་པོ་[1]བླ་མ་ལས་གནང་བ་ཐོབ་པས་རྫོགས་པ་དང་མ་རྫོགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་དབང་ཕྱུག་རྣམས་ལེགས་པར་མཆོད་ལ་[2] ལྷན་ཅིག་སྤྱོད་པ་དང་། རྗེས་སུ་སྤྱོད་པ་རྣམས་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་ཐ་མལ་པའི་ང་རྒྱལ་བསལ་བ་རྣམས་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་འཛེམ་པ་མེད་པར་གྱུར་པའི་སེམས་ཀྱིས་སེམས་སེང་གེ་འདྲ་བས་རིམ་པ་འདིས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་སྒྲུབ་པ་ལ་འཇུག་པར་བྱའོ། །

དེ་ལ་རིམ་པ་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ལ་དམིགས་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་རིམ་གྱིས་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་སྐུར་བདག་ཉིད་བསྐྱེད་ལ་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོའི་ཚུལ་གྱིས་འདུག་ནས་གཟུགས་ཀྱི་ཡུལ་ལ་སྤྱོད་པར་བྱེད་དོ། །

---

1. སློབ་པ་པོ། གསེར།
2. མཆོད་པ། སྣེ། ཅོ།

དེ་ནས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་བུད་མེད་ཀྱི་[1]སྒྱུ་མ་ལྟ་བུར་རབ་ཏུ་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ལ་ལ་ནི་བདེ་མཆོག[2]སྒྱུ་མ་ལྟ་བུས་འདོད་ཆགས་ཀྱི་རྒྱུད་ཀྱི་[3]ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་སྤྱན་སྔར་འདུག་ལ། ལ་ལ་ནི་ཨེ་མའོ་བདེ་བ་ལྟ་བུས་རབ་ཏུ་དགའ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་གཡས་ཕྱོགས་སུ་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་སྒྲོན་མ་ལྟ་བུས་དྲག་པོའི་རྒྱུད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ནུབ་ཕྱོགས་སུ་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་ཤ་ཤི[4]ལྟ་བུས་སྲོག་གི་རྒྱུད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་བྱང་ཕྱོགས་སུ་གནས་ཏེ་འདི་དག་ནི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེད་པའོ། །ལ་ལ་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་ལྟ་བུས་གཏི་མུག་རྣམ་པར་སྦྱོང་བའི་[5]ཕྱིར་ཤར་ལྷོའི་མཚམས་སུ་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ལྟ་བུས་ཁམས་གསུམ་ཏལ་ཅེང་གཏོན་པའི་གནས་རྣམ་པར་སྦྱོང་བས་[6]ལྷོ་ནུབ་མཚམས་སུ་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་ཁམས་གསུམ་རྣམ་པར་རྒྱལ་མ་ལྟ་བུས་ཞེ་སྡང་རྣམ་པར་བསལ་བའི་ཕྱིར་ནུབ་བྱང་མཚམས་སུ་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་འདོད་པའི་ལྕུག་མ་ལྟ་བུས

1. ‘ཀྱི་’ གསེར་བྲིས་སུ་མེད།

2. ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ། རྒྱ་དཔེ།

3. ‘རྒྱུད་ཀྱི་’ གསེར་བྲིས་སུ་མེད།

4. ལ་ལ་ནི་སླེབ་མ། རྒྱ་དཔེ།

5-6. རྣམ་པར་སྦྱོད་པའི། བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་གསལ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།

འདོད་ཆགས་ཀྱི་སྨན་པ་བསལ་བའི་ཕྱིར་བྱང་ཤར་གྱི་མཚམས་སུ་གནས་སོ།། ལ་ལ་ནི་གླིང་བུ་མ་ལྷ་བུས་ཕྱི་རོལ་གྱི་མེའི་ཕྱོགས་སུ་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་རྒྱུད་མངས་[1]ལྷ་བུས་སྒྲིག་ཅིང་པི་ཝང་ལེན་པས་ཁམས་གསུམ་དབང་དུ་བྱེད་ཅིང་ཕྱི་རོལ་གྱི་བདེན་བྲལ་གྱི་ཕྱོགས་སུ་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་རྒྱུད་གཅིག་པ་ལྷ་བུས་ཛ་བོ་ཆེ་ཛུང་ཞིང་དག་དང་རིམས་རྣམ་པར་སེལ་བས་ཕྱི་རོལ་གྱི་རླུང་གི་ཕྱོགས་སུ་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་རྒྱུད་སྟུག་པོ་ལྷ་བུས་ཛ་ཛ་ཛུང་ཞིང་ཕྱི་རོལ་གྱི་དབང་ལྡན་གྱི་ཕྱོགས་སུ་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་རྡོ་རྗེ་མེ་ཏོག་མ་ལྷ་བུས་ལག་ན་མེ་ཏོག་ཐོགས་ཏེ་ཕྱི་རོལ་གྱི་ཤར་ལྷོའི་མཚམས་སུ་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་རྡོ་རྗེ་བདུག་པ་མ་ལྷ་བུས་སྤོས་ཁང་ཐོགས་ནས་ལྷོ་ནུབ་ཀྱི་མཚམས་སུ་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་རྡོ་རྗེ་མར་མེ་མ་ལྷ་བུས་མར་མེ་ཆེན་པོ་ཐོགས་ནས་ནུབ་བྱང་གི་མཚམས་སུ་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་རྡོ་རྗེ་བྱུག་པ་མ་ལྷ་བུས་དྲིས་ཡོངས་སུ་གང་བའི་དུང་ཕོར་ཐོགས་ནས་ཕྱི་རོལ་གྱི་སྨན་བུའི་བྱང་ཤར་མཚམས་སུ་གནས་སོ།། ལ་ལ་ནི་རྔ་གཏོང་ལྷ་བུས་རྔ་མཆོག་གི་ཁ་ནས་འབྱུང་བའི་དབྱུགས་ཀྱིས་སྲིད་པ་གསུམ་སྐེམས་ཤིང་ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་སྒོ་སྲུང་བྱེད་པར་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་རྡོ་རྗེ་ཕག་གདོང་ལྷ་བུས་ཁམས་གསུམ་ཐམས་ཅད་སྡུད་ཅིང་ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་སྒོ་སྲུང་བྱེད་པར་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་རྡོ་རྗེ་སྣང་བའི་གཟུགས་ཀྱི་ཁམས་གསུམ་ལ་ལྷ་

1. ལ་ལ་ནི་གར། རྒྱ་དཔེ།

ཞིང་ནུབ་ཕྱོགས་ཀྱི་སྒོ་སྲུང་བྱེད་པར་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་ཐལ་བ་རབ་ཏུ་འཇིཏ་[1]པའི་རོ་ལངས་མ་[2]ལྟ་བུས་ས་འོག་དང་ས་སྟེང་དུ་མཐོ་རིས་སུ་དབུགས་འབྱིན་ཅིང་ཐལ་བར་གྱུར་པ་ཡང་འཚོ་བར་བྱེད་དེ་བྱང་ཕྱོགས་ཀྱི་སྒོ་སྲུང་བྱེད་པས་གནས་སོ། །དེ་ལ་བཅོམ་ལྡན་འདས་བདེ་བ་ཆེན་པོ་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བ་ནི་སྔོན་བྱུང་བའི་ཚུལ་གྱི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་དགོངས་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བས་རང་གི་སྐུའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཚིམ་པར་བྱའོ་ཞེས་ཁྱད་པར་གྱི་ང་རྒྱལ་བསྐྱེད་ལ། །དང་པོ་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་ཡུལ་རྣམ་པ་གསུམ་ཉམས་སུ་མྱོང་ནས་དེའི་རྗེས་སུ་སྤྱོད་བ་ལ་སོགས་པ་ཚོ་ག་རྣམ་པ་གསུམ་གྱིས་[3]ཟས་ཐམས་ཅད་མངོན་པར་སྦྱངས་ལ་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པའི་ནང་གི་ཐབ་ཁུང་རྗེས་སུ་དྲན་ཏེ། ཏིང་ངེ་འཛིན་སེམས་དཔའི་ཞལ་དུ་རྩེ་གསུམ་པའི་མེའི་ནང་དུ་སྦྱིན་སྲེག་[4]དབུལ་ལོ་ཞེས་བྱ་བའི་ང་རྒྱལ་བསྐྱེད་ནས་ཟས་ལ་སྤྱད་པར་བྱ་སྟེ། དེའི་འོག་ཏུ་བདེ་བར་ཡོངས་སུ་ཞུ་ནས་རསཡནར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་སྒྲུབ་པ་པོས་བཟའ་བ་དང་། བཅའ་བ་དང་། བཏུང་བ་རྣམས་ཀྱིས་སྐུ་རྡོ་རྗེ་ཡང་དག་པར་ཚིམ་པར་བྱས་ལ།

---

1. རབ་ཏུ་འཇིག གསེར།
2. རོ་ལངས་ནས་མ། སྣེ། གསེར།
3. རྣམ་པ་གཉིས་ཀྱིས། རྒྱ་དཔེ།
4. སྦྱིན་སྲིང་། གསེར།

མཐར་རིམ་པ་འདྲིས་ལྟ་པ་རེག་བྱའི་ཡུལ་ལ་སྤྱོད་པར་བྱ་སྟེ། ལྷན་ཅིག་སྤྱོད་པ་ལ་སོགས་པ་ལྷ་མོའི་ཚོགས་རྗེས་སུ་མཉེས་པར་བྱེད་པ་ལ་སོགས་པ་མཁས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་ཇི་ལྟར་མངོན་པར་འདོད་པའི་ཕྱག་རྒྱ་བླངས་ནས་ཉེ་བར་བཞག་སྟེ། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་རྫོགས་པར་བྱའོ་ཞེས་ལྷག་པར་མོས་པ་བརྟན་པ་བསྐྱེད་ནས། ཨུ་ཌི་ཡཱ་ན་དང་། ཛ་ལནྡྷ་ར་དང་། ཀོང་ཀ་ན་དང་། ནག(ནཁ)པུཏྟ་ར་དང་། སིནྡྷུ་(སིཧྣུ)དང་། ཀོ་ཀི་ལ་དང་། བྱང་བའི་སྒྲ་དང་། ནཱ་ལེ་ཡང་དག་པར་བསྐྱལ་བ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ནས། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐྱིལ་མོ་ཀྲུང་དང་། རྡོ་རྗེའི་སྐྱིལ་མོ་ཀྲུང་དང་། རིན་པོ་ཆེའི་སྐྱིལ་མོ་ཀྲུང་དང་། པདྨའི་སྐྱིལ་མོ་ཀྲུང་དང་། ལས་ཀྱི་སྐྱིལ་མོ་ཀྲུང་ལ་སོགས་པ་བཅས་ནས་ལས་ལ་གནས་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ནས་རྡོ་རྗེ་དང་པདྨ་ཡང་དག་པར་འདུས་པ་ལས་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་སྙོམས་པར་ཞུགས་པས་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྲི་བོ་ནས་བརྩམས་ཏེ། ནཱ་ཌཱི་[1]བདུན་ཅུ་རྩ་གཉིས་ལས་དྲི་མ་མེད་པའི་ཆུ་རྒྱུན་ལྟ་བུས་ཨུ་ཤི་ཀཱ་ཤི་འཛུ་བར་གྱུར་པས་འདོད་ཆགས་དང་། འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བ་དང་། ཆགས་པ་བར་མའི་རིམ་གྱིས་འབབ་བོ། །དེ་ནས་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་སོ་སོ་རང་གིས་རིག་པ་རྫོགས་པར་བྱེད་དོ། །

1. ནཱ་ཌི། བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་གསལ་ཡང་གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་པ་ཡིན།

དེ་ལྟར་དཔལ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སློབ་པའི་མཆོག་ཐོབ་པའི་རྣལ་འབྱོར་པས་ཚོགས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་དེ་ཉིད་དུ་རྗེས་སུ་གཟུང་བ་དང་། ཚར་གཅོད་པས་སེམས་ཅན་རྣམས་སྨིན་པར་བྱེད་དོ། །གདུལ་བྱ་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་བ་ཅན་ལ་ལ་དག་ལ་བཅོམ་ལྡན་འདས་དཔལ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་དེ་ཉིད་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱི་གཟུགས་ཀྱིས་[1]ཞི་བ་ཆེན་པོའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དང་། ''སྟོང་པ་མ་ཡིན་མི་སྟོང་མིན། ''།ཞེས་བྱ་བ་[2]མི་གནས་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་མཚན་ཉིད་ཅན་རབ་ཏུ་བསྟན་ནས་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་བ་ཅན་ཚར་གཅོད་པར་མཛད་དོ། །

དེ་བཞིན་དུ་ཤིན་ཏུ་གདུག་ཅིང་གདུལ་བར་དཀའ་བ་རྣམས་ལ་དཔལ་རྡོ་རྗེ་ཧེ་རུ་ཀའི་ཁྲོ་བའི་རྒྱལ་པོའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་ལྟ་བ་ངན་པ་ཚར་བཅད་ནས་ཕན་འདོགས་པར་མཛད་དོ། །ལོག་པར་ལྟ་བ་རྣམས་ནི་པདྨ་གར་གྱི་དབང་ཕྱུག་གི་གཟུགས་ཀྱིས་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་བསྟན་ནས་དབང་དུ་མཛད་དོ། །ཤིན་ཏུ་དམན་ཞིང་སེར་སྣ་ཅན་བཀྲམ་པ་རྣམས་ལ་དཔལ་རྡོ་རྗེ་ཉི་མའི་གཟུགས་དང་། རྒྱས་པ་ཆེན་པོའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་[3]ཉོན་མོངས་པའི་ལྟ་བ་ཚར་གཅོད་པར་

1. ཀྱི། གསེར།

2. ཞེས་བྱ་བའི། གསེར།

3. གྱི། གསེར།

མཛད་དོ། །བརྩོན་འགྲུས་ཤིན་ཏུ་དམན་པ་རྣམས་ལ་ནི་ཛ་མཆོག་གི་གཟུགས་དང་། དྲག་པོའི་སྦྱོར་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་ཕ་རོལ་གནོན་པས་བརྩོན་འགྲུས་ཞན་པ་རྣམས་ཚར་གཅོད་པར་མཛད་དོ། །

དེ་ལ་བཅོམ་ལྡན་འདས་དཔལ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ནི་ཆོས་འབྱུང་བའི་ཨ་རལི་ཆེན་པོའི་རོལ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་རབ་ཏུ་བཏན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཐུགས་གཞན་དུ་མི་འགྱུར་བ་དང་། ཕན་རྒྱུན་རབ་ཏུ་དགའ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རིམ་པ་འདིས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རོལ་མོ་མཛད་དེ། ཕྱག་རྒྱ་དང་། ཕྱག་རྒྱའི་ལན་དང་། ཕྱག་དང་། ཕྱག་གི་ལན་དང་། མཆོད་པ་དང་། མཆོད་པའི་ལན་དང་། གར་དང་། གར་གྱི་ལན་དང་། གླུ་དང་། གླུའི་[1]ལན་དང་། ལུས་ཀྱི་བརྡ་དང་། ངག་གི་བརྡ་ཐ་སྙད་རྣམས་སུ་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། །

དེ་ལ་ངག་གི་བརྡ་བསྟན་པར་བྱ་སྟེ། ཨོཾ་ཨ་དེ་ནོ་ཞེས་པ་ནི་བརྡའི་ཕྱག་འཚལ་ལོ་ཞེས་སྟོན་པ་ཡིན་ནོ། །ཨོཾ་པྲ་ཏི་ཀ་ཞེས་པ་ནི་སླར་ཕྱག་ལན་ནོ། །ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སློབ་དཔོན་ལ་ཕྱག་བྱ་བའོ། །ཛཧཱ་ནི་ཞུགས་ཤིག་པའོ། །ཧཱུྃ་ནི་ལེགས་པར་འོངས་སམ་ཞེས་པའོ། །ཧཱ་ནི་འདུག་ཅིག་[2]ཞེས་པའོ། །ཕཾ་ནི་བྲི་

1. གླུའི། ཅོ།

2. འདུག་ཤིག ཅོ། སྣེ།

ཞིག་[1]པའོ། །ཁ་ནི་རབ་ཏུ་ཟླ་ཞིག་[2]པའོ། །ཧྲཱུཾ་ཧྲཱུཾ་ནི་ཤའོ། །ཤྲཱུཾ་ཤྲཱུཾ་ནི་ཁྲག་གོ། ཏྲཱིཾ་ཏྲཱིཾ་ནི་ཤ་ཟླ་ཤིག་པའོ། །ཛཾ་ཕཾ་ནི་རྡོ་རྗེའི་ཆུའོ། །སོ་མ་ནི་བདུད་རྩིའི་ཆུའོ།། ཨིདཡ་ནི་ཆང་ངོ་། །ཤཾ་པ་རི་ནི་བཏུང་བའོ། །སཾ་བ་རི་ནི་ཆུའོ། སུ་བྲི་ཡཾ་ནི་མེ་ཏོག་གོ །སནྟ་ཆཡཾ་[3]ནི་འབྲས་བུའོ། །ཛ་ལ་ཀཾ་ནི་གོས་སོ། །སྐཾ་ནི་ཁྲིམ་མོ། །སྐཾ་ནམས་ནི་རང་གི་ཁྲིམ་མོ། །ཀ་མདཾ་[4]ནི་ལྷའི་ཁང་པའོ། །སྐྲ་པན་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་རོ། །ཧོ་དན་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་སློབ་དཔོན་ནོ། །ཨུ་པཱ་ཡ་ནི་སློབ་མའོ།། མི་ཏྲ་ཏ་རཾ་ནི་སྲུན་ནོ། །རཏྣིན་ནི་ལྷ་མོའོ། །ཀོ་བི་ཏ་ནི་རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མའོ།། ཏམ་རི་ནི་མཁའ་འགྲོ་མའོ། །པི་ཤླ་བ་ནི་མའོ། །སུ་སྨུ་ཁ་[5]ནི་ཕའོ། །ཀ་ཡུ་ཀྲུ་[6]ནི་བུའོ། །བྲཱི་བྲཱི་ནི་བུ་མོའོ། །བཏུལ་ནི་གཟུགས་བཟང་མའོ། །ཡོ་ཊ་ཊ་ནི་འགྲོ་བ་དང་འོང་བའོ། །བཏ་རི་ནི་ཟླ་ཤིག་པའོ། །ཀྣ་ཏུད་ནི་ཛས་ཕྱིན་ཅིག་པའོ།། ཤེ་ཤེ་ནི་སོང་ཤིག་པའོ། །བྲེ་བྲེ་ནི་ཤོག་ཤིག་པའོ། །ཧྲུཾ་ནི་མེད་པའོ། །པི་ཏུ་མོ་ནི་ཁྲིས་པའོ། །ཚོར་ནི་གསད་པའོ། །ཛོ་བ་ནི་བསྲུང་བའོ། །ཧྲི་ར་ནི་ཆགས་པ་

---

1. ཁ་ནི་ཟླ་ཅིག གསེར། ཕཾ་ནི་ཟླ་ཤིག སྣེ། ཅོ།
2. ཟླ་ཤིག ཅོ། སྣེ།
3. སནྟཚཡམ། གསེར།
4. ཀདམདམ། གསེར།
5. སུསྨུཁདོ། ཅོ།
6. གཡོཀྲུ། གསེར།

དང་བྲལ་བའོ། །ཧྲི་ནི་ཆགས་པའོ། །ཧྲབ་ནི་ཛྷས་སོ། །རིམ་པ་བཞིན་དུ་མཆོད་པ་ནི་སུར་ཏསྭཾ་ཞེས་བརྗོད་པར་བྱའོ། །རང་གི་ལྷ་རྗེས་སུ་དྲན་པ་ལ་སུར་ཏོཧཾ་ཞེས་བརྗོད་པར་བྱའོ། །ཨནུ་ཏྟ་རཱ་གཱ་ཡཱུ་མི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལན་ཏེ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་སྒྲུབ་པ་ལའོ། །དཔལ་རྡོ་རྗེ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱི་སྒྲུབ་པ་ལ་ནི་ཨནུ་བོད་ཡཱུ་མི་ཞེས་བྱ་བ་ལན་ཡིན་ནོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རྡོ་རྗེ་སྒྲུབ་པ་ནི་ཨནུ་མོད་ཡཱུ་མི་ཞེས་བྱ་བ་ལན་ཡིན་ནོ། །དཔལ་པདྨ་གར་གྱི་དབང་ཕྱུག་གི་སྒྲུབ་པ་ལ་ནི་ཡང་ཨནུ་རཱ་གཱ་ཡཱུ་མི་ཞེས་བྱ་བ་ལན་ཡིན་ནོ།[1] །ཏ་མཆོག་གི་སྒྲུབ་པ་ལ་ནི་ཨནུ་བདྡྷ་ཡཱུ་མི་ཞེས་བྱ་བ་ལན་ཡིན་ནོ། །ལྷ་མོ་གང་ཡིན་པ་རྣམས་ཀྱི་མཆོད་པའི་ལན་ཡིན་ཏེ་སམ་ཡ་སྟྭཾ་ཞེས་བྱ་བའི་ཚིག་ལྷས་སོ། །རང་གི་ལྷ་རྗེས་སུ་དྲན་པར་བྱ་བ་ལ་ནི་སམ་ཡོ་ཧཾ་ཞེས་བྱ་བའི་ཚིག་གིས་ནི་དཔལ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་དཀྱིལ་འཁོར་ཏེ་ཚོགས་ཀྱི་མཆོད་པའོ། །ངག་གི་བདེའི་ལེའུའི་རིམ་པའོ། །

ད་ནི་ལུས་ཀྱི་བདེ་བསྟན་པར་བྱ་སྟེ། སྤྱི་བོར་ཉག་པ་ནི་ཕྱག་འཚལ་བའོ།། དཔྲལ་བར་རེག་པ་ནི་ཕྱག་གི་ལན་ནོ། །གཡས་པའི་སྨིན་མ་བསྐྱོད་པ་ནི་སྐུའི་དངོས་གྲུབ་བོ། །གཡོན་པས་ནི་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའོ། །མིག་གཡོན་པ་ལ་རེག་པ་ནི་བུད་མེད་བཟང་མོ་ཡིན་ཞེས་པའོ། །གཡས་པས་ནི་སྐྱེས་པ་བཟང་པོའོ། །རྣ་བ་གཡོན་པ་ལ་རེག་པ་ནི་ལེགས་པར་འོངས་པའོ། །གཡས་པས་ནི་ལེགས་

[1] 'རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་སྒྲུབ་པ་ནི་ཨནུ་མོད་ཡཱུ་མི་ཞེས་བྱ་བ་ལན་ཡིན་ནོ།' རྒྱ་དཔེར་ལྷག་པོར་སྣང་།

པར་སྨྲས་པའོ། །སྣ་ཁུང་གཡས་པ་ལ་རེག་པ་ནི་སྲོས་སོ། །གཡོན་པ་ལ་ནི་དྲི་སློང་[1]བའོ། །ལྟེ་གཡས་སུ་སྨྲུལ་བ་ནི་ཤའོ། །གཡོན་དུ་ནི་ཆང་སློང་བའོ། ། མཆན་ཁུང་གཡོན་པར་རེག་པ་ནི་ཟས་སོ། །གཡས་པར་རེག་པ་ནི་ཚོད་མ་སློང་བའོ། །ལུས་ཀྱི་བརྡའི་ལེའུའི་རིམ་པའོ། །

དེ་ལྟར་འཇིག་རྟེན་པའི་བསམ་གཏན་རྣམ་པར་བསལ་ཞིང་ཡིད་ལ་རེ་བ་རྣམས་སྤངས་ནས་རྟག་ཏུ་དགའ་བའི་ཡིད་ཅན་གྱི་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་དང་ལྷན་ཅིག་དགའ་བཞིན་པས་ནི་ཇི་ལྟར་རྒྱལ་པོ་ཨིནྡྲབྷཱུཏི་དང་འདྲ་བར་ཕུང་པོའི་ཁོག་པ་བརྗེས་ཏེ། རྡོ་རྗེའི་ལུས་སུ་གྱུར་ནས་བཙུན་མོའི་ཚོགས་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་མི་སྣང་བར་གྱུར་ཏེ། ཡོན་ཏན་བརྒྱད་དང་ལྡན་པས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ནས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དུ་འགྲོ་སྟེ་ཇི་སྐད་དུ་རྩ་བའི་མདོ་ལས།

ལྷ་མོ་ཀུན་གྱི་ཡོངས་སྤྱོད་ལ། །
ཅི་བདེ་བར་ནི་བརྟེན་བྱ་བ། །
བདག་ནི་ཆེ་བའི་ལྷར་སྦྱོར་བས། །
བདག་ལ་བདག་གིས་རབ་ཏུ་མཆོད། །
རྣལ་འབྱོར་ཐམས་ཅད་བདེ་བ་ཡི། །
རྗེས་སུ་སྦྱོར་བས་མཆོད་བྱེད་ཅིང་། །

1. སྡོང་། ཅོ།

ཧག་ཏུ་སྦྱོང་བར་བྱེད་པ་ན། །
ཤིན་ཏུ་སྦྱོར་བས་རབ་འགྲུབ་འགྱུར[1]། །

སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་བདག་ཉིད་ཀྱི། །
ར་ས་ཡ་ནའི་བདེ་བ་དེས། །
རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་[2]དཔལ་ཆེ་དང་། །
ལང་ཚོ་ནད་མེད་བདེ་མཆོག་འགྲུབ། །

སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱི་སྐུ་ཆེན་དང་། །
སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱི་གསུང་སྙན་དང་། །
སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱི་ཐུགས་ཆེན་པོ། །
སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱི་མཆོད་པ་ཆེ། །

སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱི་རྒྱལ་ཆེན་པོ། །
རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་ཀུན་གྱི་བདག །
འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག་ཀུན་གྱི་གཙོ། །
རིན་ཆེན་དབང་ཕྱུག་ཀུན་གྱི་བདག །

དེ་དག་དང་ནི་དགའ་སྤྱོད་ན། །
འདོད་པ་བཞིན་དུ་འགྲོ་འོང་ཞིང་། །

---

1. རབ་ཏུ་འགྱུར། གསེར།
2. དཔའ། གསེར།

ལྷ་མོ་ཐམས་ཅད་གྲུབ་ཆེན་པོ། །
འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བ་རབ་ཏུ་འགྲུབ། །

ཅེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་འབྱོར་བ་ཆུང་བ་རྣམས་ཀྱིས་བཤད་མ་ཐག་པའི་རིམ་པས་རོལ་མོའི་སྤྲོས་པ་རྒྱ་ཆེ་བ་དང་། ཧག་ཏུ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་མི་ནུས་པ་དེས་ནི་སྤྲོས་པ་མེད་པ་དང་ཤིན་ཏུ་སྤྲོས་པ་མེད་པ་འདི་ཉིད་བདེ་མཆོག་ཏུ་བསྟན་པའི་སྤྱོད་པ་བཤད་པར་བྱ་སྟེ།

ཉིན་རེའམ་ཡང་ན་ཟླ་རེའམ། །
ཡང་ན་དེ་བཞིན་ལོ་རེར་ནི། །
ཇི་བཞིན་བྱིན་གྱིས་བརླབས་ནས་ཀྱང་། །
སངས་རྒྱས་བདེ་མཆོག་གར་བྱའོ། །ཞེས་བྱ་བ་དང་།
ལངས་པའམ་ནི་འདུག་པའམ། །
འཆག་གམ་ཇི་ལྟར་གནས་པ་དང་། །
དགོད་དམ་རབ་ཏུ་སྨྲ་ཡང་རུང་། །
གང་ན་ཇི་ལྟར་སྤྱོད་ཀྱང་རུང་། །ཞེས་བྱ་བ་དང་།
དབང་པོ་གང་དང་གང་ལམ་གྱུར། །
དེ་དང་དེ་ཡི་ངོ་བོར་བྱ། །
མཉམ་པར་མ་བཞག་སྦྱོར་བ་ཡིས། །
ཐམས་ཅད་སངས་རྒྱས་རང་བཞིན་བྱ། །

ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །

འདོད་ཆགས་ཆོས་ཀྱི་ཚུལ་བསྟན་པའི། །
རྣམ་པར་རོལ་པ་སྦྲིས་པ་ནི། །
ནམ་མཁའ་མཉམ་པས་མཁའ་ལྡིང་བུ། །
མཐའ་མེད་རྒྱ་མཚོ་དག་དང་མཚུངས། །

སློབ་མས་ཁོང་དུ་ཆུད་པའི་ཕྱིར། །
དངོས་པོ་ཙམ་ཞིག་བླངས་པ་ཡིན། །
འདོད་ཆགས་བསྟན་པར་བྱ་བ་ནི། །
སྐྱེ་བ་དུ་མས་བཤད་ནུས་སམ། །

དཔལ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་དང་མཉམ་པར་སྦྱོར་བ་མཁའ་འགྲོ་མ་སྒྱུ་མ་བདེ་བའི་མཆོག་གི་ཚུལ་ལས། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོའི་སྤྱོད་པ་ཆོས་འབྱུང་བའི་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་སྦྲིས་པ་དང་བཅས་པ་བསྟུས་པའི་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་པ་སྟེ་ལེའུ་དགུ་པའོ།། །།

ལེའུ་བཅུ་པ།

རྡོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། སྨྲས་པ་དང་བཅས་པའི་སྤྱོད་པ་ནི་ཡོངས་སུ་གསལ་བར་གྱུར་ལགས་ན། སྨྲས་པ་མེད་པའི་སྤྱོད་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་སྟོན་པས་བཤད་དུ་གསོལ། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ། སེམས་ཅན་ཆེན་པོ་ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། །དཔལ་གསང་བ་འདུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ཀྱི་མན་ངག་གིས་རབ་ཏུ་བསྟན་པར་བྱ་ཡིས་རྩེ་[1]གཅིག་པའི་ཡིད་ཀྱིས་ཉོན་ཅིག

རི་བོ་ཤིན་ཏུ་དབེན་པ་དང་། །
དགོན་པ་ཆེན་པོའི་ས་ཕྱོགས་ན། །
འབྲས་བུ་མེ་ཏོག་རྣམས་ཀྱིས་བརྒྱན། །
འདིར་ནི་བསམ་གཏན་བསྒུས་པའོ། །

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རྒྱུད་ལས་གསུངས་པའི་ཡིད་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་ས་ཕྱོགས་སུ་སའི་ཁང་པ་ཇི་སྐད་དུ་བཤད་པ་བཞིན་མངོན་པར་སྦྱངས་ལ། དེར་ཟུར་བཞི་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་པའི་རྡོ་རྗེ་ནོར་བུའི་རྩེ་མོ་ཅན་གྱི་གཞལ་ཡས་ཁང་བསྐྱེད་ལ། དེའི་འོག་ཏུ་ཐ་མལ་པའི་ང་རྒྱལ་དང་བྲལ་

1. 'རྩེ་' སྡེ་དགེར་མ་གསལ།

བའི་རྣལ་འབྱོར་པ་[1]ཆེན་པོས་ཕྱི་རོལ་གྱི་ཕྱག་རྒྱ་མངོན་པར་སྦྱངས་ལ་རིགས་གཅིག་ཏུ་གཏོགས་པའི་རང་གི་སློབ་མ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་འོག་ནས་བཤད་པའི་རིམ་གྱིས་[2]ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་སྒྲུབ་པ་བརྩམ་པར་བྱའོ། །

དེའི་རིམ་པ་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། དང་པོ་ཁོ་ནར་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ལ་དམིགས་ནས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་རིམ་གྱིས་མི་བསྐྱོད་པ་[3]ཕྱུང་སྟེ་རྗེས་སུ་བཙུག་ནས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོ་ཉིད་དུ་གནས་ལ། དེ་ནས་ཐ་མལ་པའི་ང་རྒྱལ་བསལ་ཏེ། མི་ཕྱེད་པའི་འཁོར་རྣམས་རང་གི་སྐུའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལྷ་བུའི་ཡན་ལག་ཏུ་གྱུར་པའི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ལ་སོགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་རྣམས་སུ་ལྷག་པར་མོས་པས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོའི་ལྷ་མ་ལུས་པ་རྗེས་སུ་མཉེས་པར་བྱས་ལ་རང་གི་ཕྱག་རྒྱ་དང་ལྷན་ཅིག་རོལ་པོར་འཛིན་པའམ་གཞིག་པའི་རིམ་གྱིས་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ལ་འཇུག་གོ །

དེ་ནས་སྤྱན་ལ་སོགས་པའི་ལྷ་མོ་རྣམས་ཀྱིས་ཚངས་པའི་གནས་བཞིའི་དོན་གྱི་རྡོ་རྗེ་སེམས་ཁྱོད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཡང་དག་པར་བསྐུལ་བས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་རིམ་གྱིས་སྐད་

---

1. 'པ་' གསེར་བྲིས་སུ་མེད།
2. གྱི། གསེར།
3. རིམ་གྱིས་མི་བསྐྱོད་པར། ཅོ། རིམ་གྱིས་ལྡང་ནས་མི་བསྐྱོད་པ། རྒྱ་དཔེ།

ཅིག་གིས་ལངས་ནས་མཆོག་ཏུ་དགའ་བའི་རོ་མྱང་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཉམས་རྣམ་པ་དགུས་རོལ་པ་མཛད་དོ། །དེ་ལྟར་ཡང་ནས་ཡང་དུ་ཡང་དག་པའི་མཐའ་ལ་རབ་ཏུ་ཞུགས་ནས་ཡང་ནས་ཡང་དུ་བཞེངས་ཏེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྷའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་གྱུར་པས་འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་ལྔ་རྣམས་སྤྱོད་པར་མཛད་དེ། ཇི་ལྟར་ཡིད་ཞུམ་པར་མི་འགྱུར་པ་དེ་ལྟར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཨ་ར་ལི་རྫོགས་པར་བྱེད་དེ། དེ་ལ་རང་གི་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་གཟུགས་ཀྱི་ཡུལ་རྣམ་པ་གསུམ་ལ་རྗེས་སུ་སྤྱོད་པ་བྱེད་པ་དང་། སྒྲ་དང་པི་ཝང་ལ་སོགས་པའི་སྒྲའི་ཡུལ་རྣམ་པ་གསུམ་ལ་རྗེས་སུ་སྤྱོད་པར་བྱེད་པ་དང་། སྤོས་དང་མེ་ཏོག་ལ་སོགས་པ་དྲི་རྣམ་པ་གསུམ་ལ་རྗེས་སུ་སྤྱོད་པར་བྱེད་པ་དང་། ཁ་བ་དང་། ཚ་བ་དང་། བསྐ་བ་དང་། སྐྱུར་བ་དང་། ལན་ཚྭ་ལ་སོགས་པའི་རོ་རྣམ་པ་གསུམ་ལ་རྗེས་སུ་སྤྱོད་པར་བྱེད་དོ། །དེ་ནས་ལོ་བཅུ་དྲུག་མ་སྐྱེ་གནས་མ་ཉམས་ཤིང་ནུ་མ་མཁྲང་ཞིང་རྒྱས་པའི་ན་ཆུང་ཇི་ལྟ་བུའི་སྨེ་ཤ་ཅན་དང་། བཙོ་བླག་མཁན་དང་། གར་མཁན་མ་དང་། ཕྲེང་བརྒྱུད་མ་དང་། མདའ་མཁན་མའམ། བཟོ་བྱེད་མའམ། གཞན་གང་ཡང་རུང་ཡན་ལག་མི་དམན་པའམ། ཅོ་ལག་ཏུ་གྱུར་པའི་བུད་མེད་དང་གཞན་ལའང་དེས་བསྒྲོད་པར་བྱ་སྟེ། དེ་ནས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་རྣལ་འབྱོར་པས་བདག་ཉིད་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་ཉིད་དུ་བསྟན་

པར་བྱ་བའི་ཕྱིར། འཇིག་རྟེན་པས་སྨད་པའི་དམ་ཚིག་རྣམས་གང་ཡིན་པ་ལ་སྤྲང་པ་[1]ལ་སོགས་པའི་རིམ་གྱིས་མངོན་པར་འདུས་བྱས་ལ་འཇིག་རྟེན་པའི་མཚན་མ་དམིགས་པ་སྤངས་ཏེ་རབ་ཏུ་གསང་བའི་གནས་ན་འདུག་སྟེ་ལོངས་སྤྱོད་པར་བྱའོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཕྱག་རྒྱ་མི་བཅིང་པ་དང་། དཀྱིལ་འཁོར་མེད་པ་དང་། ཐབ་ཁུང་མེད་པ་དང་། མཆོད་རྟེན་གྱི་ལས་མི་བྱ་བ་དང་། གླེགས་བམ་མི་ཀློག་པ་དང་། ལུས་ཀྱི་ངལ་དུབ་སྤང་བ་དང་། རས་རིས་དང་ཤིང་དང་རྡོའི་གཟུགས་བརྙན་ལ་ཕྱག་མི་བྱ་བ་དང་། ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་རྣམས་ལ་སྐྱབས་སུ་མི་འགྲོ་བ་དང་། ཚིས་གྲངས་དང་བྱེད་པ་དང་ཐང་ཅིག་དང་། སྐད་ཅིག་མའི་དུས་ལ་ལྟོས་པར་མི་བྱེད་དེ། འདི་དག་ཐམས་ཅད་ནི་[2]ནང་གི་བདག་ཉིད་ཁོ་ནས་རྟོགས་པར་བྱེད་དོ། །

གལ་ཏེ་འབྱོར་པ་མ་ཚང་བས་བསྡུས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་རྟོགས་པར་བྱ་བར་མི་ནུས་པར་གྱུར་ན་སྒྲུབ་པ་པོ་དེས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྣམ་པ་ལྔས་ཀྱང་སྤྲོས་པ་མེད་པའི་སྤྱོད་པ་ལ་རིམ་པ་འདིས་བསླབ་པར་བྱའོ། །དེའི་[3]རིམ་པ་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ལ་ལ་ནི་གཟུགས་རྡོ་རྗེ་མ་ལྷ་བུས་[4]ལག་པའི་པདྨ་འཛམ་པ་དང་། མི་

1. སྤྲད་པ། སྡེ། ཅོ།
2. དེའི་རིམ་པ་འདི་ནི། གསེར།
3. 'དེའི་'། གསེར་ཕྲིས་སུ་མེད།
4. རྡོ་རྗེ་ལྷ་བུས། གསེར།

ལོང་ཐོགས་ནས་ཞི་བའི་མིག་གིས་ལྟ་ཞིང་མུ་ཏིག་གི་རྒྱན་འཕྱང་མ་ལུས་པར་འཁྲོལ་ཞིང་རྣམ་པར་ཕྱེ་བ་དང་། ཉུ་མ་རྒྱས་ཤིང་ཙུང་ཟད་མཉེན་པ་དང་། གོས་གྲོལ་ཞིང་རོ་སྨད་ཙུང་ཟད་སྟོན་པས་བདེ་བ་ཆེན་པོས་རྗེས་སུ་མཉེས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཤར་ལྷོའི་མཚམས་སུ་གནས་སོ། །

ལ་ལ་ནི་སྤྲ་རྡོ་རྗེ་མ་ལྟ་བུས་[1]མིག་རྣམ་པར་འབྱེད་ཅིང་ལྟ་བ་དང་། སྙིག་པའི་ཉམས་དང་ལྡན་པས་རོལ་ཅིང་འགྱིང་བག་དང་བཅས་པས་འདོད་ཆགས་ལ་སྤྱོད་པའི་ཆོས་སྟོན་པ་འཆད་པ་ལ་མཁས་ཤིང་དགེ་བའི་གདམ་སྣ་ཞིང་རབ་ཏུ་གླུ་ལེན་ལ་ཀོ་ཀི་ལའི་གླུའི་རྗེས་སུ་པི་ཝང་གི་རོལ་མོ་རབ་ཏུ་དྲང་བས་ལྷོ་ནུབ་ཀྱི་མཚམས་སུ་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་དྲི་རྡོ་རྗེ་མ་ལྟ་བུས་[2]འཛུམ་པ་དང་བཅས་པའི་མིག་གིས་ལྟ་བར་བྱེད་ཅིང་སོར་མོ་མཐོན་པོ་ཐིམ་པ་ལྟ་བུའི་འོད་ཀྱིས་རྣམ་པར་མཛེས་པ་ཟངས་ལྟར་དམར་ཞིང་དྲ་བས་འབྲེལ་པའི་ལག་པའི་རྩེ་མོས་གར་བྱེད་པ་ལྟ་བུས་ནོར་བུའི་རང་བཞིན་གྱི་སྣོད་འཛིན་[3]ཅིང་གུར་གུམ་དང་། ཨ་ག་རུ་དང་། ཀླ་ཀྱི་དང་། ཙནྡན་སྦྲུལ་གྱི་སྙིང་པོ་དང་། ག་པུར་ལ་སོགས་པའི་དྲི་རྣམས་ཀྱིས་བསྒོས་པས་ཕྱོགས་བཅུ་མ་ལུས་པ་དྲིས་[4]ཁྱབ་པར་བྱེད་པའི་

1. རྡོ་རྗེ་ལྟ་བུས། གསེར།
2. རྡོ་རྗེ་ལྟ་བུས། གསེར།
3. སྣོད་ཐོགས་པ་འཛིན། གསེར།
4. དྲི། གསེར།

ཏྲིའི་སྟོད་ཐོགས་ཏེ་ནུབ་བྱང་གི་མཚམས་སུ་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་རོ་རྡོ་རྗེ་མ་ལྷ་བུས་[1]བརྩེ་བ་དང་བཅས་པའི་མིག་གིས་ལྟ་བར་བྱེད་ཅིང་གསེར་དང་དངུལ་ལ་སོགས་པ་དང་། རིན་པོ་ཆེ་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་སྟོད་ཐོགས་ཏེ། ཚོད་མ་ནམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་བཀང་བའི་རོའི་མཆོག་རྣམས་དང་། ལྷའི་ཁ་ཟས་བདུད་རྩི་ཆེན་པོ་དང་བཅས་པ་[2]མཐུན་པའི་ཁ་ཟས་ཐོགས་ནས་བྱང་ཤར་མཚམས་སུ་གནས་སོ། །ལ་ལ་ནི་རེག་རྡོ་རྗེ་མ་ལྷ་བུས་[3]ལུས་མཚན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བརྒྱན་པ་ཁྲི་གཉེར་[4]གསུམ་གྱིས་མཛོན་པར་མཛེས་པ། དབུས་ཤིན་ཏུ་ཕྲ་བ་རྒྱལ་མཚན་ལྟར་ལྟེ་བ་རྒྱ་ཆེ་ཞིང་གཡས་ཕྱོགས་སུ་འཁྱིལ་ཞིང་ཟབ་པ་སྐུ་སྨད་ལྟེ་བ་འགྲོས་དལ་ཞིང་ཤིན་ཏུ་སྙིག་པ་བཞིན་འཛུམ་པ་དང་བཅས་ཤིང་ཞི་བས་ལྟ་བ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་རྗེས་སུ་མཉེས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཕང་པར་ཉེ་བར་བཞག་ནས་གནས་སོ། །དེ་ནས་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་དཔལ་རབ་ཏུ་དགའ་བའི་སྤྱོད་པ་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར། ཨཱུ་ཡིདྣ་དང་། ཙུ་སྨན་དང་། ཙུ་ཤན་[5]དང་།

---

1. རྡོ་རྗེ་ལྷ་བུས། གསེར།
2. ‘དང་བཅས་པ’ གསེར་ཁྲིས་སུ་མ་གསལ།
3. རྡོ་རྗེ་ལྷ་བུས། གསེར།
4. ཀྱི་བརྒྱན་པ་ཁྲིམ་གཉེར། གསེར།
5. ཙུཾ། གསེར། ཙུ་ཤན། སྣེ། ཅོ།

ཀུཙགྲནྡན་(གྲནྡཊ)དང་། ཕུལཀཱཊཏན་[1]དང་། དཔནཁདན་དང་། མདན་དང་། དོལ་དང་། སུཙི་དང་། ཀུརཔར་ལ་སོཊ་པའི་ཀརན་(ཀརཊ)དང་། རབ་ཏུ་སྨོངས་པས་[2]སྨུ་ཏིག་གི་ཆུན་འཕྲུང་བསྐྱེད་ཅིང་གདུ་བུ་དང་། དབུ་རྒྱན་དང་། ཀང་གདུབ་ཀྱི་སྒྲ་དང་ལྡན་པར་ཡུལ་དང་། དབང་པོ་དང་། རྡོ་རྗེ་དང་། པདྨ་དང་། ཐབས་དང་། ཤེས་རབ་དང་། ཡེ་ཤེས་དང་། ཤེས་བྱ་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ཤིང་ཨཱུལི་ཀཱུལི་དང་། མདནཔདྲ་དང་། ཀུམཀྐྲ་དང་། ཤཔྟཀ་སྟེ། ནཱཌི་གསུམ་ཧཱུཾ་ཀུ་[3]ལས་རབ་ཏུ་བསྐུལ་བས་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་དྲི་མ་མེད་པའི་རྒྱུན་ལྷ་བུས་ཞུ་བར་གྱུར་ནས་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ས་ཐོབ་ནས་མཆོག་ཏུ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་གནས་ཡང་དག་པར་རིག་པར་འགྱུར་རོ། །དོན་འདི་ཉིད་གསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རྩ་བའི་མདོ་ལས། ''ཆགས་ཅན་ཡེ་ཤེས་འདོད་པ་ཡིས[4]། །རྟག་ཏུ་འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་བསྟེན། ''།ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །གལ་ཏེ་གཟུགས་རྡོ་རྗེ་ལ་སོགས་པ་དག་ཀྱང་མེད་ན་དེའི་ཚེ་རིག་བྱ་[5]རྡོ་རྗེ་གཅིག་པུ་དང་ལྡན་ཅིག་པའི་ཀུན་དུ་

---

1. ཕུལཀཏྲཏན། གསེར།
2. རབ་ཏུ་དགའ་བས། རྒྱ་དཔེ།
3. ནཱཊི་གསུམ་ཧཱུཾ་ཀུ། སྡེ། ནཱཌི་གསུམ་ཧཱིཾ་ཀུ། ཅོ། ནཱཌི······ཧཱུཾ་གུ་ལི། རྒྱ་དཔེ།
4. ཡེ་ཤེས་ལྡ་ཡིས་ནི། རྒྱ་དཔེ།
5. 'བྱ' གསེར་བྲིས་སུ་མེད།

སྦྱོར་བས་ཀྱང་བསྒྲུབ་པར་བྱ་སྟེ། གང་གི་ཕྱིར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ནི་སྒྲུབ་པ་པོའི་ལུས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ནང་དུ་འདུས་པ་ཡིན་ལ་ལྷ་མོ་ཐམས་ཅད་ནི་རིག་བྱ[1]་རྡོ་རྗེའི་ལུས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ནང་དུ་འདུས་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་བས་ན་མི་ཕྱེད་པའི་ང་རྒྱལ་གྱིས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པར་བསླབ་པར་བྱའོ་ཞེས་རབ་ཏུ་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར། རྩ་བའི་རྒྱུད་ལས་ཀྱང་། ''དེ་ནས་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་པོས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རིག་པའི་བརྟུལ་ཞུགས་ཡང་དག་པར་ལེན་པའི་སྤྱོད་པ་ཉིད་ཀྱི་སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་རྡོ་རྗེ་ལས་ཕྱུང་ངོ་།།''

སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་རྣམས། །
ལུས་དང་ངག་སེམས་བསྒོམས་པས་ནི[2]། །
རང་གི་ངོ་བོར་དེ་བྱས་ན། །
མྱུར་དུ་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་འགྱུར། །

དེ་ལ་འདི་ནི[3]སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་རྡོ་རྗེའི་རིག་པའི་བརྟུལ་ཞུགས་སོ།།

ཐོར་ཚུགས་དབུ་རྒྱན་ཅན་གྱི་གཟུགས། །
ཆེན་པོ་ཁ་དོག་དཀར་པོ་འདྲ། །

---

1. 'བྱ་' གསེར་བྲིས་སུ་མི་སྣང་།
2. བསྒོམས་པ་ནི། གསེར།
3. འདི་ན། གསེར།

སྔགས་ཀྱི་སྡོམ་པས་ཀུན་ཏུ་བསྡམས། །
ཚིག་བཞིན་དུ་ཐམས་ཅད་བྱ། །

ལོ་གྲངས་བཅུ་དྲུག་ལོན་པ་ནི། །
རྒྱན་རྣམས་ཀུན་གྱིས་རྣམ་པར་བསླུབས། །
བཞིན་སྡུག་མིག་ནི་དཀྱུས་རིང་བ། །
རྙེད་ནས་རིག་པའི་བརྟུལ་ཞུགས་སྤྱད། །

སྤྱན་གྱི་གོ་འཕང་ལོངས་སྤྱོད་པས། །
རྡོ་རྗེ་མཚན་མས་བསྒོམ་པར་བྱ། །
ཕྱག་རྒྱ་སྔགས་ཀྱི་ཚིག་ཤེས། །
སྔགས་དང་རྒྱུད་ནི་ལེགས་པར་བསླབས། །

དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བཙུན་མོར་བྱ། །
སངས་རྒྱས་བྱང་ཆུབ་རབ་གནས་པ[1]། །
བརྟུལ་ཞུགས་ཆེན་པོ་དུས་བཞིན་ནི། །
གསང་བའི་མཆོད་པ་རབ་ཏུ་བྱ། །

སྡོང་བུ་རྩ་བ་འབྲས་བུ་ཡི། །
བཟའ་དང་བཅའ་བ་སྤྱད་པར་བྱ། །

1. གནས་ལ། གསེར།

འོན་ཀྱང་སྔར་དུ་སངས་རྒྱས་འགྱུར། །
བདག་པོ་ཡེ་ཤེས་རྒྱ་མཚོ་ཆེ། །
ཟླ་བ་དྲུག་གིས་དེ་དག་ཀུན། །
གདོན་མི་ཟ་བར་འགྲུབ་པར་འགྱུར། །
སྒྲུབ་པ་པོ་ནི་བློ་བརྟན་པས། །
ནགས་ཚལ་རྟག་ཏུ་བསོད་སྙོམས་བསླང་། །

ཁ་ཟས་བཟང་པོ་བསྐུར་བ་དག །
སྐྲག་ནས་དེ་དག་སྟེར་བར་འགྱུར། །
འདས་ན་རྡོ་རྗེ་གསུམ་བདག་ཉིད། །
རྡོ་རྗེ་མི་འགྱུར་མ་རུང་འགྱུར། །

ལྷ་མོ་ཀླུ་མོ་གནོད་སྦྱིན་མོ། །
ལྷ་མ་ཡིན་ནམ་མི་མོའང་རུང་། །
རྙེད་ནས་རིག་པའི་བརྟུལ་ཞུགས་སྤྱད། །
རྡོ་རྗེ་གསུམ་གྱི་ཡེ་ཤེས་བསྟེན། །

ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེ་ལྟར་འདོད་པ་ན་སྤྱོད་པ་[1]དྲུག་སྟེ། གཉིས་གཉིས་འཁྲུད་པ་དང་། ལག་པ་བཅངས་པ་དང་། བལྟས་པ་དང་། དགོད་པའི་

1. སྤྱོད་པ་ན། གསེར།

འབྲིག་པས་མཆོག་ཏུ་དགའ་བའི་བདེ་བ་སྐད་ཅིག་སྐད་ཅིག་ལ་ཉམས་སུ་མྱོང་བར་བྱེད་དོ། །རྫོགས་པའི་གནས་སྐབས་ན་ཡང་འཁོར་བ་དག་ལས་ཧག་ཏུ་དགའ་བའི་གཟུགས་ཅན་དུ་འགྱུར་རོ། །དོན་འདི་ཉིད་གསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ལྷ་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་པར་འདུས་པའི་རྒྱུད་ལས།

དབང་པོ་གཉིས་ནི་མཉམ་སྦྱར་[1]ཏེ། །
རྩོལ་བའི་ཚེ་གའི་འོག་ཏུ་ནི། །
དགའ་བའི་སེམས་ཀྱིས་ཐུབ་[2]འགྲུབ་པ། །
བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱའོ། །

སྤྲོས་པ་མེད་པའི་སྤྱོད་པ་བསྡུས་པའི་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་པ་སྟེ་ལེའུ་བཅུ་པའོ།། །།

---

1. སྦྱོར། གསེར།
2. ཐུགས། བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་གསལ། གོང་དུ་ནི་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

ལེའུ་བཅུ་གཅིག་པ།

དེ་ནི་[1]ཤིན་ཏུ་སྤྲོས་པ་མེད་པའི་སྤྱོད་པ་ལ་འཇུག་པར་བྱ་སྟེ།

རི་བོ་ཤིན་ཏུ་དབེན་པའམ། །
ཆུ་ངོགས་འབབ་ཆུའི་གནས་རྣམས་དང་། །
དུར་ཁྲོད་[2]ལ་སོགས་གནས་རྣམས་སུ། །
བསམ་གཏན་བསྒྲུས་པ་འདི་བྱའོ། །

ཞེས་རྒྱུད་ལས་གསུངས་པའི་ཡིད་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་སུ་ཁ་ཟས་སྦྱོར་བའི་ཕྱིར་གཏོད་སྦྱིན་མོ་མངག་གཞུག་མོ་[3]ལ་སོགས་པ་བསླབ་པར་བྱའོ། །ཡང་ན་སྒྲུབ་པའི་གྲོགས་མཆོག་གམ། ཚོགས་ཆེན་པོའི་ཁ་ཟས་ཙམ་བསྒྲུབས་ནས་རིམ་པ་འདིས་ཤིན་ཏུ་སྤྲོས་པ་མེད་པའི་སྤྱོད་པ་ལ་འཇུག་པར་བྱའོ། །

དེའི་རིམ་པ་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་དང་པོ་ཁོ་ནར་སྒྲུབ་པ་པོས་འཁོར་བ་ཐོག་མ་མེད་པ་ཅན་གྱི་སྡུག་བསྔལ་དྲན་པར་བྱས་ལ། མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་བདེ་བ་འདོད་པས་འདུ་འཛི་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་སྤང་པར་བྱ་ཞིང་ཐ་ན་རྒྱལ་

---

1. དེ་ནི། ཅོ།
2. དུར་ཁྲོད། གསེར།
3. མངག་གཞུགས་མོ། གསེར།

སྲིད་ཀྱི་དབང་ཕྱུག་ལའང་སྡུག་བསྔལ་གྱི་འདུ་ཤེས་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །གཉིས་
པ་ཏིལ་འབྲུ་ཙམ་ལའང་དངོས་པོར་འཛིན་པའི་བློ་སྤང་བར་བྱའོ། །གསུམ་པ་
དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ལ་དད་པས་[1]ལུས་དང་སྲོག་ལའང་ལྟོས་པ་མེད་པར་
བྱའོ།། ཇི་སྐད་དུ་ཏིང་ངེ་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་མདོ་ལས། ‘‘རིགས་ཀྱི་བུ་དེ་བས་ན་[2]
བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཏིང་ངེ་འཛིན་འདི་འདོད་ཅིང་།
མྱུར་དུ་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་མངོན་པར་རྫོགས་
པར་འཚང་རྒྱ་བར་འདོད་པས་ལུས་དང་སྲོག་ལ་ལྟོས་པ་མེད་པར་བྱའོ།’’།
ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་འཇིག་རྟེན་པའི་དངོས་གྲུབ་ཕྲ་མོ་དང་།
གྲུབ་པ་ཆེན་པོ་[3]བརྒྱད་ལ་དོན་དུ་གཉེར་བར་མི་བྱ་སྟེ། རྣམ་པར་གཡེང་བར་[4]
འགྱུར་བ་དང་། ཕྱིར་ལྡོག་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཇི་སྐད་དུ་ཐུན་མོང་མ་
ཡིན་པའི་གསང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས།

‘‘དེ་ནས་གཞན་ཡང་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་
དངོས་གྲུབ་གང་ཅི་ཡང་རུང་བ་ལ་ཆོལ་བར་མི་བྱེད་དེ། འཇིག་རྟེན་རྒྱང་ཕན་
པའི་ངག་གི་དངོས་གྲུབ་དང་། མངག་གཞུག་པའི་དངོས་གྲུབ་དང་། བུམ་པ་

---

1. སེམས་དཔས། རྒྱ་དཔེ།
2. དེ་ནས། གསེར།
3. འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་གྲུབ་པ་ཆེན་པོ། རྒྱ་དཔེ།
4. གཡེངས་པར། གསེར།

བཟང་པོའི་དངོས་གྲུབ་དང་། ས་འོག་གི་དངོས་གྲུབ་དང་། རྒྱལ་སྲིད་ཀྱི་དངོས་གྲུབ་དང་། རྒྱས་པའི་དངོས་གྲུབ་དང་། དབང་དུ་བྱ་བའི་དངོས་གྲུབ་དང་། མངོན་སྤྱོད་ཀྱི་དངོས་གྲུབ་རྣམས་དོན་དུ་གཉེར་བར་མི་བྱ་སྟེ། དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། འདི་ལྟར་དངོས་གྲུབ་ཆེན་པོའི་དོན་དུ་དངོས་གྲུབ་ཕྲ་མོ་ལ་འདོད་པ་བསྐྱེད་པར་མི་བྱའོ། །རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་དངོས་གྲུབ་འབའ་ཞིག་ལ་སེམས་རྩེ་གཅིག་པར་གྱུར་པར་བྱའོ།'' །དེ་སྐད་དུ་གསང་བ་གྲུབ་པ་ལས་ཀྱང་།

སྦྱོར་བ་ལ་སོགས་འབད་པ་ནི།[1] །
དེ་ཉིད་རིག་པས་སྤང་བར་བྱ། །
རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ངེས་འཛུག་པ། །
སྤངས་ནས་གཞན་དུ་མི་བྱའོ། །
དག་པའི་དེ་ཉིད་ལ་གནས་པས། །
སྦྱོར་བ་རྣམས་ཀྱང་མི་བྱ་སྟེ། །
བདག་མེད་[2]གནས་པའི་སྦྱོར་བ་ཡིས། །
ཇི་སྲིད་བར་དུ་སོ་སོར་རྟག །
དངོས་མེད་གོ་འཕང་ལ་གནས་དང་། །
ཐབས་བཟང་དག་དང་ལྡན་པ་ཡིས། །

1. དེ་ཉིད་ནི། རྒྱ་དཔེ།
2. བདག་ཉིད། སྡེ། ཅོ།

རྟོག་ལས་གང་ཅིའང་འབྱུང་བ་རྣམས། །
མ་བརྟགས་[1]པར་ནི་འགྲུབ་པར་འགྱུར། །
བསྒོམ་པའི་སྦྱོར་བའི་སྟོབས་ཀྱིས་ནི། །
དངོས་གྲུབ་མཚན་ཉིད་གང་ཅིའང་རུང་། །
དེ་ཀུན་སྐད་ཅིག་ཙམ་ལ་ནི། །
རང་ཉིད་གནས་པར་འགྱུར་བ་ཡིན། །

དེ་བས་ན་[2]ཕྱི་རོལ་གྱི་བུད་མེད་རྣམ་པར་སྤངས་ནས་སྙིང་གར་གནས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་དང་ལྷན་ཅིག་སྙོམས་པར་འཇུག་པས་ཤིན་ཏུ་སྦྱར་བར་རྡོ་རྗེ་འཆང་ཆེན་པོའི་གོ་འཕང་རྫོགས་པར་བྱའོ་ཞེས་སྦྲིས་པས་དམིགས་ཏེ། གཅིག་པུ་ཁོ་ནར་བཤད་པའི་རིམ་པ་བཞིན་དུ་བསམ་པར་བྱའོ། །དེ་ཡི་རིམ་པ་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ཇི་སྲིད་ཕུང་པོའི་ཟ་མ་ཏོག་ཡོད་པ་དེ་སྲིད་ཀྱི་བར་དུ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གསུམ་གྱི་ངོ་བོ་སྟེ། རང་བཞིན་གྱིས་སྣང་བ་འགྲོ་བ་བདག་[3]གཞན་ལ་སྣང་བར་འགྱུར་རོ། །ཇི་ལྟ་ཞེ་ན། དང་པོ་ནི་སྣང་བའོ། །གཉིས་པ་ནི་རང་བཞིན་ནོ། །དེ་རླུང་དང་བཅས་པས་གང་ཕྱོགས་བཅུར་འཁོར་བ་སྟེ།

---

1. མ་རྟགས། གསེར།
2. དེ་བས། གསེར།
3. འགྲོ་བ་དག་དང་། ཅོ། གསེར། འགྲོ་བ་དག སྣེ། གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཀོད་ཡོད།

གང་གིས་ཤེ་ན། འདོད་ཆགས་དང་།[1] འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བ་དང་། འདོད་ཆགས་བར་མ་ལ་སོགས་པ་དང་། གཞན་ཡང་དྲག་པོ་དང་། ཞི་བ་དང་། དགའ་བ་དང་། སྨྱ་ངན་དང་། བཀྲེས་པ་དང་། སྐོམ་པ་དང་། ཚོར་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རང་བཞིན་བརྒྱ་དྲུག་ཅུ་ཉིན་མཚན་དུ་ཡིད་[2]ལ་བྱུས་ནས་མ་རིག་པ་རང་འགགས་ཤིང་ཡང་ལངས་ནས་རླུང་གི་དབང་གིས་འཁོར་བར་འགྱུར་བ་སྟེ། དེས་ལུས་དཀྲུགས་[3]ནས་ཇི་སྲིད་དུ་མིག་ལ་སོགས་པའི་དབང་པོ་ཡུལ་ལ་དམིགས་པ་དེ་སྲིད་དུ་དེ་ཉིད་དུ་དམིགས་པར་འགྱུར་ཏེ། ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ནས་གོམས་པའི་ཕྱིར་རོ། །

དེ་ནས་སྐྱེ་བ་གཅིག་ནས་གཅིག་ཏུ་གོམས་པས་བདག་མེད་པའི་ཆོས་ལ་བསླབས་པས་རྣམ་པར་བསྲེས་[4]པའི་སྦྱོར་བ་ཁོང་དུ་ཆུད་ནས་རང་བཞིན་གྱིས་སྣང་བ་དང་གཅིག་ཏུ་འདྲེ་བར་བྱ་སྟེ། རིམ་པ་འདིས་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ལ་དམིགས་པར་བྱའོ། །དེའི་རིམ་པ་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཁམས་ཕྲ་བ་ལ་གཞུག་གོ །ཁམས་ཕྲ་བ་ནི་ཡང་སེམས་ལ་གཞུག་གོ །སེམས་

---

1. ‘འདོད་ཆགས་དང་།’ བོད་དཔེར་མེད་ཀྱང་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་གོང་དུ་བཞག་པ་ཡིན།
2. མཚན་ཉིད་ཡིད། གསེར།
3. དཀྲུས། གསེར།
4. རྣམ་པར་བསྲེག རྒྱ་དཔེ།

ནི་ཡང་སེམས་པ་ལ་གཞུག་གོ[1] །སེམས་པ་ནི་ཡང་མ་རིག་པ་ལ་གཞུག་སྟེ། དེ་ལྟར་སྦྱར་ནས་གཉིད་ལོག་པར་བྱེད་དོ། །དེ་ལ་དུས་འདིར་ནི་སེམས་དང་སེམས་པ་མ་རིག་པ[2]ལ་རབ་ཏུ་ཞུགས་པའི་སྐད་ཅིག་ལ་དྲན་པ་བརྟེན་པའོ། ། ཕྱིས་ནི་བརྗོད་པ[3]ཡང་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་འོད་གསལ་བའོ། ། ཡང་གྲོལ་བ་ན་རླུང་གི་རང་བཞིན་རྣེད་དེ།[4] གང་གི་ཚེ་རྨི་ལམ་གཞན་དག་འབྱུང་བ་ནི་ཇི་སྲིད་དུ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་མི་གཡོ་བ་དེ་སྲིད་དུ་གཉིད་ལོག་ནས་འོད་གསལ་བ་ལ་ལྟ་སྟེ། དེ་ནི་སོ་སོ་རང་གིས་རིག་པ་ལུས་དང་ངག་སེམས་དང་བྲལ་བའི་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ནང་གི་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པ་ཞེས་བྱའོ།། རིམ་པ་འདིས་ལུས་ཀྱི[5]དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཚོགས་རྣམས་གསད[6]པར་བྱ་ཞིང་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ[7]ན་གཞུག་པར་བྱས་ནས་སྐལ་པ་བཟང་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་འགྱུར་ཏེ། སྤྲོས་པ་དང་བཅས་པ་

---

1. 'སེམས་ནི་ཡང་སེམས་པ་ལ་གཞུག་གོ' །སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་པར་གཉིས་སུ་ཆད་པ་ཡིན་ནམ་སྙམ།
2. སེམས་དཔའ་རིག གསེར།
3. བརྗོད་པ། གསེར།
4. གཡོ་སྟེ། རྒྱ་དཔེ།
5. ཀྱིས། གསེར།
6. ཚོགས་རྣམས་བསད། གསེར།
7. དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི། གསེར།

དང་སྤྲོས་པ་མེད་པའི་སྤྱོད་པ་ལ་ལྟོས་པ་མེད་པས་ཤིན་ཏུ་སྦྱར་བར་འདིར་རང་གི་གཟུགས་ཡོངས་སུ་བརྗེས་[1]པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏེ། དོན་འདི་ཉིད་དགོངས་པ་ལུང་བསྟན་པ་ཞེས་བྱ་བ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས[2]།

གཟུགས་སོགས་ནང་གི་ཆོས་རྣམས་ནི། །
མཐོང་བ་ལྷག་མཐོང་ཞེས་བརྗོད་ལ། །
མི་བསྐྱོད་ལ་སོགས་གྲངས་བཞིན་དུ། །
བརྟགས་པ་དག་ནི་ཞི་གནས་ཡིན། །
འདི་དག་དངོས་མེད་གྱུར་པ་ཡི། །
དེ་བཞིན་ཉིད་ནི་ཞི་བར་བཤད། །
དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ། །
རྣལ་འབྱོར་པ་ཡིས་སངས་རྒྱས་གཞུག །ཅེས་གསུངས་པ་

དང་། ཡང་ལྷ་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་པར་འདུས་པའི་རྒྱུད་ལས་ཀྱང་།

མྱ་ངན་འདས་པའི་མི་བཟད་མེས། །
ཐལ་བའང་ལུས་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། །
དེས་ན་དེར་ནི་དབང་དོན་དང་། །
ཁམས་རྣམས་འདིར་ནི་ཡོད་མ་ཡིན། །ཞེས་གསུངས་སོ།།

1. བརྗེད། སྣེ། ཅོ།

2. Toh. 444 བཀའ། རྒྱུད། ‘ཙ’ ཤོག- ༡༥༡ན༡།

རིམ་པ་འདིས་ནི་ལུང་དང་རིགས་པ་དག་གིས་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུམ་ངེས་པར་བྱས་ནས། ཡུལ་ལ་ཞེན་པ་དང་རོལ་པ་ཐམས་ཅད་སྤངས་ཏེ། རིམ་པ་འདིས་བྷུསུཀུ་ཙམ་གྱི་སྤྱོད་པ་ལ་སྤྱད་དེ། དེའི་རིམ་པ་ནི་འདིའོ། །བྷུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཟས་ལ་སྤྱོད་པ་སྟེ་དེ་ཙམ་ཞིག་རྗེས་སུ་དྲན་པ་དང་འདུ་འཛི་སྤོང་བར་བྱེད་ཅིང་དཀའ་ཐུབ་དང་བརྟུལ་ཞུགས་སོ་ཞེས་གང་ལའང་བསམ་པར་མི་བྱའོ། །སུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཉིད་ལོག་པ་སྟེ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་འདི་དག་མ་རིག་པས་ཉེ་བར་མཚོན་པས་མངོན་སུམ་དུ་བྱེད་དོ། །མ་རིག་པ་ལྷུགས་ཀྱུ་ལྟ་བུ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གང་ལའང་འདྲེ་བར་མི་བྱེད་དེ། འོད་གསལ་བ་ཉིད་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་ཅིང་དྲི་མ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ། །ཀུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བཤད་སར་འགྲོ་བ་སྟེ། བཤད་པ་དང་གཅི་བ་འདོར་བའི་ཕྱིར་དེ་ཙམ་ཞིག་རྗེས་སུ་དྲན་པར་བྱེད་ཅིང་འདུ་འཛི་སྤོང་བར་[1]བྱེད་ལ། ལུས་དང་ཚོར་བ་དང་ཡུལ་དང་དབང་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་སེམས་པར་མི་བྱེད་དོ། །

ཤིན་ཏུ་སྤྲོས་པ་མེད་པའི་སྤྱོད་པ་སྟོན་པའི་བརྟུལ་ཞུགས་བཤད་པའི་མདོ་ལས་[2]གསུངས་པའི་རིམ་པས་ཀྱང་བཤད་པར་བྱའོ། །

1. སྤོང་བྱར། གསེར།
2. རྒྱུད་ལས། རྒྱ་དཔེ།

དེ་ཡི་[1]རིམ་པ་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ།

གང་ཚེ་བརྟན་པར་མི་རྟོག་ལ། |
གནས་ཤིང་འཛིག་རྟེན་པ་སྣང་སྟེ། |
སྤྱོད་པ་ཐམས་ཅད་བསྡུས་བྱས་ན། |
དེ་ལ་དེ་ཚེ་སངས་རྒྱས་གཟིགས། |

ཀུན་ཏུ་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་པ་ཡིས། |
རིགས་པས་བྲིས་པ་ཇི་བཞིན་སྤྲུད། |
གང་ཚེ་ཆགས་མེད་རྣལ་འབྱོར་པ། |
དེ་ཚེ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་འཕེལ་འགྱུར། |

སྡིག་པ་མ་ལུས་ལྡན་པ་དང་། |
གདྟ་མུག་སྡིག་ལ་[2]རབ་གནས་ན། |
སྨྲོན་པའི་བརྟུལ་ཞུགས་སྤྱོར་བ་ཡིས། |
ཟླ་བ་དྲུག་གིས་དོན་ཡོད་འགྱུབ། |

རང་ཉིད་སངས་རྒྱས་ཀུན་མཐོང་ཞིང་། |
འདོད་པ་ཀུན་གྱིས་རབ་ཏུ་འགེངས། |

1. ཡིས། གསེར།

2. སྡིག་པ། གསེར། སྦྲིབ་ལ། རྒྱ་དཔེ།

ཟད་མེད་གཞོམ་དུ་མེད་པ་དང་། |
དང་བའི་ཚེ་ལུས་འབྱུང་བར་འགྱུར། |

བླ་ན་མེད་པའི་བྱང་ཆུབ་མཆོག |
འབད་པ་མེད་པར་ཡང་དག་འཐོབ། |
འདོད་པ་ཀུན་གྱི་དགའ་མོས་རྣམས། |
འབད་དང་བྲལ་བས་འགྲུབ་པར་འགྱུར། |

འགྲོ་དང་འདུག་དང་གནས་པ་ན། |
མཆོག་ཏུ་ཟབ་པའི་གནས་ལ་བརྟག |
འོད་གསལ་ཡེ་ཤེས་ལ་མཁས་པ། |
མཚན་ཉིད་རྟག་པར་རྣལ་འབྱོར་པའི། |

བསམ་གཏན་སྦྱོར་བ་འདི་ཡིས་ནི[1]། |
སེམས་ཀྱི་རིན་ཆེན་བརྟན་པར་འགྱུར། |
སངས་རྒྱས་བྱང་ཆུབ་རབ་ཞུགས་པ། |
བྱིན་གྱི་[2]བརླབ་པ་མཛད་པར་འགྱུར། |

དེ་ལྟར་གྱུར་པར་ཞུགས་ནས་ཀྱང་། |
ཇི་སྲིད་སེམས་ནི་མི་སྐྱོའི་ཕྱིར། |

---

1. འདི་ཡིན་ཏེ། གསེར།

2. གྱིས། གསེར།

མཉམ་གཞག་ཡིད་ནི་བཟང་པོ་ཡིས། །
དེ་ལ་འབད་པས་བསྒོམ་པར་བྱ[1]། །

དེ་ཡི་[2]འོག་ཏུ་ཅི་དགའ་བའི། །
སྤྱོད་པ་ཡིས་ནི་སྤྱད་བྱས་ནས། །
ཐུང་ཟད་སྤྱན་ཕྱེའི་མཚན་ཉིད་ཅན། །
བྱང་ཆུབ་རྒྱ་ཆེན་འཐོབ་པར་འགྱུར[3]། །

དགོད[4]དམ་སླ་འམ་འདུག་པ་དང་། །
ལ་ལ་རབ་ཏུ་གར་བྱེད་པར། །
ཇི་སྲིད་སྐྱོ་བར་མི་འགྱུར་བར། །
སྒོམ་པའི་སེམས་ལ་ཞེན་པར་བྱ། །

དེ་ལྟའི་དམ་ཚིག་[5]ལྡན་འགྱུར་ཞིང་། །
རྣམ་པར་མི་རྟོག་སྟུགས་པ་ཡིས། །
དུས་ཀྱི་ངེས་པ་ཡོངས་སྤངས་ནས། །
བླ་མེད་གོ་འཕང་ཐོབ་པར་འགྱུར། །

---

1. སྒོམ་པར་བྱ། གསེར།
2. དེའི། གསེར།
3. བསྒོམ་པར་བྱ། རྒྱ་དཔེ།
4. རྒོད། གསེར།
5. ཏིང་འཛིན། རྒྱ་དཔེ།

དེ་ལྟར་ཆུང་ངུ་དང་། འབྲིང་དང་། ཆེན་པོའི་དབྱེ་བ་དང་། ན་ཚོད་དང་ རྗེས་སུ་མཐུན་པས་སྤྱོད་པ་རྣམ་པ་གསུམ་ཟླ་བ་ཕྱེད་དམ། ཟླ་བ་གཅིག་[1]གམ་ ཟླ་བ་དྲུག་བཟླས་པར་[2]འགྱུར་བས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པའི་ མཚན་མ་ཉེ་བར་འབྱུང་བར་འགྱུར་ཏེ། དེ་ལ་མཚན་མ་ནི་འདི་དག་ཡིན་ནོ།། "གཟུགས་ཕྲ་བ་དང་། རིག་པ་ཡང་བ་དང་། ཁྱབ་པ་དང་། ཡང་དག་པ་ ཐོབ་[3]པ་ཉིད་དང་། རབ་ཏུ་སྣང་བ་ཉིད་དང་། བརྟན་པ་དང་། དབང་དུ་གྱུར་ པ་དང་། འདོད་དགུར་སྒྱུར་བ་ཞེས་བྱའོ།[4]" །ཡང་རྨི་ལམ་གྱི་མཚན་མ་ གསང་བ་འདུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས།

བྱང་ཆུབ་ཡེ་ཤེས་མཆོག་ཐོབ་པས། །
སངས་རྒྱས་སྐུ་དང་མཚུངས་པར་མཐོང་། །
སངས་རྒྱས་རྫོགས་ལོངས་སྤྱོད་པའི་སྐུ། །
བདག་མེད་པ་[5]ནི་སྨུར་དུ་མཐོང་། །

---

1. ཟླ་བ་ཅིག། གསེར།
2. ཟླས་པར། གསེར།
3. ཡང་དག་ཐོབ། གསེར།
4. 'གཟུགས་ཕྲ་བ་དང་………ཞེས་བྱའོ།' རྒྱ་དཔེར་ཚིགས་བཅད་ཐོག་གསལ།
5. བདག་ཉིད། རྒྱ་དཔེ།

སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཁམས་གསུམ་པས། |
མཆོད་པ་བྱེད་པ་དེས་མཐོང་ངོ་། |
ཡེ་ཤེས་ཆེན་པོ་འདི་ཡི་[1]གཟུགས། |
སངས་རྒྱས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཡིས། |

འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་ལྔ་རྣམས་ཀྱིས། |
རྟག་ཏུ་མཆོད་པ་བྱེད་པ་མཐོང་། |
རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་[2]གཟུགས་ཆེན་དང་། |
གྲགས་ཆེན་རྡོ་རྗེ་མཆོག་དག་ཏུ། |

རྨི་ལམ་དག་ན་རང་གཟུགས་མཐོང་། |
གྲགས་ཆེན་རྡོ་རྗེ་གསང་བ་དང་། |
བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྡོ་རྗེ་ཅན། |
སངས་རྒྱས་ཆེན་པོ་ཕྱག་འཚལ་བའི། |

རྨི་ལམ་འདི་འདྲ་མཐོང་འགྱུར་པ། |
ལུས་ངག་སེམས་ཀྱི་མཐུ་ལས་སྐྱེས། |
རྒྱན་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཡོངས་རྫོགས་པའི། |
ལྷ་ཡི་བུ་མོ་ཡིད་འོང་དང་། |

1. དེ་ཡིས། གསེར།

2. སེམས་དབང་། གསེར།

ཁྱིའུ་དང་བུ་མོ་དག་མཐོང་ན། |
དེ་ནི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་འགྱུར། |
ཕྱོགས་བཅུའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་རྣམས། |
ཞིང་ན་གནས་པ་ངེས་པར་མཐོང་། |

ཐུགས་ནི་དགྱེས་པར་གྱུར་ནས་ཀྱང་། |
ཆོས་མཛོད་ཡིད་དུ་འོང་བ་སྩོལ། |
ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོས་སྐྱུར་བའི་སྐུ། |
སེམས་ཅན་ཀུན་གྱིས་ཡོངས་བསྐོར་བ། |

བསམ་གཏན་དོ་རྗེ་ལ་གནས་པའི། |
དམ་ཚིག་སྤྱོར་བས་མཐོང་བར་འགྱུར། |

དོ་རྗེ་སློབ་མས་གསོལ་པ། གལ་ཏེ་སྒྲུབ་པ་པོ་བདེན་པ་མཐོང་ཡང་སྔོན་གྱི་བག་ཆགས་ལ་གོམས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་ཞིང་ལས་དང་[1]། ཚོང་དང་། བསྙེན་བཀུར་ལ་སོགས་པས་གཡེངས་ནས་སྤྱོད་པ་རྣམ་པ་གསུམ་སྤྱོད་པ་[2]མི་བྱེད་པ་དང་། སྒྲུབ་པ་པོ་གཞན་དག་འབྱོར་བ་མ་ཚང་བས་རྒྱུད་ལས་ཇི་སྐད་གསུངས་པའི་ཆོ་ག་རྫོགས་པར་བྱེད་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་མི་སྤྱོད་པ་དེ་དག་ནི་འཆི་བའི་

1. བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་" ཞིང་དང་ལས་དང་"ཞེས་གསལ་ཡང་གོང་དུ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
2. གཡེངས་པས་སྤྱོད་པ་རྣམས་གསུམ་སྤྱོད་པར། གསེར།

དུས་བྱས་ན་[1]ཡང་སྲིད་པ་གཞན་དུ་འགྲོ་བར་འགྱུར་རམ། ཡང་ན་རྡོ་རྗེ་འཆང་བ་ཉིད་ཐོབ་པར་འགྱུར། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྨྲས་པ།

འདི་ལ་བསལ་བྱ་གང་ཡང་མེད། |
གཞག་[2]པར་བྱ་བ་ཅི་ཡང་མེད། |
ཡང་དག་ཉིད་ལ་ཡང་དག་ལྟ[3]། |
ཡང་དག་མཐོང་ན་[4]རྣམ་པར་གྲོལ། |

ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྫོགས་པའི་རིམ་པ་ལ་གནས་པའི་དབང་དུ་བྱས་པའི་ཚིག་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ། ཡང་དག་པ་མཐོང་བ་[5]ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡང་དག་པའི་མཐོང་བས་རྟག་པ་དང་། ཆད་པ་དང་། འཁོར་བ་ལ་སོཀ་པའི་ལྟ་བ་ངན་པ་འགག་པར་[6] འགྱུར་རོ། །འོན་ཀྱང་ཐ་སྙད་ལ་བརྟེན་ནས་འཁོར་བ་རྣམ་པར་དག་པ་ངེས་པར་སྦྱུད་པར་བྱ་སྟེ། འདི་ནི་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་ནི་འཇིག་རྟེན་ཕ་རོལ་ཏུ་འཕོ་བར་མི་བྱེད་དེ། རྟག་པའི་སྐྱོན་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །འཇིག་རྟེན་ཕ་

1. བྱས་ནས། གསེར།

2. བཞག གསེར།

3. ཡང་དག་བརྟ། གསེར།

4. མཐོང་ནས། གསེར།

5. མཐོང་བའོ། གསེར།

6. འགགས་པར། གསེར།

རོལ་འཆི་བ་ལས་གཞན་པ་ཉིད་[1]ལས་ཀྱང་འབྱུང་བ་མ་ཡིན་ཏེ། རྒྱུ་མེད་པའི་ཉེ་བར་[2]ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟ་སྟེ། མར་མེ་ལས་མར་མེ་དང་། རྒྱ་ལས་རྒྱ་དང་། སྒྲ་ལས་བྲག་ཅ་དག་ནི་དེ་ཉིད་དམ་དེ་ལས་གཞན་པ་ཞེས་བརྗོད་པར་མི་ནུས་སོ། །དེ་བས་ན་གསེར་འོད་དམ་པའི་མདོ་ལས་ཀྱང་།

སངས་རྒྱས་སྐུ་ངན་མི་འདའ་ཞིང་། །
ཆོས་ཀྱང་ནུབ་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། །
སེམས་ཅན་རྣམས་ནི་གདུལ་བའི་ཕྱིར། །
སྐུ་ངན་འདའ་བར་བསྟན་པ་ཡིན། །

ཞེས་གསུངས་པ་དང་། ལང་ཀར་[3]གཤེགས་པའི་མདོ་ལས་ཀྱང་།

འདི་ལ་གང་ཡང་རྐྱེན་རྣམས་ཀྱིས། །
སྐྱེ་བ་མེད་ཅིང་འགག་པ་མེད། །
བརྟགས་[4]པའི་རྐྱེན་རྣམས་ཁོ་ན་ནི། །
སྐྱེ་ཞིང་[5]འགག་པར་འགྱུར་བ་ཡིན། །

---

1. ‘པ་ཉིད་’ གསེར་བྲིས་སུ་མ་གསལ།
2. ཉེས་པར། གསེར།
3. དེ་བཞིན་དུ་ལྷར། གསེར།
4. བརྟག། གསེར།
5. སྐྱེས་ཞིང་། གསེར།

ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །རིགས་པ་འདྲིས་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པས་མཛད་པ་ཐམས་ཅད་མཛད་ནས་[1]མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཉེ་བར་སྟོན་པར་མཛད་པ་ཡིན་ནོ། །

དེ་བཞིན་དུ་རྫོགས་པའི་རིམ་པ་རྟེན་པར་གྱུར་པས་ཀྱང་ཐམས་ཅད་བྱས་ནས་འཇིག་རྟེན་དུ་མྱ་ངན་ལས་འདའ་བར་འགྱུར་བ་འདི་ལ་སོམ་ཉི་མི་བྱའོ།། དེ་བས་ན་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་[2]ཤེས་པ་ནི་རྒྱུན་མ་ཆད་པས་ཇི་སྐད་དུ་བཤད་པའི་སྤྱོད་པ་གལ་ཏེ་མ་སྤྱད་དུ་ཟིན་ཀྱང་། ལྷ་བ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྤངས་ནས་འཆི་བར་འགྱུར་བ་ནི་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ཡིན་ལ། སྐྱེ་བ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པའོ་ཞེས་ཡང་དག་པར་མངོན་པར་རྟོགས་ནས་བརྒྱ་ལམ་ན་འོད་གསལ་བར་ཞུགས་ནས། ཐ་མལ་པའི་ཕུང་པོ་བོར་ནས་བདག་ལ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་རིམ་གྱིས་[3]ལྡང་བར་བྱའོ་ཞེས་བརྟན་པའི་སེམས་བསྐྱེད་དེ། དེ་ཡིད་ལ་བྱེད་པས་གནས་པར་བྱེད་ན། དེ་སྐྱེ་བ་གཞན་དུ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་དེ་འདོར་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། དེ་བས་ན་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་ན།

བསམ་པ་གང་དང་གང་གིས་ནི། །
མི་རྣམས་ཡིད་ནི་ཡང་དག་སྦྱོར། །

1. མཛས་པ་ནས། གསེར།
2. ‘ཉིད་’ གསེར་ཕྲིས་སུ་མེད།
3. ‘གྱིས་’། གསེར་ཕྲིས་སུ་མེད།

དེས་ནི་[1]དེ་ཡི་རང་བཞིན་འགྱུར། །
སྣ་ཚོགས་ནོར་བུ་ཇི་བཞིན་ནོ། །ཞེས་གསུངས་སོ།།

དེ་བས་ན་འདི་དག་ཐམས་ཅད་ནི་ཁྱད་པར་ཅན་དུ་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར་བས་ཡོངས་སུ་འགྱུར་བཞིན་པས་ཁྱད་པར་ཅན་གྱི་འབྲས་བུ་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ།། འདིར་བཤད་པ།

གང་ཞིག་སྐྱེ་བ་ཀུན་རྫོབ་བདེན་ཞེས་བྱ། །
འཆི་བའི་མིང་ཡང་དོན་དམ་བདེན་པ་ཡིན།།
རིམ་གཉིས་དེ་དག་བླ་མའི་དྲིན་གྱིས་ནི། །
རྙེད་པ་འདི་ནི་མ་འོངས་སངས་རྒྱས་ཡིན། །

བདེན་གཉིས་དེ་ལ་ཟུང་དུ་འཇུག་པ་ནི། །
མི་འཆད་བཞིན་དུ་དེ་དག་ཁྱད་པར་མེད། །
མིང་གཉིས་[2]མཐའ་མ་གཅིག་པུ་ཁོ་ནར་ནི། །
ཤེས་པ་དེ་འདིར་བཅིངས་ནས་[3]གྲོལ་བ་ཡིན།།

རི་དབང་རྩེ་ལས་འགའ་ཞིག་ལྷུང་གྱུར་ན། །
ལྷུང་བར་མི་འདོད་ཀྱང་ནི་ལྷུང་བར་འགྱུར།།

1. དེ་ནི། གསེར།
2. མི། སྟེ། ཅོ།
3. ལས། གསེར།

ཟླ་མའི་དྲིན་གྱིས་ཕན་པའི་ལུང་ཐོབ་ན། །
གྲོལ་བར་མི་འདོད་ཀྱང་ནི་གྲོལ་བར་འགྱུར།།

འཇིག་རྟེན་དག་ན་དོན་ཡོད་གསུང་གི་དེ་ཉིད་རྟོགས་མཐུ་འགྲོ་བ་ལ་མེད་དེ། །
མཚོ་ཆེན་རྒྱ་ལ་དྲག་པོའི་རླུང་གིས་ཀུན་དུ་གཡེངས་པའི་ཏིལ་མར་ཐིན་པ་[1]འདྲ། །
དེས་ན་[2]བདག་གིས་ཅུང་ཟད་ཙམ་ཞིག་བླངས་ནས་བསྡུ་བར་བྱས་པ་ནི། །
མཐར་ཐུག་[3]ཀུན་རྫོབ་ཀྱིས་འཛིན་སྐལ་ལྡན་སྐྱེ་བོའི་བློ་ལ་སྒྲོན་མ་ལྟ་བུ་[4]ཡིན། །

ཤིན་ཏུ་སྤྲོས་པ་མེད་པའི་སྤྱོད་པ་བསྡུས་པའི་ཐེ་ཚོམ་གཅོད་པ་སྟེ་ལེའུ་བཅུ་གཅིག་པའོ།། །།

སྤྱོད་པ་བསྡུས་པའི་སྒྲོན་མ་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཨཱརྻདེ་བའི་ཞལ་སྔ་ནས་ཀྱིས་མཛད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

རྒྱ་གར་གྱི་མཁན་པོ་ཤྲདྡྷཱཀརཝརྨ་དང་། ཞུ་ཆེན་གྱི་ལོ་ཙཱ་བ་དགེ་སློང་རིན་ཆེན་བཟང་པོས་བསྒྱུར་ཅིང་ཞུས་ཏེ་གཏན་ལ་ཕབ་པའོ།[5] །

---

1. ཐིག་པ། གསེར།
2. དེ་ན། གསེར།
3. མཐར་ཐུགས། གསེར།
4. ལྟར་བུ། གསེར།
5. གཏན་ལ་ཕབ་པ། ཅོ། སྣེ། གཏན་ལ་ཕབ་པའོ། །འདི་ལ་རྒྱ་གར་གྱི་ཤློཀ་སྟོང་སུམ་བརྒྱ་ཡོད། ཕྱག་དཔེ་གཉིས་ལ་གཏུགས་སོ། །བཀྲིས། གསེར།